वार्षिक रिपोर्ट

1985-86

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

दिसंबर 1986
अग्रहायण 1908

P.D. 1 T— AKS DPS

प्रकाशन सहयोग

सम्पादन		*उत्पादन*	
प्रभाकर द्विवेदी	मुख्य संपादक	सी.एन. राव	मुख्य उत्पादन अधिकारी
आशीष सिन्हा	संपादक	डी.साई प्रसाद	उत्पादन अधिकारी
दिनेश सक्सेना	संपादक	रती राम	उत्पादन सहायक
कृष्ण वल्लभ गौड़	प्रूफ शोधन		
सुधीर कुमार पुरी	प्रूफ शोधन		

मुख पृष्ठ

सान्तो दत्त *चंद्र प्रकाश टंडन*

अलंकरण

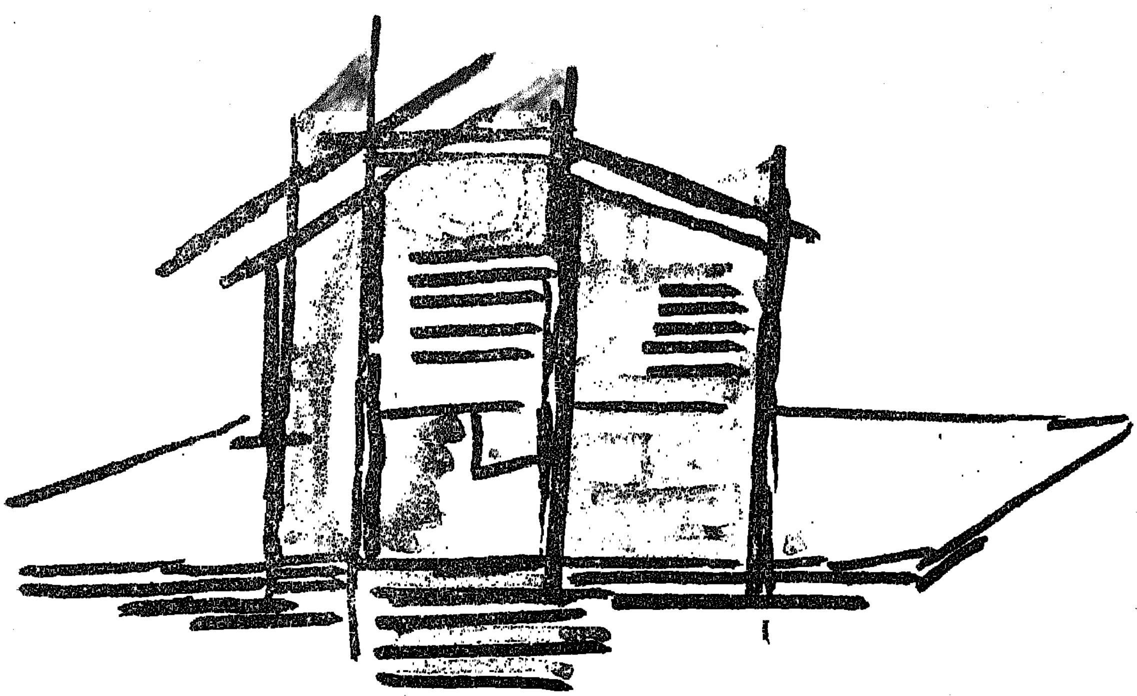
सान्तो दत्त

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली- 110016 द्वारा प्रकाशित तथा ए.जे. प्रिन्टर्स, प्रताप भवन, 5 बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110002 द्वारा मुद्रित

आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, (एन०सी०ई०आर०टी) अपने अध्यक्ष, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार, के प्रति उनके मार्गदर्शन हेतु ऋणी है। परिषद् के कार्यों में गहन रुचि और सहायता प्रदान करने हेतु परिषद् अपने शासी निकाय के अन्य विशिष्ट सदस्यों के प्रति आभारी है। परिषद् उन विशेषज्ञों को धन्यवाद देती है जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इसकी विभिन्न समितियों में कार्य किया तथा कई तरीकों से अपनी सहायता प्रदान की। राज्य शिक्षा विभागों व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों/संस्थानों/राज्य शिक्षा संस्थानों सहित वे सभी संगठन व संस्थाएं धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने एन०सी०ई०आर०टी० के साथ सहयोग किया तथा उसकी गतिविधियों को कार्यान्वित करने में अपनी पूरी सहायता दी। प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में यूनेस्को, यूनीसेफ, यू०एन०एफ०पी०ए०, जी०टी० जैड और ब्रिटिश काउंसिल द्वारा प्राप्त सहयोग के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करना चाहती है। परिषद् अपने स्टाफ के सभी स्तरों के सदस्यों द्वारा किये गये कार्य की भी प्रशंसा करती है, जिनके सहयोग और निष्ठा के बिना इसके कार्यक्रम सफलतापूर्वक कार्यान्वित नहीं हो सकते थे। परिषद् उन हजारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और जनता के सदस्यों के प्रति सधन्यवाद अपना आभार ज्ञापित करती है जिन्होंने परिषद् के 1985-86 के प्रकाशनों व कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार देते हुए परिषद् के विभिन्न घटकों को अनेक पत्र भेजे जोकि बेहतर कार्यनिष्पादन के लिए निरंतर प्रेरणास्रोत सिद्ध हुए।

विषय–सूची



1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् : भूमिका और संरचना

1 सितम्बर, 1961 को स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०) संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860) के तहत एक स्वायत्त संगठन है।

भूमिका और प्रकार्य

एन०सी०ई०आर०टी० मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक अकादमिक सलाहकार के रूप में कार्य करती है। स्कूली शिक्षा में अपनी नीतियों व कार्यक्रमों को प्रतिपादित एवं कार्यान्वित करने के लिए मंत्रालय ज्यादातर एन०सी०ई०आर०टी० की विशेषज्ञता पर निर्भर रहता है। परिषद् का सारा वित्तीय भार सरकार ही वहन करती है।

संस्था ज्ञापन-पत्र के अनुसार एन०सी०ई०आर०टी०के लक्ष्य हैं : मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) को शिक्षा-क्षेत्र में और खासकर स्कूली शिक्षा संबंधी नीतियों एवं मुख्य कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में सहायता तथा सलाह प्रदान करना।

कार्यक्रम और क्रियाकलाप

उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रमों और क्रियाकलापों को हाथ में लेती है:

— स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं में परिषद् अनुसंधान करती है, उसमें सहायता पहुंचाती है, उसे प्रोन्नत करती है और उसे समन्वित करती है,

— मुख्यतः उच्चस्तर पर परिषद् अध्यापकों का सेवा-पूर्व और सेवा-दौरान प्रशिक्षण आयोजित करती है,

— शैक्षिक पुनर्निर्माण में संलग्न संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों के लिए परिषद् विस्तार सेवाएं व्यवस्थित करती है,

— परिष्कृत शैक्षिक प्रविधियों, अभ्यासों और नवोत्पादों की सहायता से परिषद् विकास व प्रयोग-कार्य करती है,

— परिषद् शैक्षिक सूचना को एकत्र, संकलित, संसाधित तथा प्रसारित करती है,

— स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए परिषद् राज्यों. राज्यस्तर की संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों को कार्यक्रम विकसित एवं कार्यान्वित करने के लिए सहायता प्रदान करती है,

— यूनेस्को, यूनीसेफ, जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों तथा अन्य देशों की राष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक संस्थाओं से परिषद् सहयोग स्थापित करती है,

— परिषद् दूसरे देशों के शैक्षिक कर्मचारी-वर्ग को प्रशिक्षण व अध्ययन की सुविधाएं प्रदान करती है, और

— परिषद् राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के अकादमिक सचिवालय के रूप में काम करती है।

अनुसंधान

स्कूली शिक्षा में एक शीर्ष राष्ट्रीय संस्था होने के नाते एन.सी.ई.आर.टी. अनेक महत्वपूर्ण कार्य करती है, जैसे अनुसंधान को व्यस्थित करना व बल प्रदान करना, शैक्षिक अनुसंधान में कर्मचारी-वर्ग को प्रशिक्षण प्रदान करना आदि।

एन.आई.ई. के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) कई क्षेत्रों में अनुसंधान कार्यक्रमों जैसे पाठ्यक्रम, अनुदेशी सामग्री, बाल विकास, शैक्षिक मनोविज्ञान और मार्गदर्शन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, अध्यापन सहायक-सामग्री, अध्यापक शिक्षा मूल्यांकन आदि की जिम्मेदारी लेते हैं:

व्यक्तियों और संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करके तथा अकादमिक पारस्परिक क्रिया द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान को बल प्रदान करती है। पी.एच.डी. शोधप्रबंधों के प्रकाशन हेतु एन.सी.ई.आर.टी. विद्वानों को सहायता प्रदान करती है। परिषद् कनिष्ठ और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता-वृतियां भी प्रदान करती है ताकि शैक्षिक समस्याओं की जांच-पड़ताल की जा सके और योग्य अनुसंधान कार्यकर्त्ताओं का एक दल सृजित किया जा सके। देश में शिक्षा के अनेक पहलुओं पर आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए यह शैक्षिक सर्वेक्षण भी समय-समय पर संचालित करती है। आंकड़ों को जमा करने, उन्हें पुनः प्राप्त करने तथा उन्हें संसाधित करने के लिए परिषद् के पास एक टर्मिनल कम्प्यूटर है। अन्तर्देशीय अनुसंधान परियोजनाओं में यह अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों से भी सहयोग स्थापित करती है।

1985-86

विकास

स्कूली शिक्षा में विकास क्रियाकलापों का परिषद् के कार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें उल्लेखनीय हैं स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास तथा उनसे संबंधित समाज और बच्चों की बदलती तथा बढ़ती हुई आवश्यकताएं। शिक्षा व्यवसायीकरण और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रमों व अनुदेशी सामग्रियों का विकास परिषद् के नवोत्पादी विकासात्मक क्रियाकलापों के रूप में समाविष्ट हैं। दूसरे महत्वपूर्ण क्रियाकलाप जो इसके अधिकार-क्षेत्र में हैं, वे हैं शैक्षिक प्रौद्योगिकी और जनसंख्या शिक्षा।

प्रशिक्षण

विभिन्न स्तरों जैसे प्राथमिक-पूर्व प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर और ऐसे क्षेत्रों में जैसे व्यावसायिक शिक्षा, मार्गदर्शन और विशिष्ट शिक्षा में सेवा-पूर्व और सेवा-दौरान अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना भी परिषद् के क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के कार्यक्रमों में कुछ नवोत्पादी विशिष्ट विशेषताएं सम्मिलित की गई हैं, जैसे विषयवस्तु का एकीकरण और शिक्षण-क्रियाविधि, वास्तविक क्लास-रूम सेटिंग में अध्यापक-प्रशिक्षणार्थियों की दीर्घकालिक स्थानबद्धता तथा समुदाय कार्य में विद्यार्थियों व संकायों की सहभागिता। राज्यों तथा राज्यस्तर संस्थाओं के मौलिक कर्मचारी-वर्ग के प्रशिक्षण पर भी बल दिया जाता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के अकादमिक सचिवालय के रूप में जुटी हुई है, जिनमें विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यविवरणों व अनुवर्ती शिक्षा का संशोधन शामिल है। अप्रशिक्षित अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के संचित कार्य को समाप्त करने के लिए प्रारंभिक और माध्यमिक स्कूलों के अप्रशिक्षित अध्यापकों को पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है।

विस्तार

एन.सी.ई.आर.टी. के शिक्षा में बृहत् विस्तार-कार्यक्रम हैं, जिनमें एन.आई.ई. के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और राज्यों के क्षेत्र सलाहकारों के कार्यालय कई तरीकों से कार्यरत हैं। परिषद् राज्यों के विभिन्न अभिकरणों एवं संस्थाओं के साथ सीधे कार्य करती है और विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारी-वर्ग, जैसे अध्यापकों, निरीक्षकों, प्रशासकों, प्राश्निकों, पाठ्यपुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने हेतु विस्तार सेवा-विभागों और स्कूलों व कालेजों के अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ विस्तारपूर्वक कार्य करती है। सम्मेलन, संगोष्ठियां, कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं नियमित रूप से चलने वाले कार्यक्रमों की भांति आयोजित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों को ग्रामीण और पिछड़े हुए इलाकों में करने के लिए भी खास ध्यान दिया जाता है ताकि इन कार्यक्रमों से सम्बद्ध कार्यकर्ता वहां की विशिष्ट समस्याओं को जान सकें और आवश्यक उपायों का पता लगा सकें। विकलांगों तथा समाज के लाभवंचित वर्गों के बच्चों की शिक्षा के लिए परिषद् के पास विशेष कार्यक्रम हैं। एन.सी.ई.आर.टी. के विस्तार का कार्यक्रम देश के सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के लिए है।

प्रकाशन तथा प्रसार

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन स्कूली शिक्षा की सभी शाखाओं को समाविष्ट करते हैं। इनमें कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न स्कूली विषयों और अध्यापक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तकें, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, संपूरक पाठमालाएं, अनुसंधान रिपोर्टें इत्यादि शामिल हैं। अनुसंधान और विकासात्मक कार्य के बाद तैयार अनुदेशी सामग्रियां राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के विभिन्न अभिकरणों के लिए आदर्श सामग्री का कार्य करती हैं और ये उन्हें ग्रहण व रूपांतरण हेतु उपलब्ध कराई जाती हैं।

शैक्षिक सूचना के प्रसार हेतु एन.सी.ई.आर.टी. पांच पत्रिकाएं प्रकाशित करती है: (1) *प्राइमरी टीचर* (अंग्रेजी और हिन्दी में) का लक्ष्य है क्लास-रूम में सीधे प्रयोग के लिए प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को अर्थपूर्ण और प्रासंगिक सामग्री प्रदान करना, (2) *स्कूल साइंस* विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हेतु एक खुला मंच प्रदान करती है, (3) *दि जरनल ऑफ इंडियन एजूकेशन* चर्चा द्वारा वर्तमान शैक्षिक समस्याओं पर मौलिक और समीक्षात्मक सोचविचार के लिए मंच प्रदान करता है, (4) *दि इंडियन एजुकेशनल ' रिव्यू* में अनुसंधान लेख होते हैं और अनुसंधान कार्यकर्ताओं के लिए मंच प्रदान करता है और (5) *आधुनिक भारतीय शिक्षा* (हिन्दी में प्रकाशित) समकालीन समस्याओं पर शिक्षा विषयक समीक्षात्मक सोचविचार को प्रोत्साहन देने के लिए मंच प्रदान करती है तथा शैक्षिक समस्याओं एवं अभ्यासों के लिए विचारों को प्रसारित करती है।

एक कार्यालय पत्रिका, जिसे *एन.सी.ई.आर.टी. न्यूज़ लैटर* कहा जाता है, भी हर मास प्रकाशित की जाती है। इसके अलावा, प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपनी-अपनी पत्रिका प्रकाशित करता है।

मूल्यांकन और विनिमय कार्यक्रम

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों और दूसरी सामग्रियों का मूल्यांकन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया के आधार पर किया जाता है। मूल्यांकन की क्रियाविधियों, उपकरणों व प्रविधियों को विकसित किया गया है। गुणात्मक दृष्टि से मूल्यांकन के मार्गदर्शक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को प्रतिपादित किया गया है। पाठ्यपुस्तकों के संशोधन में स्कूलों से फीडबैक सहायक होती है।

1985-86

प्रति वर्ष एन.सी.ई.आर.टी. 750 प्रतिभा छात्रवृत्तियां प्रदान करने के लिए (जिनमें 70 अनुसूचित जातियों/जनजातियों के **लिए हैं।**) भारतीय संविधान के तहत मान्यताप्राप्त सभी भाषाओं में परीक्षा आयोजित करती है। वे विद्यार्थी जो सत्रांत में दसवीं कक्षा की परीक्षा में बैठते हैं, इस छात्रवृत्ति को प्राप्त करने हेतु परीक्षा में भाग लेने के योग्य हैं। पुरस्कृत विद्यार्थी विज्ञान, गणित और समाजविज्ञान में पी.एच.डी. तक अध्ययन कर सकते हैं या फिर इंजीनियरी और आयुर्विज्ञान जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा के गुणात्मक सुधार के अपने प्रयासों में एन.सी.ई.आर.टी. अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों जैसे यूनेस्कों. यू.एन.डी.पी. और यू.एन.एफ.पी.ए. से सहायता प्राप्त करती है। इन अभिकरणों के अनुरोध पर परिषद् अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, परिसंवादों आदि में भाग लेने हेतु अपने संकाय सदस्यों को नामित करती है। विदेशी राष्ट्रिकों के लिए परिषद् प्रशिक्षण का प्रबंध भी करती है।

शैक्षिक नवोत्पाद और विकास संबंधी एशियाई केन्द्र के राष्ट्रीय विकास समूह (ए.सी.ई.आई.डी.) के लिए परिषद् सचिवालय का कार्य करती है। भारत सरकार द्वारा देशों के साथ हस्ताक्षरित किये जाने वाले द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के जहां तक स्कूली शिक्षा के प्रावधानों का संबंध है, उन्हें कार्यान्वित करने के लिए परिषद् एक मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य करती है। परिषद् दूसरे देशों के साथ शैक्षिक सामग्रियों का विनिमय करती है।

संरचना और प्रशासन

महापरिषद् एन.सी.ई.आर.टी. की नीति-निर्माण की संस्था है। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष हैं और सभी राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री इसके सदस्यों में सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, विश्वविद्यालयों (प्रत्येक क्षेत्र से एक-एक) के चार कुलपति, कार्यकारी समिति के सभी सदस्य) जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं। और ऐसे व्यक्ति (बारह से अधिक नहीं) जिन्हें अध्यक्ष समय-समय पर नामित (इनमें कम-से-कम दो स्कूल अध्यापक होने चाहिए) करें, इसके सदस्य होते हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. की मुख्य शासी समिति है कार्यकारिणी समिति जिसके केन्द्रीय शिक्षा मंत्री अध्यक्ष (पदेन) हैं और जिसमें सम्मिलित हैं शिक्षा मंत्रालय के राज्यमंत्री (पदेन उपाध्यक्ष के रूप में), शिक्षा मंत्रालय के उपमंत्री, शिक्षा मंत्रालय के सचिव, परिषद् के निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, स्कूली शिक्षा में रूचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होंगे), परिषद् के संयुक्त निदेशक, परिषद्-संकाय के तीन सदस्य (जिनमें से कम-से-कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्षों के स्तर के होंगे) और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जोकि परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा)।

कार्यकारी समिति को अपने कार्य में सहायता देने के लिए निम्नलिखित स्थायी समितियां हैं :

1. कार्यक्रम सलाहकार समिति
2. वित्त समिति
3. स्थापना समिति
4. भवन और निर्माण समिति
5. शैक्षिक अनुसंधान और नवोत्पाद समिति
6. क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों की प्रबंध समितियां

परिषद् के मुख्यालय में हैं :–

1. परिषद् का सचिवालय और
2. लेखा शाखा

चार वरिष्ठ पदाधिकारी जो सरकार द्वारा नियुक्त किये जाते हैं, वे हैं निदेशक, संयुक्त निदेशक, संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी) और सचिव. संदर्भाधीन वर्ष में निम्नलिखित अधिकारियों ने ये पद संभाले:

1. डॉ. पी.एल. मल्होत्रा., निदेशक
2. डॉ. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक
3. डॉ. एम.एम. चौधरी, संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी)
4. श्री सी. रामचन्दन, आई.ए.एस,.सचिव, 18 फरवरी, 1986 तक
5. श्री एच.के.एल. चुघ, सचिव, 19 फरवरी, 1986 से

अकादमिक कार्यों में निदेशक के सहायतार्थ तीन **डीन** हैं जिनके नाम, पद और दायित्व नीचे दिए हुए हैं:

नाम और पद	**दायित्व**
प्रो. पी.एन. दवे डीन (अकादमिक)	एन.आई.ई. के विभागों में अकादमिक कार्य को समन्वित करना।
प्रो. आत्मानन्द शर्मा डीन (अनुसंधान)	अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वयन करना और शैक्षिक अनुसंधान व नवोत्पाद समिति के कार्य की देखभाल करना।
प्रो. बाकर मेहदी, डीन (समन्वयन)	सेवा उत्पादन विभागों, क्षेत्र कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के क्रियाकलापों का समन्वयन करना।

वर्ष 1985-86 में परिषद् चला रही थी:
राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) केन्द्रीय शैक्षिक **प्रौद्योगिकी** संस्थान (सी.आई.ई.टी.)क्षेत्रीय शिक्षा कालेज (4)
क्षेत्र एकक (17)

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

मई 1984 में एन.आई.ई. के विभाग/एकक पुनर्व्यवस्थित किये गये और 1985-86 के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के निम्नलिखित विभाग/एकक थे और इनका संबंध अपने-अपने क्षेत्रों के अनुसंधान विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, मूल्यांकन और प्रसार से था:-

1. समाजविज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
2. क्षेत्र सेवाएं और समन्वयन विभाग (डी.एफ.एस.सी.)
3. अध्यापक शिक्षा विशेष शिक्षा और प्रसार सेवा विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.)
4. स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
5. शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग (डी.ई.पी.सी.एंड.जी.)
6. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
7. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग (डी.एम.ई.एस.एंड.डी.पी.)
8. शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.)
9. नीति, अनुसंधान, नियोजन और कार्यक्रम आयोजन विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.)
10. प्रकाशन विभाग (पी.डी.)
11. कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू.डी.)
12. पुस्तकालय प्रलेखन व सूचना विभाग (डी.एल.डी.आई)
13. पत्रिका प्रकोष्ठ (जे.सी.)
14. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक (आई.आर.यू.)

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) का स्थापना 1984 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्कालीन शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र और शिक्षण सहायक सामग्री विभाग को एक-दूसरे में मिलाकर की गई थी ताकि देश में शिक्षा सुधार' व विस्तार के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी को प्रोन्नत करने में गति लाई जा सके।

सी.आई.ई.टी., संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में अच्छी खासी स्वायत्तता के साथ एन.सी.ई.आर.टी. के एक अंग के रूप में कार्य करता है। अपने कार्यक्रमों व क्रियाकलापों के बारे में संस्थान के मार्गदर्शन के लिए एक सलाहकार परिषद् है। सी.आई.ई.टी. के निम्न प्रमुख प्रभाग हैं :

1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी व प्रशिक्षण प्रभाग, टी.वी. प्रभाग और सुदूर शिक्षा विभाग (ई.टी.टी.डी.)
2. अनुसंधान, शिक्षा और समन्वयन प्रभाग (आर.ई.सी.डी.)
3. तकनीकी नियोजन, संचालन और रखरखाव प्रभाग (टी.पी.ओ.एम.डी.)
4. लेखाचित्र कला, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग (जी.ई.पी.डी)
5. पुरालेख, सूचना व प्रलेखन प्रभाग (ए.आई.डी.डी.)
6. फिल्म और फोटो प्रभाग (एफ.पी.डी.)
7. श्रव्य-रेडियो प्रभाग (ए.आर.डी.)

क्षेत्रीय कालेज और क्षेत्र एकक

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। इन कालेजों में निम्न कोर्स उपलब्ध है:

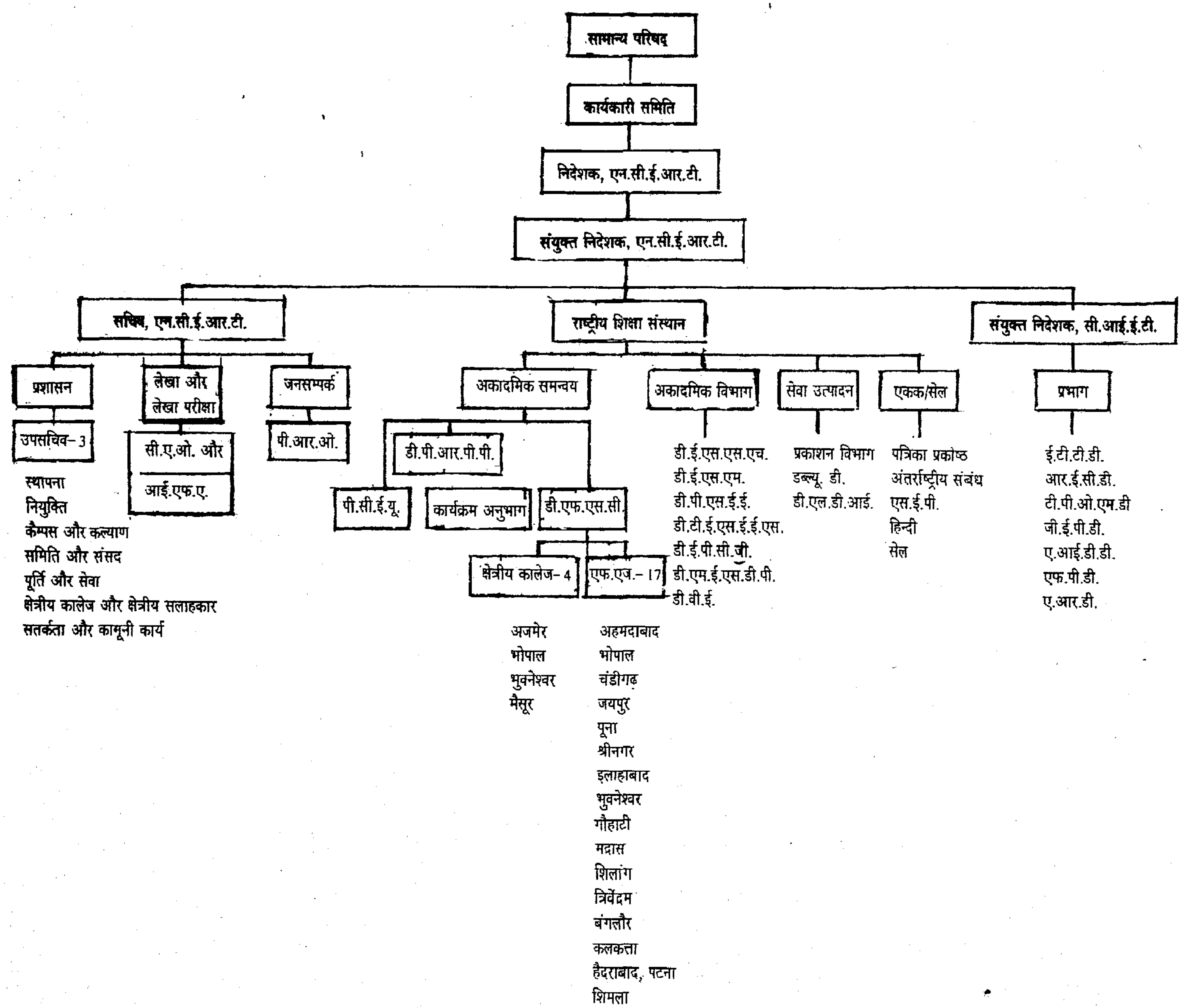
- बी.ए. (आनर्स) (पास) बी.एड.
- बी.एस.सी. (आनर्स) बी.एड.
- बी.एड.आर्ट्स. (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
- बी.एड.साइंस (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
- बी.एड. (कृषि/वाणिज्य/समाजविज्ञान)
- बी.एड. (अंग्रेज़ी/हिन्दी/उर्दू)
- बी.एड. (ग्रीष्म स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम)।
- एम.एड. (प्रारंभिक/माध्यमिक शिक्षा)
- एम.एस.-सी.एड. (भौतिकी/रसायन/गणित/जीव विज्ञान)
- पी.एच.डी. (शिक्षा)

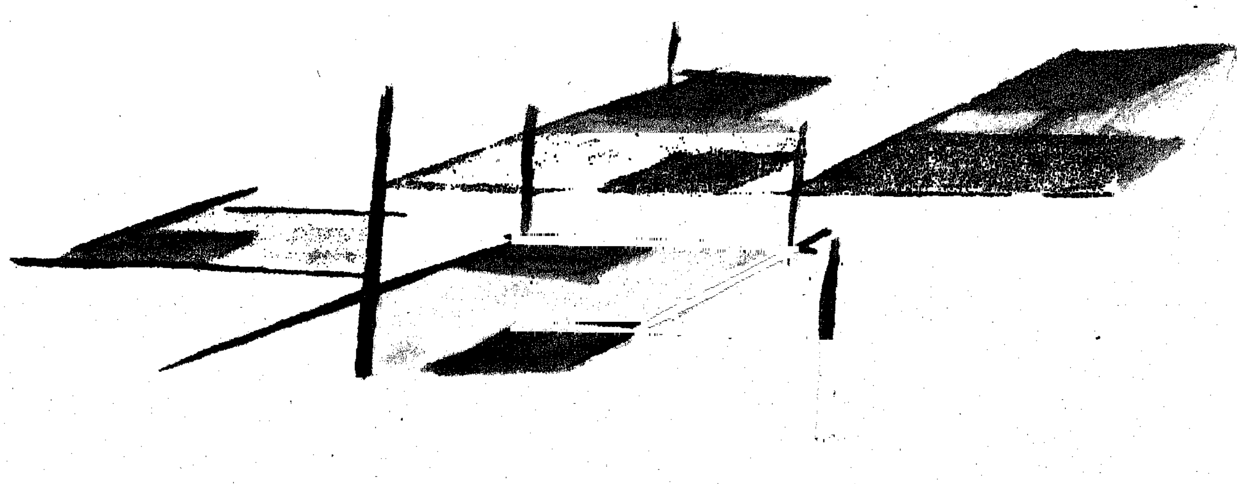
जबकि अजमेर का कालेज केवल चार-वर्षीय बी.एस.सी. बी.एड. पाठ्यक्रम प्रदान करता है, भुवनेश्वर और मैसूर के कालेज एम.एस.सी.एड कार्यक्रम प्रदान करते हैं। प्रथम जीव विज्ञानों में और दूसरा भौतिकी, रसायन और गणित में। चारों कालेजों में पी.एच.डी. कार्यक्रमों तथा साथ ही एक-वर्षीय बी.एड. और एम.एड. पाठ्यक्रमों का प्रावधान है।

ये कालेज आवासीय संस्थाएं हैं और उनमें प्रयोगशाला, पुस्तकालय और दूसरी सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था है। प्रत्येक कालेज के साथ एक निदर्शन बहुद्देश्य स्कूल सम्बद्ध है जहां विकास क्रियाविधियों को वास्तविक कक्षा स्थितियों में परीक्षित किया जाता है। राज्य शिक्षा प्राधिकारियों तथा राज्यस्तर संस्थाओं, जिन्हें शिक्षा प्रणाली में अकादमिक और प्रशिक्षण निवेश प्रदान करने हेतु स्थापित किया गया है, के साथ प्रभावी तालमेल रखने के लिए निम्नलिखित स्थानों पर 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किये गये हैं :

अहमदाबाद	इलाहाबाद	बंगलौर
भोपाल	भुवनेश्वर	कलकत्ता
चण्डीगढ़	गौहाटी	हैदराबाद
जयपुर	मद्रास	पटना
पुणे	शिलांग	शिमला
श्रीनगर	त्रिवेन्द्रम	

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) की संरचना





1985-86

2

वर्ष की गतिविधियों पर एक विहंगम दृष्टि

वर्ष 1985-86 की अवधि में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने की ओर निर्दिष्ट गतिविधियों में परिषद् की प्रमुख भूमिका तथा देश में स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा की कोटि में सुधार के लिए परिषद् के लगातार प्रयास प्रमुख रहे। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का ढांचा बनाने, प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के कार्यक्रम के संदर्भ में प्रारंभिक शैशव शिक्षा और गैर-औपचारिक शिक्षा के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण पैकेज तैयार करने, स्कूली शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं के लिए पाठ्यपुस्तक सामग्री व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करने, राष्ट्रीय एकता, शिक्षा के व्यावसायीकरण, स्कूलों में मापन और मूल्यांकन के तरीकों में सुधार की दिशा में केन्द्रित विचारों को बढ़ावा देने, शिक्षा प्रौद्योगिकी के उपयोग और अध्यापकों व अध्यापक-प्रशिक्षकों की व्यावसायिक योग्यता बढ़ाने की ओर निर्दिष्ट गतिविधियां, परिषद के, 1985-86 की अवधि में किए गए कार्यों के कुछ महत्वपूर्ण पक्ष थे। विभिन्न राज्यों/संघ. शासित प्रदेशों में कार्यान्वित की जा रही, शिक्षा के क्षेत्र में यूनिसेफ से सहायता प्राप्त परियोजनाओं, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना तथा कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूल अध्ययन (क्लास) परियोजना को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने के लिए परिषद्, केन्द्रीय समन्वयकारी एजेंसी की भूमिका भी निभाती रही।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सूत्रण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सूत्रण में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार को तकनीकी एवं शैक्षिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए परिषद् ने कई कार्य किए। परिषद् ने, शिक्षा नीति सूत्रण से सम्बद्ध अनुसंधान अध्ययनों की समीक्षा सहित, स्कूली शिक्षा के लगभग सभी क्षेत्रों के बारे में लगभग 25 दस्तावेज़ तैयार किए, बीसियों राष्ट्रीय संगोष्ठियां और कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इन दस्तावेज़ों और क्रमशः, प्रारंभिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा शिक्षा व्यावसायीकरण पर हुई तीन राष्ट्रीय संगोष्ठियों की रिपोर्टों व सिफारिशों से नई नीति के प्रमुख ज़ोरदार मुद्दों की पहचानने और उनकी प्राथमिकता तय कर सकने के लिए एक विस्तृत ढांचा तैयार करने में सहायता मिली। इनके अतिरिक्त, परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों को, शिक्षा की नई राष्ट्रीय नीति के बारे में राष्ट्रीय मतैक्य पर पहुंचने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य-स्तरीय एजेंसियों द्वारा आयोजित अनेक संगोष्ठियों तथा बैठकों में भाग लेने के लिए भेजा गया।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा

परिषद् ने राज्य/संघ शासित प्रदेश शिक्षा प्राधिकरणों के साथ जुटकर प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यक्रम-एक ढांचा* शीर्षक के एक दस्तावेज़ को अन्तिम रूप दिया। यह दस्तावेज, राज्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों पर आयोजित संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के द्वारा राष्ट्रीय मतैक्य पर पहुंचने के, तीन वर्षों के अथक प्रयासों का परिणाम है। परिषद् द्वारा संगठित आंतरिक संचालन दल द्वारा, पाठ्यक्रम के अभिज्ञात मसलों पर, 1985 में हुई चार क्षेत्रीय संगोष्ठियों और एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में विचार-विमर्श हुआ। इन संगोष्ठियों में की गई सिफारिशों के आधार पर बनाए गए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के ढांचे के मसौदे पर, जनवरी 1986 में हुई राष्ट्रीय स्तर की बैठक में और विचार किया गया और इस बैठक में भाग लेने वाले विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों को ध्यान में रखते हुए इसमें संशोधन करके अन्तिम रूप दिया गया। अन्तिम रूप दिया गया यह दस्तावेज परिषद् के अध्यक्ष और मानव संसाधन विकास मंत्रालय को जनवरी 1986 में सौंपा गया। इसके बाद, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए परिषद् द्वारा शुरू किए जाने वाले कार्यक्रमों की तफसील तैयार करने के लिए 6 कार्यकारी दल बनाए गए जो क्रमशः प्रारंभिक शिक्षा, विज्ञान शिक्षा, अध्यापक-प्रशिक्षण (सेवा पूर्व एवं सेवाकालीन), व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा प्रौद्योगिकी और भाषाओं के अध्यापन से सम्बद्ध थे।

प्रारंभिक शैशव शिक्षा

यूनीसेफ से सहायता प्राप्त परियोजनाओं, बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी एम एल) और प्रारंभिक शैशव शिक्षा (ई.सी.ई.) के अन्तर्गत,प्रारंभिक शैशव शिक्षा के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने और प्रारंभिक शैशव शिक्षा में लगे अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और पर्यवेक्षण कार्मिकों के प्रयोग के लिए प्रशिक्षण पैकेज तैयार करने से संबंधित अनेक कार्य किए गए। सी.एम.एल. परियोजना के अंतर्गत प्रारंभिक शैशव शिक्षा के लिए चित्र पुस्तकें, श्रव्य/दृश्य: कार्यक्रम और स्लाइड टेप कार्यक्रम तैयार किए गए। ई.सी.ई. परियोजना के कार्य के अंश के रूप में केन्द्रीय स्तर पर, अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के प्रयोग के लिए तीन पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई, दो पुस्तिकाएं प्रकाशनार्थ भेजी गई और दस पुस्तिकाओं को प्रकाशन के लिए

अन्तिम रूप दिया गया। इनके अतिरिक्त, ई.सी.ई. परियोजना में भाग में लेने वाले राज्यों/संघशासित. प्रदेशों ने, ई.सी.ई. केन्द्रों में दाखिल बच्चों के प्रयोग के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में अनेक शिक्षा सामग्रियां तैयार कीं।

गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए, सीखने-पढ़ने की उपयुक्त सामग्री तैयार करना, 1985-86 में परिषद् का एक महत्वपूर्ण कार्य बना रहा। भारत सरकार द्वारा प्रायोजित गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत मिडिल स्तर (कक्षा 6 से 8 के समकक्ष) के लिए स्थापित गैर-औपचारिक शिक्षा केन्द्रों में भर्ती, सीखने वालों के प्रयोग के लिए शिक्षा सामग्रियों का एक पैकेज तैयार किया गया। राज्यों में कार्यान्वित गैर-औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन के लिए, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् और राष्ट्रीय शिक्षा नियोजन और प्रशासन संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से शुरू किए गए अध्ययन से संबंधित कार्य भी इस वर्ष में शुरू किए गए।

यूनिसेफ से सहाता प्राप्त परियोजना 'प्राथमिक शिक्षा के लिए व्यापक पहुंच (केप)' के अन्तर्गत स्थापित सीखने के केन्द्रों में भर्ती, सीखने वालों के प्रयोग के लिए परिषद् ने हिंदी में चार गुटके और गणित में तीन गुटके तैयार किए। इनके अतिरिक्त केप परियोजना में भाग लेने वाले विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों ने लगभग 60 गुटकों को प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया। इनमें से 30 गुटके प्रकाशित हो चुके हैं। केप परियोजना के अन्तर्गत, 1985-86 में बिहार में 93, उड़ीसा में 70 और तमिलनाडु में 73 सीखने के केन्द्र स्थापित किए गए। परियोजना के पहले चरण के बाह्य मूल्यांकन के लिए आंकड़े इक्ट्ठे करने का काम बड़ौदा के एम० एस० विश्वविद्यालय के, उन्नत शिक्षा अध्ययन केन्द्र ने पूरा किया। इसी प्रकार, यूनिसेफ से सहायता प्राप्त परियोजना 'सामुदायिक शिक्षा में विकास गतिविधियां और भाग लेना (डी .ए.सी.ई.पी.)' के बाह्य मूल्यांकन का कार्य पटना के ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान ने पूरा किया और मूल्यांकन, अध्ययन की कार्यरत 'डी.ए.सी.ई.पी.- एक मूल्यांकन' शीर्षक रिपोर्ट मानव संसाधन विकास मंत्रालय को दी।

पाठ्यपुस्तकीय व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना

परिषद् की 1985-86 की गतिविधियों में प्रमुख, स्कूली शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं में विद्यार्थियों और अध्यापकों के प्रयोग के लिए पाठ्यपुस्तकें, पूरक पठन सामग्री और अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना था। इनमें से कुछ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के प्रगाढ़ सहयोग से तैयार की गई। प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप से दी गई पाठ्यपुस्तकों में, दसवीं श्रेणी के लिए भौतिकी, रसायन, गणित और जैविकी की पाठ्यपुस्तकें, दसवीं श्रेणी की भूगोल की पाठ्यपुस्तक, नवीं व दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए अर्थशास्त्र की तीन पुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के हिंदी कोर, पाठ्यक्रम के लिए दो पाठ्यपुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के चयनात्मक हिंदी पाठ्यपुस्तक के लिए दो पाठ्यपुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के कोर पाठ्यक्रम के लिए संस्कृत की पाठ्यपुस्तकें, बारहवीं श्रेणी के अंग्रेजी (कोर पाठ्यक्रम) की एक पूरक पाठमाला और ग्यारहवीं व बारहवीं श्रेणी के लिए राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, प्रमुख हैं। प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दी गई अन्य पाठ्यपुस्तकीय सामग्री में, छठी श्रेणी के लिए उर्दू की पाठ्यपुस्तक, तीसरी श्रेणी के लिए हिंदी (दूसरी भाषा के रूप में) की पाठ्यपुस्तक और नवोदय विद्यालयों में प्रयोग के लिए छठी श्रेणी की हिंदी की पाठ्यपुस्तक शामिल हैं।

भारत की युवा पीढ़ी में, शिक्षण पैकेजों द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए परिषद् की गतिविधियों के भाग के रूप में परिषद् ने लगभग 80 दृश्य पेनलों वाली एक एलबम निकाली जिसमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अनेक घटनाओं आदि के बारे में संक्षिप्त ब्यौरा भी दिया गया था। 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम — दृश्य सामग्री और दस्तावेज़' नामक प्रकाशन, पंचवर्षीय अनुसंधान परियोजना का परिणाम है और इसे भारत की स्वतंत्रता के लिए हुए शानदार संग्राम को प्रतिबिम्बित करने वाला एक जबरदस्त प्रकाशन माना गया है। संस्था के पुस्तकालयों, स्कूल के पुस्तकालयों और श्रेणी कक्षों में प्रदर्शन के लिए उपयुक्त, तीन विभिन्न संस्करणों में निकाली गई इस एलबम की, इसके उच्च कोटि के उत्पादन के लिए काफी तारीफ की गई है। इस एलबम का विमोचन, केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री एवं अध्यक्ष, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद्, श्री पी० वी० नरसिंह राव ने 24 दिसम्बर 1985 को किया। 'सीखने के लिए पढ़ना' परियोजना के अन्तर्गत बच्चों के लिए पठन सामग्री तैयार करने से संबंधित गतिविधियां इस वर्ष में जारी रहीं। 1985 के अन्त तक, छोटे बच्चों और 11-14 की आयु वर्ग के बच्चों के प्रयोग के लिए 31 शीर्षक प्रकाशन के लिए प्रेस में भेजे गए।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा

परिषद् ने, राष्ट्रीय एकता में रुकावट बनने वाली सामग्री को पाठ्यपुस्तकों में से निकालने के इरादे से स्कूल की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन से संबंधित अपनी गतिविधियां जारी रखी। राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों के सहयोग से परिषद् द्वारा तैयार किए गए मार्गदर्शनों के आधार पर विभिन्न विषय क्षेत्रों में काफी संख्या में पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा की गई। परिषद् ने नमूना आधार पर पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन भी किया और पाठ्यपुस्तकों के लेखकों और समीक्षाकारों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। राष्ट्रीय एकता के विचार से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शन वाली एक पुस्तिका भी निकाली गई। परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय एकता के इरादे से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के कार्यक्रम को अब भाषाएं, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और समाजविज्ञान जैसे विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों के संबंध में एक लगातार कार्य के रूप में संस्थागत कर दिया गया है।

राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में निर्दिष्ट एक अन्य कार्यक्रम, अध्यापकों को 15 क्षेत्रीय भाषाओं के गानों के सामूहिक गायन की कला व तकनीकों में प्रशिक्षित करने के लिए शिविर आयोजित करना, रहा है। 1985-86 में, विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के स्तर की एजेंसियों के सहयोग से रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् ने, अध्यापकों को सामूहिक गायन में प्रशिक्षित करने के लिए 29 शिविर आयोजित किए। इन शिविरों में 19 राज्यों/संघशासित प्रदेशों के 1164 अध्यापकों ने भाग लिया। इन शिविरों ने और एक ऐसी पुस्तक के, जिसमें ये गाने अपनी-अपनी भाषालिपियों के व रोमन तथा देवनागरी लिपि में स्वरलिपि के साथ दिए गए हैं, और श्रव्य टेपों के, स्कूलों में प्रयोग के लिए उत्पादन और वितरण से, देश के अधिसंख्य स्कूलों में सामूहिक गायन को संस्थागत करने में सहायता मिली है।

स्कूलों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का अध्यापन

रा०शै०अनु० और प्र० परिषद् ने स्कूलों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अध्यापन पर एक रिपोर्ट तैयार की और स्कूली शिक्षा में स्तरित अवस्थाओं के लिए, स्वतंत्रता आंदोलन के पाठ्यक्रम के लिए सामान्य ढांचा और मार्गदर्शन तैयार करने से संबंधित सिफारिशें कीं। परिषद् ने, राज्यों/संघशासित प्रदेशों को उपलब्ध कराई जाने वाली, इस प्रकार की बेमिसाल सामग्री तैयार करने की जिम्मेदारी ली। स्वतंत्रता आंदोलन का अध्ययन, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का एक हिस्सा होगा और विभिन्न विद्याशाखाओं में होगा। इसे, भाषाओं, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र के अध्ययन में शामिल किया जाएगा। रिपोर्ट में, परिषद् में, स्वतंत्रता आंदोलन का एक स्थायी सैल बनाने का सुझाव दिया गया है, जिसमें, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डॉ० जी० सी० पाण्डे की अध्यक्षता में काम कर रहे कार्यकारी दल की सिफारिशों की विवेचना के लिए एक सलाहकार समिति हो।

परिषद् ने, स्कूली बच्चों के लिए, राष्ट्र नेताओं की जीवनियों का एक कोष निकालने का भी निर्णय किया है। रिपोर्ट में यह सिफारिश भी की गई कि 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम--दृश्य सामग्री तथा दस्तावेज' शीर्षक वाला, रा० शै० अनु० और प्र० परि० का प्रकाशन, देश के सभी स्कूलों को उपलब्ध कराना चाहिए।

शिक्षा का व्यावसायीकरण

परिषद् ने, प्रारंभिक और माध्यमिक अवस्थाओं में, सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादनशील कार्य (एस.यू.पी. डब्ल्यू.) के पाठ्यक्रम के प्रभावशील कार्यान्वयन के लिए तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए, राज्यों/संघशासित प्रदेशों को, आवश्यक शैक्षिक निवेश उपलब्ध करवाने के लिए अनेक कार्य हाथ में लिए। वर्ष 1985-86 में, परिषद् ने, व्यावसायिक अध्यापकों को अपने-अपने व्यवसाय में ज्ञान और विशेषज्ञता को अद्यतन बनाने के इरादे से, चार अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। विशेषज्ञता-प्राप्त संस्थाओं में, उनके ढांचों की सुविधाओं और विशेषज्ञता का उपयोग करके, चलाए गए इन पाठ्यक्रमों के द्वारा 100 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। अन्य आयोजित कार्यक्रमों में, शिक्षा के व्यावसायीकरण पर, राज्य स्तर के अधिकारियों के लिए पांच अभिविन्यास कार्यक्रम और एस. यू. पी. डब्ल्यू. पर राज्य/संघ शासित प्रदेश स्तर के प्रमुख व्यक्तियों के लिए चार अभिविन्यास कार्यक्रम शामिल हैं। इनके अतिरिक्त, विभिन्न व्यवसायों से संबंधित न्यूनतम व्यावसायिक योग्यता आधारित पाठ्यक्रम, स्वयं-शिक्षक तथा प्रायोगिक हस्तपुस्तिका, कार्यालय व्यवहार का प्रश्न बैंक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक अवस्थाओं के लिए पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रम और एस. यू. पी. डब्ल्यू. योग्यता आधारित पाठ्यक्रम बनाने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गईं और अनेक व्यवसायों से संबंधित शिक्षण सामग्री भी इस वर्ष में तैयार की गई और प्रकाशित की गई।

शिक्षा-मूल्यांकन

स्कूलों में मापन और मूल्यांकन के तरीकों में सुधार लाने के लिए परिषद् ने, शिक्षा मूल्यांकन से संबंधित विचारात्मक सामग्री तैयार करना, कसौटी संदर्भित परीक्षण तैयार करना और विभिन्न विषयों के लेखकों का प्रशिक्षण करना शुरू किया। तैयार की गई सामग्री में, नवीं व दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों व अध्यापकों के प्रयोग के लिए अंग्रेजी की 70 बोध प्रश्नावलियां, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए इतिहास का प्रश्न बैंक, +2 अवस्था में व्यावसायिक विषयों के मूल्यांकन की एक योजना, छठी श्रेणी के लिए विज्ञान का प्रश्न बैंक, प्रायोगिक भूगोल के यूनिट टेस्ट और प्रश्नावलियां, उच्चतर माध्यमिक श्रेणियों के लिए जीवन विज्ञान के नमूना प्रश्न, व्यावसायिक विषय आंतरिक मूल्यांकन की एक योजना और प्राथमिक अवस्था में शिक्षार्थियों को स्कूल न जाने की प्रवृतियों के मूल्यांकन की एक योजना शामिल है।

परिषद् ने विभिन्न विषयों में जांच सामग्री लेखकों और विभिन्न माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा आयोजित बाह्य परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र बनाने वालों के प्रशिक्षण के लिए 7/8 दिवसीय पांच कोर्स चलाए। इनके अतिरिक्त, परिषद् ने, माध्यमिक स्तर की बाह्य परीक्षाओं के सुधार के लिए राज्य-स्तरीय कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए आठ कोर्स, सशस्त्र सेना के कार्मिकों के लिए शिक्षा मूल्यांकन पर एक मास का एक प्रशिक्षण कोर्स, राज्य/संघशासित प्रदेश स्तरीय कार्मिकों के लिए शिक्षा मूल्यांकन पर एक मास का एक अखिल भारतीय प्रशिक्षण कोर्स, अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा चलाई जा रही शिक्षण संस्थाओं के स्टाफ के लिए शिक्षा मूल्यांकन पर दस दिन का एक कोर्स और चुनिंदा पब्लिक स्कूलों के स्टाफ के लिए मूल्यांकन प्रक्रमों पर पांच दिन का एक कोर्स भी आयोजित किए।

1985-86

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृति दिए जाने के लिए चुनाव करने के लिए दूसरे चरण की परीक्षा, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् ने 14 जुलाई 1985 को आयोजित की। देश भर के 29 केन्द्रों में रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् द्वारा आयोजित इस दूसरे चरण की परीक्षा में, अक्तूबर-नवंबर 1984 में राज्यों/संघशासित प्रदेशों द्वारा ली गई लिखित परीक्षा के आधार पर दसवीं श्रेणी के चुने गए 2849 विद्यार्थी बैठे। रा० प्र० खो० छात्रवृत्तियां दिए जाने के लिए कुल मिला कर, सामान्य वर्ग के 680 प्रत्याशी और अनुसूचित जाति/जनजाति के बच्चों के लिए आरक्षित वर्ग में से 70 प्रत्याशी चुने गए।

शैक्षिक सर्वेक्षण

परिषद् ने, उचित शिक्षा कार्यक्रम बनाने के लिए आंकड़ा आधार में सुधार लाने के लिए अपनी गतिविधियां जारी रखीं। इस वर्ष में, स्कूलों में उपलब्ध सुविधाओं से संबंधित चार अध्ययन शुरू किए गए। इनमें, माध्यमिक और उच्चतर, माध्यमिक स्कूलों की विज्ञान प्रयोगशालाओं का गहन अध्ययन असम, गुजरात, हरियाणा और तमिलनाडु राज्यों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों की पुस्तकालय सुविधाओं और उनके उपयोग का नमूना अध्ययन, बिहार, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और मध्यप्रदेश राज्यों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल भवनों का गहन अध्ययन, और उड़ीसा में, समाज के अनुसूचित जातियों जैसे कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा सुविधाओं का सर्वेक्षण शामिल है। नमूना सर्वेक्षण करने की क्रियाविधि पर, राज्य स्तर के कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए चार सात दिवसीय कोर्स 1985-86 के दौरान आयोजित किए गए

शिक्षा प्रौद्योगिकी

शिक्षा प्रौद्योगिकी और सीखने के दूरस्थ तरीकों, जैसे शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने और शिक्षा के लिए विस्तृत पहुंच बनाने के लिए रेडियो व टेलीविजन का प्रयोग, के उपयोग की ओर निर्दिष्ट अनेक परियोजनाएं और कार्यक्रम, राज्य शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थानों (एस.आई.ई.टी.) के सहयोग से केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान ने शुरू किए। सी. आई. ई. टी. ने निर्माण की दृष्टि से आकाशवाणी बंगलौर के शैक्षिक प्रसारणों के संबंध में अनुसंधान अध्ययन पूरा किया और शैक्षिक रेडियो के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने का काम जारी रखा। इसने शैक्षिक दूरदर्शन (ई.टी.वी.) कार्यक्रमों की प्रसारण-पूर्व जांच और प्राथमिक स्कूलों के बच्चों व अध्यापकों के लिए इनसेट के माध्यम से प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी प्रारंभ किया। सी.आई.ई.टी. ने, इनसेट- I बी की सुविधाओं के प्रयोग से प्रसारण के लिए 89 शै० दूरदर्शन कार्यक्रम तैयार किए। इनमें, 5-8 वर्ष के आयु वर्ग के और 9-11 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों में से प्रत्येक वर्ग के लिए 33 कार्यक्रम और अध्यापकों के लिए 23 कार्यक्रम शामिल हैं। इसने 58 श्रव्य कार्यक्रम तैयार किए जिनमें से 25 कार्यक्रम, उड़ीसा के बच्चों को, दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने के थे।

सी.आई.ई.टी. ने राज्य/संघशासित प्रदेश स्तरीय एजेंसियों की सहायता से, राज्य स्तरीय कार्मिकों के लाभ के लिए श्रव्य तथा शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम के निर्माण पर अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। 1985-86 में आयोजित कार्यक्रमों में, शैक्षिक कार्य के लिए पांडुलिपि लिखने और श्रव्य/आकाशवाणी कार्यक्रमों के निर्माण पर एक मास का समेकित प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षिक दूरदर्शन निर्माण और तकनीकी कार्यों पर छह सप्ताह का एक प्रशिक्षण कोर्स, तकनीकी कार्य संचालन, स्क्रिप्ट लेखन और चित्रांकन पर एक मास का एक प्रशिक्षण कोर्स और ई.टी.वी. के कार्यक्रम निर्माण पर दस दिन का एक सेवाकालीन प्रशिक्षण शामिल है। अन्य आयोजित कोर्सों में, राज्यों/संघशासित प्रदेशों के अध्यापक शिक्षकों के लिए शिक्षा प्रौद्योगिकी के दो सप्ताह वाले पांच प्रशिक्षण कोर्स फोटोग्राफी पर दो सप्ताह का एक प्रशिक्षण कोर्स और दूरस्थ शिक्षा के लिए पाठ लिखने पर दस दिन के दो अभिविन्यास कार्यक्रम शामिल हैं।

अध्यापक शिक्षण

अध्यापक शिक्षण के क्षेत्र में रा० शै० अनु० प्र० परिषद् ने बी. एड. विद्यार्थियों के गुण अभिविन्यास, भारत में अध्यापकों की स्थिति और अनुसूचित जाति/जनजाति के अध्यापक प्रशिक्षुओं के आत्म प्रतिबोध और समायोजन के बीच संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन तथा उनकी उपलब्धि पर अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य जारी रखा। राज्यों में प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों तथा माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की सेवाकालीन शिक्षा की स्थिति से संबंधित अध्ययन पूरा किया गया और 1985-86 के दौरान ही भारत में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा के चौथे राष्ट्रीय सर्वेक्षण से संबंधित कार्य किए गए। सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षण कार्यक्रमों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए कार्यशालाएं/कार्यकारी दलों की बैठकें आयोजित की गई। जो सामग्री तैयार करने के लिए कार्यकारी दलों की बैठकें हुई, उसमें एम. एड विद्यार्थियों के लिए अध्यापक शिक्षण की स्रोत पुस्तक, माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तक, प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए पर्यावरणीय अध्ययनों से संबंधित अतंर्वस्तु और तरीकों की पाठ्यपुस्तक, माध्यमिक (सकेंडरी) अध्यापक प्रशिक्षुओं के सुयोग के लिए सामाजिक विज्ञान अध्यापन की अतंर्वस्तु तथा तरीकों को पाठ्यपुस्तक, अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए गुण अभिविन्यस्त शिक्षण की हस्तपुस्तिका, माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए गैर-औपचारिक शिक्षा की स्रोत पुस्तक और महाविद्यालय अध्यापन की एक स्रोत पुस्तक शामिल है।

रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् ने, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित 'सेवारत स्कूल अध्यापकों के प्रशिक्षण की राष्ट्रीय योजना के अन्तर्गत 1986-87 के शिक्षा सत्र में लगभग 5 लाख

अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए विस्तृत कार्यक्रम डिज़ाइन तैयार किया। राष्ट्रीय एकता, शिक्षा में बच्चे की केन्द्रीयता, शिक्षण की आधुनिक विधियां, कार्य अनुभव, सतत और विस्तृत मूल्यांकन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सूत्रण के लिए प्रयास के समर्थन में तैयार किए गए दस्तावेज़ों में बताए गए तुरंत ध्यान दिए जाने वाले क्षेत्रों के मामलों पर परिषद् ने 30 माड्यूल तैयार किए। इनसेट- I बी द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं में दूरदर्शन प्रसारण के रूप में संचार माध्यकों के समर्थन की योजना भी बनाई गई।

1985-86 के दौरान परिषद् ने अध्यापकों की व्यावसायिक योग्यता सुधारने के लिए विभिन्न राज्यों में बनाए गए सतत शिक्षा केन्द्रों की गतिविधियों का समन्वय करने का काम जारी रखा, सतत शिक्षा केन्द्रों की गतिविधियों और प्रगति का जायज़ा लेने और भविष्य में रा० शि० कें० के प्रभावशाली उपयोग के लिए नीतियां बनाने के लिए अध्यापकों के स० शि० के० के समन्वयकों/अवैतनिक निदेशकों के लिए चार क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए गए।

परिषद् द्वारा चलाए जा रहे चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, एक-वर्षीय बी० एड० कोर्स, बी० ए० एड० या बी० ए० बी० एड० डिग्री और बी० एस-सी० एड० या बी एस-सी० बी० एड० डिग्री दिलाने वाला चार-वर्षीय समेकित अध्यापक शिक्षण कार्यक्रम और एक-वर्षीय एम० एड० कोर्स चलाते रहे। भुवनेश्वर और मैसूर के क्षे० शि० म० में दो-वर्षीय एम० एस-सी० एड० कोर्स भी चलते रहे। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में चार-वर्षीय समेकित कोर्स में कुल भर्ती क्रमशः 236, 379, 489 और 344 थी जबकि बी० एड० कोर्स में क्रमशः 247, 127, 450 और 77 थी। अजमेर व भुवनेश्वर के क्षे० शि० म० में प्रत्येक में एम० एड० में भर्ती 20 थी जबकि भोपाल व मैसूर में क्रमशः 10 व 25 थी। भुवनेश्वर में एम० एस-सी० (एड०) जीवनविज्ञान कोर्स में 20 की भर्ती थी जबकि मैसूर में भौतिकी, रसायन और गणित में एम० एस-सी० एड० में कुल भर्ती 102 थी। इसके अतिरिक्त अजमेर, भुवनेश्वर और भोपाल में बी० एड० दिलवाने वाले ग्रीष्मकालीन स्कूल तथा पत्राचार पाठ्यक्रम में क्रमशः 195, 582 और 220 प्रत्याशी दाखिल हुए जबकि क्षे० शि० म० भुवनेश्वर के सहायता प्राप्त मणिपुर उपकेन्द्र में 185 प्रत्याशी दाखिल हुए। क्षे० शि० म० ने स्कूली शिक्षा से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों पर विस्तार कार्यक्रम/कार्यशालाएं/संगोष्ठियां भी आयोजित कीं। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षे० शि० म० द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की कुल संख्या क्रमशः 15, 26, 15 और 35 थी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक क्षे० शि० म० के स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित अनुसंधान अध्ययन भी किए।

नवोदय विद्यालयों को तकनीकी सहायता

प्रत्येक जिले में नवोदय विद्यालय स्थापित करने की योजना शुरू करने के लिए भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्णय के अनुसरण में परिषद् ने अचिरस्थायी व्यवस्था के तौर पर दो स्कूल, एक झज्झर (हरियाणा) में और दूसरा अमरावती (महाराष्ट्र) में, स्थापित करने की जिम्मेदारी ली। परिषद् ने, नवोदय विद्यालयों के लिए पाठ्यक्रमों की रूपरेखा भी तैयार की और इन स्कूलों में नियुक्त प्रिंसीपल और अध्यापकों के पुनर्विन्यास के लिए कोर्स आयोजित किए। इन स्कूलों में दाखिले के लिए विद्यार्थियों को चुनने के लिए परिषद् ने दाखिला परीक्षाएं भी आयोजित कीं।

शिक्षण की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जाने वाले स्कूलों के स्टाफ का प्रशिक्षण

शिक्षण की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों के प्रबंधकों, प्रिंसीपलों और अध्यापकों के हित के लिए परिषद् के विभिन्न घटक यूनिटों ने 11 प्रशिक्षण अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में लगभग 300 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त, शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जा रहे स्कूलों को प्रोत्साहन सहायता उपलब्ध कराने के लिए पांच विश्वविद्यालयों को स्रोत केन्द्रों के रूप में अभिज्ञात किया गया। ये स्रोत केन्द्र उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, औरंगाबाद विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर और जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली में स्थित हैं।

जनसंख्या शिक्षा

राज्यों में राष्ट्रीय जनसंख्या परियोजना के कार्यान्वयन को तेज़ करने के लिए परिषद् ने उपाय शुरू किए। राज्य स्तर पर अध्यापकों और प्रमुख व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के अलावा परिषद् ने 'कार्य और चुनौतियां' शीर्षक का एक प्रकाशन और जनसंख्या जागरूकता परीक्षण निकाले। इनके अतिरिक्त *'भारत मेरे बच्चे, मेरा भविष्य'* शीर्षक की एक बहुरंगी एलबम प्रकाशित की गई जिसमें जनसंख्या की स्थिति पर बच्चों की पेंटिंग थी। विचार की दृष्टि से इसके महत्व और उत्पादन की भारत और विदेश, दोनों में ही प्रशंसा की गई।

कम्प्यूटर साक्षरता

कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूल में अध्ययन (क्लास) परियोजना के अन्तर्गत रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् व अन्य स्रोत केन्द्रों ने अनेक उन्नत स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इन नए देसी साफ्टवेयर पैकेजों का परीक्षण किया गया और 'क्लास' परियोजना के अन्तर्गत चुने गए स्कूलों में उन्हें जारी किया गया।

1985-86

शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन

शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन के क्षेत्र में परिषद् ने अपनी गतिविधियां जारी रखीं। 1985-86 में की गई अनुसंधान गतिविधियों में, 'हाई स्कूलों में पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के बालकों की मनोवैज्ञानिक विशिष्टताएं और शैक्षिक तथा व्यावसायिक नियोजन', 'शैक्षिक तथा व्यावसायिक नियोजन, जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और मनोवैज्ञानिक विशिष्टताएं, तथा 'शैक्षिक और व्यावसायिक धाराओं में विद्यार्थियों का व्यावसायिक बर्ताव और व्यावसायिक समायोजन' पर अध्ययन शामिल है। परिषद् ने शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन में अपना डिप्लोमा कोर्स चलाना जारी रखा और राज्य मार्गदर्शन ब्यूरो प्रमुखों की एक त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन, व्यवसायिक अध्यापकों को मार्गदर्शन में अभिविन्यस्त कराने के लिए स्रोत व्यक्तियों की एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला, स्कूलों में मार्गदर्शन और परामर्श में शिक्षा प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर एक पांच दिन का पुनर्बोधक कोर्स, सीखने और विकास पर तीन दस-दिवसीय समृद्धिकारक कोर्स, व्यवहार परिवर्तन तकनीकों के प्रयोग पर दस-दिन की दो कार्यशालाएं प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों की सर्जन सामर्थ्य को पहचानने और बढ़ावा देने पर अध्यापक शिक्षकों के लिए एक दस-दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स और माध्यमिक अवस्था के विद्यार्थियों में सर्जनात्मक प्रतिभा की पहचान और विकास पर एक 6 दिन का प्रशिक्षण कोर्स आयोजित किया।

असमर्थों की शिक्षा

इस वर्ष की अवधि में परिषद् ने असमर्थों की समेकित शिक्षा से संबंधित अनेक कार्य शुरू किए। वर्ष के दौरान शुरू की गई अनुसंधान गतिविधियों में से कुछ इस प्रकार हैं — विशेष शिक्षा में अनुसंधान की समीक्षा, असमर्थों के लिए समेकित शिक्षा के केस अध्ययन डिज़ाइन करना और श्रेणीकक्ष की पारिस्थिति की तथा शिशु उपलब्धि की असमर्थता के साथ बच्चों के समाकलन के प्रभावों पर एक सहकारी अनुसंधान परियोजना की गई अन्य गतिविधियों में, आई० ई० डी० योजना पर समन्वयकों और शिक्षा सचिवों का राष्ट्रीय सम्मेलन, विशेष शिक्षा में अनुसंधान प्रोत्साहन पर चार दिन की एक राष्ट्रीय कार्यशाला, असमर्थों के लिए सर्जनात्मक कलाओं पर पांच दिन की एक राष्ट्रीय कार्यशाला, नियमित स्कूलों में दृष्टि की खराबी वाले बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री और विधियों के समायोजन पर पांच दिन की एक कार्यशाला और नियमित स्कूलों में सुनने की खराबी वाले बच्चों की आवश्यकताओं के उपयुक्त शिक्षण सामग्री और विधियां बनाने के लिए पांच दिन की एक कार्यशाला का आयोजन तथा असमर्थों के लिए समेकित शिक्षा के स्रोत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए माड्यूलर शिक्षण सामग्री तैयार करना और असमर्थों के लिए समेकित शिक्षा पर प्रमुख कार्मिकों के लिए तीन मास का एक प्रशिक्षण कोर्स है।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा

अनु० जा०/अनु जनजा० वर्गों की शिक्षा पर अनुसंधान अध्ययनों से संबंधित गतिविधियां, परिषद् ने जारी रखीं। इनमें, 'अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के बीच परस्पर संबंध का एक अध्ययन,' 'उत्तर प्रदेश में दसवीं श्रेणी के अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को शिक्षा उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन,' 'प्राथमिक अवस्था में जनजातीय विद्यार्थियों के कमजोर और सशक्त पहलू निर्धारित करने के लिए उनके विषयवार प्रदर्शन का अध्ययन' और जनजातीय तथा गैर-जनजातीय स्कूलों के बीच भौतिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन शामिल है। परिषद् ने, जनजातीय इलाकों में स्थित प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक शिक्षकों के लिए एक-एक सप्ताह के दो प्रशिक्षण कोर्स, जनजातीय इलाकों के सेकंडरी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक शिक्षकों के लिए एक-एक सप्ताह के दो प्रशिक्षण कोर्स और जनजातीय इलाकों में गैर औपचारिक शिक्षा के कार्यान्वयन में लगे प्रमुख कार्मिकों के लिए एक-एक सप्ताह के दो अभिविन्यास कोर्स भी आयोजित किए।

नारी शिक्षा

1985-86 में, औपचारिक तथा गैर-औपचारिक शिक्षा में लड़कियों का दाखिला बढ़ाने के लिए राज्यों द्वारा अपनाई गई नीतियों से संबंधित दो अध्ययन किए गए। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (ने०बु०ट्र०) द्वारा तैयार किए गए बाल साहित्य, रा० शै० अनु० और प्र० परि० और तमिलनाडु राज्य द्वारा तैयार की गई भाषा की पाठ्यपुस्तकों व पूरक पठन सामग्री की, इन सामग्रियों में से लिंग भेद दूर करने के लिए, रा० शै० अनु० और प्र० प द्वारा तैयार की गई लिंग भेद दूर करने की मूल्यांकन कसौटी व मूल्यांकन जरियों के आधार पर, समीक्षा की गई। परिषद् ने, लिंग भेद दूर करने के दृष्टिकोण से, भाषाओं व अंग्रेजी की पाठ्य पुस्तकों व पूरक पठन सामग्री के मूल्यांकन के प्रमुख कार्मिकों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम और प्रारंभिक अवस्था में पाठ्यक्रम में नारी की स्थिति पर एक अन्य अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किया।

बच्चों के लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् द्वारा, राजस्थान सरकार के सहयोग से आयोजित चौथी राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन उदयपुर में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने 16 नवंबर, 1985 को किया। प्रदर्शनी का विषय 'विकास में देशीय प्रौद्योगिकी' था। इस प्रदर्शनी में विभिन्न राज्यों/संघशासित प्रदेशों के लगभग 400 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

1985-86

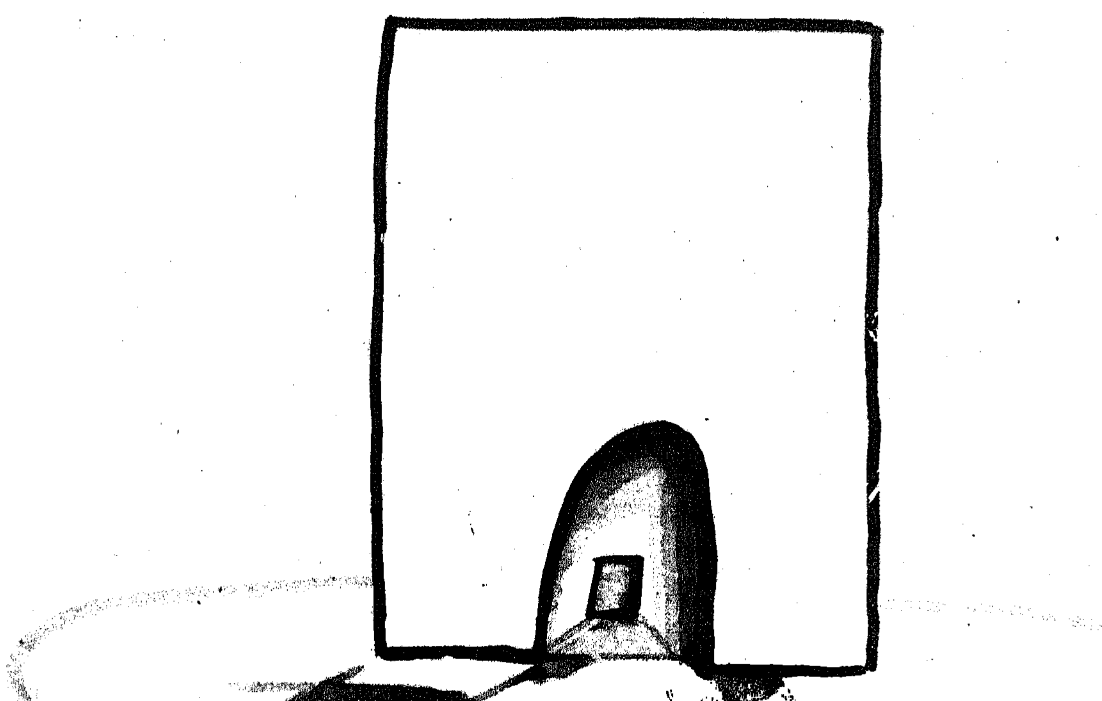
शैक्षिक अनुसंधान

रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् की शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति ने प्राथमिकता दिए जाने वाले अनुसंधान क्षेत्रों की पहचान का कार्य और स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर आवश्यकता आधारित अनुसंधान परियोजना चलाने व प्रायोजित करने का कार्य जारी रखा। 1985-86 में नौ अनुसंधान अध्ययन पूरे किए गए। देश में योग्य शोधकार्यों का एक समूह तैयार करने के इरादे से परिषद् ने अनुसंधान क्रियाविधियों पर दो कोर्स आयोजित किए। इसने, पी-एच० डी० के शोध प्रबंधों मोनोग्राफों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता देने की अपनी योजना भी जारी रखी। इस योजना के अन्तर्गत इस वर्ष 18 प्रकाशन निकाले गए और 18 को वित्तीय सहायता देने के लिए चुना गया।

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में दुतरफे सांस्कृतिक विनिमय कायक्रमों के अंगों के कार्यान्वयन के लिए, परषिद् एक प्रमुख एजेंसी की भूमिका निभाती रही। वर्ष 1985-86 में विभिन्न देशों से अनेक प्रतिनिधि मण्डल और विशेषज्ञ, रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् आए। परिषद् ने अनेक यूनेस्को प्रायोजित परियोजनाएं/कार्यक्रम हाथ में लिए और विकास के लिए शिक्षा नवाचारों के एशिया एवं प्रशान्त क्षेत्रीय कार्यक्रम (एपीड) के सम्बद्ध केन्द्र के रूप में तथा शिक्षा नवाचारों के राष्ट्रीय विकास दल (एन. डी. जी.) के सचिवालय के रूप में प्रमुख भूमिका निबाही।

1985-86 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन. आई. ई.) के विभिन्न विभागों तथा रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् के अन्य घटक एककों द्वारा की गई गतिविधियों/कार्यक्रमों का विवरण बाद के अध्यायों में दिया गया है।



3

स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा

शैशवकालीन शिक्षा से संबंधित अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण, प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम और अनौपचारिक शिक्षा का नवीकरण, स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी०पी०एस०ई०ई०) के मुख्य क्रियाकलाप हैं। यह विभाग प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के सन्दर्भ में शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में चल रही यूनिसेफ द्वारा सहायता-प्राप्त परियोजनाओं के कार्यान्वियन में एक केन्द्रीय, तकनीकी और समन्वयकारी अभिकरण के रूप में कार्य करता आ रहा है।

शैशवकालीन शिक्षा

शैशवकालीन शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का विकास, स्कूलपूर्व अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियों का विकास और स्कूलपूर्व अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों व शैशवकालीन शिक्षा कार्यक्रमों में जुटे पर्यवेक्षण स्टाफ का प्रशिक्षण इस वर्ष जारी रखे गये। इन क्रियाकलापों को निम्नलिखित विशिष्ट परियोजनाओं और कार्यक्रमों के अन्तर्गत सम्पन्न किया गया।

शिशु माध्यम प्रयोगशाला (सी०एम०एल०)

यूनीसेफ सहायता-प्राप्त परियोजना के अधीन शिशु माध्यम प्रयोगशाला (सी०एम०एल०) संबंधी मुद्रण विकास, श्रव्य और शैक्षिक व मनोरंजक मूल्य की श्रव्य सामग्रियों वाले क्रियाकलापों को हाथ में लिया गया। इसी परियोजना के अन्तर्गत शैशवकालीन शिक्षा तथा साथ-ही-साथ स्कूलपूर्व अध्यापकों और अध्यापक-शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु चित्र-पुस्तकें, श्रव्य कार्यक्रम, वीडियो कार्यक्रम और स्लाइड-टेप कार्यक्रम विकसित किये गये।

दस-दस दिनों की दो कार्यशालाएं बाल-पुस्तकों की लिखावटों के विकास के लिए तथा श्रव्य कार्यक्रमों के निर्माण हेतु आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में विकसित की गई लिखावटों की समीक्षा की गई और उन्हें चित्र-पुस्तकों और श्रव्य टेपों के रूप में प्रकाशनार्थ अंतिम रूप दिया गया। अन्य विकसित की गई सामग्रियों में स्कूलपूर्व गतिविधियों से संबंधित दो वीडियो कार्यक्रम थे। शैशवकालीन परियोजना में सहभागी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों को पहले निर्मित की गई कुछ स्लाइड-टेप कार्यक्रमों की प्रतियां बनवाकर प्रसारार्थ भेजी गईं।

शैशवकालीन शिक्षा (ई०सी०ई) परियोजना

यूनीसेफ सहायता-प्राप्त शैशवकालीन शिक्षा (ई०सी०ई०) परियोजना के अन्तर्गत राज्यों को शैशवकालीन शिक्षा एकक स्थापित करने या मजबूत करने, अध्यापक शिक्षकों और स्कूलपूर्व अध्यापकों को प्रशिक्षण देने, पर्यवेक्षकों तथा शैक्षिक प्रशासकों को शैशवकालीन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के अनुरूप तैयार करने और 3-8 आयुवर्ग के बच्चों के लिए मौलिक अधिगम व खेल सामग्री विकसित करने हेतु सहयोग प्रदान किया गया। वर्ष 1985 में यह परियोजना 8 राज्यों – बिहार, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तरप्रदेश में कार्यान्वित की गई। प्रत्येक सहभागी राज्य में परियोजना के कार्यान्वियन हेतु 5 अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान और 65 शैशवकालीन शिक्षा केन्द्र लिये गये थे। 1985-86 में उत्तरप्रदेश को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में इ०सी०ई० अध्यापकों का प्रशिक्षण पूरा किया गया। **सहभागी राज्यों में परियोजना के प्रभावी अनुवीक्षण और मूल्यांकन हेतु** उचित प्रोफार्मा विकसित किये गये तथा वितरित किये गये।

इस परियोजना के अधीन वर्तमान वर्ष में एक बड़ी संख्या में अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्रियां प्रकाशित की गई। अध्यापक शिक्षकों के लिए तीन शीर्षक प्रकाशित किये गये और दो पुस्तिकाओं की पाण्डुलिपियां प्रेस को मुद्रणार्थ भेजी गईं। दस पुस्तिकाओं को समीक्षित किया गया और प्रकाशन के लिए उन्हें अन्तिम रूप दिया गया।

इ०सी०ई० परियोजना में भाग ले रहे सभी राज्यों ने 3-8 आयुवर्ग के बच्चों के लिए प्रादेशिक भाषाओं में अनुदेशी सामग्रियों संबंधी गतिविधियां शुरू कीं। राज्यों द्वारा विकसित सामग्रियों को केन्द्रीय स्तर पर समीक्षित किया गया और प्रकाशन के लिए अन्तिम रूप दिया गया। स्कूलपूर्व बच्चों में भाषायी और संख्या कलाओं के विकास के लिए पुस्तिकाओं और कार्डों के छः सेट तमिल में विकसित और प्रकाशित किये गये। उड़िया में अध्यापकों के लिए 11 पुस्तिकाओं का एक सेट, 22 चित्र-पुस्तकें बच्चों के लिए और पोस्टरों व कार्डों के 7 सेट ज्ञानात्मक व भाषायी कौशलों की वृद्धि के लिए विकसित तथा मुद्रित किये गये। बच्चों के लिए 18 चित्र-पुस्तकें, कार्डों का एक सेट, कार्यनिष्पादन अभिलेखबद्ध करने के लिए अध्यापकों की हैंडबुकों व प्रगति नोटबुकों का एक सेट महाराष्ट्र द्वारा विकसित एवं प्रकाशित किया गया। अध्यापकों के लिए मार्गदर्शिकाओं का एक सेट, बच्चों के लिए चार चित्र-पुस्तकें और चित्र-कार्डों का एक सेट राजस्थान द्वारा प्रकाशित किया। कर्नाटक राज्य में बच्चों के लिए 8 चित्र-पुस्तकों का एक सेट, कन्नड़ में प्रकाशित किया गया। अन्य सामग्रियां जो विकसित की गईं. उनमें शामिल हैं बिहार में विकसित एवं प्रकाशित बच्चों के लिए कार्डों का और चित्र-पुस्तक का एक सेट, मध्यप्रदेश में प्रकाशित हिन्दी में एक अध्यापक मार्गदर्शिका और उत्तरप्रदेश में बच्चों के लिए 5 चित्र-पुस्तकों का एक सेट और अध्यापक मार्गदर्शिका।

1985-86

ई०सी०ई० परियोजना के अधीन चार राज्यों में ई०सी०ई० केन्द्रों केअध्यापकों के लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए गये। अन्य गतिविधियां जो सम्पन्न की गईं, उनमें शामिल हैं ई०सी०ई० केन्द्रों में हाजिर हुए बच्चों के अभिभावकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम। इस कार्यक्रम का मुख्य ध्येय था बच्चे के विकास के लिए शैशवकालीन शिक्षा के महत्व के प्रति जागृति सृजित करना। इन कार्यक्रमों का अभिभावकों द्वारा स्वागत किया गया।

दिल्ली नगर निगम के स्कूलों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना

यह विभाग दिल्ली नगर निगम के दस स्कूलों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन में रत है। इस वर्ष परियोजना में संलग्न सहायकों को शैशवकालीन शिक्षा की क्रियाविधि में तथा प्राथमिक शिक्षा के आरंभिक चरणों में इन पद्धतियों को शुरू करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त पुनश्चर्या कार्यक्रम प्रशासकों, पर्यवेक्षकों, स्कूलों के प्रमुखों और अध्यापकों के लिए आयोजित किये गये। अप्रैल 1985 में परियोजना का अनुवीक्षण शुरू किया ग्या और इससे संबंधित गतिविधियों के रूप में अध्यापकों के साथ मासिक बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों में परियोजना स्कूलों के प्रति अध्यापकों को गतिविधि-पद्धति और बाल-केंद्रित दृष्टिकोण के अभ्यास में मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस परियोजना के अन्तर्गत सम्पन्न की गई गतिविधियों से परियोजना स्कूलों के शिक्षण-अधिगम, विशेषकर क्लासरूम व्यवस्था, अनुदेशी कार्यक्रमों का नियोजन तथा अध्यापकों व नौसिखियों के मध्य और साथ ही बालकों के मध्य पारस्परिक प्रभाव में सुधार आया है।

बच्चे-बच्चे तक कार्यक्रम

यह कार्यक्रम दिल्ली नगर निगम के 14 स्कूलों में कार्यान्वित किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अनिवार्य रूप से प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के साथ मिलकर काम करना होता है जिससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधी साधारण नियमों से अवगत कराया जा सके ताकि वे न केवल अपना स्वास्थ्य सुधार सकें बल्कि अपने छोटे भाई-बहिनों में भी स्वास्थ्य-सुधार ला सकें। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सहभागी स्कूलों के अध्यापकों की वो कार्यशालाएं आयोजित की गईं ताकि उन्हें कार्यक्रम से संबंधित नियमों व दर्शन में अभिविन्यस्त किया जा सके और क्लासरूम स्थितियों के प्रयोगार्थ गतिविधिशीट विकसित की जा सके। इसके अतिरिक्त अध्यापकों के प्रयोगार्थ प्रेक्षण सारणी विकसित की गई। कार्यक्रम के सहभागी स्कूलों से प्राप्त फीडबैक ने पर्यावरणीय सफाई, बच्चों के वैयक्तिक स्वास्थ्य-विज्ञान आदि की दृष्टि से उल्लेखनीय सुधार दर्शाया।

खिलौने बनाने संबंधी राष्ट्रीय स्तर कार्यशाला

स्कूल-पूर्व तथा आरंभिक प्राथमिक स्तरों पर अध्यापकों के मध्य खिलौनों की महत्ता और शैक्षिक खेलों और खेल द्वारा शिक्षणविधि की जागृति विकसित करने के लिए, एक पांच-दिवसीय खिलौने बनाने संबंधी राष्ट्रीय स्तर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की गतिविधियां चल खिलौनों के इर्दगिर्द ही केंद्रित थीं। कार्यशाला में वे 15 स्कूलपूर्व और प्राथमिक स्कूल अध्यापक उपस्थित थे जो पहले इस विभाग द्वारा एन०सी०ई०आर०टी० के क्षेत्र सलाहकारों के सहयोग से आयोजित राज्यस्तर प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार विजेता थे। इस वर्ष खिलौने बनाने की प्रतियोगिता 17 राज्यों व संघशासित क्षेत्रों में आयोजित की गई।

अनुसंधान परियोजनाएं

बच्चों के ऊपर प्रभाव के दृष्टिकोण से विभिन्न माडलों के स्कूलपूर्व अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का एक मूल्यांकन अध्ययन किया गया। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य स्कूलपूर्व अध्यापक प्रशिक्षण के विभिन्न माडलों के अन्तरों का परीक्षण करना था, खासकर इस दृष्टिकोण से कि विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत प्रशिक्षित किये गये अध्यापक छोटे बच्चों के साथ कैसे रहे हैं और बच्चे कैसे लाभ उठाते हैं। अनुसंधान अध्ययन ने यह प्रकट किया कि अध्यापक प्रशिक्षण और बच्चों के कार्यनिष्पादन की अवधि के मध्य एक सकारात्मक सहसंबंध था। फिर भी आंगनवाड़ी बच्चों और दो वर्ष वाले प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों से पढ़े स्कूलपूर्व बच्चों के मध्य अन्तर कोई खास नहीं था।

बाल संचार प्रयोगशाला के निमित्त दिल्ली स्थित खानपुर की पुनर्वास कालोनियों के शहरी आंगनवाड़ियों के बच्चों का एक मध्यस्थता अध्ययन हाथ में लिया गया और उसे इसी वर्ष पूरा कर दिया ग्या। इस अध्ययन ने यह प्रकट किया कि ध्यापपूर्वक अभिविन्यास दिये जाने पर आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता उत्साहजनक स्कूलपूर्व शिक्षा कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं और बच्चों के भाषायी विकास और ज्ञानात्मक उत्पत्ति को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम

अनुसंधान और विकास गतिविधियां अनौपचारिक और समुदाय शिक्षा कार्यक्रमों से सम्बद्ध थीं तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में लगे कर्मचारी वर्ग का प्रशिक्षण/अभिवन्यास इस विभाग का एक महत्वपूर्ण कार्यक्षेत्र था। प्रमुख गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हैः

भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित किये जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में सहायता

यह विभाग राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा कार्यान्वित किये जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए प्रोटो-टाइप अनुदेशी सामग्रियों के विकास में संलग्न हैं। माध्यमिक स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए अनुदेशी सामग्रियां अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों में प्रयोग हेतु विकसित की गईं। पैकेजों के रूप में सामग्रियों को विकसित किया गया। अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों में नौसिखियों और अध्यापकों के प्रयोगार्थ सामग्रियों को

अधिगम-पैकेज और सहायक सामग्रियों के रूप में विकसित किया गया। अधिगम के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए इन अनुदेशी सामग्रियों का विकास किया गया। पाठ्यचर्या के विभिन्न अधिगम केंद्रों से निष्कर्ष निकाले गये। संवाद, कहानी, कविता, आख्यान और यात्रा-विवरण आदि के रूप में पाठों को विकसित किया गया। अनुदेशी सामग्रियों के पैकेज में हैं प्राकृतिक विज्ञान की तीन पुस्तकें, समाजविज्ञान की तीन पुस्तकें, भाषा की तीन पुस्तकें, गणित की तीन, नौसिखियों के प्रयोगार्थ नौ कार्य-पुस्तकें, दो अध्यापक मार्गदर्शिकाएं और एक प्रशिक्षण दीपिका। इनमें से दस शीषकों को पाठ्यचर्याओं के प्रारूप के साथ अंतिम रूप दिया गया और चार शीर्षक-जीवन और विज्ञान भाग-I, जीवन और विज्ञान भाग-II, भाषा सुमन भाग-III और हमारी भारती, हमारा जीवन प्रकाशित किये गये। इसके अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के प्रयोग के लिए उर्दू में अनुदेशी सामग्रियां विकसित की गईं। इनमें शामिल हैं भाषा, प्राकृतिक विज्ञान और समाजविज्ञान तथा इसकी मार्गदर्शिकाओं की द्वितीय एकीकृत पुस्तक। इनके अतिरिक्त दस पुस्तकों का एक सेट, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, प्रवेशिकाएं और इनकी मार्गदर्शिकाएं 1984-85 के प्रारंभ में प्रकाशित की गई।

"एन०एफ०ई०केंद्रों में प्रयुक्त अनुदेशी सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए उपकरणों व प्रविधियों का तैयार किया जाना" नामक अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत गतिविधियां जारी रखी गई। इस परियोजना के अधीन हिन्दीभाषी क्षेत्रों के अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के प्रयोगार्थ राष्ट्रीय और राज्यस्तर के विभिन्न अभिकरणों द्वारा विकसित की गई अनुदेशी सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए कई उपकरण विकसित किये गए। इसके अतिरिक्त अध्ययन-रिपोर्ट "अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों/प्रक्रियाओं की पहचान" को अंतिम रूप दिया गया और अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में सम्मिलित एजेंसियों में प्रसार के लिए उसे साइक्लोस्टाइल रूप में निकाला गया।

इस विभाग ने राज्य/संघशासित स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में संलग्न कर्मचारियों के लिए कुछ अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। इस वर्ष आयोजित किये गये प्रमुख कार्यक्रमों में राज्यों और स्वेच्छिक संस्थाओं से आए स्रोत व्यक्तियों के लिए 5 -दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम भी शामिल हैं। अनौपचारिक शिक्षा पर्यवेक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, शिक्षण विज्ञान की क्रियाविधि पर एन०एफ०ई० अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए 9 राज्यों से आए स्वेच्छिक संस्थाओं के स्रोत व्यक्तियों के लिए एक तीन-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गये। इनके अतिरिक्त राज्यों द्वारा चलाए जा रहे एन०एफ०ई० कार्यक्रम की समीक्षा करने तथा कार्यान्वयन अभिकरणों को पेश आ रही कठिनाइयों पर काबू पाने के लिए उपचारी पत्र खोजने हेतु, अनौपचारिक शिक्षा पर एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस दो-दिवसीय सम्मेलन में केंद्र-प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों को कार्यान्वित कर रहे राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुरोध पर इस विभाग ने राज्यों द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन और प्रशासन संस्थान के सहयोग से कार्यान्वित किये जा रहे अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन अध्ययन को हाथ में लिया है। अध्ययन के डिज़ाइन तथा इसके लिए अपेक्षित उपकरणों को अंतिम रूप दिया गया।

इस वर्ष अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में संलग्न कर्मचारियों के प्रशिक्षण व अभिविन्यास पाठ्यक्रमों में प्रयोगार्थ अनौपचारिक शिक्षा फिल्म के उत्पादन का कार्य जारी रखा गया। सी०आई०ई०टी (एन०सी०ई०आर०टी०) के सहयोग से निर्मित फिल्म की शूटिंग का कार्य पूरा किया गया।

प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी०ए०पी०ई)

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम विकास जोकि पाठ्यचर्या, अनुदेशी/अधिगम सामग्रियों, शिक्षण और मूल्यांकन पद्धति के बारे में विकेंद्रित है, से संबंधित गतिविधियों यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना "प्राथमिक शिक्षा के प्रति व्यापक पहुंच (सी०ए०पी०ई०)" जारी रखी गई। वर्ष 1985-86 में यह परियोजना 17 राज्यों और दो संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित की गई। सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में परियोजना के प्रथम चरण की गतिविधियां जिनमें प्रसंग-आधारित अधिगम सामग्रियों का विकास शामिल है, हाथ में ली गई। सम्पन्न की गई प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं अधिगम घटनाओं के प्रारूपों का संसाधन और इन अधिगम घटनाओं का प्रकाशन/निर्माण। लगभग 60 माड्यूल संसाधित किये गये और प्रकाशन के लिए उन्हें अंतिम रूप दिया गया। इन में 30 माड्यूलों को इस वर्ष प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा केंद्रीय स्तर पर आरंभकों के प्रयोग के लिए चार माड्यूल हिंदी में भी विकसित किये गये।

इस वर्ष परियोजना का द्वितीय चरण जिनमें अधिगम केंद्रों की स्थापना/ग्रहण शामिल है, शुरू किया गया। 93 अधिगम केंद्र बिहार में, 70 उड़ीसा में और 73 तमिलनाडु में स्थापित किये गये। अधिगम केंद्रों की स्थापना से संबंधित गतिविधियां उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश राज्यों ने भी शुरू कीं। 1986 के मध्य में इन राज्यों में अधिगम केंद्रों की स्थापना की संभावना है। अधिगम घटनाओं की समीक्षा एवं उन्हें अंतिम रूप देने हेतु और प्रशिक्षण सुविधाओं की क्रियाविधि में आर०डी०आर०सी०टीम सदस्यों का प्रशिक्षण देने हेतु कार्यशालाओं और पाठ्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। केंद्रीय स्तर पर इस विभाग ने हिन्दी में चार माड्यूल आरंभकों के प्रयोग के लिए भी विकसित किये कुल मिलाकर केंद्रीय स्तर पर 25 कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम आयोजित किये गये और लगभग 170 आर०डी०आर०सी०टीम सदस्यों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

1985-86

समुदाय शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां (डी०ए०सी०ई०पी०)

यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना "समुदाय शिक्षा और सहभागिता में विकासात्मक गतिविधियां" के अधीन उन समूहों, जो आंशिक रूप से या सम्पूर्ण रूप से किसी भी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करने के लिए वंचित हैं, की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शैक्षिक गतिविधियों के विकास से संबंधित गतिविधियां सम्पन्न की गईं। इस वर्ष परियोजना को 17 राज्यों और दो संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित किया गया। परियोजना के तहत लगभग 80 समुदाय शिक्षा केंद्रों ने कार्य किया। नामांकन के तौर पर, प्राप्त सूचना के अनुसार ऐसे 78 केंद्रों में कुल नामांकन 10,299 था। प्रत्येक केंद्र में औसतन लगभग 132 शिक्षार्थी थे, जिसमें से 0-3 आयुवर्ग के 33, 3-6 आयुवर्ग के 32, 6-14 आयुवर्ग के 33 और 15-35 आयुवर्ग और उससे ऊपर के 34 थे। नियमित नामांकन के अतिरिक्त, प्रत्येक केंद्र में कुछ अनियमित शिक्षार्थी भी थे जो अपनी सुविधा और आवश्यकतानुसार विशिष्ट कार्यक्रमों में हाज़िर होते रहे हैं।

इस परियोजना में सहभागी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा बहुत सी अधिगम/मार्गदर्शक और सम्पूरक पाठ्य सामग्रियां विकसित की गईं। राज्यों द्वारा चलाए जा रहे अनौपचारिक व प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों ने कुछ प्रकाशनों को व्यापक प्रयोग के लिए अपना लिया है। विभिन्न स्तरों पर इस परियोजना के कार्यान्वयन में शामिल परियोजना कर्मचारियों के लिए एक राष्ट्रीय स्तर अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 13 राज्यों व संघशासित क्षेत्रों के 41 सहभागी उपस्थित थे। मंडलीय स्तर पर तीन क्षेत्रीय व अभिविन्यास पाठ्यक्रम परियोजना समन्वयकों, खंड विकास अधिकारियों, प्राथमिक स्कूलों के मुख्याध्यापकों और समुदाय शिक्षा केंद्रों के प्रभारियों के लिए आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में 13 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के 187 सहभागी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त परियोजना कर्मचारियों के लिए तीन अन्तरराज्य भ्रमण आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम के अधीन उत्तर व पश्चिम के परियोजना समन्वयकों ने तमिलनाडु और पाण्डीचेरी के समुदाय शिक्षा केंद्रों को देखा और पूर्वी मंडल के समन्वयकों ने उत्तर प्रदेश के समुदाय शिक्षा केंद्रों को देखा जबकि पश्चिमी मंडल के समन्वयकों ने हिमाचल प्रदेश और जम्मू तथा कश्मीर के केंद्रों को देखा।

वर्ष 1984 में किये गये परियोजना के आंतरिक मूल्यांकन की रिपोर्टों को समेकित किया गया। 9 राज्यों और संघशासित क्षेत्रों ने रिपोर्टों को अंतिम रूप दिया जबकि अन्यों ने रिपोर्टों को अंतिम रूप देने के लिए गतिविधियां शुरू कीं। आंतरिक मूल्यांकन के जांच-परिणामों पर चर्चा करने के लिए तथा परियोजना के कार्यान्वयन में उचित युक्तियां खोजने के लिए विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों का राज्यस्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया। परियोजना का बाह्य मूल्यांकन ए०एन०सिन्हा, समाजविज्ञान संस्थान, पटना द्वारा सम्पन्न किया गया। "डी०सी०ई०पी० कार्यरत-एक मूल्यांकन" नामक मूल्यांकन अध्ययन की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

प्राथमिक शिक्षा का नवीकरण

वर्ष 1985-86 में इस विभाग की गतिविधियों का महत्वपूर्ण पहलू था प्राथमिक शिक्षा की प्रासंगिकता और गुणात्मक सुधार के लिए पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों का नवीकरण। इसके अतिरिक्त सहायक गतिविधियों जैसे पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता संबंधी पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के विकास की भी चल रही परियोजनाओं के अन्तर्गत जारी रखा गया।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी०ई०सी०आर०)

यूनीसेफ सहायता-प्राप्त चल रही परियोजना "प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी०ई०सी०आर०)" के अधीन विभिन्न समूहों के बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्राथमिक शिक्षा-पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के नवीकरण को जारी रखा गया। इस वर्ष इस परियोजना को 17 राज्यों व 6 संघशासित क्षेत्रों में कार्यान्वित किया गया। बहुसंख्यक राज्यों ने कक्षा 5 में नई अनुदेशी सामग्रियों को लागू किया, कुछ राज्यों ने कक्षा 4 तक और शेष ने कक्षा 3 तक। जिन राज्यों ने नई अनुदेशी सामग्रियों को इस वर्ष कक्षा 5 में लागू किया वे संभवतः अपना कार्य 1986 के अंत तक पूरा कर देंगे जबकि कुछ राज्यों में परियोजना 1988-89 तक जारी रखी जाएगी। इस परियोजना के अधीन विकसित की गई पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों को अनेक राज्यों ने राज्य शैक्षिक प्रणाली में व्यापक रूप से अनुप्राणित करने हेतु कई पग उठाए हैं। कुछ राज्यों जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, सिक्किम और तमिलनाडु और संघशासित क्षेत्रों जैसे लक्षद्वीप और मिज़ोरम ने प्राथमिक स्कूलों में पी०ई०सी०आर० परियोजना के अधीन विकसित की गई कुछ सामग्रियों को अपना लिया है। हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में पी०ई०सी०आर० परियोजना के तहत विकसित पाठ्यचर्या को आधार मानकर प्राथमिक स्तर की पाठ्चर्याओं को संशोधित किया गया है। इस परियोजना के अन्तर्गत विकसित की गई अनुदेशी सामग्रियों को इन राज्यों ने ग्रहण कर लिया है। इस परियोजना में सहभागी सभी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में काफी बड़ी संख्या में अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों को विकासात्मक पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों की क्रियाविधि में प्रशिक्षित किया गया। केंद्रीय स्तर पर इस परियोजना के कार्यान्वयन में सम्मिलित राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में कर्मचारियों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये गये। 52 परियोजना कर्मचारी इन कार्यक्रमों में शामिल हुए। इसके अतिरिक्त राज्यों/संघशासित क्षेत्रों द्वारा विकसित की गई अनुदेशी सामग्रियों की पाण्डुलिपियों की समीक्षा के लिए इस विभाग ने 9 कार्यशालाएं/बैठकें आयोजित कीं और प्रकाशन के लिए उन्हें अंतिम रूप दिया।

शिष्य-सीख की विशेषता और नामांकन और निरोध के संदर्भ में पी०ई०सी०आर० परियोजना के प्रभाव को मूल्यांकित करने के लिए "नामांकन, निरोध, निष्क्रियता और शिष्य उपलब्धि का एक अध्ययन"

परियोजना में सहभागी राज्यों में सम्पन्न किया गया। अध्ययन के अन्तर्गत कक्षा 1 से 4 में पढ़ाई कर रहे बच्चे गये। परियोजना स्कूलों के विद्यार्थियों तथा वे बच्चे जो साथ के परियोजना-रहित स्कूलों के हैं, दोनों की उपलब्धि का एक तुलानात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए तैयार किये गये टेस्ट परियोजना स्कूलों तथा साथ ही चुने हुए परियोजनारहित स्कूलों के बच्चों को दिये गये। इस परियोजना के अन्तर्गत संकलित आंकड़े वर्तमान वर्ष में संसाधित और विश्लेषित किये गये। यह अध्ययन 1986 के अंत तक पूरा हो जाने की आशा है।

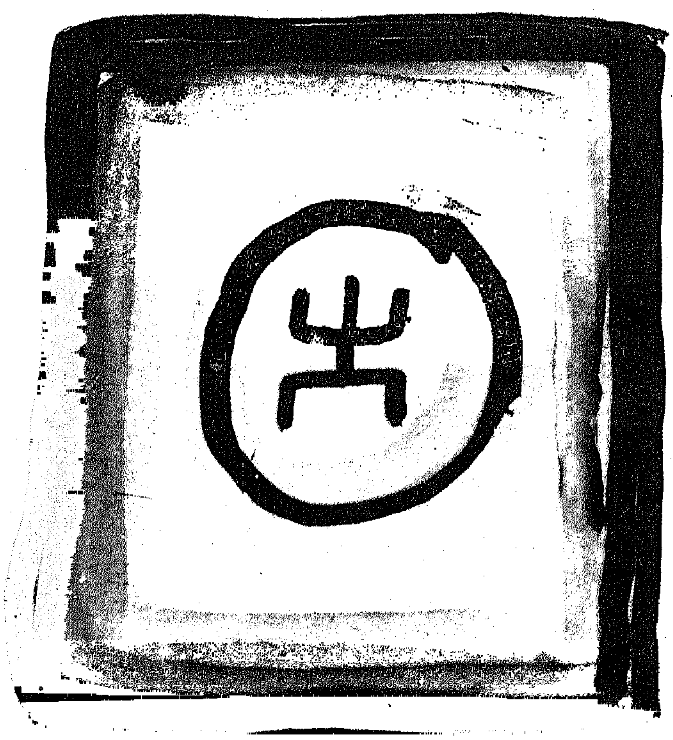
पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता (एन०एच०ई०ई०एस०)

यूनीसेफ सहायता-प्राप्त चालू परियोजना "पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता" (एन०एच०ई०ई०एस०) के तहत प्राथमिक स्कूल बच्चों, अध्यापकों और स्कूल से बाहर की लड़कियों और महिलाओं के लिए पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता पर पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्रियों के विकास से संबंधित गतिविधियां जारी रखी गईं। वर्ष 1985-86 में इस परियोजना को 9 राज्यों तथा एक संघशासित क्षेत्र में कार्यान्वित किया गया। इस परियोजना के कार्यान्वयन में प्रत्येक राज्य/संघशासित क्षेत्र के 100 प्राथमिक स्कूलों को सम्मिलित किया गया। वर्ष 1985-86 में परियोजना स्कूलों के अध्यापकों को एन० एच० ई० ई० एस० पाठ्यविवरण और अनुदेशी सामग्रियों में अभिविन्यस्त करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। इस परियोजना के अधीन अनुदेशी सामग्रियां और प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गईं। इस परियोजना में सहभागी बहुत से राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में 1-5 कक्षाओं की अनुदेशी सामग्रियों के विकास/प्रशिक्षण पैकेजों संबंधी गतिविधियां सम्पन्न की गईं। द्वार-द्वार समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम द्वारा समुदाय के सदस्यों को पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता संबंधी संदेश देने के लिए एक समान योजना बनाई गई। कुछ राज्यों में समुदाय सम्पर्क कार्यक्रम सम्पन्न किये गये और परियोजना एन०एच०ई०ई०एस० के अधीन विकसित पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों को राज्य प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में अनुप्राणित करने के लिए कई कार्रवाइयां शुरू की गईं।

अन्य गतिविधियां

इस विभाग ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रतिपादन के सन्दर्भ में प्रारंभिक शिक्षा पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। तीन-दिवसीय संगोष्ठी अक्तूबर 31 से नवम्बर 2, 1986 तक शिलांग, मेघालय में आयोजित की गई। संगोष्ठी में 66 सहभागी उपस्थित थे।

इस विभाग ने भूटान के एक यूनेस्को सदस्य को नौ-मासीय अनुरक्ति कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया और इण्डोनेशिया के दो यूनेस्को सदस्यों को एक दूसरे एक-मासीय अनुरक्ति कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया।



4

समाजविज्ञान एवं मानविकी शिक्षा

स्कूल स्तर पर पाठ्यचर्या के प्रतिपादन और कार्यान्वयन से संबंधित अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययन, पाठ्यविवरणों, समाजविज्ञान व मानविकी से संबंधित विभिन्न विषय क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकें व अन्य अनुदेशी सामग्रियों का विकास, अध्यापक शिक्षकों, अध्यापकों और स्कूल स्तर पर पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन में लगे अन्य कार्मिकों का प्रशिक्षण तथा राज्य/संघशासित क्षेत्र स्तर के अभिकरणों व संस्थाओं के सहयोग से विस्तार एवं प्रसार गतिविधियों का आयोजन समाजविज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी०ई०एस० एस०एच०) की मुख्य गतिविधियों में से कुछ हैं। विभाग कुछ विशेष परियोजनाओं के कार्यान्वयन में संलग्न रहा है और राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन के लिए केन्द्रीय तकनीकी, समन्वयकारी और अनुवीक्षण करने वाले अभिकरण के रूप में काम आ रहा है।

इस वर्ष में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि एलबम तैयार करना एवं उसका उत्पादन पूरा करना रहा है। इस एलबम में दृश्य सामग्रियां व प्रलेख हैं जो छोटे बच्चों के मध्य भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष संबंधी जागृति को प्रोन्नत करने में परिषद् के प्रयास के रूप में भारत के स्वतंत्रतासंग्राम को उजागर करते हैं।

विभाग का दूसरा महत्वपूर्ण योगदान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 से सम्बद्ध प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा विकसित करना रहा है। मुख्य विशेषताएं निम्न प्रकार हैं।

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे का विकास

स्कूली शिक्षा के लिए एक नया ढांचा विकसित करने की दृष्टि से एन०सी०ई०आर०टी० में 1985 के शुरू में एक आंतरिक अभ्यास किया गया जिसकी बदौलत राष्ट्रीय संगोष्ठी में चर्चाओं के लिए अनेक मामलों को पहचाना गया और फिर दिल्ली में मई 27-30, 1985 को यह संगोष्ठी सम्पन्न की गई। राष्ट्रीय संगोष्ठी की तात्कालिक अनुवर्ती कार्यवाही के रूप में पाठ्यचर्या चिंताओं वाली चार क्षेत्रीय संगोष्ठियां कलकत्ता, मद्रास, पुणे और उदयपुर में आयोजित की गईं। स्कूली शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर बहुत से लाभकारी दृष्टिकोण और व्यावहारिक सुझाव एकत्रित किये गये। दूसरी राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के प्रारूप को अंतिम रूप दिया गया।

इन संगोष्ठियों का विशिष्ट ध्येय राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या विषयक संग्रह करना था। कुछ मामले जिनपर विभिन्न जगहों पर चर्चा की गई, वे इस प्रकार हैं:

- सामान्य शिक्षा की अवधि
- विकल्पी पाठ्यक्रमों की वांछनीयता अथवा प्रतिकूलता
- संगोष्ठी प्रणाली
- पाठ्यक्रमों का वर्षक्रम से बंटवारा
- समान कोर पाठ्यचर्या
- पाठ्यचर्या व्यवस्था के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण
- विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों का स्थान व विस्तार
- पाठ्यचर्या सम्पादन व शिष्य मूल्यांकन

विस्तृत चर्चाओं के उपरांत विभिन्न पाठ्यचर्या मामलों पर सर्वसम्मति से फैसला किया गया और इन पाठ्यचर्या मामलों को एक दृष्टिकोण लेख के विकास के लिए एक नये पाठ्यचर्या ढांचे के लिए इस्तेमाल किया गया।

2. पाठ्यविवरण विकास

राष्ट्रीय पाठ्यविवरण विकास के अभ्यास के समान विभिन्न स्कूल विषयों में संशोधित पाठ्यविवरणों को विकसित करने के प्रयास किये गये। योग में कक्षा 6 से कक्षा 10 तक के पाठ्यविवरण का प्रारूप और संस्कृत में कक्षा 5 से कक्षा 10 तक एक संशोधित पाठ्यविवरण विकसित किया गया।

3. अनुदेशी सामग्रियों का विकास

पाठ्यपुस्तकों, सम्पूरक पाठशालाओं और दूसरी अनुदेशी सामग्रियों का विकास इस विभाग की प्रमुख गतिविधियों में से एक गतिविधि के रूप में जारी रही। पाठ्य और अनुदेशी सामग्रियों के विवरण निम्न प्रकार हैं:

विषय	शीर्षक	कक्षा	अभ्युक्तियां
हिन्दी (मातृभाषा के रूप में)	काव्य संचयन भाग– II (इलेक्टिव कोर्स) गद्य संचयन भाग- II (इलेक्टिव कोर्स) अभिनव काव्य भारती (कोर कोर्स) अभिनव गद्य भारती	12 वीं	सी.बी.एस.ई. द्वारा 1986-87 में विहित की जानी है।

1985-86

विषय	शीर्षक	कक्षा	अभ्युक्तियां
	(कोर कोर्स) संक्षिप्त इतिहास (कोर कोर्स)		
हिन्दी (द्वितीय भाषा के रूप में)	अरुण भारती भाग- III वर्कबुक अरुण भारती भाग- III	तीसरी	अरुण भारती भाग IV का प्रारूप भी विकसित किया गया है।
	हिन्दी टैक्स्टबुक फार नवोदय विद्यालय	छठी	
अंग्रेजी	सप्लीमेंट्री रीडर इन इंगलिश (कोर कोर्स)	12 वीं	सी.बी.एस.ई.कोर्स
	लेट अस एनरिच आवर इंगलिश (श्रृंखला में दो पुस्तिकाएं)		12 और पुस्तिकाओं की पाण्डुलिपियों को विकसित कराया गया।
संस्कृत	संस्कृत गद्य मंदाकिनी	12वीं	सी.बी.एस.ई.कोर्स
	टीचर्स गाइड्स फार संस्कृत टैक्स्टबुक "स्वस्ति"	पांचवीं से सातवीं	
उर्दू	टैक्स्टबुक आफ उर्दू फार क्लास 4	चौथी	
राजनीति विज्ञान	इंडियन कांस्टीच्यूशन एंड गवर्नमेन्ट	11वीं व 12 वीं	
भूगोल	फिज़ीकल ज्योग्राफी भौतिक भूगोल		
अर्थशास्त्र	इवेल्युएशन आफ इंडियन एकानोमी	9 वीं 10 वीं	हमारी अर्थव्यवस्था संबंधी एक परिचय।
	भारतीय अर्थव्यवस्था		राष्ट्रीय आय लेखाविज्ञान
	प्रवेशिक सांख्यिकी		आर्थिक सिद्धांत संबंधी परिचय
	एलीमेंट्री स्टेटिसटिक्स		(प्रकाशनार्थ प्रेषित)
जनसंख्या शिक्षा	टास्कस एंड चैलेंजेस	—	सामान्य पाठमाला
	पापुलेशन अवेयरनेस टैस्ट्स		
	इंडियाः माई चिल्ड्रन माई फ्यूचर	—	जनसंख्या स्थितियां संबंधी बाल-चित्रों का एलबम

उपर्युक्त अनुदेशी सामग्रियों के अतिरिक्त हिन्दी में तीन लिखाई पुस्तकों का एक सेट, संस्कृत श्लोकों के आदर्श पाठों के टेप तथा संस्कृत-पढ़ाई के चार्ट भी विकसित किये गये। परिषद् ने छात्र संस्कृत कोश, संस्कृत में सम्पूरक पाठमाला (सुभाषिताओं का संकलन) और +2 स्तर के राजनीतिक विचारकों के लिए संक्षिप्त जीवनी-रूपरेखाओं (115 राजनीतिक विचारक पहचाने जा चुके हैं) के विकास-कार्य को भी हाथ में लिया है।

भारत-स्वतंत्रता संघर्षः दृश्य एवं सामग्रियां

एक बृहत् प्रकाशन "भारत-स्वतंत्रता संघर्ष : दृश्य एवं प्रलेख" दिसम्बर 1985 में प्रकाशित किया गया। इस प्रकाशन में 82 दृश्य पैनेल हैं जो सारे काल और स्वतंत्रता-संघर्ष के विभिन्न पहलुओं और साथ ही पृष्ठभूमि के रूप में भारत पर ब्रिटिश की विजय की प्रक्रिया को समा लेते हैं। विभिन्न प्रकार के अधिकृत दृश्य, समकालीन समाचार कतरनों सहित, दृश्य पैनेलों में प्रयुक्त किये गये हैं। हरेक दृश्य पैनेल के अनुरूप एक प्रलेख पृष्ठ हैं जिसके लिए विभिन्न समकालीन स्रोत सामग्रियां इस्तैमाल की गई हैं।

4. अध्यापकों का प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास कार्यक्रम

(क) अल्पसंख्यक स्कूलों के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभाग ने शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए विभिन्न राज्यों के अल्पसंख्यक स्कूलों के हाई स्कूल/उच्चतर स्कूल स्तर के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया। विभाग द्वारा विकसित की गई सामग्रियां और पद्धतियां सहभागियों को स्पष्ट की गईं और अंग्रेजी शिक्षण के दृष्टिकोण से इन स्कूलों की विशेष समस्याओं पर चर्चा की गई।

(ख) हिन्दी में अभिविन्यास कार्यक्रम

रांची के अध्यापक प्रशिक्षण कालेज में छोटा नागपुर खंड के मूल आदिवासी अध्यापकों के लिए हिन्दी में एक अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के अध्यापकों ने भाग लिया।

(ग) अरुणाचल प्रदेश के मूल व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

डी०ई०एस०एस०एच० के अंग्रेज़ी संकाय ने अरूणाचल प्रदेश के मूल व्यक्तियों के लिए एक सप्ताह का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 37 अध्यापकों और शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। डी०ई०एस०एस०एच० द्वारा अरुणाचल प्रदेश के लिए तैयार किये गये अंग्रेज़ी में क्लास- I के किट पर चर्चा हुई और इन सामग्रियों को प्रयोग में लाने की विधियों और प्रविधियों को स्पष्ट किया गया।

(घ) नैतिक शिक्षा में अभिविन्यास कार्यक्रम

24 से 26 अक्तूबर, 1985 को पणजी में एस०आई०ई०, गोआ में एक नैतिक शिक्षा का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। संघशासित क्षेत्र गोआ के 35 अध्यापकों ने इसमें भाग लिया। चर्चित किये गये मामले बच्चों के सामाजिक, मानसिक, नैतिक और भावात्मक विकास से संबंधित थे।

(ङ) कला अध्यापक शिविर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उड़ीसा, कटक, डी०पी०आई०उड़ीसा, भुवनेश्वर, के सहयोग से विभाग ने 21-30 नवम्बर, 85 को बी०के०कालेज आफ़ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, भुवनेश्वर में एक कला अध्यापक शिविर आयोजित किया। उड़ीसा के सभी भागों से लगभग 60 कला अध्यापकों ने तथा अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं व शैक्षिक संस्थाओं से संबंधित कुछ अनुभवी कला अध्यापकों ने कई गतिविधियों जैसे कलाओं की प्रविधियों और रूपों तथा प्रायोगिक कला गतिविधियों से संबंधित व्याख्यानों, विवादों, प्रदर्शनों आदि में भाग लिया।

(च) प्रौढ़ शिक्षा के पर्यवेक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

समाज कल्याण पंचायत निदेशालय, मध्यप्रदेश सरकार, के सहयोग से विभाग ने 7 से 11 जून, 1985 को जबलपुर में मध्यप्रदेश शासन में कार्य कर रहे प्रौढ़ शिक्षा पर्यवेक्षकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का ध्येय यह था कि मध्यप्रदेश राज्य में प्रयुक्त की जा रही एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा विकसित शिक्षण अधिगम सामग्रियों के आगामी प्रयोग के लिए सहभागियों को अभिविन्यस्त किया जाए। प्रौढ़ शिक्षा के तीनों अंगों जागृति, साक्षरता और कार्यात्मकता के अतिरिक्त अन्य अनेक पहलुओं पर चर्चा की गई। प्रायोगिक कार्य, ग्रामीण प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों का भ्रमण और प्रदर्शन भी किये गये। कुल मिलाकर 30 पर्यवेक्षक, अधिकतर महिलाएं, पांच स्रोत व्यक्तियों सहित इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

(छ) प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र में कार्य कर रही महिला पर्यवेक्षकों के लिएअभिविन्यास कार्यक्रम

समाज कल्याण पंचायत निदेशालय (म०प्र०) के सहयोग से समाजविज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग ने एक अभिविन्यास कार्यक्रम पवारखेड़ा (होशंगाबाद) में 9-15 सितम्बर, 1985 को आयोजित किया। परिषद् द्वारा तैयार मध्यप्रदेश राज्य के प्रयोगार्थ अनुदेशी सामग्रियों के आगामी प्रयोग के लिए अभी हाल में नियुक्त महिला पर्यवेक्षकों को अभिविन्यस्त किया गया। प्रभावी शिक्षण हेतु सहभागियों ने शिक्षण सहायक सामग्रियां तैयार कीं और उन्हें ग्रामीण प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में प्रशिक्षित किया। कुल मिला कर 30 सहभागी, जिनमें तीन स्रोत व्यक्ति थे, कार्यक्रम में हाज़िर थे।

5. विशेष परियोजनाएं

यह विभाग समाजविज्ञान और मानविकी क्षेत्रों में कुछ विशेष परियोजनाओं में संलग्न है। 1985-86 में निम्नलिखित परियोजनाओं के अधीन कई गतिविधियां सम्पन्न की गईं।

बाल साहित्य संबंधी 23 वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता

(क) यह प्रतियोगिता हर दो वर्षों के बाद आयोजित की जाती है। बाल साहित्य संबंधी 23 वीं राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता 1984-85 में आयोजित की गई। दो आयुवर्गों 5-8 और 9-15 वर्ष से देश की 17 भाषाओं में प्रविष्टियां आमंत्रित की गई थीं। लगभग 412 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। पुरस्कार 36 थे लेकिन प्राप्त प्रविष्टियों में से केवल 21 को चुना जा सका। नकद पुरस्कार केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री कृष्ण चंद्र पंत ने 30 मई 1985 को एक समारोह में वितरित किये। अगली प्रतियोगिता 1986-87 में की जानी है।

(ख) सीखने के लिए पढ़ना

इस परियोजना के अन्तर्गत अभी तक 10 पुस्तकें अंग्रेज़ी में और 20 पुस्तकें हिन्दी में तैयार की जा चुकी हैं। लक्ष्य यह है कि इन पुस्तकों और इसी श्रृंखला की अन्य पुस्तकों के माध्यम से बच्चों के मध्य मनोरजंन और सूचना ग्रहण करने की दृष्टि से पढ़ने की अभिरुचि जागृत की जा सके।

अब तक 31 पुस्तकें, जिनमें छोटे बच्चों और 11-14 आयुवर्ग के बच्चों की पुस्तकें शामिल हैं, तैयार की जा चुकी हैं, उन्हें अंतिम रूप दिया जा चुका है और प्रेस को भेज दिया गया है।

(ग) भाषा और भाषा शिक्षण में पाठमाला-अंग्रेज़ी में विषयवस्तु संवर्धन सामग्रियां

इस श्रृंखला में विभाग... 4 पुस्तकें निकालने जा रहा है। बुक— 1 "रीडिंग कम्प्रीहेनशन" पर प्रकाशित की जा चुकी है। ये पुस्तकें अंग्रेज़ी के अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को सम्बोधित हैं तथा इनका लक्ष्य अभ्यासकर्त्ता अध्यापक की व्यावसायिक प्रोन्नति में योगदान एवं अध्यापक निर्माण में विषयवस्तु संबंध प्रदान करना है।

(घ) विषयवस्तु व क्रियाविधि पाठ्यविवरण

बी०एड० के लिए एक अंग्रेज़ी विषय वस्तु व क्रियाविधि पाठ्यविवरण विकसित किया गया है जो एन०सी०टी०ई० पाठ्यविवरण के ढांचे में ठीक बैठता है।

(ङ) स्कूली पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

विभाग राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से स्कूली पुस्तकों के लिए नमूना सर्वेक्षण करता है, इसके लिए वह परिष्कृत उपकरणों को विकसित करता है और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने हेतु अनुसंधान कर्मचारियों और पाठ्यपुस्तक लेखकों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से इतिहास और भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का कार्य बहुत से राज्यों में पूरा किया जा चुका है। मूल्यांकन कार्य को विस्तृत कर और विषयों जिनमें भूगोल, नागरिक शास्त्र, राजनीतिविज्ञान और समाजशास्त्र शामिल हैं, में किया जाएगा। इसीलिए इन विषयों की पाठ्यपुस्तकों के

मूल्यांकन के मानकों और उपकरणों को विकसित किया गया है और उन्हें राज्यों को भेज दिया गया है ताकि वे मूल्यांकन कार्य हाथ में ले सकें।

(च) अंग्रेजी में बहुसंचार परियोजना

अंग्रेज़ी में बहुसंचार परियोजना की रचना इस दृष्टि से की गई है कि अंग्रेज़ी में छात्रों की वास्तविक उपलब्धियों और अपेक्षित लक्ष्यों के मध्य की शून्यता को भरा जा सके। कार्यक्रम के प्रथम चरण में ब्रिज कोर्स बुक्लेट्स (8) ज़िनका शीर्षक "लेट्स एनरिच आवर इंगलिश" —

(I) माध्यमिक स्कूल में प्रवेश पाने वालों के लिए, तथा
(II) सेवापूर्व अध्यापकों के लिए विकसित की गई है।

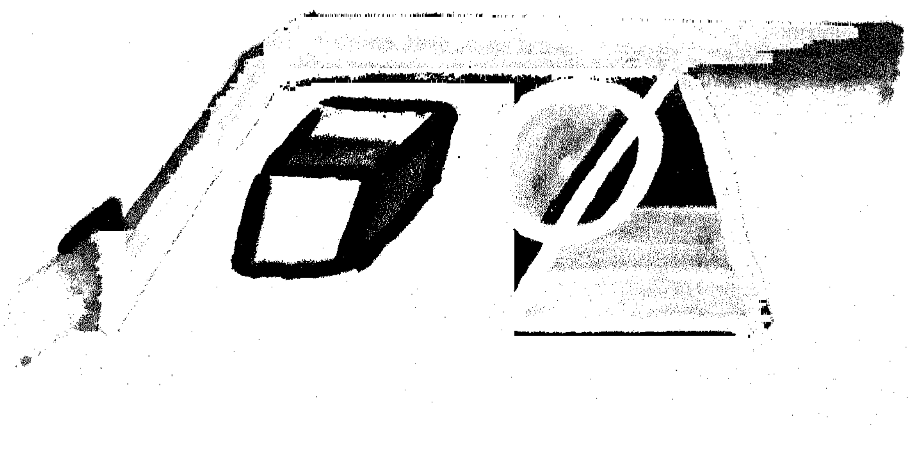
(छ) अनुप्रयुक्त अनुसंधान

विभाग अपनी आवश्यकता तथा इस मकसद के लिए उपलब्ध मानव संसाधनों की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए अनुप्रयुक्त अनुसंधान करता आ रहा है। ये अनुसंधान प्रायः विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के स्कूलों में विभिन्न विषयों की स्थिति तथा शिक्षण के लिए प्रयुक्त अनुदेशी सामग्रियों और विधियों के सर्वेक्षण का रूप धारण कर लेते हैं।

6. परामर्श

"नव जीवन" जोकि अशिक्षित प्रौढ़ों के लिए मौलिक साक्षरता कौशलों का शिक्षण देने संबंधी अनुदेशी सामग्रियों का एक सेट है, का एक नया संस्करण तैयार करने हेतु मध्यप्रदेश राज्य के प्राधिकारियों को परामर्श प्रदान किया गया। ये सामग्रियां मूलतः डी०ई०एस०एस०एच० के स्टाफ ने मध्यप्रदेश के विशेषज्ञों के सहयोग से विकसित की थीं। ये मध्यप्रदेश के सभी प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में प्रयुक्त की जा रही हैं।

एस०आई०ई०, सिक्किम, को भी प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र में परामर्श प्रदान किया गया।



5

विज्ञान एवं गणित में शिक्षा

विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) के लिएए स्कूल स्तर पर विज्ञान एवं गणित की शिक्षा के गुणात्मक सुधार एक मुख्य चिन्ता का विषय हैं। डी.ई.एस.एम. निरंतर कई गतिविधियों में संलग्न है: पाठ्यचर्या संबंधी सामग्रियों का विकास, अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों का प्रशिक्षण, विज्ञान एवं गणित शिक्षा संबंधी अनुसंधान और विस्तार गतिविधियां। यह "स्कूलों में संगणक साक्षरता एवं अध्ययन" (सी.एल.ए.एस.एस) परियोजना के कार्यान्वयनके लिए राष्ट्रीय स्तर पर समन्वयकारी व अनुवीक्षण अभिकरण के रूप में तथा अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना (ए.आई.एस.ई.पी.) और अखिल भारतीय गणित शिक्षा के लिए नोडल अभिकरण के रूप में कार्य करता है। यह विभाग विभिन्न राज्यों को पाठ्यविवरणों के संशोधन में तथा विज्ञान व गणित में पाठ्य सामग्रियों को तैयार करने में सहायता देता आ रहा है और अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों को विज्ञान व गणित शिक्षा के विभिन्न पक्षोंपर प्रशिक्षित करने के लिए संस्थाओं और संगठनों को सहायता देता आ रहा है। वर्तमान वर्ष में डी.ई.एस.एम. द्वारा सम्पन्न की गई महत्वपूर्ण गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं :

1. अनुसंधान

डी.ई.एस.एम. द्वारा विकसित कम मूल्य वाला मरकरी बैरोमीटर आई.एस.आई. से अनुमोदित हो चुका है। डी.ई.एस.एम. "व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शित पद्धति माध्यम" (आई.जी.एस.आई.) नामक परियोजना के साथ प्रयोग जारी रखे हुए है और यह परियोजना माध्यमिक व उच्च माध्यमिक, दोनों स्तरों पर सभी विज्ञान विषयों और साथ ही साथ गणित तक फैला दी गई है। सी.एम.सी. हैदराबाद के सहयोग से विभाग ने देशज साफ्टवेयर को विकसित करने का काम हाथ में ले लिया है। प्रो. डी.एस. कोठारी तथा अन्य प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और गणितज्ञों के मार्गदर्शन में एक परियोजना गणित प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने विषयक आवश्यक साधन जुटाने हेतु निर्मित की जा रही हैं।

2. प्रशिक्षण/अभिविन्यास पाठ्यक्रम

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग ने प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन हेतु तथा तत्संबंधी अनुवर्ती कार्रवाई के लिए असम, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू व काश्मीर राज्यों के साथ मिलकर काम किया। इस विभाग ने निम्नलिखित आठ पाठ्यक्रम विज्ञान अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के लिए आयोजित किये जो नीचे सारणी में दिए हुए हैं :

सं.	पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	पाठ्यक्रम समन्वयकर्ता	सहभागियों की संख्या
1.	ए.आई.एस.ई.पी के अधीन अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के चयन हेतु संगोष्ठी व साक्षात्कार	13-15/5/85	एन.सी.ई.आर.टी.	प्रो. छोटन सिंह	49
2.	ए.आई.एस.ई.पी. की प्रशिक्षणोत्तर कार्यशालाएं	22-31/7/85 4-14/8/85	उदयपुर हैदराबाद	" "	90
3.	ए.आई.एम.ई.पी के अधीन यू.के. से लौटे अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के लिए अनुवर्ती कार्यशाला	12-24/8/85	कलकत्ता	श्री जी. एस. बदेरिया	53
4.	ए.आई.एस.ई पी. सदस्यों को प्रस्थान-पूर्व संक्षिप्ति देना	1-3/10/85	एन.सी.ई आर.टी.	प्रो. छोटन सिंह	20
5.	अल्पसंख्यक अध्यापक कार्यक्रम	20-29/5/85	" "	प्रो. आर. एन.माथुर	23
6.	अल्पसंख्यक स्कूल अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	15-24/7/85	" "	" "	44
7.	+2 स्तर के हिमाचल प्रदेश के गणित व विज्ञान अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	15 दिन फरवरी -मार्च, 1986	शिमला	एफ.ए. (एन.सी.ई.आर.टी.) एच.पी. और डी.ई.एस.एम. के अधिकारी	81

सं.	पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	पाठ्यक्रम समन्वयकर्ता	सहभागियों की संख्या
8.	डी.ई.एस.एम. का टैलीस्कोप प्रयुक्त करते हुए विज्ञान अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	8-1-86 से 11/1/86	एन.सी.ई.आर.टी.	प्रो. वेदरत्न	57
			कुल		417

3. पाठ्यचर्या-सम्बद्ध तथा अन्य संबंधित अनुदेशी सामग्रियों का विकास

विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल (सी.बी.एस.ई.) द्वारा तैयार की गई 9 वीं व 10 वीं कक्षाओं की भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों की पाण्डुलिपियों को अंतिम रूप देने के लिए अनेक कार्यशालाएं आयोजित कीं। विभिन्न विषयों की 9 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों से सम्बद्ध अध्यापक मार्गदर्शिकाओं तथा टैस्ट-विषयवस्तु के विकास के लिए भी कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

ऐसी विकसित की गई कुछ सामग्रियों को मुद्रित कर दिया गया है और इन्हें सारे देश के स्कूलों में प्रयुक्त किया जा रहा है तथा इनमें से कुछ को लक्ष्य-समूहों में प्रसारार्थ छपे/साइक्लोस्टाइल रूप में संसाधित किया जा रहा है।

इन कार्यशालाओं में सी.बी.एस.ई. विषय संयोजक और पाठ्यपुस्तकों के लेखकों की टीम को भी आमंत्रित किया गया। 9 वीं और 10 वीं कक्षाओं के वर्तमान पाठ्यविवरणों की समीक्षा करने के लिए अलीगढ़ में भारतीय भौतिकी अध्यापक संस्था (आई.ए.पी.टी.) के सहयोग से एक दूसरी कार्यशाला आयोजित की गई। संस्था के सदस्यों के रूप में इस कार्यशाला में 10 राज्यों के विज्ञान अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। दूसरे विषयों के पाठ्यविवरणों को परखने के लिए भी ऐसी ही कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

क्लास परियोजना के अधीन दूसरे अभिकरणों द्वारा विकसित किये गये साफ्टवेयर पैकेजों की समीक्षा के लिए कई बैठकें की गईं। अनेक चुने हुए पैकेजों की प्रतिलिपियाँ बनवाकर स्कूलों को भेजी भी जा चुकी हैं।

उपर्युक्त गतिविधियों से संबंधित अन्य विवरण सारणी में दिये गये हैं।

उपर्युक्त गतिविधियों के अतिरिक्त, अलीगढ़ में जुलाई, 1985 में 9 वीं कक्षा की भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों के संशोधन के लिए चार कार्यशालाएं, हर विषय में एक, आयोजित की गई। कक्षा 10 वीं की पुस्तकों के लिए विज्ञान और गणित हेतु समीक्षा समिति की बैठक भी आयोजित की गई। इस विभाग द्वारा जो अन्य विकासात्मक

1985-86 में आयोजित बैठकें/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं/सम्मेलन/कार्यदल और विकास कार्यक्रम

सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
1.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा प्रणाली	25-4-85 से 27-4-85	एन.सी.ई.आर.टी.	25
2.	रसायन उपसमिति बैठक	15-4-85	" "	8
3.	10 वीं कक्षा की गणित पाठ्यपुस्तक के विकास के लिए विषय विशेषज्ञ समिति बैठक	29-4-85	" "	3
4.	पाण्डुलिपि के अध्यायों को विकसित/अंतिम रूप देने के लिए भौतिकी विशेषज्ञ समिति	2-5-85	" "	2
5.	गणित में 10 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए लेखकों की बैठक	23/5/85 से 25/5/85	" "	9
6.	10वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक भौतिकी भाग- 1 हेतु अध्यापक मार्गदर्शिका का तैयार करना।	12/6/85 से 21/6/85	" "	13
7.	10 वीं कक्षा के लिए रसायन में परिष्करण व पाठालोचन सामाग्रियों हेतु राष्ट्रीय कार्यशाला	27-6-85 से 29-6-85	एन.सी.ई.आर.टी.	26
8.	कक्षा- 1 से 12 वीं चरण- 1 के लिए भौतिकी में पाठ्यविवरणों का विकास	24-6-85 से 29-6-85	अलीगढ़	31
9.	कक्षा 10 वीं की गणित की प्रारूप-पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला	28-6-85 से 1-7-85	एन.सी.ई.आर.टी.	39
10.	जीवविज्ञान में कक्षा 10	15-7-85	एन.सी.ई.आर.टी.	27

1985-86

सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
	वीं की पाठ्यपुस्तक का विकासपरिष्करण व पाठालोचन सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला	से 17-7-85		
11.	भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाण्डुलिपि के विकास के लिए कार्यक्रम	3/7/85	" "	6
12.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा-प्रणाली	15-7-85 से 19-7-85	उज्जैन	40
13.	माध्यमिक स्कूलों के लिए भौतिकी भाग- 2 की पाठ्यपुस्तकों की प्रारूप-पाण्डुलिपि की समीक्षा	19-8-85 से 24-8-85	एन.सी.ई.आर.टी.	25
14.	9वीं कक्षा के लिए जीवविज्ञान में नई पाठ्यपुस्तिका हेतु अध्यापक मार्गदर्शिका का विकास	26-8-85 से 4-9-85	" "	32
15.	कक्षा- 1 से 12 वीं के लिए गणित में एन.सी. ई.आर.टी. पाठ्यविवरण के विकास की कार्यशाला	10-9-85 से 18-9-85	एन.सी.ई.आर.टी	24
16.	9 वीं कक्षा के लिए गणित में यथार्थता आधारित टैस्ट-विषयों को तैयार करना।	11-9-85 से 16-9-85	दार्जिलिंग	32
17.	9 वीं कक्षा की जीव-विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के लिए टैस्ट-विषयों को विकसित करने संबंधी कार्यशाला।	11-9-85 से 16-9-85	एन.सी.ई.आर.टी.	23
18.	गणित ओलंपियाड	18-9-85 से 20-9-85	" "	12
19.	कक्षा 10 वीं की भौतिकी पाठ्यपुस्तक भाग- 2 को अंतिम रूप देना।	4-10-85	" "	08
20.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा-प्रणाली	3-10-85 से 11-10-85	स्प्रिंगडेल्स स्कूल, दिल्ली	45
21.	कक्षा 9 वीं की जीव-विज्ञान पाठ्यपुस्तक के लिए अध्यापक मार्गदर्शिका का परिष्कृत सम्पादन	15-10-85 से 18-10-85	एन.सी.ई.आर.टी.	3
22.	कक्षा 1 से 12 वीं के लिए विज्ञान/रसायन में पाठ्यविवरणों का विकास	28-10-85 से 1-11-85	"	36
23.	उच्च माध्यमिक स्तर के लिए रसायन में नये प्रायोगिक पाठ्यक्रम पर आधारित प्रयोगशाला दीपिका व प्रायोगिक शीटों का विकास।	3-12-85 से 7-12-85	जादवपुर	28
24.	10 वीं कक्षा की नई पाठ्यपुस्तक रसायन के लिए अध्यापक मार्गदर्शिका का विकास	19-12-85 से 24-12-85	बम्बई	27
25.	पर्यावरण शिक्षा/ परिस्थिति विज्ञान संबंधी	16-12-85 से 21-12-85	उदयपुर	40
		27-12-85 से 1-1-86	एन.सी.ई.आर.टी.	11
26.	10 वीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक का विकास -जीवविज्ञान का सम्पादन (हिंदी रूपांतर)	14-1-86 से 18-1-86	एन.सी.ई.आर.टी.	1
27.	10 वीं कक्षा के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक	17-1-86 से 19-1-86	" "	4
28.	+2 स्तर पर गणित में पूरक सामग्री का तैयार करना	28-1-86 से 1-2-86	जलपायगुरी	24

1985-86

सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	सहभागियों की संख्या
29.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा प्रणाली (आई.जी.एस.आई.)	28-1-86 से 31-1-86	धारवाड़	85
30.	9 वीं कक्षा के लिए गणित में अध्यापक मार्गदर्शिका का विकास	10-2-86 से 14-2-86	एन.सी.ई.आर.टी.	18
31.	विज्ञान संबंधी राज्यों की आवश्यकताओं की पहचान	10-2-86 से 12-2-86	" "	40
32.	9 वीं कक्षा के लिए भौतिकी भाग- I में टैस्ट-विषयों का विकास	10-2-86 से 14-2-86	" "	24
33.	मिडिल कक्षाओं के लिए बीजगणित में संवर्धन सामग्री का विकास	17-2-86 से 21-2-86	हैदराबाद	18
34.	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन के नये विषयों पर माड्यूलों का विकास	17-2-86 से	एन.सी.ई.आर.टी.	12
35.	रसायन में स्रोत और संवर्धन सामग्रियों का विकास	24-2-86 से 1-3-86	गुड़गांव	28
36.	विज्ञान संबंधी कार्यदल की बैठक	17-2-86	एन.सी.ई.आर.टी.	9
37.	बृहत 10- दिवसीय अध्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम- II के लिए विज्ञान में हैंडबुकों का विकास	11-3-86 से 20-3-86	दिल्ली	23
38.	कक्षा- I से ग्यारहवीं के लिए गणित, भौतिकी, रसायन और जीवविज्ञान में पाठ्यविवरणों को अंतिम रूप देना।	3-3-86 से 6-3-86	एन.सी.ई.आर.टी.	55
39.	स्कूल गणित के लिए अनुप्रयोग माड्यूलों को तैयार करना	17-3-86 से 21-3-86	" "	12
40	"स्कूल साइंस" पत्रिका की विषयवस्तु और दृष्टिकोण में सुधार	17-3-86 से 19-3-86	" "	9
41.	वैयक्तिक मार्गदर्शित शिक्षा प्रणाली (आई.जी.एस.आई.)	31-3-86 से 2-4-86	" "	58
42.	विकलांग बच्चों को विज्ञान पढ़ाना	21-3-86 से 24-3-86	अलीगढ़	17
43.	कक्षा 10 वीं (नई पाठ्य-पुस्तक) के लिए रसायन में टैस्ट-विषयों का विकास	31-3-86 से 5-4-86	कोयम्बेटूर	27
			कुल	1079

गतिविधियां हाथ में ली गईं, उनमें 10 वीं कक्षा की गणित पाठ्यपुस्तकों की उपर्युक्त हिंदी पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने के साथ-साथ 10 वीं कक्षा के लिए रसायन और विज्ञान क्लब गतिविधियों में अणुसंबंधी संरचनाओं को दर्शाते हुए तीन-आयामी माडलों का विकास और भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकों को विकसित करना शामिल है।

4. प्रसार और परामर्श

विभाग ने अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षा परियोजना (ए.आई.एस.ई.पी.) के तहत यू.के. में प्रशिक्षण हेतु भेजने के लिए पश्चिमी बंगाल, असम और जम्मू व कश्मीर से सदस्यों के चयन हेतु संगोष्ठी व साक्षात्कार आयोजित किया। कुल मिलाकर क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों से 20 सदस्य चुने गये, छः, (भौतिकी, रसायन और जीवविज्ञान में दो-दो) तीन राज्यों से छः-छः और दो (भौतिक विज्ञानों और जैव विज्ञानों में एक-एक)।

14 वीं राष्ट्रीय बालक विज्ञान प्रदर्शनी, उदयपुर में नवम्बर, 1985 में आयोजित की गई। विभिन्न राज्यों के लगभग 400 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया। माननीय श्री ज्ञानी जैल सिंह, भारत के राष्ट्रपति, ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी का मुख्य लक्ष्य था विकास में देशज प्रौद्योगिकी। देश के सभी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों (लक्षद्वीप को छोड़कर) से विद्यार्थी

प्रदर्शनी हेतु प्रदर्शित की जानेवाली सामग्रियां लाए। 20 हजार से अधिक लोगों ने प्रतिदिन प्रदर्शनी देखी।

विभाग ने वर्तमान वर्ष में अनेक संगोष्ठियां आयोजित कीं। प्रो. रीटर कैली, शिक्षा कालेज, साउथम्पटन विश्वविद्यालय, यू.के., डा. अशोक खोसला, विकासात्मक विकल्प, नई दिल्ली और डा. एम. चक्रवर्ती, महाराष्ट्र विज्ञान अकादमी, पुणे, ने इन संगोष्ठियों में वक्तव्य दिए। डी.ई.एस.एम. ने नई शिक्षा नीति तथा साथ-ही-साथ पाठ्यचर्या के प्रति नये दृष्टिकोण से सम्बद्ध क्षेत्रीय और साथ-ही-साथ राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सक्रिय भाग लिया।

विभाग के संकाय सदस्यों ने भी विभिन्न राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया। निम्नलिखित सारणी विभाग द्वारा वर्ष 1985-86 में प्रदान की गई परामर्श सेवा की सूचना प्रदान करता है।

वर्ष 1985-86 में डी.ई.एस.एम. द्वारा प्रदान की गई परामर्श सेवा का विवरण

क्र.सं.	परामर्श सेवा चाहने वाली संस्था	परामर्श सेवा का उद्देश्य
1.	युनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगकाक	शिक्षण विकास–प्राथमिक स्तर विज्ञान शिक्षा संबंधी अधिगम सामग्रियां–हेतु क्षेत्रीय कार्यशाला।
2.	एन.आई.ई.पी.ए.	समन्वित योजना और औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के मध्य सम्पूरकता–सुभीते के रूप में–राष्ट्रीय कार्यशाला।
3.	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	रसायन पाठ्यक्रम समिति का सदस्य
4.	ए.म.यू., उत्तर प्रदेश	शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए अल्पसंख्यक समुदाय स्कूलों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करना
5.	एस.आई.एस.ई., मध्य प्रदेश	–वही–
6.	एन.सी.ई.आर.टी.कृत पाठ्यचर्या पर कार्य कर रहा स्कूल और राज्य शिक्षा संस्थान।	i) कुछ संकल्पना क्षेत्रों का स्पष्टीकरण। ii) नये नवोत्पादी प्रक्रियाओं के प्रति स्कूलों को प्रभावित करना। iii) अध्यापकों का प्रशिक्षण

5. प्रकाशन

विभाग ने विज्ञान शिक्षा से संबंधित अनेक नये शीर्षक प्रकाशित किये है, जिनके विवरण निम्न सारणी में दिये गये है:

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित की गई प्रतियों की संख्या
1.	रसायन-भाग II, माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक	अप्रैल, 1986	.....
2.	प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों व पर्यवेक्षकों के सेवा-दौरान प्रशिक्षण के लिए पर्यावरणीय शिक्षा माड्यूल	1985	.....
3.	भारत में पर्यावरणीय शिक्षा में शिक्षण व प्रशिक्षण (लेखकः एन.एम. भागिया और बी.डी. अत्रेय) –एन.ई.ई.पी.ए. द्वारा आयोजित संगोष्ठी के लिए लेख।	1985	.....
4.	पर्यावरणीय शिक्षा और प्राथमिक अध्यापकों की भूमिका	मार्च, 1986 (प्राथमिक अध्यापकों के लिए लेख)	
5.	रसायन शिक्षण संबंधी यूनेस्को पुस्तक (योगदान प्रदान किये जाने वाले लेखकों में से (एक)	दिसंबर	.....
6.	रसायन के विभिन्न क्षेत्रों में छः माड्यूलः i) माड्यूलर आरचीटैक्चर ii) दि चेंजेज एराउन्ड–हौ एंड वाई? iii) बाउंडलेस क्रेसेंट iv) कैमिकल वेयर-हाउस v) विज़िबल लाइफ एंड इनविजिबल लेबारेटरी vi) इनएविटेबल ल्यूसीफर	नवम्बर	प्रत्येक माड्यूल की दो प्रायोगिक प्रतियां
7.	रसायन–कक्षा 10 वीं की पाठ्यपुस्तक	मार्च, 86	2 लाख
8.	मौलिक जीवविज्ञान–भाग-1, खंड- 1	फरवरी, 86	1 लाख
9.	मौलिक जीवविज्ञान–भाग- 1, खंड- 2	अक्तूबर, 86	1.4 लाख
10.	आधारिक जीव विज्ञान भाग- 1, खंड- 1	मई, 1985	1.6 लाख
11.	आधारिक जीव विज्ञान भाग- 1, खंड- 2	दिसम्बर, 85	1.4. लाख
12.	सरकुलर मोशन	अप्रैल, 85	2000 प्रतियां
13.	रिजिड बाडीरोटेशन	मई, 85	" "
14.	काईनेटिक थ्योरी आफ गैसिज़ I	–वही–	" "
15.	काईनेटिक थ्योरी आफ गैसिज़ II	–वही–	" "
16.	थर्मोडाइनेमिक्स I	अप्रैल, 85	" "
17.	इलेक्ट्रीसिटी I	मई, 85	" "
18.	इलेक्ट्रो मैगनेटिज्म	मई, 85	" "
19.	एप्लाइड इलेक्ट्रोमैगनेटिज्म	अगस्त, 85	" "

6. स्कूलों के लिए विज्ञान उपस्कर

कार्यशाला विभाग (डब्ल्यू.डी.) विज्ञान शिक्षा में अनुसंधान, प्रोटोटाइप उपस्कर और किटों के बैच-निर्माण, शिक्षार्थियों, राज्यों व संघशासित क्षेत्रों के कार्मिकों, यूनेस्को और विदेशों के सदस्यों के प्रशिक्षण, प्रयोगशाला उपस्कर, कार्यालय उपस्कर, मोटरकारों, ग्रीष्म व शीतकालिक उपस्कर की केंद्रीय मरम्मत व रखरखाव, केंद्रीय खरीद—उपस्कर व फरनीचर भंडार—वितरण, में लगा हुआ है। स्टाफ के सदस्यों को कई अनुभागों में लगाया गया है जैसे यंत्रालय विकास, प्लास्टिक, वैल्डिंग, फिटिंग और शीट धातु, संधानशाला और गर्म धातु, चित्रकला, विद्युतलेपन, प्रकाश-विज्ञान, दस्तकारी, एकत्रण व प्रेषण, रखरखाव, इलेक्ट्रानिकी, खरीद, भंडारण और कार्यालय।

7. अनुसंधान व विकास गतिविधियां

कार्यशाला विभाग की अनुसंधान व विकास गतिविधियों में समाविष्ट थीं:

- नये उपस्कर की रचना करना
- पाठ्यचर्या में परिवर्तन के साथ पूर्व रूपांतरों का परिष्करण
- निर्माण के लिए उपकरणों की रचना करना।
- प्रोटोटाइप उत्पादन
- परीक्षण
- अंतिम रूपरेखा
- उपस्कर के प्रयोग को दर्शाते हुए किट मैनुअल का विकास
- राज्यों के साथ कार्य करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम व संगोष्ठियां

सभी देशज पुर्जों के साथ कम मूल्य वाले शिरोपरि प्रोजेक्टर के डिज़ाइन में और परिष्करण इसलिए किया गया ताकि इसकी ज्वलन शक्ति और इसे ठीक से प्रयोग में लाने की सुविधाओं को बढ़ाया जा सके। एक औद्योगिक प्रोटोटाइप भी विकसित किया गया और उसे विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया गया।

समीक्षा समिति द्वारा सुझाये गये परिवर्तनों को दो वर्ष पूर्व विकसित किये गये विज्ञान क्लब किट की रचना में कार्यान्वित किया गया है। नये डिज़ाइन के औद्योगिक प्रोटोटाइप निकाल दिये गये हैं। राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी सलाहकार समिति की सिफारिश के आधार पर एक मिनी उपकरण किट अभी हाल ही में विकसित किया गया है। स्कूली बच्चों के हल्के कार्य समय के कौशलों को विकसित करने के लिए यह विशेष रूप से रचा गया है, 32 मिनी हस्त उपकरणों और उपभोज्यों वाले सेट के किट की कीमत लगभग 90 रुपये होगी। विभिन्न इलैक्ट्रानिक घटकों की पहचान हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए इलैक्ट्रानिक अवयवों से युक्त एक प्रदर्शन बोर्ड विकसित किया गया है। कम मूल्य का बैरोमीटर निकालने, टैलीस्कोप की मरम्मत व समायोजन के लिए तथा द्रव्यों में आण्विक व्यवस्था दर्शाते हुए माडलों को रूप देने संबंधी कार्यों में यह विभाग डी.ई.एस.एम. के साथ मिलकर काम करता आ रहा है।

8. प्रसार

सूचना प्रौद्योगिकी में अभी हाल के विकासों की सूचनाओं को आधुनिकतम करते हुए दो लेख सभी वरिष्ठ संकाय सदस्यों को प्रेषित किये गये। हर 2/3 मास में कम-से-कम एक लेख प्रकाशित करके यह श्रृंखला जारी रखी जाएगी। दूसरी बातों के अलावा इस पुस्तक में मिडिलस्तर पर विज्ञान की कुल गतिविधियों और किट-आइटमों के आधार पर प्रयोग स्थापित करने संबंधी प्रक्रिया भी दी गई हैं। "शिक्षा की चुनौती" प्रलेख में दिये गये अनेक प्रासंगिक विषयों पर, जैसे आई.आई.टी. नई दिल्ली में की गई इंजीनियरी शिक्षा नीति संबंधी राष्ट्रीय संगोष्ठी, एन.सी.ई.आर.टी. में की गई व्यावसायिक शिक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी, आई.आई.टी., नई दिल्ली में किया गया उच्चतर शिक्षा में नई प्रौद्योगिकियों संबंधी सम्मेलन, आई.आई.टी. नई दिल्ली में की गई कम्प्यूटर सहायता शिक्षा की राष्ट्रीय संगोष्ठी, आई, आई, टी, नई दिल्ली में की गई प्राविधिक शिक्षा के गुण-निर्देशकों की पहचान संबंधी राष्ट्रीय कार्यशाला और रुड़की विश्वविद्यालय में किया गया स्कूल निर्माण डिज़ाइन संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, कई मंचों पर की गई चर्चाओं में इस विभाग ने अपना योगदान दिया।

इस विभाग ने उदयपुर में राष्ट्रीय बालक विज्ञान प्रदर्शनी में एन.सी.ई.आर.टी. की गतिविधियों से संबंधित प्रदर्शनी सामग्रियां तैयार कीं और उन्हें दर्शाया। इसी प्रदर्शनी को पुनः दो बार—एक एन.आई.ई. कैम्पस में और फिर बाद में विज्ञान भवन में दिखाया गया। दो माडल स्कूलों को फरनीचर से सज्जित करने तथा विज्ञान शिक्षण हेतु उपस्कर करने संबंधी प्राविधिक विशेषज्ञता प्रदान की जा रही है।

9. बैचों में उत्पादन

इस विभाग को राज्यों/संघशासित क्षेत्रों से स्कूलों की मांगें पूरी करने के लिए अनुरोध प्राप्त हुए। एक वाणिज्यिक तंत्र के अभाव में मध्यम दर्जे का उत्पादन हाथ में लिया गया है। किटों की कीमत मध्यम दर्जे की "बिना लाभ बिना हानि" आधार पर रखी गई है।

पूर्व वर्षों की भांति प्राथमिक विज्ञान किटों और विज्ञान क्लब किटों का उत्पादन जारी रखा गया। 3749 प्राथमिक विज्ञान किट बनाए गये और उन्हें मध्य प्रदेश को प्रेषित किया गया। इस प्रेषण के साथ मध्यप्रदेश क अनौपचारिक केन्द्रों की कुल 7000 किटों की मांग पूरी कर दीं गई। इसके अतिरिक्त विज्ञान क्लब गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर और एस.आई.एस.ई.— जबलपुर को 40-40 विज्ञान क्लब किट दिये गये।

10. प्रशिक्षण

इस विभाग ने छः आई.टी.आई. शिक्षार्थियों को विभिन्न व्यवसायों में प्रशिक्षण देना जारी रखा। इस विभाग ने राज्यों में विज्ञान क्लब गतिविधियों संबंधी स्रोत व्यक्तियों के लिए डी.ई.एस.एम. के साथ मिलकर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। राज्यों के दो विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में स्टाफ के दो सदस्यों ने स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य किया।

केम्पस में प्रस्तावित राष्ट्रीय विज्ञान केन्द की गतिविधियों के घटक के रूप में इस विभाग ने उपकरणों के प्रयोग तथा स्थानीय बच्चों के लिए प्रयोग स्थापित करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों को जगह प्रदान की। अफगानिस्तान से आये यूनेस्को सदस्यों को तीन सप्ताहों के लिए डिज़ाइन के विभिन्न पहलुओं और विज्ञान उपस्कर के उत्पादन के लिए प्रशिक्षित किया गया।

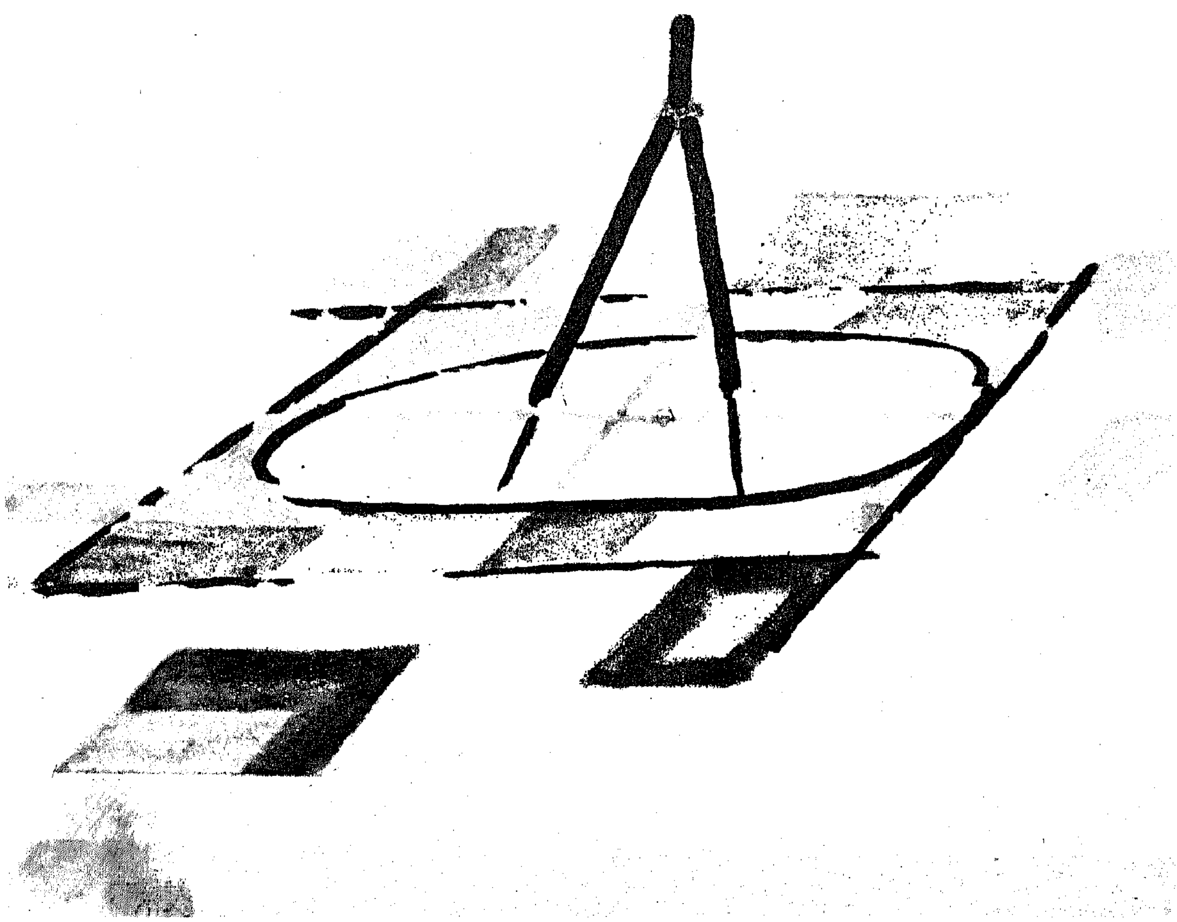
इस विभाग ने स्कूल स्तर पर इलैक्ट्रानिकी जागरूकता विषयक एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की जिसमें डी.ई.एस.एम. और शिक्षा व्यावसायीकरण के संकाय के अतिरिक्त विभिन्न राज्यसरकारों और एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधियों व विशेषज्ञों ने भाग लिया।

11. अध्ययन यात्राएं

सोवियत संघ के शिष्टमंडल ने इस विभाग का भ्रमण किया और इसकी गतिविधियों का अध्ययन किया। गतिविधियों का अध्ययन करने तथा भारत में अपने तकनीकी कार्मिकों की प्रशिक्षण की संभावना का पता लगाने के लिए और स्कूल विज्ञान उपस्कर की रचना, विकास और उत्पादन में विशेषज्ञता बांटने हेतु बंगलादेश से एक उच्चस्तरीय 4 सदस्य वाला शिष्टमंडल एक सप्ताह के लिए यहां आया था। इथोपिया के एक शिष्टमंडल ने इस विभाग का भ्रमण किया और विज्ञान उपस्कर के विकास का अध्ययन किया। शिक्षा मंत्रालय, कीनिया सरकार, के एक शिष्टमंडल ने इस कार्यशाला विभाग का भ्रमण किया और उन्हें स्कूल विज्ञान किटों का एक सेट भेंट किया गया। इन्डो-एफ.आर.जी. सहायता प्राप्त परियोजना के अन्तर्गत मिडिल स्कूल विज्ञान किट और प्राथमिक विज्ञान किट की रचना, विकास और उत्पादन के लिए एक जर्मन विशेषज्ञ श्री वाकर वीसर इस विभाग में आए हुए हैं।

12. मरम्मत, रखरखाव, प्रापण और भंडारण गतिविधियां

सभी कैम्पस विभागों के लिए केन्द्रीकृत प्रापण, फरनीचर व उपस्कर भण्डारण इस विभाग द्वारा देखे जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त यह कैम्पस में सभी गाड़ियों, गर्म और सर्द मौसम उपस्कर, विद्युत और इलैक्ट्रानिक गैजेटों आदि की मरम्मत व रखरखाव का काम भी देख रहा है। कैम्पस को सुन्दर बनाने की दिशा में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।



6

शिक्षा का व्यावसायीकरण

राज्यों को आवश्यक अकादमिक निवेश प्रदान करना शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.) का बहुमुखी दायित्व है और यह विभाग इस कार्य को देश में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर उच्चतर माध्यमिक शिक्षा तथा समाजीय लाभकारी उत्पाद कार्य व्यवसायीकरण (एस.यू.पी.डब्ल्यू.) नामक द्विकार्य वाली अभिविन्यस्त शिक्षा योजनाओं के माध्यम से सम्पन्न करता है। चूंकि यह दोनों योजनाएं भारतीय शिक्षा जगत में अपेक्षाकृत नई हैं और कार्यान्वित कर रहे राज्यों के पास अनुभव, संकल्पना, स्पष्टता और आवश्यक तैयारी की कमी है. इसलिए डी.वी.ई. द्वारा प्रदत्त अकादमिक निवेश, जिसमें मार्गदर्शन भी शामिल है, प्रचलित स्थिति में एक खास स्थान रखते हैं। इस प्रकार आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप डी.वी.ई. द्वारा हाथ में ली गई प्रत्येक गतिविधि एक सुविचारित और सतर्क दृष्टिकोण की अपेक्षा रखती है। इस विभाग के मुख्य कार्यों में शामिल हैः –

- व्यावसायिक अध्यापकों के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम
- राज्य कर्मचारियों तथा आधार व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम
- अनुदेशी-पाठ्यचर्या संबंधी सामग्री का विकास
- विभिन्न संगठनों को परामर्श सेवा, और
- प्रकाशन व प्रसार

1. प्रशिक्षण

व्यावसायिक अध्यापकों को अपने-अपने व्यवसायों में ज्ञान व विशेषज्ञता को अद्यतन करने के लिए वर्ष 1985-86 में इस विभाग में चार अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। अध्यापकों के आवश्यक व्यावसायिक कौशलों को विकसित करने के लिए विशिष्ट संस्थाओं में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये और विशिष्ट संस्थाओं की ही आधारिक संरचनात्मक सुविधाओं तथा विशेषज्ञता का उपयोग किया गया। सहभागियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम काफी लाभकारी रहे क्योंकि अध्यापकों को अपेक्षित सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के अतिरिक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान दिये गये लैक्चरों/प्रयोगों के आधार पर संकलित की गई संदर्भ पुस्तकें भी उन्हें दी गईं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के विवरण निम्न प्रकार हैं :–

1. उद्यान विज्ञान में व्यावसायिक अध्यापकों के लिए एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम बंगलौर में 14 मई से 10 जून, 1985 तक आयोजित किया गया। इसमें 14 सहभागी उपस्थित थे।
2. शिक्षाशास्त्र में व्यावसायिक,वाणिज्य अध्यापकों के लिए एक अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पुणे में 16 मई से 30 मई, 1985 तक आयोजित किया गया। इसमें 36 सहभागी उपस्थित थे।
3. इलैक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी में एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम पुणे में 10 जून से 29 जून, 1985 में आयोजित किया गया। इसमें 20 सहभागी उपस्थित थे।
4. व्यावसायिक वाणिज्य अध्यापकों के लिए एक अल्पकालिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम हैदराबाद में 17 जून से 30 जून, 1985 तक आयोजित किया गया। इसमें 30 सहभागी उपस्थित थे।

2. विस्तार

इस विभाग ने राज्य कर्मचारियों/प्रिंसीपलों/शिक्षा अधिकारियों/अन्यों के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण पर पांच अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये और चार अभिविन्यास कार्यक्रम एस.यू.पी.डब्ल्यू. विषय पर देश के विभिन्न भागों में आयोजित किये गये जिनमें सहभागियों को योजनाओ के कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों व युक्तियों के चयन हेतु तैयार की गई संकल्पना, उद्देश्यों और वार्षिक योजनाओं में प्रशिक्षित किया गया। इनके अतिरिक्त चार अभिविन्यास कार्यक्रम एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर आयोजित किये गये। इनका विवरण नीचे दिया जाता हैः

शिक्षा का व्यावसायीकरण

1. उत्तर प्रदेश के राज्य कर्मचारियों/प्रिंसीपलों/शिक्षा अधिकारियों /अन्यों के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम इलाहाबाद में 9 अप्रैल से 21 अप्रैल, 1985 तक आयोजित किया गया।
2. उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों के लिए शिक्षा व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम मसूरी में 31 मई से 3 जून 1985 तक आयोजित किया गया।
3. संघशासित दिल्ली के राज्य कर्मचारियों और प्रिंसीपलों तथा गृह मंत्रालय द्वारा विशेष रूप से आमंत्रित 18 सदस्यों की

1985-86

स्रोत टीम के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम दिल्ली में 16 सितम्बर से 20 सितम्बर, 1985 में आयोजित किया गया।

4. पांडिचेरी के राज्य अधिकारियों और आधार व्यक्तियों के लिए शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम पांडिचेरी में 14 अक्तूबर से 17 अक्तूबर 1985 तक आयोजित किया गया।
5. आन्ध्र प्रदेश के आधार व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यावसायीकरण पर हैदराबाद में अभिविन्यास कार्यक्रम 17 फरवरी से 20 फरवरी, 1986 तक आयोजित किया गया।

एस.यू.पी.डब्ल्यू.

1. राजस्थान के आधार व्यक्तियों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर अभिविन्यास कार्यक्रम उदयपुर में 8 अगस्त से 9 अगस्त, 1985 तक आयोजित किया गया।
2. हिमाचल प्रदेश के आधार व्यक्तियों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. और शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम शिमला में 9 सितम्बर से 12 सितम्बर, 1985 तक आयोजित किया गया।
3. मणिपुर के आधार व्यक्तियों के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर अभिविन्यास कार्यक्रम इम्फाल में 28 फरवरी से 3 मार्च, 1986 तक आयोजित किया गया।
4. मध्यप्रदेश के आधार व्यक्तियों के लिए माध्यमिक स्तर पर एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर अभिविन्यास कार्यक्रम जबलपुर में 10 मार्च से 14 मार्च, 1986 तक आयोजित किया गया।

संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

1. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 6 नवम्बर से 8 नवम्बर, 1985 तक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।
2. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 21 जनवरी से 23 जनवरी, 1986 तक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन विषय पर संगोष्ठी व कार्यशाला आयोजित की गई।
3. संसदीय परामर्शदात्री समिति के सदस्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण पर संगोष्ठी एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी. (नई दिल्ली में 22 मार्च, 1986 को आयोजित की गई।

3. विकास

निम्नलिखित कारणों की वजह से वर्ष 1985-86 में डी.वी.ई. के कार्यक्रमों में विकासात्मक गतिविधियों को शीर्ष प्राथमिकता प्रदान दी गई:

(i) व्यावसायिक विद्यार्थियों और अध्यापकों के पास उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप समुचित अनुदेशी सामग्रियां नहीं हैं।

(ii) राज्यों में प्रचलित ज्यादातर व्यावसायिक कार्यक्रमों के पाठ्यविवरण में समुचित व्यावसायिक अभिविन्यास, उद्देश्यों की स्पष्टता तथा सिद्धांत व प्रयोग के सम्मिश्रण आदि का अभाव है, जिसकी वजह से वर्तमान पाठ्यविवरण के तात्कालिक संशोधन तथा व्यावसायिक कोर्सों के लिए क्षमता आधारित माडल पाठ्यविवरण के विकास की आवश्यकता है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए डी.वी.ई. ने कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की (क) न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्याओं के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को विकसित करने के लिए (ख)स्वतः अनुदेशी व व्यावहारिक मैनुअल के विकास के लिए (ग) कार्यालय अभ्यास में प्रश्न बैंक के विकास के लिए। इन कार्याशालाओं में विषय विशेषज्ञों, सुविज्ञों, नया क्षेत्र अनुभव रखने वाले वृतिविदों, राज्य कर्मचारियों, रोज़गार प्रदान करने वाली एजेंसियों के प्रतिनिधियों और व्यावसायिक अध्यापकों ने भाग लिया। यह महसूस किया गया कि एस.यू.पी.डब्ल्यू. संबंधी कार्यदल की सिफारिशों के अनुसार एस.यू.पी.डब्ल्यू. को पूर्व-व्यावसायिक झुकाव प्रदान किया जाए। अतः डी.वी.ई. ने एक विशेष कार्यशाला आयोजित की जिंसमें खास व्यावसायिक अभिविन्यास के साथ कई एस.यू.पी.डब्ल्यू. पाठ्यक्रम विकसित किये गये। दूसरी कार्यशाला में राज्यों के लाभ के लिए एस.यू.पी.डब्ल्यू. के कार्यान्वियन के लिए कार्ययोजना बनाई गई। कार्यक्रमों के विवरणों को नीचे देखा जा सकता है:

शिक्षा का व्यावसायीकरण

1. लखनऊ में 19 अगस्त से 25 अगस्त, 1985 तक कार्यालय अभ्यास में प्रश्न बैंक की रचना पर कार्यशाला आयोजित की गई।
2. हिसार में 23 अगस्त से 28 अगस्त 1985 तक डेरी उद्योग में अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल के विकास पर कार्यशाला आयोजित की गई।
3. बंगलौर में 21 नवम्बर से 25 नवम्बर, 1985 तक पौधरक्षण में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास पर कार्यशाला आयोजित की गई।
4. मैसूर में 28 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 1985 तक (**चरण- I**) तथा 8 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 1985 तक (**चरण- II**) रेशम उत्पादन में अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
5. कासरगोड में 13 दिसम्बर से 17 दिसम्बर, 1985 तक बागान फसलें और प्रबन्ध में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
6. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 6 जनवरी से 10जनवरी, 1986 तक इलैक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी में न्यूनतम

क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

7. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 27 जनवरी से 31 जनवरी, 1986 को पर्यटन व यात्रा प्रविधि में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
8. बंगलौर में 8 फरवरी से 12 फरवरी, 1986 तक सहयोग, विक्रयकला और भंडार रक्षण में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
9. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 10 फरवरी से 15 फरवरी, 1986 तक पैरामैडिकल एक्सरे टैक्नीशियन में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
10. मणिपाल में 24 फरवरी से 1 मार्च, 1986 तक चिकित्सा प्रयोगशाला में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
11. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 10 मार्च से 15 मार्च, 1986 तक आयात/निर्यात प्रक्रियाओं और प्रलेखन में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
12. जे.एन.यू. नई दिल्ली में 17 मार्च से 21 मार्च, 1986 तक प्रोटोटाइप इलैक्ट्रानिक किट के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
13. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 19 मार्च से 24 मार्च, 1986 तक मोटरगाड़ी सेवा में अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल की समीक्षा के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
14. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 29 मार्च से 4 अप्रैल, 1986 तक भवन रखरखाव में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।
15. आर.सी.ई. भोपाल में लेखा परीक्षण में प्रयोग करने संबंधी मार्गदर्शक पुस्तक के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

एस.यू.पी.डब्ल्यू.

16. चण्डीगढ़ में 24 फरवरी से 28 फरवरी 1986 तक उत्तरी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में एस.यू. पी.डब्ल्यू. कार्यक्रम के कार्यान्वियन संबंधी कार्ययोजनाओं को तैयार करने के लिए सम्मेलन व कार्यशाला आयोजित की गई।
17. एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 24 फरवरी से 28 फरवरी, 1986 तक एस.यू.पी.डब्ल्यू. ने उच्च प्राथमिक और माध्यमिक-स्तर के लिए पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विकास के लिए कार्यशाला आयोजित की।
18. असाम में 18 मार्च से 22 मार्च, 1986 तक पूर्वी राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में एस.यू.पी.डब्ल्यू. कार्यक्रम के कार्यान्वयन संबंधी कार्ययोजनाएं तैयार करने हेतु कार्यशाला आयोजित की गई।

4. परामर्श सेवाएं

किये जा रहे कार्यों में से एक कार्य के रूप में डी.वी.ई. विभिन्न राज्य सरकारों तथा अन्य अभिकरणों को चर्चा बैठकों के रूप में, संगोष्ठियों व सम्मेलनों आदि में सहभागिता के रूप में परामर्श सेवाएं भी उपलब्ध कराता है। अप्रैल से दिसम्बर तक इस विभाग ने विभिन्न संगठनों को परामर्श सेवाएं प्रदान कीं जिनकी सूची नीचे दी गई है:

क्र.स.	परामर्श लाभार्थी संगठन	परामर्श का लक्ष्य
1.	एस.आई.ई. गंगटोक	एस.यू.पी.डब्ल्यू. पर कार्यशाला
2.	शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार	(क) व्यावसायीकरण पर राष्ट्रीय कार्यदल की बैठक (ख) डब्ल्यू.जी. के लिए रिपोर्ट तैयार करना।
3.	युवा उद्यमियों की राष्ट्रीय मैत्री, नई दिल्ली	17-6-1985 को हुई स्वतः रोज़गार पर शिक्षा समिति बैठक।
4.	अनुप्रयुक्त मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	13 जून से 19 जून, 1986 तक रोज़गार और बेकारी से संबंधित संकल्पनाओं, मापन और नीति मामलों संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम
5.	बी.आई.टी.एस.पिलानी	उद्योगों, स्कूल संयोजनों से संबंधित शिक्षा के व्यवसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।
6.	हरियाणा राज्य शिक्षा व्यवसायीकरण परिषद्, चण्डीगढ़	28 जून 1986 को हुई व्यावसायिक शिक्षा विषयक एस.सी.वी.ई. की द्वितीय वार्षिक बैठक।
7.	नेशनल एन्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेंट बोर्ड, दिल्ली।	11 जुलाई, 1985 को कार्यकारी समिति की बैठक।
8.	सी.बी.एस.ई, नई दिल्ली	वाणिज्य व अन्य पाठ्यक्रमों में पाठ्यक्रम समितियां।
9.	आर.सी.ई., भोपाल	एम.काम.एड पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देना।
10.	बिहार सरकार	राज्य में शिक्षा के व्यावसायीकरण को लागू करने के लिए तैयारियों संबंधी बैठक।
11.	शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार	स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता व अध्ययन परियोजना के तार्किक अनुसरण के रूप में +2 स्तर पर

क्र.सं.	परामर्शी/लाभार्थी संगठन	परामर्श का लक्ष्य
		कंप्यूटर विज्ञान को मुख्य विषय के रूप में लागू करने के लिए कंप्यूटर पाठ्यक्रम समिति।
12.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।	नई शिक्षा नीति का प्रतिपादन
13.	शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार	व्यावसायीकरण संबंधी शिक्षा मंत्री कार्यदल समूह की बैठक का सचिवालय।
14.	एन.आई.ई.पी.ए.	अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और संगोष्ठियों में स्रोत व्यक्ति प्रदान किये गये।
15.	उत्तर प्रदेश सरकार	+2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू करना।
16.	मध्यप्रदेश सरकार	1986 में +2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू करने के लिए उच्चस्तरीय समिति।
17.	टी.टी.टी.आई., चण्डीगढ़	टी.टी.टी.आई. द्वारा व्यावसायिक/तकनीकी शिक्षा पर अनेक संगोष्ठियां आयोजित की गईं।
18.	श्रम मंत्रालय (डी.जी.ई.टी.)	एन.सी.वी.टी. पर सदस्यता, वोकेरियन प्रशिक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।
19.	असम सरकार	शिक्षा का व्यावसायीकरण
20.	हिमाचल प्रदेश सरकार	राज्य में शिक्षा के व्यावसायीकरण और एस.यू.पी.डब्ल्यू. कार्यान्वयन हेतु तैयारी।
21.	दिल्ली प्रशासन	कक्षा 12 वीं के बाद व्यावसायिक विद्यार्थी को रखना।
22.	हरियाणा सरकार	एस.यू.पी.डब्ल्यू. और व्यावसायिक शिक्षा में आधार व्यक्तियों का अभिविन्यास।
23.	स्कूली शिक्षा बोर्ड, हरियाणा	वाणिज्य पाठ्यक्रमों में प्रश्न बनाना।
24.	आई.आई.पी.ए., दिल्ली	संगोष्ठियो व कार्य, शिक्षा और रोज़गार में सहभागिता।
25.	अखिल भारतीय माध्यमिक अध्यापक संस्था, हैदराबाद	संगोष्ठी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सहभागिता।
26.	योजना आयोग	व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण संबंधी संगोष्ठी
27.	अनुप्रयुक्त मानवशक्ति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	1-3-86 को शिक्षा के व्यावसायीकरण पर संगोष्ठी की गई।
28.	बिहार सरकार	व्यावसायिक पाठ्यक्रम लागू करने की तैयारी।

5. प्रकाशन

अप्रैल 1985 से मार्च, 1986 तक डी.वी.ई. द्वारा अपनी विकासात्मक और अन्य गतिविधियों के गहन प्रयासों के फलस्वरूप कई प्रकाशन निकाले जोकि न केवल व्यावसायिक विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए बहुत लाभकारी हैं बल्कि शैक्षिक नियोजकों और प्रशासकों के लिए भी लाभकारी है। इस प्रकार निकाले गये प्रकाशन संबंधित ग्राहकों के प्रयोग के लिए आसानी से उपलब्ध हैं। विभाग द्वारा अनुदेशी सामग्रियां, प्रश्न बैंक, पूरक पाठमालाएं और अन्य पाठ्यचर्या संबंधी सामग्रियां प्रकाशित की जातीं हैं। अप्रैल 1985 से मार्च 1986 तक विकसित किये गये प्रकाशन नीचे दिये गये हैं :

1. हाईस्कूल स्तर के लिए कार्य अनुभव के अधीन उदाहरणदर्शक पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रम (उच्च माध्यमिक स्तर के कुछ डब्ल्यू.ई. उदाहरणदर्शक सहित)
2. पाठ्यचर्या विकास और कार्यान्वयन के लिए स्कूली शिक्षा मार्गदर्शिकाओं में कार्य अनुभव।
3. संदर्भ पुस्तक-फल संस्कृति
4. संदर्भ पुस्तक- बागबानी संबंधी फसलों में प्रचार
5. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-डेरी पशु, प्रबन्ध
6. अनुदेशी व प्रायोगिकी मैनुअल-चारा उत्पादन, संरक्षण और खेती अपशेषों का पुनर्चक्र.
7. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-चारे और चारे खिलाना।
8. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-पशु, पुनरुत्पादन, कृत्रिम गर्भाधान
9. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-दूध और दुग्ध उत्पाद
10. अनुदेशी व प्रायोगिकी मैनुअल-डेरी विस्तार और अर्थव्यस्थाएं
11. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-उद्यान विज्ञान
12. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम कीड़ा, जीव विज्ञान और पालन पोषण।
13. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल- शहतूत और रेशम कीड़ा उपज संरक्षण।
14. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम कीड़ा बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी।
15. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम सीलिंग, परीक्षण और कताई।
16. अनुदेशी व प्रायोगिक मैनुअल-रेशम उत्पादन, विस्तार और प्रबंध।
17. लेखापरीक्षा में प्रयोग- 1985-86
18. आशुटंकण व शिक्षण की विधियां व सामग्रियां।
19. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-मुर्गी उत्पादन
20. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-सूअर उत्पादन
21. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-खेती यन्त्रकार
22. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-कृषि रासायनिक
23. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या-पौधा संरक्षण

24. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—बागबानी फसलें और प्रबन्ध
25. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—इलैक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी।
26. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—पर्यटन और पर्यटक मार्गदर्शिका (निर्माणाधीन)
27. न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता आधारित पाठ्यचर्या—निर्यात और आयात।



7

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.) अध्यापक शिक्षा, महिला शिक्षा लाभवंचितों की शिक्षा और विशेष शिक्षा के क्षेत्रों में अनुसंधान व प्रायोगिक अध्ययन, शिक्षण सामग्री तैयार करने तथा प्रशिक्षण एवं विस्तार सेवाओं का काम करता आ रहा है। विभाग, अध्यापकों की अनुवर्ती शिक्षा केन्द्रों की गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए नोडल अभिकरण के रूप में तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के सचिवालय के रूप में भी काम करता है।

प्राथमिक व माध्यमिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में गुणात्मक सुधार करना विभाग की मुख्य चिन्ताओं में से एक है। विभाग की अन्य प्रमुख गतिविधियों में, अध्यापक प्रशिक्षुओं व अध्यापक शिक्षकों की अध्यापन क्षमता सुधारने की दिशा में निर्दिष्ट अनुसंधान व प्रायोगिक अध्ययन, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में संशोधन, अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए पाठ्यपुस्तक सामग्री व अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करना और अध्यापक शिक्षकों व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन में लगे अन्य व्यक्तियों का प्रशिक्षण शामिल है।

अनुसंधान

वर्ष 1985-86 में अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा, अनुसूचित/जनजाति शिक्षा और महिला शिक्षा के क्षेत्रों में डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. द्वारा किये गये अनुसंधान अध्ययन नीचे दिये गये है :

अध्यापक शिक्षा

बी.एड. विद्यार्थियों के लिए मूल्य-अभिविन्यास से संबंधित अध्यापक शिक्षा, भारत में अध्यापकों की स्थिति, स्वतः संकल्पना अनुसूचित/जनजाति अध्यापक प्रशिक्षुओं के लिए समायोजन व उपलब्धि, माध्यमिक अध्यापक शिक्षा का राष्ट्रीय सर्वेक्षण और भारत में सेवा-दौरान शिक्षा का अध्ययन अर्थात् पांच अध्ययन हाथ में लिए गये। विभिन्न राज्यों में प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों और माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की सेवा-दौरान स्थिति संबंधी एक अनुसंधान अध्ययन इस वर्ष पूरा किया गया। चौदह राज्यों के एस.आई.ईज/एस.सी.ई.आर.टीज और शिक्षा कालेजों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर अध्ययन किया गया। कितने प्रकार और कितनी संख्या में कार्यक्रम आयोजित किये गये, ग्राहकों व अध्यापकों की संख्या जो इस वर्ष शामिल थे, संबंधी आंकड़े, एकत्रित किये गये। अध्ययन की रिपोर्ट निर्माणाधीन/अन्य अनुसंधान अध्ययन पूरा होने की विभिन्न स्थितियों में हैं। चलते रहने वाली अनुसंधान परियोजनाएं नीचे दी गई हैं :

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	प्रधान जांचकर्ता
1.	बी.एड. विद्यार्थियों का मूल्य-अभिविन्यास	प्रो. एल.सी. सिंह
2.	भारत में अध्यापकों की स्थिति	डा. (श्रीमती) आर.के. चोपड़ा
3.	अनुसूचित जाति/जनजाति अध्यापक प्रशिक्षुओं की उपलब्धि के साथ स्वतः संकल्पना और समायोजन संबंधी अध्ययन	डा. (श्रीमती) आर.के. चोपड़ा
4.	भारत में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा का चतुर्थ राष्ट्रीय सर्वेक्षण	प्रो. एस.सी. सिंह श्रीमती एन. सभरवाल

विशेष शिक्षा

विशेष शिक्षा क्षेत्र में विशेष शिक्षा में एक अनुसंधान-समीक्षा तैयार की गई है। इसमें डिप्लोमा, मास्टर डिग्रियों और डाक्टरेट स्तरों के 150 अध्ययन और स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा ली गई परियोजनाएं शामिल हैं। अध्ययन मुख्यतः समाजकार्य, मनोविज्ञान और शिक्षा विभागों और भारतीय संस्तंभी समाज, बी.एम.मानसिक विकलांग संस्थान, राष्ट्रीय नेत्रहीन संस्था और ल्यूसबेल स्मारक संस्थान जैसी एजेंसियों से प्राप्त किये गये। समीक्षा ने सुनियोजित सहकारी अनुसंधान प्रयासों को उजागर किया। अनुवर्ती कार्रवाई और प्रसार गतिविधि के रूप में, अनुसंधान प्रोन्नति पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, में, 8 जनवरी' 11 जनवरी, 1986 तक आयोजित की गई। दो प्रमुख अनुसंधान परियोजनाएं–विकलांक और सहकारी अनुसंधान हेतु एकीकृत शिक्षा परियोजना के दो केस-अध्ययन, अशक्त एकीकरण बच्चों पर प्रभाव तथा क्लासरूम परिस्थितिकी व शिष्य उपलब्धि, नियोजित किये गये। आई.ई.डी.के. माध्यम से अनुसंधान की समीक्षा के जांचपरिणाम तथा कार्यशाला की सिफारिशें प्रसारित की गईं। ड्राप-आउट्स की अशक्तता स्थिति संबंधी दूसरा अध्ययन नियोजन की दृष्टि से खोजपरक था और वह प्रगति पर है।

1985-86

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

वर्ष 1985-86 में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समूहों और जनजातीय बच्चों की शिक्षा से संबंधित चार अध्ययन जारी रखे गये। किये गये अध्ययनों में से एक की रिपोर्ट जिसका अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के मध्य अन्तरसंबंध से है, को अंतिम रूप दिया जा रहा है। दूसरी दो परियोजनाओं की रिपोर्ट जिनका संबंध उत्तरप्रदेश की 10 वीं कक्षा के अनुसूचित जाति व अनानुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन और जनजातीय तथा अजनजातीय प्राथमिक स्कूलों के मध्य शारीकि सुविधाओं के तुलनात्मक अध्ययन से है, निर्माणाधीन हैं। प्राथमिक स्तर के जनजातीय विद्यार्थियों के निष्पादन से संबंधित दूसरे अध्ययन की तैयारी की जा रही है। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा के क्षेत्र में जारी रहने वाली अनुसंधान परियोजनाएं निम्न हैं:

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	प्रधान जांचकर्ता
1.	अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा और उनकी सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के मध्य अन्तर् संबंध का अध्ययन	श्री बी.पी.अवस्थी
2.	उत्तर प्रदेश की 10 वीं कक्षा के अनुसूचित जाति तथा अनानुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन	डा. बी.एस.गुप्ता
3.	कमज़ोर और मज़बूत बिन्दुओं के निर्धारण हेतु प्राथमिक स्तर के जनजातीय विद्यार्थियों का विषयवार निष्पादन	डा. बी.एस.गुप्ता
4.	जनजातीय और अजनजातीय प्राथमिक स्कूलों के मध्य शारीरिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन	डा. एल.आर.एन.श्रीवास्तव

महिला शिक्षा

राज्यों द्वारा औपचारिक शिक्षा के लिए लड़कियों के नामांकन को बढ़ाने के लिए अपनाई गई विधियों और राज्यों में लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा के लिए अपनाई गई पद्धतियों से संबंधित दो अध्ययन हाथ में लिए गये। पहले अध्ययन में लड़कियों के प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मार्ग पहचाने गये। इसलिए तैयार किये गये मार्गदर्शक सिद्धांत राज्यों व संघशासित क्षेत्रों को भेजे गये। इस अध्ययन के संबंध में कुछ बिन्दुओं के स्पष्टीकरण और विचारों के परस्पर विनिमय के लिए एक द्विदिवसीय संगोष्ठी चुने हुए अध्ययनों के प्रतिनिधियों की आयोजित की गई। बाद की परियोजना लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा के अंतिम और कार्यात्मक पक्षों का पता लगाने के लिए हाथ में ली गई। लड़कियों के लिए अनौपचारिक कार्यक्रम को मजबूत करने के लिए तथा सबसे ज्यादा प्रभावी महिलाएं जिन्हें राज्यों द्वारा ग्रहण/अनुकूपित किया जा सके, उनके लिए अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के लिए महिला अनुदेशकों के वास्ते प्रशिक्षण विधियां भी खोजी गईं। प्रथमतः एक प्रश्नावली के माध्यम से सूचनां एकत्रित की गई। उसके बाद, एक द्विदिवसीय संगोष्ठी कुछ बिन्दुओं पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने तथा परस्पर विचार-विनिमय हेतु आयोजित की गई। दोनों अध्ययनों की परियोजना रिपोर्टें निर्माणाधीन हैं।

विकासात्मक कार्यक्रम

अध्यापक शिक्षा

(1) *अध्यापक शिक्षा संबंधी एम.एड.प्रश्नपत्र के लिए स्रोत पुस्तक का विकास*

अगस्त, 1985 में एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, में अध्यापक शिक्षा संबंधी स्रोत पुस्तक के लेखकों के लिए चार दिवसीय बैठक आयोजित की गई। ग्यारह लेखक बैठक में उपस्थित थे।

(2) *माध्यमिक अध्यापकों के लिए स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा और मनोरंजन संबंधी पाठ्यपुस्तक का विकास*

सितम्बर 1985 में ग्वालियर में लक्ष्मी बाई शारीरिक शिक्षा कालेज में एक कार्यदल बैठक की गई। इसमें 14 व्यक्ति उपस्थित थे और तैयार की गई सामग्री पर चर्चा की गई।

(3) *प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण स्तर संबंधी पर्यावरणीय अध्ययनों के शिक्षण में विषयवस्तु व क्रियाविधि पर पाठ्यपुस्तक का विकास।*

इस पुस्तक, जिसका संबंध अध्यापक शिक्षकों और छात्र अध्यापक का ज्ञान ऊंचा करने से है, को विकसित करने के लिए 10 से 13 मार्च 1986 को चार दिवसीय कार्यदल बैठक एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली में आयोजित की गई इसमें 10 व्यक्ति उपस्थित थे।

(4) *माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण स्तर संबंधी समाजविज्ञान के शिक्षण में विषयवस्तु व क्रियाविधि पर पाठ्यपुस्तक का विकास*

17 से 20 मार्च 1986 को चार दिनों के लिए एक कार्यदल बैठक आयोजित की गई, जिसमें पाठ्यपुस्तकों के आकार पर चर्चा हुई और विभिन्न अध्यायों की विषयवस्तु तय की गई। इस बैठक में 7 विषय विशेषज्ञ शिक्षा संबंधी विश्वविद्यालय विभाग, एस.आई.ईज़/एस.सी.ई.आर.टीज़ के थे। और कुछ समाजविज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग के संकाय के सदस्य थे। इस पाठ्यपुस्तक का लक्ष्य सामाजिक अध्ययनों के अनुदेश व्यवस्थित करने हेतु

ज्ञान और कौशल विकसित करने में छात्र अध्यापकों व अध्यापक शिक्षकों की सहायता करनी है।

(5) *मूल्य अभिविन्यस्त शिक्षा पर हस्तपुस्तक का विकास*

प्रस्तावित हस्तपुस्तक के विभिन्न अध्यायों के लिए तैयार की गई सामग्री पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञों की नामिका की एक कार्यदल बैठक तीन दिनों 28 से 30 जनवरी 1986 के लिए की गई इस हस्तपुस्तक का मुख्य उद्देश्य अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की गतिविधियों और विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के बीच शिक्षा मूल्य को हृदयंगम करने में अध्यापक शिक्षकों की सहायता करना है। इस बैठक में चार विशेषज्ञ उपस्थित थे।

(6) *माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए अनौपचारिक शिक्षा की स्रोत पुस्तक का विकास*

प्रस्तावित स्रोत पुस्तक का विस्तृत आकार तैयार करने के लिए कार्यदल की बैठक जनवरी 1986 में की गई। देश में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण की समस्या पर काबू पाने के लिए अनौपचारिक शिक्षा की विभिन्न विधियां समझने में प्रस्तावित पुस्तक अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के लिए सहायक होगी।

(7) *कालेज शिक्षण संबंधी स्रोत पुस्तक का विकास*

कालेज शिक्षण संबंधी स्रोत पुस्तक विकसित करने के लिए नई दिल्ली में 19 से 21 फरवरी, 1986 को त्रिदिवसीय कार्यदल की बैठक की गई। सदस्यों ने प्रस्तावित स्रोत पुस्तक की तैयार सामग्री पर चर्चा की जोकि क्लासरूम प्रबंध और शिक्षाशास्त्र के कुछ पक्षों में कालेज अध्यापक तैयार करने के लिए लक्षित है।

(8) *संगोष्ठी पाठमालाएं कार्यक्रम*

विभिन्न एस.आई.ईज़/एस.सी.ई.आर.टीज़ से प्राप्त माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के प्रवेश लेखों को मूल्यांकित करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 14-15 मार्च, 1986 को द्विदिवसीय विशेषज्ञों की बैठक आयोजित की गई। दस सर्वोत्कृष्ट नवोत्पादी अभ्यास राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुने गये। एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 28 अप्रैल से 30 अप्रैल 1986 को पुरस्कार विजेताओं (माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों) की त्रिदिवसीय राष्ट्रीय बैठक की गई। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेताओं ने अपने उत्पादों को सामने रखा और उन पर एन.आई.ई. के विभिन्न एककों/विभागों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों जिन्होंने कार्यक्रम में स्रोत व्यक्तियों के रूप में कार्य किया, से चर्चा की। नवोत्पाद अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार से घनिष्ठ संबंध रखते है। प्रत्येक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता को 1000/- का नकद पुरस्कार और श्रेष्ठता प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। देश में व्यापक प्रसार के लिए इन नवोत्पादों को "अध्यापक शिक्षा में विचार और अनुभव" शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाएगा।

(9) *अध्यापक शिक्षा के राज्यमंडलों का राष्ट्रीय सम्मेलन*

हैदराबाद में दो दिन 3 से 4 मार्च 1986 तक विभिन्न राज्यों के अध्यापक शिक्षा राज्यमंडलों के प्रतिनिधियों का एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया। वर्ष 1985-86 में अपने-अपने मंडलों की गतिविधियों और कार्यों की रिपोर्टों को प्रस्तुत किया गया और उनपर चर्चा की गई। देश में अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण सिफारिशें दी गईं। इस सम्मेलन ने राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के लिए संवैधानिक स्थान के लिए भी सिफारिश की।

अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं (प्रारंभिक और माध्यमिक दोनों) से नवोत्पाद अभ्यास एकत्र करने के लिए एक प्रोफार्मा मुद्रित कराया गया और उसे सभी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं को भेजा गया। कुछ संस्थाओं से सूचना प्राप्त हुई।

विशेष शिक्षा

(1) *आई.ई.डी. योजना पर शैक्षिक सचिवों और समन्वय-कर्त्ताओं के राष्ट्रीय सम्मेलन*

एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 7 से 11 अक्तूबर, 1985 को पांच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आई.ई.डी. योजना के समन्वय कर्त्ताओं का किया गया। एन.सी.ई.आर.टी. में ही 1 फरवरी, 1986 को एक दिन का राष्ट्रीय सम्मेलन आई.ई.डी. के शैक्षिक सचिवों का किया गया। इन दोनों सम्मेलनों में 17-17 व्यक्ति उपस्थित थे। दोनों कार्यक्रम आई.ई.डी. की वकालत से संबंधित थे। योजना के कार्यान्वियन हेतु राज्यों के लिए परियोजना प्रस्ताव तैयार किये गये। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से विकलांगों के लिए एकीकृत शिक्षा संबंधी यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजना के अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए राज्यों को लिखा गया।

(2) *विशेष शिक्षा में अनुसंधान प्रोन्नति संबंधी राष्ट्रीय कार्यशाला*

एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 8 जनवरी, 1986 से 11 जनवरी, 1986 को चार दिवसीय यह कार्यशाला आयोजित की गई। एस.आई.ईज़/एस.सी.ई.आर.टीज. विशेष शिक्षा के लिए यू.जी.सी. द्वारा सहायता प्राप्त विश्वविद्यालय विभागों, राष्ट्रीय विकलांग संस्थानों तथा तीन अग्रगामी स्वैच्छिक संगठनों से 31 सदस्य उपस्थित थे। कार्यशाला में विशेष शिक्षा में निहायत सीमित अनुसंधान पर चिन्ता व्यक्त की गई। आई.ई.डी. कार्यक्रमों के केस अध्ययनों और एकीकरण बालकों के प्रभावों संबंधी सहकारी अनुसंधान परियोजनाएं नियोजित की गईं।

(3) *अपंगों के लिए सृजनात्मक कलाओं संबंधी कार्यशाला*

यह कार्यशाला कोयम्बेटूर में 31 मार्च से 4 अप्रैल, 1986 तक अर्थात पांच दिनों के लिए आयोजित की गई और इसमें 22 सहभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अपंगों के लिए सृजनात्मक कलाओं संबंधी तैयारी का कार्य हाथ में लिया गया।

(4) *नियमित स्कूलों में आंखों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों का समायोजन*

1985-86

एक पांच दिवसीय कार्यशाला कोयम्बेटूर में 14 अक्तूबर से 18 अक्तूबर, 1985 तक नियमित स्कूलों में आंखों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों के समायोजन हेतु आयोजित की गई। इस बैठक में आंखों से विकृत बच्चों की एकीकृत शिक्षा के लिए कार्य कर रहे विश्वविद्यालयों व संस्थाओं से 13 विशेषज्ञ उपस्थित थे। नियमित अध्यापकों के लिए निर्देशक सिद्धांत विकसित करने के लिए समायोजन अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों का ढांचा निर्मित किया गया।

(5) *नियमित स्कूलों में कानों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशी सामग्रियों व पद्धतियों का समायोजन*

नियमित स्कूलों में कानों से विकृत बच्चों की आवश्यकताओं के अनुकूल अनुदेशी सामग्रियां व पद्धतियां विकसित करने के लिए 14 अक्तूबर से 18 अक्तूबर, 1985 तक मद्रास में एक पांच-दिवसीय कार्यदल बैठक आयोजित की गई। नियमित स्कूलों में कानों से विकृत बच्चों को प्रथम भाषा पढ़ाने के लिए निर्देशक सिद्धांत विकसित किये गये। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं से दस विशेषज्ञों ने भाग लिया।

(6) *प्रमापीय अनुदेशी सामग्री का विकास*

स्रोत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रमापीय अनुदेशी सामग्री विकसित की गई और उसे डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. के संकाय द्वारा प्रकाशन के लिए संसाधित किया गया। मनो-शैक्षिक केन्द्र के लिए भी उपकरण प्राप्त किये जा रहे हैं।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

(1) अनुदेशी सामग्री तैयार करने हेतु योजना समूह बैठकें :

दो योजना समूह बैठकें आयोजित की गईं- एक सिक्किम में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के लेपचा जनजातीय बच्चों के लिए अनुदेशी सामग्री तैयार करने हेतु तथा दूसरी तमिलनाडु के इरुला जनजातीय बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार करने हेतु। दोनों बैठकें नई दिल्ली में क्रमशः दो और तीन दिनों के लिए मार्च 1986 में आयोजित की गईं। कुल मिलाकर इनमें 13 व्यक्ति उपस्थित थे।

(2) *पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन हेतु योजना समूह बैठक*

जनजातीय बोलियों-हल्बी, कुड़ुख, गोंधी, कोरख, और भिल्ल (म.प्र.) -में लिखी पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए यह समूह बैठक आयोजित की गई। यह बैठक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में दो दिनों के लिए 26 और 27 फरवरी 1986 को आयोजित की गई और इसमें 8 व्यक्ति उपस्थित थे।

(3) *अभिविन्यास पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने के लिए कार्यदल बैठकें*

उन समस्याओं को जो अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास में बाधक हैं, पर काबू पाने के लिए अध्यापक शिक्षकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम के पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने के लिए दो कार्यदल बैठकें (एक प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा स्तर पर तथा दूसरी माध्यमिक अध्यापक शिक्षा स्तर पर)आयोजित की गईं। ये कार्यक्रम क्रमशः दो व तीन दिनों के लिए दिसम्बर 1985 और मार्च 1986 में किये गये। पहली बैठक में सात व्यक्ति तथा दूसरी बैठक में छः व्यक्ति उपस्थित थे। उन समस्याओं को जो अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास के लिए बाधक हैं, पर काबू पाने के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के आधार पर कर्मियों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम संबंधी पाठ्यविवरण को अंतिम रूप देने के लिए दूसरी कार्यदल बैठक तीन दिनों के लिए 18 से 20 मार्च, 1986 को आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में नौ सहभागी उपस्थित थे। अनुसूचित जातियों के दृष्टिकोण से आपत्तिजनक सामग्रियों का पता लगाने के लिए पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना ही दूसरी कार्यदल बैठक का उद्देश्य था। दूसरी बैठक पांच दिनों के लिए 17 से 21 मार्च, 1986 को की गई और इसमें नौ-सहभागी उपस्थित थे। ये सारी चार कार्यदल बैठकें एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में की गईं।

(4) *एन.एफ.ई. और स्कूल विद्यार्थियों के लिए मापदंडो को तैयार करना :*

स्कूली बच्चों में जाति-भावों को दूर करने संबंधी विभिन्न निष्कर्षों पर अनौपचारिक शिक्षा व स्कूली बच्चों के लिए मापदंड तैयार करने का कार्य हाथ में लिया गया। इस संबंध में एक पांच दिवसीय बैठक 31 मार्च, 1986 से 4 अप्रैल, 1986 तक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में की गई और इसमें नौ व्यक्ति उपस्थित थे।

महिला शिक्षा

लड़कियों के लिए एन.एफ.ई. अनुदेशक तैयार करने संबंधी विधियों व पद्धतियों के विकास पर एक द्विदिवसीय संगोष्ठी 28 और 29 जनवरी, 1986 को रोहतक में आयोजित की गई। कथित उद्देश्य के लिए समुचित विधियां व सामग्रियां विकसित करने के लिए संगोष्ठी में क्षेत्रों को पहचाना गया। इसमें दस सहभागी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्तर पर महिला शिक्षा में रत स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करने एक त्रिदिवसीय बैठक 23 सितम्बर से 25 सितम्बर, 1985 को की गई। लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों में सहयोग के क्षेत्र पहचाने गये।

इस क्षेत्र में किये गये कार्य के बारे में सदस्यों को जानकारी देने के लिए तथा साथ ही जनसंचार में महिला प्रस्तुतीकरण संबंधी प्रश्नों और लड़कियों की औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा संबंधी युक्तियों पर चर्चा करने के लिए महिला शिक्षा निदेशक द्वारा स्थापित स्थायी समिति की 15 अक्तूबर और 28 फरवरी, 1986 को एक-एक दिन की दो बैठकें की गईं। प्रथम बैठक में 12 सहभागी तथा दूसरी में 11 सहभागी उपस्थित थे।

लडकियों के लिए एन.एफ.ई. अनुदेशक तैयार करने संबंधी विधियों व पद्धतियों के विकास पर एक छः दिवसीय कार्यशाला रोहत में 31 मार्च से 5 अप्रैल 1986 को आयोजित की गई। पांच क्षेत्रों में पहले से पहचाने गये माड्यूलों को कार्यशाला में विकसित किया गया। ये क्षेत्र थे :

i) वैज्ञानिक मनोदशा और उपकरण विवेक
ii) ग्रामीण महिलाओं के लिए उदित विज्ञान व प्रौद्योगिकी
iii) कानूनी साहित्यिक घटक
iv) समुदाय सहभागिता आमंत्रण और
v) शैक्षिक लक्ष्यों के लिए जनसंचार का प्रयोग। इस क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुदेशकों की सहायता से पांच क्षेत्रों में माड्यूलों को विकसित किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. और तमिलनाडु राज्य द्वारा (अंग्रेजी, हिन्दी और तमिल) तैयार भाषा पाठ्यपुस्तकों/पूरक पाठमालाओं तथा एन.बी.टी. और सी.ई.टी. द्वारा तैयार बाल साहित्य में से सैक्स-प्रवृति दूर करने के लिए भी एक परियोजना हाथ में ली गई। इस उद्देश्य के लिए मूल्यांकनकारी प्रक्रियाएं बनाई गई तथा सेक्स-प्रवृति दूर करने संबंधी मूल्यांकन उपकरण हिन्दी और अंग्रेजी में अलग से छपवाए गये। इस विभाग द्वारा मोदीपुरम और उटकमंड में आयोजित दो कार्यशालाओं में जिसमें क्रमशः 23 और 16 सहभागी उपस्थित थे, कुल 400 पुस्तकें मूल्यांकित की गईं। 400 मूल्यांकन कार्डों का विश्लेषण तथा सारणीबद्ध करने की दृष्टि से पुनरीक्षण समूह बैठक आयोजित की गई।

लखनऊ में पांच दिनों के लिए गुणवत्ता संबंधी विषय पर पूरक सामग्री के विकास के लिए योजना समूह बैठक पांच दिनों के लिए आयोजित की गई। महिला स्थिति के अनुरूप विभिन्न पहचाने गये मूल्यों पर एक कहानी संकलन, एक छोटे उपन्यास की रूपरेखा और ग्रंथसूचियों की श्रृंखला रेखचित्रित की गई। इस बैठक में 13 व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

इन विभाग ने अध्यापक शिक्षा में लगे अध्यापक शिक्षकों और अन्य कार्मिकों के लिए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। इन कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत सूचना क्षेत्रवार नीचे दी गई है:

अध्यापक शिक्षा

(i) *शिक्षण माडल*

इन्दौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में आठ दिनों के लिए शिक्षण माडलों पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे (क) शिक्षण के दो माडलो में अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षण देना – संकल्पना प्राप्ति माडल और जांच प्रशिक्षण माडल, (ख) इन माडलों की प्रशिक्षण विधियों की क्षमता का अध्ययन करना और (ग) अभ्यास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कौन से शिक्षण माडल एकीकृत किये जा सकते हैं, उनकी परिधि का अध्ययन करना। इस अभिविन्यास कार्यक्रम में 27 माध्यमिक अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के 55 अध्यापक शिक्षक उपस्थित थे। प्रायोगिक क्षेत्र अध्ययन का एक मास्टर डिज़ाइन विकिसत किया गया। हरेक संस्था ने 1985-86 वर्ष में अपने मास्टर प्रोजेक्टों के ढांचे के अन्तर्गत संचालित करने के लिए अपना ही डिज़ाइन और प्रायोगिक अध्ययन विकसित किया। बाद में मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा कालेज में तीन दिनों के लिए शिक्षण माडलों की एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 30 सहभागी उपस्थित थे।

(ii) *नियोजन और रचना अनुसंधान परियोजनाएं*

छः-छः दिनों की दो कार्यशालाएं नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर और मिर्ज़ा–गौहाटी में नियोजन और रचना अनुसंधान परियोजनाओं पर आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में क्रमशः 39 और 24 व्यक्ति उपस्थित थे।

(iii) *पाठ्यपुस्तकों में अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास*

छः-छः दिनों के दो अभिविन्यास कार्यक्रम "उदित भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा" बम्बई में (17 से 22 फरवरी 1986) और अमरावती में (31 मार्च से 5 अप्रैल 1986) प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के लिए आयोजित किये गये और इनमें क्रमशः 39 और 24 सहभागी उपस्थित थे।

दूसरा अभिविन्यास कार्यक्रम "पाठ्यचर्या व मूल्यांकन" पाठ्यपुस्तक में माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम अक्तूबर 1985 में त्रिवेंद्रम में किया गया और उसमें 20 सहभागी उपस्थित थे।

(iv) *संगोष्ठी पाठमालाओं में अभिविन्यास कार्यक्रम*

एन.आई.ई., (एन.सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली में 17 और 18 फ़रवरी, 1986 को एक द्विदिवसीय कार्यक्रम उत्तरी राज्यों के माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के संकाय के लिए आयोजित किया गया। इसमें 22 सहभागी उपस्थित थे। सहभागियों को अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में नवोत्पादों के संभावित क्षेत्रों की जानकारी दी गई।

विशेष शिक्षा

अपंगों के लिए एकीकृत शिक्षा हेतु आधार कार्मिकों का प्रशिक्षण

एन.आई.ई., (एन.सी.ई.आर.टी.), नई दिल्ली में नवंबर, 1985 से फरवरी 1986 तक अपंगों (आई.ई.डी.) के लिए स्वीकृत शिक्षा हेतु आधार कार्मिकों के लिए एक त्रिदिवसीय सेवा दौरान प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। अपंग बच्चों को शिक्षित करने के लिए तथा आई.ई.डी. कार्यक्रमों के नियोजन, पर्यवेक्षण और कार्यान्वयन हेतु उचित सक्षमताएं विकसित करने के लिए प्रशिक्षणार्थियों की सहायता की गई। पाठ्यक्रम ने अपंगो की सिद्धांत संबंधी कार्यसाधक जानकारी तथा शिक्षा-प्रयोग की जानकारी प्रदान की। इस पाठ्यक्रम में दस व्यक्तियों ने भाग लिया।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

(i) *जनजातीय क्षेत्रों में कार्य कर रहे अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम*

जनजातीय क्षेत्रों में स्थित प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए इलाहाबाद और नई दिल्ली में दो एक-साप्ताहिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किये गये। जनजातीय जीवन, संस्कृति और शिक्षा समस्याओं से अध्यापक शिक्षकों को अवगत कराने के लिए पाठ्यक्रम नियोजित किये गये। आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र राज्यों से 27 सहभागी प्रथम पाठ्यक्रम में उपस्थित थे। द्वितीय पाठ्यक्रम एन.आई.ई. कैम्पस, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, में आयोजित किया गया जहां मिजोरम, सिक्किम, नागालैंड और आसाम के पांच सहभागी उपस्थित थे।

जनजातीय क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। पाठ्यक्रम के दौरान अध्यापक शिक्षकों को जनजातीय जीवन, संस्कृति और जनजातीय शिक्षा-समस्याओं से अवगत कराया गया। दोनों कार्यक्रम सात-सात दिनों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में आयोजित किये गये। कुल मिलाकर दो पाठ्यक्रमों में 29 व्यक्ति उपस्थित थे।

(ii) *जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक कार्यक्रम के आधार कार्मिकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम*

जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा के आधार कार्मिकों के लिए प्रथम अभिविन्यास पाठ्यक्रम सात दिनों के लिए जोरहट में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में असम, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे 14 व्यक्ति उपस्थित थे। द्वितीय अभिविन्यास पाठ्यक्रम उदयपुर में आयोजित किया गया और इसमें आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के 11 व्यक्ति उपस्थित थे। ये पाठ्यक्रम जनजातीय बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, जनजातीय शिक्षा की समस्याओं और जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की व्यवस्था से आधार व्यक्तियों को अवगत कराने में सहायता प्रदान करते हैं।

(iii) *जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के आधार कार्मिकों के लिए पुनराभिविन्यास पाठ्यक्रम :*

एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों के आधार कार्मिकों के लिए एक पुनराभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। यह पांच दिनों का था और इसमें 16 व्यक्ति उपस्थित थे।

महिला शिक्षा

आधार व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

पाठ्यपुस्तक सामग्रियों के मूल्यांकन हेतु आधार कार्मिकों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम पांच-पांच दिनों के लिए बंगलौर और अलमोड़ा में आयोजित किये गये। सेक्स-झुकाव को दूर करने के दृष्टिकोण से मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषाओं और अंग्रेज़ी में पाठ्यपुस्तकों और पूरक सामग्रियों के मूल्यांकन हेतु आधार व्यक्तियों को प्रशिक्षण प्रदान करना इन अभिविन्यास कार्यक्रमों का उद्देश्य था। विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों के भिन्न-भिन्न एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टीज. से लिए गये 40 आधार कार्मिक इन दो कार्यक्रमों में उपस्थित थे।

दूसरा कार्यक्रम पुरी में प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या के माध्यम से महिला स्थिति में आधार कार्मिकों के अभिविन्यास से संबंधित था। इस कार्यक्रम की अवधि पांच दिनों की थी। इस कार्यक्रम में राज्य शिक्षा संस्थाओं/उत्तर-पूर्व क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टीज़. के 17 कार्मिक उपस्थित थे। कुछ सहभागियों ने प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यचर्या के माध्यम से महिला स्थिति पर अध्यापक हस्तपुस्तक के लिए विषय विकसित किये।

अध्यापकों की अनुवर्ती शिक्षा के लिए केंद्र

यह विभाग अध्यापकों की अनुवर्ती शिक्षा के लिए केंद्रों संबंधी गतिविधियों को समन्वित करता आ रहा है। ये केंद्र राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में माध्यमिक अध्यापकों और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों को सेवा-दौरान शिक्षा प्रदान करते रहे हैं। इन केन्द्रों की अनुदान राशि 50-50 प्रतिशत के आधार पर केंद्रीय और राज्य सरकार वहन करती है।

समीक्षाधीन अवधि में कोयम्बटूर, औरंगाबाद, पटना और कलकत्ता में अवैतनिक निदेशकों/समन्वयकर्ताओं के चार क्षेत्रीय सम्मेलन किये गये। सम्मेलनों के मुख्य लक्ष्य थे (i) देश में राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के सी.सी.ईज की गतिविधियों और प्रगति का जायज़ा लेना (ii) पेश आ रही समस्याओं के हल ढूंढना (iii) अनुभव और चर्चा के द्वारा सी.सी.ईज़. को पेश आ रही समस्याओं के हल ढूंढना और (iv) नये संदर्भ में सी.सी.ईज की भूमिका चर्चित करना और वर्तमान योजना में परिवर्तन प्रस्तावित करना।

चार सम्मेलनों व दो कार्यसमूह बैठकों के बारे में विस्तृत सूचना निम्न प्रकार है: —

- प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन कोयम्बटूर में 23 से 25 सितम्बर, 1985 को केरल, कर्नाटन, तमिलनाडु और पांडिचेरी के सी.सी.ईज़ के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया। इसमें 29 व्यक्ति उपस्थित थे।
- द्वितीय क्षेत्रीय सम्मेलन औरंगाबाद में 19 से 21 नवम्बर 1985 को महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश और हिमाचल प्रदेश के सी.सी.ईज़ के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया। सी.सी.ईज़. के 26 अवैतनिक निदेश्कों/समन्वयकर्ताओं ने इसमें भाग लिया।
- तृतीय क्षेत्रीय सम्मेलन पटना में 16 से 18 जनवरी 1986 को बिहार और उ.प्र. के सी.सी.ईज़. के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के लिए आयोजित किया गया। इसमें 43 सहभागी उपस्थित थे।

– चतुर्थ क्षेत्रीय सम्मेलन कलकत्ता में 26 से 28 फरवरी, 1986 को पूर्वी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सी.सी.ईज. के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं केलिए आयोजित किया गया। इसमें 19 व्यक्ति उपस्थित थे।
– प्रथम कार्यदल बैठक "सेवा-दौरान शिक्षा अभिकरणों व मकेनिज़्म का एक अध्ययन" नई दिल्ली में 28 से 29 अगस्त, 1985 को की गई। इस बैठक में पांच सदस्य उपस्थित थे।
– द्वितीय कार्यदल बैठक "सेवा-दौरान शिक्षा अभिकरणों व मकैनिज़्म का एक अध्ययन" नई दिल्ली में 10 से 19 मार्च, 1986 को की गई। इसमें 9 सदस्यों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.)

अध्यापक शिक्षा में मानक कायम रखने तथा अध्यापक शिक्षा में पर्याप्त मानक आश्वस्त करने संबंधी प्लान योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करने और अध्यापक शिक्षा संबंधी सभी मामलों पर भारत सरकार और राज्य सरकारों को परामर्श प्रदान करने के लिए यह विभाग मई 1973 में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के एक संकल्प द्वारा स्थापित, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के सचिवालय का कार्य करता आ रहा है। इस एन.सी.टी.ई. में चार प्रमुख अकादमिक स्थायी समितियां हैं– संचालन समिति, स्कूल-पूर्व और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा समिति, माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति और शारीरिक रूप से विकलांगों और मानसिक रूप से अवरुद्धों के लिए विशेष स्कूलों के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु समिति।

रिपोर्टाधीन वर्ष में एन.सी.टी.ई. के तत्वावधान में निम्नलिखित बैठकें/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित की गईं:

– 26 अगस्त, 1985 को एन.सी.टी.ई. की संचालन समिति की 11 वीं बैठक
– 23 दिसम्बर, 1985 को एन.सी.टी.ई. की महापरिषद् की बैठक
– 28-30 जनवरी, 1986 को मूल्य-अभिविन्यस्त अध्यापक शिक्षा में हस्तपुस्तक विकसित करने के लिए कार्यदल की दूसरी बैठक की गई।
– 19-20 फरवरी, 1986 को कालेज शिक्षण की एक स्रोत पुस्तक तैयार करने के लिए लेखकों की नामिका की तीसरी बैठक की गई।
– 21 मार्च, 1986 को एन.सी.टी.ई. की माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की 9 वीं बैठक की गई।
– 25 फरवरी, 1986 को एन.सी.टी.ई. की विशेष स्कूल अध्यापक शिक्षा समिति की 7 वीं बैठक की गई।
– 3-4 मार्च, 1986 को एस.बी.टी.ईज. का 6 वां वार्षिक सम्मेलन किया गया।

परामर्श सेवा

निम्नलिखित संस्थाओं को परामर्श सेवाएं प्रदान की गई

क्र.सं.	संस्था का नाम	परामर्श सेवा की प्रकृति
1.	यूनेस्को	i) क्षेत्रीय नियोजन संगोष्ठी के लिए चर्चा और कार्य-पत्र तैयार करना और 12-24 अगस्त, 1985 को कोयम्बटूर में विशेष शिक्षा पर कार्यशाला। ii) नेत्रक्षीण अध्यापकों के लिए हस्तपुस्तक तैयार करने के लिए निर्देशक सिद्धांतों का विकास
2.	नेत्र-क्षीण राष्ट्रीय संस्थान, देहरादून	i) अकादमिक कार्यक्रमों का विकास। ii) अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रचना। iii) नेत्र-क्षीण व्यक्तियों के लिए सुविधाओं का नियोजन और रचनाकारी सर्वेक्षण।
3.	मानसिक अल्पावर राष्ट्रीय संस्थान, हैदराबाद	i) अकादमिक कार्यक्रमों का विकास करना। ii) स्रोत योजनाओं को विकसित करना। iii) मानसिक-क्षीणों के लिए प्राइमरी स्तर पर पाठ्यचर्या विकास के लिए डिज़ाइन तैयार करना।
4.	तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान,	पालिटैक्नीक स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण माडल।
5.	भारतीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्था	विशेष शिक्षा के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी
6.	राज्य शिक्षा संस्थान दिल्ली	शैक्षिक प्रबंध पर प्रिंसीपलों और उपप्रिंसिपलों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को रचने और नियोजित करने में सहायता को बढ़ाया गया।

प्रकाशन

वर्ष 1985-86 में डी०टी०ई०एस०ई०ई० के प्रकाशन (मुद्रित और साइक्लोस्टाइल) नीचे दिये गये हैं:

क्र० सं०	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित की गई प्रतियों की संख्या
1.	भारत में अनौपचारिक शिक्षा	मार्च, 1986	1000
2.	जनजातीय क्षेत्रों में	जुलाई, 1985	500

1985-86

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित की गई प्रतियों की संख्या
	अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की पद्धतियों, संसाधनों और प्रयोगों का अध्ययन		
3.	क्लास- 2 (भाग- I) के लिए साओरा	जून 1985	5000
4.	आधार व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट	फरवरी, 1986	200
5.	आई०ई०डी० स्कीम के समन्वयकर्ताओं के लिए सम्मेलन की रिपोर्ट	अक्तूबर, 1985	200
6.	नियमित स्कूलों में नेत्र-क्षीणों की आवश्यकताओं के अनुसार अनुदेशी सामग्रियों और पद्धतियों का समायोजन	अक्तूबर 1985	100
7.	नियमित स्कूलों में कान-क्षीणों की आवश्यकताओं के अनुसार अनुदेशी सामग्रियों और पद्धतियों का समायोजन	जनवरी 1986	200
8.	विशेष शिक्षा में अनुसंधान की समीक्षा।	जनवरी 1986	100
9.	स्रोत व्यक्तियों के प्रशिक्षण के लिए माड्यूलर अनुदेशी सामग्री	प्रेस में	
10.	विकलांगों के लिए सृजनात्मक कला	मार्च, 1986	100
11.	उदित भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा—प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए पाठ्यपुस्तक	प्रेस में	
12.	प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा में विचार और प्रयोग-संगोष्ठी वाचन पुरस्कार विजेता ख- II के पुरस्कृत लेख	मई 1985	500
13.	माइक्रो-शिक्षण घटकों के प्रभावकारी अध्ययन (प्रारंभिक स्तर)	जनवरी 1985	150
14.	शिक्षण के माडल : विकासशील प्रशिक्षण विधि की ओर	नवम्बर 1985	150
15.	प्रारंभिक स्कूल अध्यापक के लिए मनोविज्ञान	मार्च 1985	1000
16.	माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए मनोविज्ञान	प्रेस में	

विकलांग बुलेटिनों की एकीकृत शिक्षा

आई०ई०डी० बुलेटिन खंड III सं I से 4, मार्च, जून, सितम्बर और दिसम्बर 1985 की अवधि में प्रकाशित किये गये और विभिन्न संस्थाओं को भेजे गये।

समुदाय गान

जन आंदोलन के रूप में विकासशील समुदाय गान कार्यक्रम के अधीन यह विभाग भारत के सभी भागों से आए संगीत अध्यापकों के लिए समुदाय गान प्रशिक्षण कैम्प आयोजित करता आ रहा है। इस समय विभिन्न भारतीय भाषाओं से चुने गये 15 गाने अध्यापकों को संगीत विशेषज्ञों द्वारा जैसे श्री एम.बी. श्रीनिवासन (मद्रास), श्री कानू घोष (बंबई) श्री वी.सी. मौदगल्य (दिल्ली) और श्री सतीश भाटिया (दिल्ली), सिखाए जा रहे हैं। राष्ट्रीय एकता भावना को सुदृढ़ करने और सारे देश में नवयुवकों के मध्य देशभक्ति मूल्य प्रोत्साहित करने के लिए ये कैम्प निस्संदेह राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का एक स्रोत बन गये हैं।

1985-86 वर्ष में स्कूल प्रणाली में समुदाय-गान को संस्थानिकीकृत करने के प्रयास के रूप में तथा राष्ट्रीय एकता को प्रोन्नत करने के लिए इस विभाग ने राज्यस्तर के विभिन्न अभिकरणों व संस्थाओं के सहयोग से पूरे देश के 19 राज्यों व संघशासित क्षेत्रों के लिए 29 शिविर आयोजित किये और 1164 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया। शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हरेक अध्यापक को यह निर्देश दिया गया है कि वह अपने स्कूल और पड़ोसी स्कूलों के कम-से-कम 1000 बच्चों को गाने सिखाएं।

इस वर्ष सारे देश के राज्यों के लगभग 140 अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों को एन.सी.ई.आर.टी. प्रशिक्षण देने में समर्थ रही है। ये प्रशिक्षणार्थी अपने-अपने राज्यों में समुदाय-गान को अधिक उत्तेजक तरीके से प्रचारित करने के लिए आधार व्यक्ति के रूप में कार्य करेंगे।

एन.सी.ई.आर.टी. सभी शिविर सहभागियों को 15 गाने वाले कैसेट, "लेट्स सिंग टुगैदर" तथा रिकार्डर वितरित कर रही है ताकि कार्य

सरल हो जाए और आगे का प्रशिक्षण रिद्म और लय से विचलित हुए बिना प्रदान किया जाए। इससे अध्यापकों को अपने कक्षा-कमरों में शिक्षण अधिगम स्थिति को विकसित करने में भी सहायता मिलती है। इस योजना के अन्तर्गत एक रिकार्ड किया हुआ कैसेट "चाइल्डहुड मैमोरीज आफ मिसेज इंदिरा गांधी" भी सभी प्राथमिक स्कूलों को वितरित किया जा रहा है। संगीत गान अभियान को बढ़ाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने क्रमशः क्षेत्रीय निबन्धकर्ता-संवाहक श्री एम.बी. श्रीनिवासन, श्री वी.सी. मौदगल्य और श्री कानू घोष के पर्यवेक्षण में दक्षिणी, उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों में संगीत निर्देशक नियुक्त किये हैं।

गणराज्य दिवस समारोह 1986 के दौरान डा. इकबाल के प्रसिद्ध गाने "सारे जहान से अच्छा" को सांस्कृतिक झांकी में एक शानदार समापन के रूप में समाविष्ट किया गया, जिसमें 1150 स्कूलों के बच्चों ने इस गाने को गाया और दर्शकों को उनके साथ गाना गाने में प्रेरित किया।

नवोदय विद्यालय

यह स्वीकार करते हुए कि विशेष प्रतिभा या अभिरुचि रखने वाले बच्चों को अच्छे स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराते हुए उन्हें अधिक तेजी से आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिएं, चाहे उनकी आर्थिक स्थिति कैसी भी हो, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने सातवीं पंचवर्षीय योजना में नवोदय विद्यालय के नाम से हरेक जिले में एक आवासीय आदर्श स्कूल खोलने का निश्चय किया। ये विद्यालय गति-नियामक संस्थाओं के रूप में कार्य करेंगे। इन विद्यालयों को स्थापित करने के मुख्य लक्ष्य हैं— साम्यता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को पूरा करना, राष्ट्रीय एकता को प्रोन्नत करना, प्रतिभाशाली बच्चों को अपनी पूरी प्रतिभा को विकसित करने के अवसर प्रदान करना और स्कूल सुधार के राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम को सुकर बनाना।

इस विस्तृत ढांचे के अन्तर्गत योजना के विशिष्ट लक्ष्य निम्नलिखित हैं

(i) खासकर ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों की पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्थिति की परवाह किये बिना मूल्य-स्थापना के एक शक्तिशाली अवयव, पर्यावरण के प्रति जागृति, प्रतिभाशाली बच्चों को साहसिक गतिविधियों और शारीरिक शिक्षा वाली अच्छे स्तर की आधुनिक शिक्षा प्रदान करना।

(ii) उचित स्तर पर सारे भारतवर्ष में हिन्दी, अंग्रेजी जैसे समान माध्यम से शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करना।

(iii) स्तरों में तुलनात्मकता आश्वस्त करने हेतु और हमारे लोगों की समान व मिश्रित विरासत के प्रति सूझबूझ को सुकर करने के लिए एक समान कोर-पाठ्यचर्या प्रस्तुत करना।

(iv) राष्ट्रीय एकता प्रोन्नत करने और सामाजिक अन्तर्वस्तु को समृद्ध बनाने के लिए प्रत्येक स्कूल के बच्चों को देश के एक भाग से दूसरे भाग में उत्तरोत्तर रूप से ले जाना।

(v) सजीव स्थितियों में अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा अनुभवों व सुविधाओं के आपसी आदान-प्रदान द्वारा स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता सुधार हेतु एक केन्द्र बिंदु के रूप में कार्य करना।

नवोदय विद्यालयों में प्रवेश छठी कक्षा से है। प्रवेश का आधार तहसील/खंड स्तर पर एक टैस्ट है, जिसमें तहसील/खंड पाठशालाओं के पांचवीं पास सभी बच्चे बैठ सकते हैं। नवोदय विद्यालय में सहशिक्षा होगी और प्रथमतः ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए। अतः शहरी क्षेत्रों से प्रवेश अधिकतम एक-चौथाई तक सीमित है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के बच्चों के लिए आरक्षण संबंधित जिले में उनकी जनसंख्या के अनुपात से इस शर्त पर रखा गया है कि किसी भी जिले में यह आरक्षण राष्ट्रीय औसत से कम नहीं है।

नवोदय विद्यालयों में शिक्षा, भोजन व आवास सहित यूनीफार्म, पाठ्यपुस्तकों, लेखन-सामग्री, घर से वापसी तक का रेल/बस किराया आदि सभी मुफ्त हैं।

इस कार्यक्रम में एन.सी.ई.आर.टी. कई तरीकों से सम्बद्ध है। पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों व अनुदेशी सामग्रियों. सहपाठ्यचारी गतिविधियों, मूल्यांकनकारी प्रविधियों और अध्यापक शिक्षा/अभिविन्यास कार्यक्रमों को विकसित एवं परिष्कृत करने का दायित्व परिषद् को सौंपा गया। इस कार्य के लिए विषय से संबंधित विशेषज्ञों की समितियां एन.सी.ई.आर.टी. में गठित की गईं। फिर इन समितियों द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट पर इस कार्य के लिए गठित कार्यबल ने 5 अगस्त, 1985 को विचार किया। इस कार्यबल में देश के शीर्षस्थ विशेषज्ञ थे। कार्यबल द्वारा अनुमोदित अंतिम रिपोर्ट ने एक व्यापक ढांचा और निर्देशक सिद्धांत प्रदान किये।

परिषद् में एक माडल स्कूल सेल स्थापित किया गया जोकि नवोदय विद्यालयों के कार्य का अनुवीक्षण करता है और इस कार्य में परिषद् के विभिन्न विभागों को भिन्न-भिन्न तरीकों से सक्रिय रूप में सम्मिलित किया गया है।

दो नवोदय विद्यालयों—एक महाराष्ट्र में अमरावती में और दूसरा हरियाणा में रोहतक जिला झज्जर में— को शुरू करने का निर्णय लिया गया। इन स्कूलों के लिए जगहों को चुना गया और एन.सी.ई.आर.टी. के माध्यम से भवनों की मरम्मत तथा उन्हें विस्तृत करने के लिए सभी व्यवस्थाएं की गईं ताकि ये भवन नवोदय विद्यालयों के इस्तेमाल के योग्य सिद्ध हो सकें। केंद्रीय विद्यालय संगठन से अध्यापक, प्रिंसिपलों सहित, प्रतिनियुक्ति पर चुने गये। माडल स्कूल सेल द्वारा इन अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इन स्कूलों में दाखिलों के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। चयन टैस्ट डी.एम.ई.एस.डी.पी. द्वारा विकसित एवं संचालित किये

1985-86

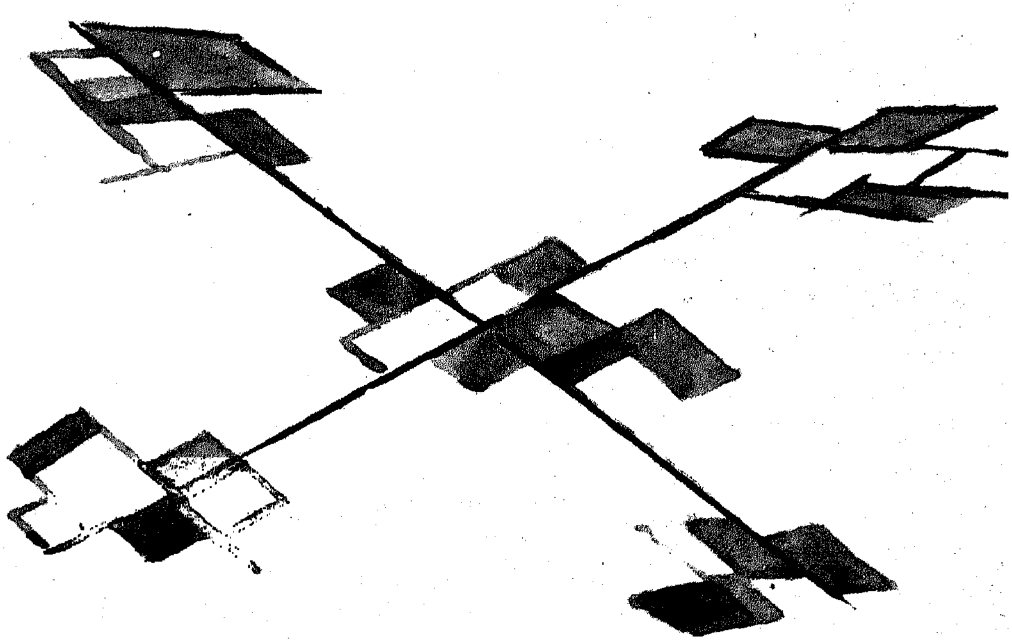
गये। इन टेस्टों के आधार पर प्रत्येक स्कूल में 80 विद्यार्थी चुने गये। स्कूलों ने अपना कार्य 5 मार्च, 1986 से आरंभ किया।

इन स्कूलों में अंग्रेजी शिक्षण हेतु विशेष आवयकताओं को पूरा करने के लिए डी.ई.एस.एस.एच. द्वारा एक विशेष पाठमाला तैयार की गई और सभी स्कूलों को भेजी गई। डी.ई.एस.एस.एच. द्वारा नवोदय विद्यालय, अमरावत्ती, के लिए हिन्दी शिक्षण हेतु एक विशेष सेतु पाठ्यक्रम भी विकसित किया गया और सामग्रियां स्कूलों को भेजी गईं। माडल स्कूल सेल द्वारा अपने-अपने क्षेत्र सलाहकारों के सहयोग से फरनीचर और उपकरण की खरीद के लिए प्रबंध किये गये। इन स्कूलों को टी.वी. सेट और टेप-रिकार्डर भी दिये गये। 1986-87 सत्र के लिए छठी कक्षा में प्रवेशों का कार्य माडल स्कूल सेल और डी.एम.ई.एस.डी.पी. दोनों द्वारा हाथ में लिया गया। प्रत्याशियों के लिए निर्देशक-सिद्धांत, सूचना-पत्र और आवेदन-पत्र तैयार किये गये और स्कूलों को दिये गये।

दो अकादमिक स्टाफ के साथ दस सहायता स्टाफ मिलाकर यह माडल स्कूल सेल उस समय तक तदर्थ आधार पर कार्य करने के लिए स्थापित किया गया है जब तक कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा बनाई गई नवोदय विद्यालय समिति अंतिम रूप से इन स्कूलों को अपने नियंत्रण में नहीं ले लेती है।

यह सेल नवोदय विद्यालयों से संबंधित विभिन्न मामलों में भी मानव संसाधन विकास मंत्रालय को परामर्श प्रदान करता आ रहा है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने वर्ष 1985-86 के लिए अमरावती और झज्जर के इन दो स्कूलों से संबंधित भोजन व आवास, शैक्षिक खर्चों, फरनीचर, बरतनों, प्रयोगशाला उपकरण, पुस्तकालय पुस्तकों, वेतन व भत्तों तथा भवनों की मरम्मत, विस्तार और परिवर्तन पर व्यय करने के लिए 22.50 लाख (प्लान के अधीन) की संस्वीकृति प्रदान कर दी है। एन.सी.ई आर.टी. द्वारा संबंधित स्कूलों को निधियां भेज दी गई हैं।



8

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज की सेवापूर्व शिक्षक-शिक्षा के प्रक्रियात्मक कार्यक्रमों का विकास चिन्ता का एक मुख्य विषय रहा है। ये सभी कालेज स्कूल स्तर पर ही पाठ्यचर्या पढ़ाने की कार्य प्रणाली, शैक्षिक मूल्यांकन और शैक्षिक प्रशासन से संबद्ध अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययनों का निष्पादन करने तथा लागू करने में लगे हुए हैं। प्रशिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से संबद्ध अनुदेशात्मक सामग्री का विकास और स्कूली शिक्षा तथा शिक्षक-शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यकलापों के अंतर्गत कालेजों के अन्य कार्यकलाप भी आते हैं।

प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा कालेज अपने अधिकार क्षेत्र के अंदर आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अजमेर का शिक्षा कालेज हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा संघीय राज्य चंडीगढ़ और दिल्ली की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भोपाल का शिक्षा कालेज गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र तथा संघीय राज्य दादर और नगर हवेली, एवं गोवा, दमन और दीव की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भुवनेश्वर के शिक्षा कालेज के अंतर्गत असम, बिहार, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, उड़िसा, सिक्किम, त्रिपुरा, और पश्चिम बंगाल तथा संघीय राज्य अण्डमान और निकोबार द्वीप, अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम आते हैं जबकि मैसूर के शिक्षा कालेज के अंतर्गत आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, और तमिलनाडु तथा संघीय राज्य लक्षद्वीप और पॉण्डिचेरी आते हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, अजमेर

इस कालेज में विज्ञान शिक्षा में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिससे बी.एससी (आनर्स/पास) बी.एड.की डिग्री प्राप्त होती है, विशेष रूप से विज्ञान/कृषि/वाणिज्य/भाषा (अंग्रेज़ी/हिंदी/उर्दू) का एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम , विशेष रूप से विज्ञान/वाणिज्य/भाषा का एक वर्ष का एम.एड पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम,,जिससे बी.एड. की डिग्री प्राप्त होती है, का अध्यापन कराया जाता है। इस कालेज में शिक्षा एवं विज्ञान में पी.एच-डी करने के लिए छात्रों को रजिस्टर करने की सुविधा उपलब्ध है। 30 छात्रों ने अपना नाम रजिस्टर करवाया है पर इसे एक पाठ्यक्रम नहीं माना जा सकता।

नामांकन

1985-86 वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन संख्या निम्नलिखित थी:

(क) सेवा पूर्व पाठ्यक्रम

प्रथम वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	69
द्वितीय वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	53
तृतीय वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	46
चतुर्थ वर्ष बी.एससी, (आनर्स/पास) बी.एड.	68
बी.एड. (विज्ञान)	62
बी.एड. (कृषि)	35
बी.एड. (वाणिज्य)	30
बी.एड. (हिंदी)	49
बी.एड. (अंग्रेजी)	40
बी.एड. (उर्दू)	31
एम.एड. (विज्ञान/वाणिज्य/भाषा)	20
कुल जोड़	503

(ख) सेवाकालीन पाठ्यक्रम

बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) I- समर	105
बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) II- समर	90
कुल जोड़	195

परिणाम

1984-85 के सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों के 1985 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित थे :

पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
प्रथम वर्ष बी.एस-सी (आनर्स/पास) बी.एड.	76	48	63.16
द्वितीय वर्ष बी.एस.सी (आनर्स/पास) बी.एड.	47	45	95.75
तृतीय वर्ष बी.एससी (आनर्स/पास)	69	66	95.65

पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशत
बी.एड.			
चतुर्थ वर्ष बी.एससी (आनर्स/पास)	26	26	100.00
बी.एड. (विज्ञान)	72	71	98.61
बी.एड. (कृषि)	26	26	100.00
बी.एड. (वाणिज्य)	30	30	100.00
बी.एड. (हिंदी)	43	43	100.00
बी.एड. (अंग्रेजी)	27	27	100.00
बी.एड. (उर्दू)	35	32	91.43
एम.एड.	14	12	85.71

विस्तार सेवा

कालेज के विस्तार सेवा विभाग ने कालेज के अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की आवश्यकताओं और मांगों को दृष्टि में रखकर विभिन्न क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा से संबंद्ध कार्यशालाएं/संगोष्ठियाँ आयोजित कीं। 1985-86 वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
1.	जनसंख्या शिक्षा पर कार्यशाला	34
2.	विज्ञान क्लब प्रायोजकों पर कार्यशाला	34
3.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों पर राज्य स्तर कार्यशाला	20
4.	व्यवहार विज्ञान में सहसंबंधी तकनीकों पर कार्यशाला	21
5.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों की अभिज्ञान आवश्यकताओं एवं समस्याओं पर क्षेत्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला	27
6.	व्यावहारिक शिक्षण के माध्यम से माध्यमिक विद्यालय के विषयों में जनसंख्या शिक्षा के समेकन पर शिक्षक-शिक्षा का क्षेत्रीय कार्यशाला	26
7.	सहकारी विद्यालयों के प्रिंसिपलों, हेडमास्टरों और शिक्षकों का अभिविन्यास सम्मेलन	64
8.	इतिहास शिक्षण की प्रक्रियात्मक उपलब्धि पर कार्यशाला	13
9.	+ 2 स्तर रसायन पर साधन प्रचयों के विकास पर कार्यशाला	18
10.	गूंगे-बहरे बच्चों के विशेष विद्यालयों में भाषा अध्ययन पर कार्यशाला	21
11.	पर्यावरण विज्ञान के प्रभावशाली शिक्षण के स्थानीय साधनों से शिक्षण के सहायक साधनों के विकास पर कार्यशाला	33
12.	आश्रम विद्यालयों पर कार्यशाला	18
13.	राजस्थान में जनजातीय शिक्षा पर पुस्तिका	15
14.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों के शैक्षिक विकास पर क्षेत्रीय कार्यशाला	20
15.	एस.यू.पी.डब्लू. फल प्ररिक्षण के शिक्षक गाइड के निर्माण पर कार्यशाला	25
	कुल जोड़	389

प्रकाशन

आलोच्य वर्ष में कालेज ने *"द एजुकेशनल ट्रेन्ड्स"* नामक अर्धवार्षिक शोध पत्रिका के दो अंक प्रकाशित किये। हाल में ही में स्कूल विज्ञान विज्ञान साधन पत्र का त्रैमासिक प्रकाशन शुरू किया गया है।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में विज्ञान-शिक्षा में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एस. सी. बी. एड, की डिग्री दी जाती है, अंग्रेजी में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम जिसमें बी.ए., बी.एड की डिग्री दी जाती है, विशेष रूप से विज्ञान/वाणिज्य में एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम, विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा में एक वर्ष का बी.एड. पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एड. की डिग्री दी जाती है, का अध्यापन कराया जाता है।

नामांकन

(क) सेवापूर्व पाठ्यक्रम

1.	बी.एस.सी. बी.एड	I वर्ष	84
2.	बी.एस.सी. बी.एड	II वर्ष	75

3.	बी.एस.सी. बी.एड III वर्ष	61
4.	बी.एस.सी. बी.एड IV वर्ष	52
5.	बी.ए. बी.एड I वर्ष	28
6.	बी.ए. बी.एड II वर्ष	28
7.	बी.ए. बी.एड III वर्ष	23
8.	बी.ए. बी.एड IV वर्ष	28
9.	बी.एड. (विज्ञान)	48
10.	बी.एड. (वाणिज्य)	41
11.	बी.एड. (प्रारंभिक)	38
12.	एम.एड.	10
	कुल जोड़ –	516

(ख) सेवाकालीन पाठ्यक्रम

1.	बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) I समर	121
2.	बी.एड. (ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम) II समर	99
	कुल जोड़	220

परिणाम : 1985-86 सत्र के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल में नामांकित छात्रों के 1985 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित थे :

पाठ्यक्रम	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशतता
बी.ए., बी.एड. I वर्ष	30	29	97.00
बी.ए., बी.एड. II वर्ष	30	24	80.00
बी.ए., बी.एड. III वर्ष	28	28	100.00
बी.ए., बी.एड. IV वर्ष	20	19	95.00
बी.एस.सी., बी.एड. I वर्ष	81	77	96.00
बी.एस.सी., बी.एड. II वर्ष	65	64	98.05
बी.एस.सी., बी.एड. III वर्ष	57	56	98.7%
बी.एस.सी., बी.एड. IV वर्ष	46	42	91.3%
बी.एड. (वाणिज्य)	40	40	100.00
बी.एड. (विज्ञान)	32	31	97%
बी.एड. (प्रारंभिक शिक्षा)	37	36	97.3%
एम.एड.	09	7	

विस्तार सेवा

कालेज ने स्कूली शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों और शिक्षा प्रशासकों के प्रशिक्षण से संबद्ध अनेक अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित की। 1985-86 के दौरान कालेज ने निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए:

क्र. सं.	कार्यक्रम	भाग लेने वालों की सं.
1.	बाल भारती उर्दू- I की अभ्यास पुस्तिका के निर्माण से संबद्ध कार्यशाला	18
2.	मध्यप्रदेश में +2 स्तर पर भौतिकी के शिक्षण में लगे मुख्य व्यक्तियों का अभिविन्यास	18
3.	बी.एड. प्रवर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान एवं गणित शिक्षा पाठ्यक्रम के विकास के निमित +2 स्तर पर प्रणाली मास्टरों तथा माध्यमिक प्रवर शिक्षकों के लिए विज्ञान एवं गणित में संगोष्ठी एवं कार्यशाला	21
4.	मध्यप्रदेश की प्रारंभिक शिक्षा के स्तर पर शिक्षकों/शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए विज्ञान तथा गणित में संगोष्ठी एवं कार्यशाला	17
5.	गुजरात राज्य के प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए मूल्यांकन तकनीक पर कार्यशाला	04
6.	मध्यप्रदेश में एस.यू.पी.डब्लू लागू करने के लिए उच्चतर माध्यमिक शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा शिक्षकों (क्रैफ्ट/एस.यू.पी.डब्लू) का अभिविन्यास	24
7.	मध्यप्रदेश (केवल जनजातीय क्षेत्रों के लिए) की बुनियादी प्रशिक्षण-संस्था की एन.एफ.ई. पाठ्यचर्या पर आधारित अध्यापन सामग्री का विकास	27
8.	महाराष्ट्र राज्य में वाणिज्य संगठन की अभ्यास पुस्तिका के पुनरीक्षण के लिए कार्यशाला	13
9.	मध्यप्रदेश (केवल जन-जातीय क्षेत्रों के लिए) में कक्षा- ix के अंग्रेजी शिक्षण के शिक्षकों और ज्ञान साधन व्यक्तियों के लिए अध्यापन सामग्री के उत्पादन पर कार्यशाला	67
10.	महाराष्ट्र राज्य में कक्षा- II की भूगोल अभ्यास पुस्तिका के निर्माण पर कार्यशाला	13
11.	नई 10+2 पद्धति के अंतर्गत मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में एस.यू.पी.डब्लू. का शिक्षण कराने वाले शिक्षकों का अभिविन्यास	23

1985-86

12.	मध्य प्रदेश में प्रारंभिक स्तर के विज्ञान एवं गणित के शिक्षकों/शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए संगोष्ठी एवं कार्यशाला	16
13.	एम.कॉम.एड. पाठ्यचर्या का पुनरीक्षण	06
14.	क्षेत्र के एक-शिक्षक विद्यालयों के शिक्षण में लगे मुख्य व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	24
15.	महाराष्ट्र और गोआ के प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए पियाजेटी विधि सहित अभिविन्यास कार्यक्रम	25
16.	प्रयोगशाला के उपकरणों की मरम्मत और देखभाल के लिए गुजरात के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के भौतिकी शिक्षकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रम	16
17.	महाराष्ट्र और गोवा के शिक्षकों के लिए अंग्रेजी शिक्षण विधियों में तीव्र पाठ्यक्रम	13
18.	एस.यू.पी.डब्लू. शिक्षकों के लिए कार्यकारी पुस्तिका के निर्माण पर शिक्षक-शिक्षा (क्रैफ्ट/एस.यू.पी.डब्लू.) की कार्यशाला	20
19.	+2 स्तर पर वाणिज्य के शिक्षण में लगे मुख्य व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	25
20.	+2 स्तर पर जैविकी के शिक्षण में गुजरात के माध्यमिक शिक्षा कालेजों के प्रणाली मास्टरों के लिए संगोष्ठी एवं कार्यशाला	03
21.	मध्य प्रदेश में कक्षा 5 के अंग्रेजी के शिक्षकों तथा ज्ञान-साधन व्यक्तियों के लिए अध्यापन सामग्री के उत्पादन से संबद्ध कार्यशाला	37
22.	समुदाय के साथ कार्य-क्षेत्र में शिक्षक-शिक्षा का अभिविन्यास कार्यक्रम	04
23.	मध्यप्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों के एन.एफ.ई. केन्द्रों के मुख्य व्यक्तियों के लिए मूल्यांकन तकनीक में अभिविन्यास	36
24.	प्रारंभिक शिक्षक-शिक्षा के स्तर पर गुजराती शिक्षण की कार्यप्रणाली पर कार्यशाला	25
25.	महाराष्ट्र में +2 स्तर के शिक्षकों तथा शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए जैविकी में अंतर्वस्तु समृद्धि पाठ्यक्रम	08
26.	माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए गुप्त ट्रेल सिद्धांत और परीक्षण निर्माण सहित अभिविन्यास कार्यक्रम	10
	कुल जोड़-	513

शोध परियोजना

1985-86 के दौरान पांच शोध परियोजनाओं से संबद्ध कार्यकलाप

1. **पर्यावरण संरक्षण से संबद्ध पूरक पठन सामग्री के विकास की परियोजना पूरी की गई।**
2. "मध्य प्रदेश के जैविकी-शिक्षकों की साधन सामग्री के लिए भोपाल के फ्लोरा का अध्ययन" की परियोजना प्रगति पर है।
3. "स्वच्छ जल जैविकी की शिक्षक-गुटका के निर्माण के लिए स्वच्छ जल में प्राणि का अध्ययन" की एक अन्य परियोजना पूरी कर ली गई है।
4. "पश्चिमी क्षेत्र में पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक की उपरिमुखी गतिशीलता पर शिक्षक-प्रशिक्षण (बी.एड. पाठ्यक्रम) का प्रभाव — एक तुलनात्मक अध्ययन" की परियोजना पूरी कर ली गई है और रिपोर्ट लगभग तैयार होने वाली है।
5. विज्ञान में कुछ समेकित प्रक्रियाओं (वर्गीकरण, अनुमान, पुर्वानुमान, विवेचलन, परिकल्पना, परिकल्पना परीक्षण, के विकास के लिए स्व-अध्ययन प्रक्रिया पर आधारित सामग्री की समता का विकास, मान्यीकरण और परीक्षण की परियोजना पूरी कर ली गई है।

विकासी कार्यक्रम

(क) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा

कालेज ने समाज के कमज़ोर वर्ग के लड़कों को कालेज में दाखिल करने के लिए विशेष प्रावधान उपलब्ध कराने तथा राज्य के जनजाति कल्याण विभाग के साथ संपर्क स्थापित करने की पहल की। अगले सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में लगभग 160 छात्रों का दाखिला लेने की आशा है। इसके अतिरिक्त मिडिल स्कूल के स्तर पर विज्ञान का शिक्षण करने के लिए जनजातीय/स्थानीय वातावरण के हिसाब से टेप किए गए तथा चित्रयुक्त पाठ तैयार किए गए।

(ख) जन संख्या शिक्षा

(कठपुतली-कला) पर आलेख तैयार करने के लिए चार सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए। उपलब्ध सामग्री की जांच की जा रही है और बाद में प्रकाशित कर दी जाएगी।

(ग) शैक्षिक +2 स्तर का व्यावसायीकरण

(1) अंग्रजी आशुंलिपि तथा टंकण और (2) बुनियादी इलैक्ट्रानिकी टेक्नोलॉजी के व्यावसायी पाठ्यक्रम सी.बी.एस.ई. की तरह चलते रहेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेना

लाहौर में 17 अगस्त से 26 अगस्त, 1985 तक यूनेस्को और पाकिस्तान के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित की गई भौतिकी शिक्षण की अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में यूनेस्को के निमंत्रण पर क्षेत्रीय शिक्षा-कालेज, भोपाल के प्रिंसिपल प्रो. जे.एस. राजपूत ने एक विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। उन्होंने (1) "भौतिकी के शिक्षण कार्यक्रमों में उपगमन" और (2) प्रवर माध्यमिक स्तर पर भौतिकी के शिक्षण में उपगमन" पर दो

लेख प्रस्तुत किए। प्रो. राजपूत ने "भौतिकी के मात्रक" के एक सत्र की अध्यक्षता की।

डा. आर.पी. सिंह, प्रोफेसर, विज्ञान विभाग और डा. एस.पी. शर्मा, रीडर, विज्ञान विभाग ने 14 मार्च से 6 जून 1985 तक "वर्ग परियोजना के अधीन" कम्प्यूटर साक्षरता और स्कूलों में अध्ययन" में अभिविन्यास के लिए संयुक्त राज्य (यू.के.) का दौरा किया।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर में चार वर्ष का समेकित पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एस.सी. (आनर्स), बी.एड. और बी.ए. (आनर्स) बी.एड. की डिग्री दी जाती है, एक वर्ष का बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का बी.एड. (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्ष का एम.एस.सी.एड. (जीव विज्ञान) पाठ्यक्रम और ग्रीष्मकालीन स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम, जिसमें बी.एड. की डिग्री दी जाती है, का अध्यापन कराया जाता है। एम.एस.सी. (जीव विज्ञान) एड. पाठ्यक्रम पूरे भारत के छात्रों के लिए है जबकि अन्य सभी पाठ्यक्रम केवल पूर्वी क्षेत्र के छात्रों के लिए है। इस कालेज में शिक्षा में पी.एच.डी. के लिए रजिस्टर कराने की सुविधा भी उपलब्ध है।

नामांकन

1985-86 वर्ष के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकन की स्थिति निम्नलिखित थी –

क-सेवा पूर्व पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम का नाम	नामांकन
4 वर्ष का बी.ए. बी.एड. पहला वर्ष	60
दूसरा वर्ष	55
तीसरा वर्ष	45
चौथा वर्ष	30
4 वर्ष का बी.एस.सी. बी.एड. पहला वर्ष	85
दूसरा वर्ष	80
तीसरा वर्ष	73
चौथा वर्ष	61
एक वर्ष का बी.एड. माध्यमिक विज्ञान	98
एक वर्ष का बी.एड. माध्यमिक कला	60
एक वर्ष का बी.एड. माध्यमिक वाणिज्य	18
एक वर्ष का बी.एड. प्रारंभिक कला	13
एक वर्ष का बी.एड. प्रारंभिक विज्ञान	8
एक वर्ष का एम.एड.	23
दो वर्ष का एम.एस.सी.(जीव विज्ञान) एड.	
पहला वर्ष	19
दूसरा वर्ष	10
कुल जोड़ –	747

ख-सेवाकालीन पाठ्यक्रम

बी.एड. ग्रीष्मकालीन स्कूल /पत्राचार पाठ्यक्रम		
माध्यमिक :	पहला वर्ष	176
	दूसरा वर्ष	243
बी.एड.ग्रीष्मकालीन स्कूल/पत्राचार पाठ्यक्रम		
प्रारंभिक –	पहला वर्ष	75
	दूसरा वर्ष	88
	जोड़	582

परिणाम

विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के बी.ए., बी.एड. भाग -III और एम.एस.सी (जीव विज्ञान) एड. भाग -I के परिणाम 100% थे और अन्य सभी पाठ्यक्रमों के परिणाम 70% और 98% के बीच थे।

विस्तार सेवा

पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न राज्यों के स्कूल शिक्षकों के अभिविन्यास के लिए विभिन्न स्थानों पर ग़ैर योजना के अंतर्गत 11 विस्तार सेवा कार्यक्रम और योजना के अंतर्गत 4 कार्यक्रम आयोजित किए हैं। ये कार्यक्रम निम्नलिखित हैं:

- उड़ीसा और बिहार के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों को प्रथम और द्वितीय भाषा के रूप में उड़ीसा पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए उत्पादन एवं अभिविन्यास कैम्प,
- त्रिपुरा की कक्षा 6 से कक्षा 10 तक के लिए गणित के नमूने प्रश्न तैयार करने की कार्यशाला,
- पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए शिक्षा की नई विद्या पर एक कार्यशाला,
- पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए जैविकी में अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम,
- पूर्वी क्षेत्रके माध्यमिक विद्यालय के लिए शारीरिक शिक्षा में अभिविन्यास पाठ्यक्रम,
- पूर्वी क्षेत्र के शोध छात्र और शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए शोध कार्यप्रणाली,

- पर्यावरण जैविकी जिसमें पश्चिम बंगाल के शिक्षकों के लिए प्रदूषण समस्याओं पर अधिक बल दिया गया,
- मेघालय के माध्यमिक शिक्षकों के लिए सामान्य विज्ञान के शिक्षण और अंतर्वस्तु की नई विद्या में अभिविन्यास कार्यक्रम,
- मिज़ोरम के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए सामान्य विज्ञान में शिक्षण और अंतर्वस्तु की नई विद्या में अभिविन्यास कार्यक्रम,
- मेघालय और मिज़ोरम के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए गणित की अंतर्वस्तु और शिक्षा में अभिविन्यास कार्यक्रम,
- गैर-योजना के अंतर्गत स्नातकोत्तर शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम के लिए व्यावसायी विषयों की पाठ्यचर्या के निर्माण पर कार्यशाला,
- उड़ीसा के प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत अनुसूचति जनजाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला,
- बिहार के प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला,
- असम के प्रारंभिक विद्यालय में कार्यरत अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला और योजना के अंतर्गत उड़ीसा के प्रारंभिक विद्यालयों में कार्यरत अनुसूचित जाति के शिक्षकों के लिए कार्यशाला।

इसके अतिरिक्त इस कालेज ने उड़ीसा के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को अंग्रेज़ी, भूगोल, गणित और सामान्य विज्ञान में बड़े पैमाने पर सेवाकालीन प्रशिक्षण देने की योजना अपने हाथ में ली है। माध्यमिक शिक्षा परिषद, उड़ीसा के मार्गदर्शन में गठित संपादक मंडल ने लेखकों द्वारा तैयार की गई अध्यापन सामग्री का पुनरीक्षण तथा संपादन किया। संपादित सामग्री को पुस्तिका रूप में मुद्रित किया गया। उड़ीसा के माध्यमिक शिक्षा परिषद के सहयोग से इस कालेज ने राज्य स्तर पर अंग्रजी, भूगोल, गणित और सामान्य विज्ञान के मुख्य व्यक्तियों के लिए चार भिन्न-भिन्न स्थलों पर चार अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत मुद्रित सामग्री की सहायता से मुख्य व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के अंतर्गत इस कालेज ने दो कार्यशालाएं आयोजित की हैं। ये कार्यशालाएं हैं: कलकत्ता में पूर्वी राज्यों के शिक्षा प्रोफेसरों के लिए 9-12-85 के दिन आयोजित क्षेत्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला और 16-12-1985 से 20-12-1985 तक पुरी के पुरी जिला स्कूल में राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा कार्यशाला।

नवीन प्रक्रियात्मक कार्यक्रम

नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी उत्पादन कार्य के एक अंग के रूप में इस कालेज के टेक्नोलॉजी विभाग ने कॉलेज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्पिट पॉट बनाने का काम अपने हाथ में लिया है। इस उत्पादन कार्य की संरचना एवं फैब्रिकेशन टेक्नोलॉजी में 4 व्यावसायी कक्षा के छात्र भी सहायता कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त टेक्नोलॉजी विभाग ने विभिन्न स्थापनों, फर्मों और फैक्टरियों के काम में सहयोग देने की व्यवस्था की है जिनमें छात्रों को कार्य एवं प्रशिक्षण पर चार सप्ताह के लिए भेजा जाता है। इस कालेज को अध्यापकों के वर्ग परियोजना कम्प्यूटर प्रशिक्षिण का एक साधन केन्द्र माना जाता है।

कालेज की वार्षिक सांस्कृतिक सप्ताह, विभिन्न छात्रावासों के वार्षिक समारोहों और छात्रों के धार्मिक एवं अन्य विशेष समारोहों के दौरान सह-पाठ्यचर्या कार्यकलाप देखने को मिले हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों का वार्षिक खेलकूद समारोह और दूसरा अंतर डी.एम.स्कूल खेलकूद समारोह है जिसका आयोजन 23-12-1985 से 26-12-1985 तक इस कालेज में किया गया। इस खेलकूद समारोह में अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर के डी.एम. स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। यहां तक कि इस रंगारंग समारोह में इन स्कूलों के कोच और अधिकारियों ने भी भाग लिया।

शोध कार्यकलाप

इस कालेज का संकाय शिक्षा, मानविकी और विज्ञान में शोध कार्य के लिए मार्गदर्शन करता है। इस कालेज के एम.एस.सी (जीव विज्ञान) एड और एम.एड के छात्रों ने विज्ञान, गणित और शिक्षा के विभिन्न प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अपने पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं की दृष्टि से शोध परियोजनाएं चलायी हैं।

दो शोध छात्रों ने उत्कल विश्वविद्यालय के प्रो. एम.वी. रामजी के मार्गदर्शन में वनस्पति विज्ञान में अपनी पी.एच.डी. की थीसिस जमा की थी। इन में से एक छात्र को पी.एच.डी. की डिग्री मिल भी गई है। डा. के.सी. पंडा के मार्गदर्शन में चार पी.एच.डी. की थीसिस उत्कल विश्वविद्यालय में जमा की गई हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा संकाय के अधीन लगभग बीस शोध छात्र अपनी डॉक्टरेट डिग्री के लिए कार्य कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में संकाय का सहयोग

वर्ग परियोजना के अधीन विज्ञान के प्रोफेसर डा. के.एस. राव को बी.बी.सी. माइक्रो कम्प्यूटर और साफ्टवेयर विकास में चार माह का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए मोरे हाऊस कालेज ऑफ एजूकेशन, एडिनबरा और होमर्ट ऑन, कॉलेज, कैंबिज, भेजा गया। अपना प्रशिक्षण पूरा करके वे जुलाई 1985 में भुवनेश्वर लौट आए। प्रो. के.एस. राव ने शिक्षकों की साधन सामग्री का अंतिम संस्करण तैयार करने के लिए नई दिल्ली में एन.सी.ई.आर.टी. के मुख्यालय में आयोजित कार्यशाला में भी भाग लिया।

भौतिकी के रीडर डा. वी.के. शर्मा ने यूनेस्को द्वारा इस्लामाबाद (पाकिस्तान) में आयोजित विज्ञान पाठ्यचर्या विकासकर्ता और शिक्षक प्रशिक्षकों की क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया। डा. शर्मा ने इस कार्यशाला में दो लेख प्रस्तुत किए। उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. के मुख्यालय में

माध्यमिक विद्यालय की भौतिकी भाग- II की पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि का पुनरीक्षण करने से संबद्ध कार्यशाला में भी भाग लिया। भौतिकी के रीडर डा. वी.के शर्मा ने दो शोध पत्र प्रस्तुत किए जिनमें से एक शोध पत्र संयुक्त राज्य अमेरिका में अक्तूबर 22-25, 1985 तक नवीकरण योग्य ऊर्जा से प्राप्त हाइड्रोजन पर आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी और दूसरा शोध पत्र जुलाई 20-24, 1985 तक ऑस्ट्रिया में आयोजित छठे विश्व हाइड्रोजन ऊर्जा सम्मेलन में प्रस्तुत किया। भौतिकी के रीडर डा. जे.कं. महापात्र ब्रिटिश काउंसिल डिवीजन के प्रस्ताव पर ए.आई.एस.ई.पी. में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए लंदन गए हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर

क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में चार वर्ष का बी.एस.सी.एड. डिग्री पाठ्यक्रम। चार वर्ष का बी.ए.एड. डिग्री पाठ्यक्रम, एक वर्ष का बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का बी.एड. (प्रारंभिक) पाठ्यक्रम, एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम और रसायन, भौतिकी तथा गणित में दो वर्ष एम.एस.सी. एड. पाठ्यक्रम का अध्यापन कराया जाता है।

1985-86 वर्ष के दौरान भिन्न-भिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों की संख्या निम्नलिखित थीं:

(क) सेवापूर्व पाठ्यक्रम

एम.एस.सी.एड. (रसायन)	34
एम.एस.सी.एड. (गणित)	30
एम.एस.सी.एड. (भौतिकी)	38
एम.एड.	25
बी.एड. (माध्यमिक)	77
बी.एस.सी.एड.	299
बी.ए.एड.	115
कुल जोड़ :	548

योग्य छात्र के न मिलने के कारण, 1985-86 के दौरान बी.एड. (प्रारंभिक) में कोई नामांकन नहीं किया गया

परिणाम

1984-85 वर्ष के शिक्षा सत्र के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित छात्रों के 1985 वर्ष के परिणाम निम्नलिखित हैं:

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	नामांकित छात्रों की संख्या	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की सं.	प्रतिशतता
1.	एम.एस.सी.एड. (रसायन) चौथा सेमस्टर	22	22	21	95.45%
2.	एम.एस.सी.एड. (गणित) चौथा सेमस्टर	13	13	9	69.23%
3.	एम.एस.सी.एड (भौतिकी) चौथा सेमस्टर	11	9	6	66.66%
4.	एम.एड. दूसरा सेमस्टर	25	23	20	86.95%
5.	बी.एड. (माध्यमिक) दूसरा सेमस्टर	79	79	71	89.87%
6.	बी.एस.सी.एड. आठवां सेमस्टर	45	45	36	80.00%
7.	बी.ए.एड. आठवां सेमस्टर	18	18	17	94.44%

सेवा-कालीन कार्यक्रम और विस्तार

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित कार्यशालाओं/पाठ्यक्रमों संगोष्ठियों के द्वारा 1108 शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों को अभिविन्यास/प्रशिक्षण दिया गया :

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
1.	कर्नाटक के नवीं और दसवीं स्तर के रसायन में प्रतिदर्श एकक परीक्षणों के विकास पर कार्यशाला	15
2.	सी.सी.ई. में उपयोग में लाने के लिए रसायन के साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	21
3.	अक्षर सेना कार्यक्रम के अधीन ए.इ.ओ. और आई.ओ के लिए अभिविन्यास कार्यशाला	66
4.	+ 2 स्तर के वाणिज्य के शिक्षकों के लिए लेख-शिक्षण पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	29

क्रमांक	कार्यक्रम का नाम	भाग लेने वालों की संख्या
5.	जैविकी की साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	34
6.	अपंगों की समेकित शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यशाला	25
7.	प्राथमिक शिक्षकों के लिए शारीरिक शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यशाला	13
8.	शिक्षा की प्रतिदर्श सर्वेक्षण विधि आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के मुख्य व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	10
9.	शोध कार्य प्रणाली में अभिविन्यास कार्यक्रम	22
10.	+ 2 स्तर के अंग्रेजी के शिक्षकों का अभिविन्यास	26
11.	शिक्षा की चुनौती पर संगोष्ठी–एक नीति परिप्रेक्ष्य	70
12.	के.वी. स्कूल के शिक्षकों के लिए अध्यापन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	15
13.	के.वी. स्कूल के शिक्षकों के लिए रसायन की एक प्रयोगशाला पुस्तक के निर्माण पर कार्यशाला।	13
14.	भाषा (मलयालम) में निदानी परीक्षण और उपचारी शिक्षण की कार्यशाला	25
15.	अंग्रेजी के मेथड मास्टरों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	27
16.	गणित की साधन सामग्री के विकास पर कार्यशाला	26
17.	हाई स्कूल के शिक्षकों के लिए भौतिकी की साधन सामग्री पर कार्यशाला	26
18.	जूनियर कालेजों के प्रिंसिपलों के लिए व्यावसायी शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम	39
19.	जूनियर कालेजों के प्रिंसिपलों के लिए व्यावसायी शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम	50
20.	जूनियर कालेजों के प्रिंसिपलों के लिए व्यावसायी शिक्षा पर अभिविन्यास कार्यक्रम	26
21.	केरल के शिक्षकों के लिए भूगोल पर अभिविन्यास कार्यक्रम	42
22.	मलयालम भाषा के निदानी परीक्षण और उपचारी शिक्षण पर अनुवर्तन कार्यशाला	14
23.	मैसूर शहर में जूनियर कालेजों के अंग्रेजी लेक्चरारों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	30
अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा		
1.	प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	40
2.	प्राथमिक विद्यालय (अपनाए गए विद्यालय) के शिक्षकों के लिए अध्यापन सामग्री पर कार्यशाला	49
3.	अपनाए गए प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए अध्यापन सामग्री के निर्माण पर कार्यशाला	60
4.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालय के शिक्षकों का शिक्षा विकास	30
5.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	40
6.	अनुसूचित जाति/अनुसूचति जनजाति विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	40
7.	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विद्यालय के शिक्षकों के लिए अंतर्वस्तु समृद्धि कार्यक्रम	44
जनसंख्या शिक्षा		
1.	जनसंख्या शिक्षा पर अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	30
2.	–वही–	20
3.	जनसंख्या शिक्षा पर दृश्य सामग्री का विकास	10
4.	जनसंख्या शिक्षा पर संगोष्ठी	15
5.	आंध्र प्रदेश के प्रशिक्षकों के लिए अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	36
	कुल जोड़ : –	1108

शोध कार्यकलाप

कालेज ने स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर कुछ शोध कार्य अपने हाथ में लिया है। कालेज में हो रहे कुछ शोध कार्यों की सूची निम्नलिखित है:

क्र.सं	शोध परियोजना का नाम	प्रभारी अन्वेषक
1.	क्षेत्रीय कालेज के कार्यक्रम की स्वीकृति जगरूकता और प्रभाव (एरिक प्रयोजित परियोजना)	डॉ. डी.एस बाबू डॉ. एस. दंडपाणी डॉ. एन.एन. प्रहलाद
2.	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भौतिकी के प्रयोगों को करने के विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक दृष्टिकोण की प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन (एरिक प्रायोजित परियोजना)	डॉ. एस.जी. गांगुली श्री सी.गुरूमुर्ती

प्रकाशन

कालेज द्वारा प्रकाशित कुछ प्रकाशन निम्नलिखित हैं :

1. *जनसंख्या शिक्षा-प्रशिक्षकों की गुटका*
   – सी शेशादरी और यू.एस. माध्यस्थ द्वारा संपादित
2. *शिक्षण में इन्टर्नशिप*
   – एन.वी. बद्रीनारायण द्वारा संकलित और संपादित
3. *शिक्षा सिद्धांत एवं व्यवहार का अध्ययन*
   – आर.सी.ई.एम. संकाय द्वारा लेखों और शोध-पत्रों का संकलन
4. *रसायन में उद्देश्य पर आधारित शिक्षण और प्रशिक्षण*
   – के.एन.तांत्री, ए.एस. जनादर्न और वी. केसवन
5. *रोचक प्रयोगों के माध्यम से रसायन*
6. *रसायन के प्रयोगशाला तकनीक की पुस्तिका*
7. *मैसूर ज़िला के अनुसूचित जाति के बच्चों के संज्ञानात्मक एवं भाषायी कौशल के विकास की पूरक शिक्षा सामग्री*
8. *रसायन की अन्वेषी परियोजनाएं*
   – ए.एस. जनार्दन और टी.जे. वैद्यपथी द्वारा संपादित

प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूल

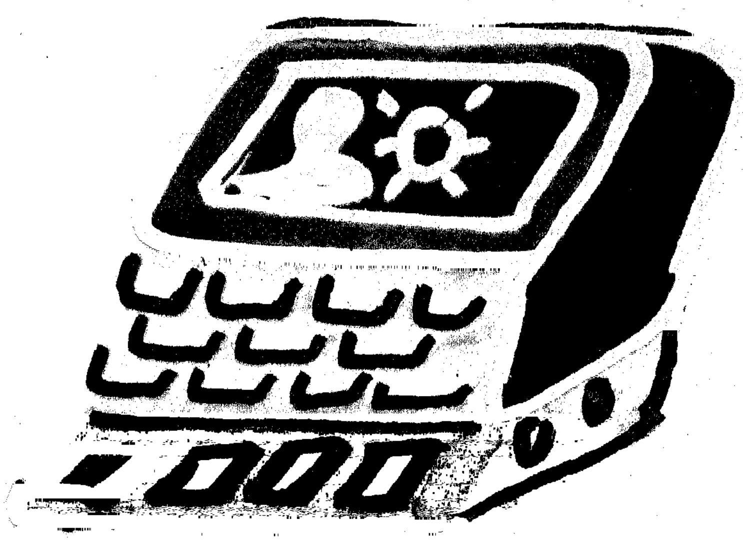
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज से संलग्न प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूल कालेज द्वारा विभिन्न शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रमों में नामांकित किए गए शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के लिए व्यावहारिक विद्यालय के रूप में काम करते हैं। इन स्कूलों का प्रयोग स्कूली शिक्षा और शिक्षक-शिक्षा में नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों को लागू करने के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में किया जाता है।

1985-86 वर्ष के दौरान विभिन्न प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूलों में नामांकित छात्रों की संख्या निम्नलिखित थी :

प्रदर्शन बहु-उद्देश्यीय स्कूल	अजमेर	890
–वही–	भेपाल	839
–वही–	भुवनेश्वर	1145
–वही–	मैसूर	956

मार्च-अप्रैल, 1985 में हुई बोर्ड परीक्षा के परिणाम निम्नलिखित थे :

स्कूल	कक्षा	परीक्षार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या	प्रतिशतता
डी.एम.एस. अजमेर	xii	72	69	96
	x	71	65	93
डी.एम.एस. भोपाल	xii	23	20	87
	x	59	59	100
डी.एम.एस. भुवनेश्वर	xii	49	44	87.7
	x	89	77	87.0
डी.एम.एस.मैसूर	xii	8	7	87.5
	x	76	64	84.2



9 शैक्षिक टेक्नोलॉजी

देश में शिक्षा में सुधार एवं प्रसार के लिए शैक्षिक टेक्नोलॉजी में संवर्धन की दृष्टि से मई, 1984 में एन.सी.ई.आर.टी. के शिक्षण सामग्री विभाग तथा शैक्षिक टैक्नोलॉजी केन्द्र को मिलाकर केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान की स्थापना की गई। केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान का अध्यक्ष संयुक्त निदेशक होता है और यह एन.सी.ई.आर.टी. का एक घटक है जिसे काफी स्वायत्ता प्राप्त है।

देश में शिक्षा से संबंद्ध समस्याओं को हल करने में शैक्षिक टैक्नोलॉजी की महत्ता को ध्यान में रखकर केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान ने शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती हुई मांगों के साथ ताल-मेल बैठाते हुए बहु-विम कार्यक्रम अपने हाथ में लिया है। इस संबंध में विभिन्न तंत्रों/माध्यमों/कार्यक्रमों की अभिकल्पना करने, लागू करने, उत्पन्न करने तथा मूल्यांकन करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक टेक्नोलॉजी के विभिन्न क्षेत्रों में सक्षमता विकसित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, अनुसंधान कार्य और विकास कार्यकलाप हाथ में लिए गए। इस संबंध में विभिन्न राज्यों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से सहयोग प्राप्त किया गया है। फरवरी, 1984 में भारत सरकार ने एक तीन वर्षीय यू.एन.डी.पी. परियोजना, शिक्षा के लिए इंसेट के लिए हस्ताक्षर किया। आलोच्य वर्ष के दौरान निष्पादित किए गए कुछ खास-खास कार्यकलाप निम्नलिखित हैं।

अनुसंधान

केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान ने उत्पादन की दृष्टि से आकाशवाणी, बंगलौर के शैक्षिक प्रसारण से संबद्ध तीन-चरण वाला शोध अध्ययन पूरा कर लिया। धारवाड़ और टुम्कूर जिले के 50 शिक्षक और छात्रों को मूल्यांकन तकनीकी में प्रशिक्षत किया गया, यहां ऐच्छिक रूप से चुने गए 25 प्रसारण कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया गया, प्रस्तुति कार्मिक, आलेखक, परामर्श नामिक सदस्यों, और शिक्षा के विशेषज्ञों के भी इन्टरव्यू लिए गए। परियोजना की रिपोर्ट लिखी जा रही है। चल रहे अनुसंधान अध्ययनों के व्यौरेवार विवरण निम्नलिखित हैं :

चल रही अनुसंधान परियोजनाएं

परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	शुरू करने की तारीख	प्रगति
शैक्षिक रेडियो की पाठ्यचर्या	चल रही है।	अप्रैल, 83	विशेषज्ञों की एक बैठक की गई जिसमें स्कूल प्रसारण के लिए रेडियो पाठ्यचर्या को विकसित करने की परियोजना पर चर्चा की गई। यह सिफारिश की गई कि आगे हमें शिक्षकों के साथ बैठकर उनकी आवश्यकताएं मालूम करनी चाहिए।
ई.टी.वी. कार्यक्रम का टेलीकास्ट करने के पहले का परीक्षण	एक वर्ष	अप्रैल, 85	ई.टी.वी. कार्यक्रमों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया जानकर इन कार्यक्रमों का परीक्षण किया गया। कुल मिलाकर सत्रह कार्यक्रमों का पूर्व परीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त संकाय ने पैंतीस कार्यक्रमों को पहले से ही देख लिया। क्षेत्र का दौरा करके तथा क्षेत्र के अनवेषकों से प्रतिपुष्टि भी एकत्रित कर लिया गया। प्रतिपुष्टि रिपोर्टों को तैयार करके उन्हें सभी संबंधित व्यक्तियों में परिचालित कर दिया गया। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए बनाए गए पांच ई.टी.वी. कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने के लिए एक दिन की एक कार्यशाला आयोजित की गई।
प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों और शिक्षकों के लिए इंसेट के शैक्षिक	एक वर्ष	अप्रैल, 85	कार्यक्रम नियोजकों के लाभ के लिए उत्तर प्रदेश के इन्सेट ज़िलों में एक श्रोता-प्रोफाइल का अध्ययन किया गया।

1985-86

परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	शुरू करने की तारीख	प्रगति
कार्यक्रमों के संबंध में मूल्यांकन अध्ययन।			उड़ीसा, महाराष्ट्र और गुजरात में ई.टी.वी. कार्यक्रमों की उपयोगिता का मॉनिटर करने तथा उपयोगिता पर प्रभाव डालने वाले कारकों को मालूम करने का प्रयास किया गया। रिपोर्ट अभी लिखी जा रही है।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

	पाठ्यक्रम	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या
1.	उत्तर प्रदेश के प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक टैक्नोलॉजी में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	10 जून से 22 जून, 85 तक.	केन्द्रीय शैक्षिक टैक्नोलॉजी संस्थान.	15
2.	ए.वी. सामग्री विशेष रूप से टेप स्लाइड के उत्पादन के लिए शैक्षिक टैक्नोलॉजी और उसके अनुप्रयोग में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	22 जुलाई से 3 अगस्त, 85 तक.	—वही—	15
3.	फोटोग्राफी में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	2 सितंबर से 13 सितंबर, 85 तक	—वही—	14
4.	हरियाणा राज्य की शैक्षिक टेक्नोलॉजी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	7 अक्तूबर से 18 अक्तूबर, 1985 तक.	हिसार	24
5.	ए.वी. सामग्री विशेष रूप से चार्टों के उत्पादन के लिए शैक्षिक टेक्नोलॉजी और उसके अनुप्रयोग में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	14 जनवरी से 25 जनवरी, 1986 तक	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, आई. पी.विंग	19
6.	मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा के प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक टैक्नोलॉजी में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	3 मार्च से 14 मार्च, 1986 तक	—वही—	19
7.	शैक्षिक कार्यों के श्रव्य/रडियो कार्यक्रमों के आलेखन और प्रस्तुतिकरण के लिए समेकित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।	18 नवंबर से 18 दिसंबर, 1985 तक	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली।	15
8.	ई.टी.वी. प्रस्तुतिकरण और तकनीकी प्रचालन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।	छह सप्ताह	—वही—	54
9.	तकनीकी प्रचालन, आलेखन और आलेखिकी में प्रशिक्षण	एक माह	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली।	3
10.	ई.टी.वी. कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण में सेवाकालीन प्रशिक्षण।	10 दिन	—वही—	1
11.	कश्मीर और जम्मू के विश्वविद्यालयों के लिए दूरी शिक्षा के पाठलेखन पर अभिविन्यास कार्यक्रम।	10 दिन (4 जुलाई से 13 जुलाई, 1985 तक)	कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर	30
12.	इलाहाबाद, दिल्ली और कटक के पत्राचार संस्थान के ट्यूटरों के लिए दूरी शिक्षा के पाठ-लेखन पर अभिविन्यास (कार्यशाला।)	10 दिन	इलाहाबाद	35
			कुल जोड़	244

विकासी कार्यकलाप

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या	कैफियत
1	2	3	4	5
ई.टी.वी. के कार्यक्रमों के लिए गणित के कार्यक्रम संबंधी विवरणों पर चर्चा करने और सुधार लाने पर कार्यशाला।	22, जुलाई से 27 जुलाई, 1985 तक	सियर पटना	9	
ई.टी.वी. की प्रस्तुतिकरण के लिए गणित के आलेखों को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	3 फरवरी से 12 फरवरी, 1986 तक	सियर लखनऊ	10	
दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों के लिए कम लागत वाली शिक्षण सामग्री पर कार्यशाला।	जनवरी, 1986 में 5 दिन	—वही—	30	कार्यशाला के दौरान भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति ने कम लागत की एक शिक्षण सामग्री तैयार की।
दो फिल्मों ''एस.यू.पी.डब्लू'' और गैर कोटीकृत स्कूलों के मूल्यांकन पर कार्यशाला	17 फरवरी से 19 फरवरी, 1985 तक	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली	12	प्रसारण के लिए रिपोर्ट को अंतिम रूप दे दिया गया है।
गणित की शिक्षण सामग्री के संपादन पर कार्यकारी समूह की बैठक।	दिसंबर, 85	मद्रास	8	गणित की लगभग आठ शिक्षण सामग्री का संपादन किया गया।
सियट/एस.सी.ई.आर.टी. के समन्वय के लिए बैठक	दो दिन	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली	5	भर्ती, कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण, स्टूडियों, उपकरण आदि के संबंध में सिएट की एक अवस्थिति रिपोर्ट तैयार की गई।
टी.वी. कार्यक्रमों की प्रस्तुतिकरण पर अभिविन्यास कार्यशाला	4 दिन	—वही—	54	—
ई.टी.वी. की प्रस्तुतिकरण के लिए कार्यक्रम विवरणों के विकस पर कार्यशाला	1 दिन 10-6-85	—वही—	19	ई.टी.वी. के प्रस्तुतिकरण के लिए कार्यक्रम विवरण नामक एक प्रकाशन प्रकाशित किया गया।
दूरी शिक्षण संस्थाओं में छात्रों को दिए गए कार्यों के मूल्यांकन के लिए एक पुस्तिका तैयार करने पर कार्यशाला	3 दिन 11-14 मार्च, 1986	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज भोपाल	8	—
		कुल सं. :	155	

ऊपर उल्लेखित कार्यक्रमों के अतिरिक्त गणित की शिक्षण सामग्री के निर्धारण पर कार्यकारी समूह की एक बैठक भी अगस्त, 1985 में हुई। इस बैठक में दस लोगों ने भाग लिया जिन्होंने गणित की आठ शिक्षण सामग्री का मान निर्धारण किया।

1985-86

अध्यापन सामग्री का विकास

प्राथमिक स्तर के एक-शिक्षक विद्यालयों के लिए स्व-शिक्षण कार्डों का निर्माणः

गणित में लगभग एक हजार कार्डों को अंतिम रूप दे दिया गया है और अब ये कार्ड मुद्रण के लिए तैयार हैं।

"वैलेन्सी" पर टेप स्लाइडों का उत्पादन

ब्रोशर और गुटका के साथ वैलेन्सी टेप स्लाइड तैयार कर लिए गए है और उनका परीक्षण कर लिया गया है। प्रचार-प्रसार के लिए एक सौ कार्ड तैयार हो रहे हैं।

शिक्षक, प्रशिक्षक और परामर्शदों के लिए निम्नलिखित ब्यौरे तैयार किए गए है :

(i) (क) शिक्षण सामग्री के साथ जैविकी के 32 सचित्रों को अंतिम रूप दे दिया गया है।
(ख) जैविकी के स्थूल चार्ट बनाए गए है।
(ग) भौतिकी के 20 चार्टों पर के कलात्मक कार्यों को अंतिम रूप दे दिया गया है।

(ii) प्राथमिक विद्यालयों के लिए तीन चार्ट बनाए गए हैं।

(iii) एन.आई. के विभागों के लिए टेप स्लाइड/ए.वी. सामग्री तैयार करने का काम तथा राष्ट्र नेताओं के चित्र बनाने का काम भी हाथ में लिया गया।

फिल्मों का निर्माण :

1. एन.सी.ई.आर.टी. और राजस्थान के शिक्षा विभाग के सहयोगात्मक कार्यक्रम के अधीन अनौपचारिक शिक्षा पर बनाई जानेवाली फिल्म की शूटिंग पूरी की गई है।
2. सूर्य ग्रहण पर बनाई जाने वाली फिल्म की शूटिंग और संपादन का कार्य पूरा हो गया है।
3. एस.यू.पी.डब्लू पर बनायी जाने वाली फिल्म का निर्माण पूरा हो गया है।
4. अरावली पर्वत-माला के रेतीले क्षेत्रों पर बनायी जाने वाली फिल्म का आलेख, स्थान सर्वेक्षण और शूटिंग का काम पूरा हो गया है।
5. फोटोग्राफी की तकनीक पर बनायी जाने वाली फिल्म पूरी हो चुकी है।

हिंदी में फिल्मों को डब करना

"साइन्स इज.ए.पार्ट.ऑफ. लाइफ" और "एस.यू.पी.डब्लू." की फिल्मों को डब करने का काम पूरा हो गया है।

विविध सांस्कृतिक आदान-प्रदान

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत तीन फिल्म एन.सी.ई.आर.टी. के आई.आर. एकक में भेजे गए।

एन.सी.ई.आर.टी. के लिए ई.टी.वी. कार्यक्रम और फोटोग्राफ का निर्माण करने के अलावा केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान ने प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न निर्मित फिल्मों के डुप्लिकेट प्रिंट तैयार किए। शिक्षा-विभाग, अदिस अबाबा, इथोपिया ने केंन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान से 30,000/- रु. लागत की सप्लाई करने का अनुरोध किया है। इससे संबंधित सभी औपचारिकताएं पूरी कर ली गई हैं। फिल्म को अगस्त, 1986 में भेज दिया जाएगा।

दूसरी भाषा के रूप में हिंदी के शिक्षण से संबद्ध ऑडियो टेप

उड़ीसा के उन बच्चों को जो स्कूलों में दो साल तक हिंदी पढ़ चुके है, दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने के लिए पच्चीस कार्यक्रम तैयार किए गए हैं। इन श्रव्य कार्यक्रमों को उड़ीसा के कुछ खास श्रोतागण के सामने बजा कर सुनाया गया है और उससे इस बात का मूल्यांकन किया गया कि श्रोतागण कार्यक्रमों में बतायी गई कहानियों को समझ पा रहे है कि नहीं। यह पाया गया कि श्रोतागण कार्यक्रम की कहानियों को समझ रहे हैं। इन श्रव्य कार्यक्रमों को सुनने पर बच्चों की क्या-क्या प्रतिक्रियाएं रहीं है उन्हें रेकार्ड कर लिया गया है। अधिसंख्यक कार्यक्रम तैयार करने के संबंध में 20 विवरणों को विकसित करने के लिए उड़ीसा में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

शैक्षिक रेडियो/श्रव्य कार्यक्रम

निम्नलिखित शीर्षकों के अधीन अंठावन श्रव्य कार्यक्रम तैयार किए गए: (i) स्वतंत्रता सेनानियों का इंटरव्यू, (ii) उड़ीसा के स्कूली बच्चों को दूसरी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाने के श्रव्य टेप (iii) प्रशिक्षणार्थियों द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रम।

विस्तार कार्यक्रम

कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	स्थान	भाग लेने वालों की संख्या	कैफियत
1	2	3	4	5
गणित के शिक्षण की अतंर्वस्तु एवं विधि में शिक्षा कर्मियों का प्रशिक्षण	21 से 27 दिसंबर, 85	एस. डब्लू. आर.सी. तिलोनिया	25	
बच्चों के लिए श्रव्य टेपों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।	2 सितंबर से 6 सितंबर, 1986 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली	47	संगोष्ठी की रिपोर्ट उपलब्ध है। रेडियों ई.टी.वी. सेल, जयपुर को स्कूलों में बांटने के लिए दिए गए जिससे कि रेडियों के कार्यक्रमों को सुन सकें।
विकासशील देश के बच्चों के लिए ई.टी.वी. परअंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	17-21 मार्च, 1986	भारतीय विदेश व्यापार संस्थान नई दिल्ली।	16	सम्मेलन की रिपोर्ट उपलब्ध है।
शिक्षा की एक वैकल्पिक पद्वति के रूप में शैक्षिक टेलीविजन पर राष्ट्रीय कार्यशाला।	24-27 फरवरी 1986	केंद्रीय शैक्षिक टैक्नोलॉजी संस्थान नई दिल्ली	36	–
उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग के प्रवर स्तर के प्रशासकों के लिए दूरवर्ती शिक्षा पर संगोष्ठी।	10-11 अप्रैल, 1986	शिक्षा निदेशालय, लखनऊ	50	–
		कुल जोड़ :	174	

परामर्शः आलेख के संबंध में सियट लखनऊ को परामर्श दिया गया। सियट के लिए लगभग अस्सी आलेखों को अंतिम रूप दिया गया।

तकनीकी योजना परिचालन और अनुरक्षण प्रभाग से संबद्ध कार्यकलाप

शिक्षा मंत्रालय द्वारा चलायी गई "शिक्षा के लिए इंसेट" परियोजना को लागू करने केलिए दिल्ली में स्थित केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान के ई.टी.वी.स्टूडियो केअतिरिक्त छः इंसेट राज्यों में छः निर्माण केन्द्र स्थापित करने की आवश्यकता थी। यह कार्य टर्नकी के आधार पर भारत इलेक्ट्रानिक्स लि . को दिया गया और केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान के ई.टी.वी. के लिए 1,49,33,688 रु. का आर्डर और छः इंसेट राज्यों के छः निर्माण केन्द्रों के लिए 9,19,732,00 रु. का आर्डर दिया गया।

(क) ई.टी.वी. स्टूडियो और कार्यक्रम का निर्माण

केन्द्रीय शैक्षिक टैक्नोलॉजी संस्थानों के ई.टी.वी. स्टूडियो, नियंत्रण कक्ष और टेलिसीन रूम के रंगीन उपकरणों को लगाने और परीक्षण करने का काम सितंबर, 1985 में पूरा कर लिया गया। इस स्टूडियो में तीन कलर कैमरा चेन, विजन, आडियो मिक्सर और टेलिसीने चेन (एफ.ई.एल.- 60) जैसी सुविधाएं उपलब्ध है। तब से इस स्टूडियो का प्रयोग शैक्षिक टी.वी. निर्माण जिन्हें इंसेट के जरिए प्रसारित किया जाता है, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर बड़े पैमाने पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे क्रैश कार्यक्रम बहुत कम समय में तैयार करना पड़ा है।

1985-86

(ख) सियट निर्माण केन्द्र

सभी छः सियट इंसेट राज्यों में स्थायी स्टूडियो के भवन-निर्माण का कार्य लगभग समाप्ति पर है। इन स्टूडियो में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड को विडियो/आडियो उपकरण लगाने का काम शुरू करना है।

(ग) उपकरण

केन्द्रीय शैक्षिक, टेक्नोलॉजी संस्थान और छः सियट के लिए गुजरात संचार एवं इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड, बड़ौदा को 4,05,10,630,00 रु. के ई.एन.जी. उपकरणों का आर्डर दिया गया। कुछ थोड़े से उपकरणों को छोड़कर अन्य सभी ई.एन.जी. उपकरणों को गुजरात संचार एवं इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड ने केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान और सियट को सप्लाई किया है।

(घ) केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान का भवन

भवन को इस्तेमाल करने वाले लोगों के विचारों को ध्यान में रखकर आर्किटेक्टों ने केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान के भवन की ड्राइंग को अंतिम रूप दे दिया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 337 लाख रुपये की संशोधित अनुमानित लागत की स्वीकृति दे दी है। टेन्डरों की सूची तैयार की जा रही है।

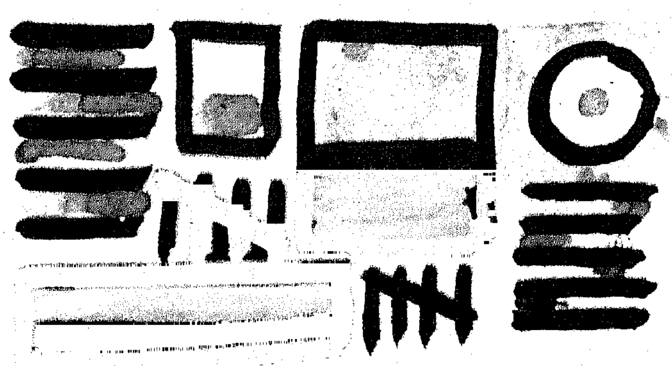
प्रकाशन

1985-86 के दौरान केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों के ब्यौरे नीचे की सारणी में दिए गए हैं:

क्रमांक	कार्यक्रम का शीर्षक	प्रकाशन का माह	प्रकाशित प्रतियों की संख्या	कैफियत
1.	कीथ वारेन की पुस्तक "प्रेपरेशन फॉर अंडरस्टैंडिंग" का हिंदी में अनुवाद करके उसे मुद्रित किया गया	फरवरी, 86	27,000 प्रति	इस पुस्तक का प्रकाशन यूनिसेफ के माध्यम से किया गया।
2.	भारत का स्वतंत्रता संग्राम-दृश्य	दिसंबर, 85	खर्च 10,000 रु.	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान और डी.ई.एस. एस. एण्ड एच. ने संयुक्त रूप से परिषद की परियोजना पर एक फोलियो और एक एलबम निकाला
3.	उत्तर प्रदेश के इंसेट जिलों का स्रोत प्रोफाइल	जुलाई, 1985	250	यह एक मिमियोग्राफित रिपोर्ट है जिसे इंसेट की योजना से संबद्ध सभी अधिकारियों और इंसेट राज्य के सियट में परिचालित किया गया।
4.	बच्चों के लिए शैक्षिक आडियो/रेडियो कार्यक्रमों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	सितंबर, 85	250	इस रिपोर्ट में 10 लेख है और संगोष्ठी से संबद्ध सुझाव और सिफारिश है।

1985-86

क्रमांक	कार्यक्रम का शीर्षक	प्रकाशन का माह	प्रकाशित प्रतियों की संख्या	कैफियत
5.	ट्रान्सपेरेन्सियों की सूची	दिसंबर, 85	2500	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान में उपलब्ध फिल्मस्ट्रिप, टेप स्लाइड और ट्रान्सपेरेन्सी की सूची।
6.	विडियो कार्यक्रमों की सूची	फरवरी, 86	2500	केन्द्रीय शैक्षिक टेक्नोलॉजी संस्थान में उपलब्ध विडियो ई.टी.वी. कार्यक्रमों की सूची।
7.	विकासशील देश के बच्चों के लिए शैक्षिक टेलिविजन पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	मार्च, 1986	1,000	इस रिपोर्ट में भाग लेने वाले विभिन्न देशों द्वारा चलाए गए विडियो-कार्यक्रमों और साथ इन कार्यक्रमों पर हुई चर्चाओं का उल्लेख है।
8.	"समाज के लिए तैयारी" यूनिसेफ प्रकाशन" प्रेपरेशन फॉर अंडरसटेंडिंग का हिंदी का अनुवाद।	जून, 1986	2500	छोटे बच्चों के लिए टी.वी. कार्यक्रमों के नियोजकों और निर्माताओं के लिए उपयोगी।



10

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़े संसाधन विभाग (डी एम ई एस डी पी)के कुछ मुख्य कार्य हैं— स्कूली शिक्षा की सभी अवस्थाओं में परीक्षा सुधार की और निर्दिष्ट अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ, शैक्षणिक मूल्यांकन के लिए नवाचारी दृष्टिकोणों और नीतियों का विकास, शिक्षा नियोजन के लिए आंकड़ा आधार उपलब्ध कराने के लिए शैक्षणिक सर्वेक्षण करना, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित करना, मुख्य कार्मिकों एवं साधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण और विभिन्न शैक्षिक सर्वेक्षणों तथा अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित आंकड़ों का संसाधन।

यह विभाग, राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों के स्कूल/माध्यमिक शिक्षा बोर्डों और शिक्षा विभागों/निदेशालयों के साथ मिलजुल कर अपने कार्य करता रहा है।

अनुसंधान

पुस्तकालय सुविधाओं, भवनों, प्रयोगशालाओं और कमजोर वर्ग के लिए शिक्षा सुविधाओं के सर्वेक्षण तथा कसौटी संदर्भित परीक्षणों के विकास के प्रयासों के एक हिस्से के तौर पर, डी एम ई एस डी पी, अनुसंधान के धंधों में लगा रहा है। कार्य अभी जारी है। अनुसंधान परियोजनाएं नीचे दी जा रही हैं:

डी एम ई एस डी पी की अनुसधान परियोजनाएं

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	अवधि	प्रमुख अन्वेषक	शुरूआत की तिथि	समाप्ति की तिथि
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1.	पर्यावरणीय अध्ययनों में प्राथमिक अवस्था में कसौटी संदर्भित परीक्षणों का विकास	दो वर्ष (बढ़ाए जाने की संभावना)	प्रो. प्रीतम सिंह	दिसंबर 1983	—
2.	माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान प्रयोगशालाओं का गहन अध्ययन	दो वर्ष	डा. के.के. राव श्री एन.के. गुप्ता	अगस्त 1985	अगस्त 1987
3.	असम, गुजरात, हरियाणा और तमिलनाडु राज्यों के उच्च और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में पुस्तकालय सुविधाओं और उनके उपयोग का नमूना अध्ययन	दो वर्ष	डा. सी.एल. कौल श्री जे.के. गुप्ता	अप्रैल 1985	मार्च 1987
4.	बिहार, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और मध्यप्रदेश राज्यों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल भवनों का गहन अध्ययन	डेढ़ वर्ष	श्री पुष्पेन्द कुमार और श्री एस.सी. मित्तल	जनवरी 1986	जुलाई 1987
5.	उड़ीसा में समाज के अनुसूचित जातियों और कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा सुविधाओं का सर्वेक्षण	15 मास	श्री एस.एम. भार्गव	जुलाई 1985	दिसंबर 1986

1985-86

शिक्षा मूल्यांकन में प्रशिक्षण

डी.एम.ई.एस.डी.पी., वस्तुनिष्ठ विस्तृत और वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रक्रमों के विकास की दृष्टि से; विभिन्न विषयों में मदों ओर यूनिट परीक्षणों के रूप में नमूना मूल्यांकन सामग्री बनाने, अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों तथा शिक्षा मूल्यांकन एवं परीक्षा सुधार में लगे अन्य कार्मिकों के प्रशिक्षण में लगा हुआ है।

अध्यापक प्रशिक्षकों, राज्य/संघशासित प्रदेश स्तर पर परीक्षण, मूल्यांकन और परीक्षा सुधार में लगे कार्मिकों तथा विभिन्न माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा आयोजित परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बनाने वालों के लिए 1985-86 के दौरान अनेक सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इतिहास, गणित, भौतिकी, जैविकी और अर्थशास्त्र के विषय-लेखकों के लिए 7/8 दिन के पांच पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। इन पाठ्यक्रमों में 129 व्यक्तियों को परीक्षा सामग्री लेखन में प्रशिक्षित किया गया। नमूना सर्वेक्षण विधियों के सात दिन के चार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 78 व्यक्तियों ने भाग लिया। माध्यमिक शिक्षा के बोर्डों की बाह्य परीक्षाओं के सुधार के लिए आठ कार्यक्रम आयोजित किए गए। राजस्थान, असम, हरियाणा, बिहार, उड़ीसा और मणिपुर के 473 कार्मिकों को परीक्षा सुधार की नई तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया। अन्य प्रशिक्षण गतिविधियों में सुरक्षा सेवा कार्मिकों के लिए एक मास का प्रशिक्षण कोर्स, एक मास का अखिल भारतीय शिक्षा मूल्यांकन प्रशिक्षण कोर्स और पब्लिक स्कूलों के लिए पांच दिन का एक मूल्यांकन कोर्स शामिल है। इन पाठ्यक्रमों में 197 व्यक्तियों ने भाग लिया।

विकास कार्यक्रम

1985-86 में डी.एम.ई.एस.डी.पी. ने अनेक विकास कार्यक्रम किए। इन कार्यक्रमों के परिणाम नीचे दिए जा रहे हैं:

दस दिन के एक कार्यक्रम में, जिसमें 13 व्यक्तियों ने भाग लिया था, अंग्रेजी की लगभग 70 बोध प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं। इन प्रश्नावलियों को दो जिल्दों में संकलित करने और आठवीं, नवीं व दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों और अध्यापकों में संचारित करने के लिए इन्हें छपवाने का विचार है।

इतिहास के प्रश्न बैंक को बनाने के लिए सात दिन की एक कार्यशाला से, नवीं श्रेणी के लिए इतिहास के विभिन्न प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्राप्त हुए। इसमें 11 विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया।

खुली पुस्तक परीक्षाओं पर हुई दो दिन की एक संगोष्ठी में बीस निबंध प्रस्तुत किए गए। संगोष्ठी में इस विषय के नौ मामलों पर विस्तृत चर्चा हुई। "आउटकम्स आफ द सेमिनार आन ओपन बुक एक्जीबीशन" शीर्षक का एक लेख, जिसमें प्रस्तावना, मदवार सिफारिशें, अनुसंधान योग्य शीर्षक और ओ.बी.ई. (खुली पुस्तक परीक्षा) के लिए प्रश्न बनाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले उद्देश्य शामिल थे, इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले, भाग लेने वाले व्यक्तियों और विशेषज्ञों में, उनके विचार जानने के लिए बांटा गया। संगोष्ठी में इक्कीस शिक्षाविदों और मूल्यांकन विशेषज्ञों ने भाग लिया।

बंगलौर में, कर्नाटक के व्यावसायिक शिक्षा यूनिट के सहयोग से एक 4 दिन की संगोष्ठी में +2 अवस्था के लिए व्यावसायिक विषयों के मूल्यों की एक योजना तैयार की गई। संगोष्ठी में नौ व्यक्तियों ने भाग लिया।

छठी श्रेणी के लिए विज्ञान का प्रश्न बैंक बनाने के बारे में हुई एक 7 दिन की कार्यशाला में, छठी श्रेणी की "लर्निंग साइंस पार्ट- 1" पुस्तक के सभी अध्यायों पर विविध प्रकार के लगभग 2500 वस्तुनिष्ठ प्रश्न तैयार किए गए। इन प्रश्नों के स्कूलों में संचारित करवाने का सुझाव है ताकि अध्यापकगण इनका प्रयोग, शिशु उपलब्धि में सुधार करने और इसके मूल्यांकन के लिए कर सकें। इस कार्यशाला में इक्कीस अध्यापकों ने भाग लिया।

आठ दिन की एक कार्यशाला में, जिसमें 29 विषय-विशेषज्ञों ने भाग लिया, प्रायोगिक भूगोल के यूनिट परीक्षण और प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं। इन्हें स्कूलों में संचारित करने का विचार है।

वरिष्ठ माध्यमिक श्रेणियों के लिए जीव-विज्ञानों में नमूना प्रश्न तैयार करने के लिए हुई आठ दिन की एक कार्यशाला में, ग्यारहवीं श्रेणी के लिए जीवविज्ञान के विविध प्रकार के लगभग 3000 प्रश्न प्राप्त हुए। इस कार्यशाला में 24 अध्यापकों ने भाग लिया। इन प्रश्नों में सुधार और संपादन करके, इन्हें विद्यार्थियों और अध्यापकों के विस्तृत प्रयोग के लिए पुस्तक रूप में निकाला जाएगा।

चार और तीन दिन की अवधि की दो कार्यशालाओं के द्वारा, कर्नाटक के स्कूलों के लिए, व्यावसायिक विषयों के आंतरिक मूल्यांकन की एक योजना तैयार की गई। इसमें 34 व्यक्तियों ने भाग लिया। बाद में हुई एक बैठक में योजना को अन्तिम रूप दिया गया और एक प्रारूपी हस्तपुस्तिका तैयार की गई।

प्राथमिक स्कूल अवस्था में शिशुओं की वृद्धि की गैरशैक्षिक प्रवृत्तियों के मूल्यांकन के लिए योजना और क्रियाविधि तैयार करने के लिए कोयम्बतूर में छह दिन की एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में इक्कीस व्यक्तियों ने भाग लिया। योजना तैयार हो चुकी है। इसमें और सुधार करके, अन्तिम रूप देकर, स्कूलों में प्रयोग किए जाने के लिए इसे राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषदों और राज्य शिक्षक संस्थान को भेज दिया जाएगा।

परामर्श एवं विस्तार गतिविधियाँ

डी.एम.ई.एस.डी.पी., माध्यमिक शिक्षा बोर्डों, विश्वविद्यालयों और सुरक्षा सेवाओं जैसे अन्य संगठनों को परामर्श सेवाएं प्रदान करता है। 1985-86 में डी.एम.ई.एस.डी.पी. द्वारा दी गई परामर्श सेवाएं नीचे दी गई सारणी में प्रस्तुत हैः

1985-86 में दी गई परामर्श सेवाएं

क्र.सं.	परामर्श की अपेक्षा करने वाले संगठन	परामर्श का अभिप्राय
1	2	3
1.	सुरक्षा सेवाएं, भारत (थल सेना, वायुसेना, नौसेना)	अधिकारियों और रंगरूटों आदि को प्रशिक्षण देने वाले सुरक्षा कार्मिकों को मूल्यांकन की धारणा, मूल्यांकन तकनीकों और मूल्यांकन की नई नीतियाँ बनाने और काम में लाने के बारे में प्रशिक्षित करना।
2.	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों, रीडरों और लेक्चरारों को, भौतिकी, रसायन, जैविकी, गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और अंग्रेजी के विविध प्रकार की वस्तुनिष्ठ सामग्री लिखने में प्रशिक्षित करना।
3.	मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र बनाने वालों को अंग्रेजी गणित, भौतिकी, रसायन और जैविकी के अच्छे प्रश्नपत्र बनाने में प्रशिक्षित करने के लिए। मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित हाई स्कूल परीक्षा के लिए माडल प्रश्नपत्र बनाने के लिए।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

1984-85 से राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजनाओं का विकेन्द्रीकरण हो चुका है। संशोधित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत पुरस्कार के लिए, दसवीं श्रेणी के अंत में ही, दो चरणों में चुनाव किया जाता है। पहले चरण में, अक्तूबर-नवम्बर 1984 के दौरान राज्यों द्वारा, लिखित परीक्षा के माध्यम से चुनाव किया गया, जिसके आधार पर दूसरे चरण की परीक्षा के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को, तय की गई संख्यां में, प्रत्याशियों की सिफारिश की गई। पुरस्कार प्राप्त करने वालों को, वांछित संख्या में चुनने के लिए, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने 14 जुलाई 1985 को दूसरे चरण में परीक्षा आयोजित की। यह परीक्षा समस्त भारत के 29 केन्द्रों में आयोजित की गई। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा आयोजित इस परीक्षा में, विदेशों में रहने वाले कुछ भारतीय विद्यार्थी भी बैठे। विवरण नीचे दिया जा रहा है :

आंकड़ा संसाधन

विभाग के आंकड़ा संसाधन पक्ष की मुख्य गतिविधियाँ, कंप्यूटर के अन्तर्निवेश माध्यम पर आंकड़ों का अंतरण, साफ्टवेयर तैयार करना और अन्ततः आंकड़ों का, क्रम्प्यूटर पर संसाधन करना, रही हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक

1985 में दी गई राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियोंकी संख्या

श्रेणी	दूसरे चरण की परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	दी गई छात्र-वृत्तियों की संख्या (सामान्य)	दी गई आरक्षित छात्रवृत्तियां अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति
दसवीं श्रेणी	2849	680	70 (अनु. जाति एवं अनु. जनजाति सहित)

सूची में शामिल, छात्रवृत्ति प्राप्त व्यक्तियों की कुल संख्या (1985 में छात्रवृत्ति प्राप्त व्यक्तियों सहित)

अवस्था	छात्रवृत्ति प्राप्त करने वालों की संख्या स्नातक	स्नातकोत्तर	पी-एच डी.	कुल	कुल में से अनुसूचित जातियों को	अनुसूचित जनजातियों को
1125	2917	349	83	4474		अनुसूचितजाति/जनजाति के लिए 254

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना, 1985 के अन्तर्गत चुने गए प्रत्याशियों की संख्या दर्शाता हुआ विवरण

क्र.सं.	राज्य/संघशासित प्रदेश	नियत कोटा	चुने गए सामान्य	अनु. जाति/अनु. जनजाति	कुल
1	2	3	4	5	6
1.	आंध्र प्रदेश	190	33	6	39
2.	असम	130	4	—	4
3.	बिहार	155	54	14	68
4.	गुजरात	165	6	1	7

क्र.सं.	राज्य/संघशासित प्रदेश	नियत कोटा सामान्य	चुने गुए	अनु. जाति/ अनु. जनजाति	कुल
5.	हरियाणा	60	18	—	18
6.	हिमाचल प्रदेश	25	4	—	4
7.	जम्मू-कश्मीर	25	—	—	—
8.	कर्नाटक	140	46	4	50
9.	केरल	275	49	4	53
10.	मध्य प्रदेश	225	26	3	29
11.	महाराष्ट्र	305	148	24	172
12.	मणिपुर	25	—	—	—
13.	मेघालय	25	1	—	1
14.	नागालैण्ड	25	—	—	—
15.	उड़ीसा	110	26	2	28
16.	पंजाब	100	23	1	24
17.	राजस्थान	150	39	5	44
18.	सिक्किम	25	2	—	2
19.	तमिलनाडु	235	68	3	71
20.	त्रिपुरा	25	5	1	6
21.	उत्तर प्रदेश	445	30	1	31
22.	पश्चिम बंगाल	175	39	1	40
23.	अंडमान निकोबार द्वीप समूह	10	—	—	—
24.	अरुणाचल प्रदेश	10	—	—	—
25.	चंडीगढ़	10	4	—	4
26.	दादरा, नगर हवेली	10	—	—	—
27.	दिल्ली	55	50	—	50
28.	गोआ, दमन और दिऊ	15	2	—	2
29.	लक्षद्वीप	10	—	—	—
30.	मिजोरम	10	—	—	—
31.	पांडिचेरी	10	2	—	2
32.	विदेशों के प्रत्याशी	13	1	—	1
	कुल	3188	680	70	750

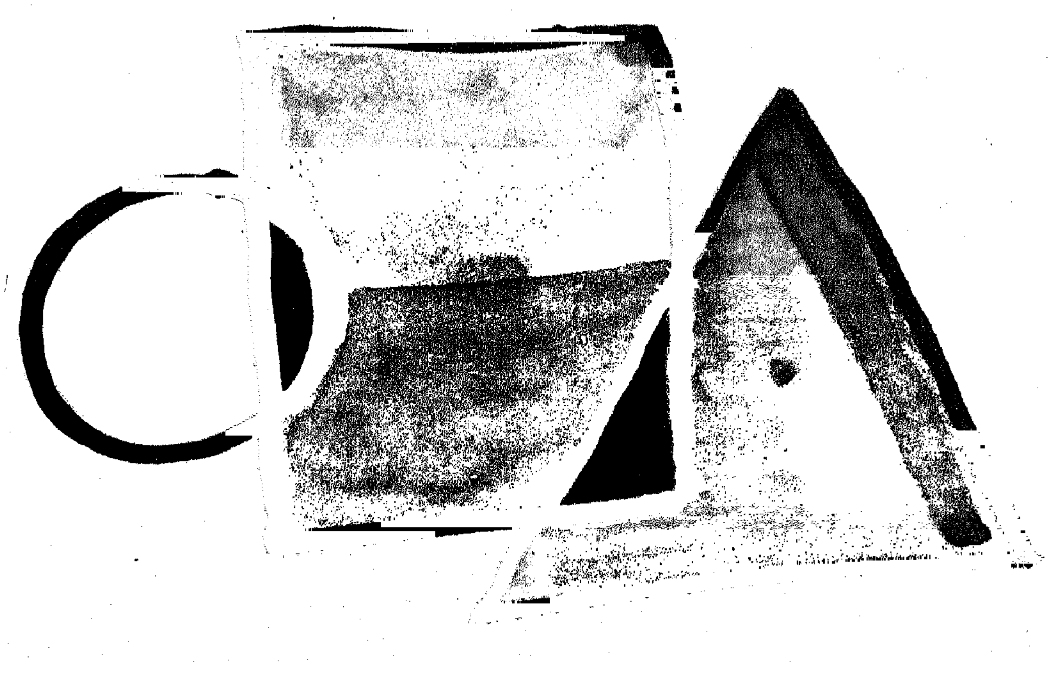
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के विभिन्न विभागों एककों की विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधित आंकड़ों के संसाधन का कार्य किया गया जिसमें राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के परिणामों का संसाधन और मेरिट लिस्ट बनाना शामिल है।

इन सबके अतिरिक्त निम्नलिखित कार्य भी किए गए :

1. ओमेगा सुपरस्टार नामक एक नए कम्प्यूटर सिस्टम का चुनाव तथा खरीद।
2. सांख्यिकीय विधियों और शिक्षा तथा मनोविज्ञान जैसे अनुसंधान क्षेत्रों में सहायता देना और मार्गदर्शन करना।

1985-86 के दौरान निकले प्रकाशन

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1	2	3	4
1.	यूनिट टेस्ट्स इन इंग्लिश (कोर्स ए) दसवी श्रेणी के लिए	अप्रैल 1985 (साइक्लोस्टाइल्ड)	200 प्रतियाँ
2.	सैम्पल यूनिट टेस्ट्स इन इंग्लिश	नवंबर 1985 (मुद्रित)	500 प्रतियाँ
3.	नेशनल टेलेंट सर्च एक्जामिनेशन 1984- एन एप्रेजल	नवंबर 1985 (साइक्लोस्टाइल्ड)	200 प्रतियाँ
4.	डाइग्नोस्टिक इवेल्युएशन एण्ड रेमेडिएशन फार इफेक्टिव लर्निंग	जनवरी 1985 (साइक्लोस्टाइल्ड)	200 प्रतियाँ
5.	हैन्डबुक ऑफ इवेल्युएशन इन इकानामिक्स	अप्रैल 1985 (साइक्लोस्टाइल्ड)	200 प्रतियाँ
6.	हैन्डबुक ऑफ इवेल्युएशन इन इंग्लिश	मुद्रणार्थ भेजी गई	–
7.	हैण्डबुक ऑफ इवेल्युएशन इन ज्योग्राफी	मुद्रणार्थ भेजी गई	–
8.	टेस्ट आइटम्स इन इंग्लिश लेंगुएज (माध्यमिक कक्षाओं के लिए)	मुद्रणार्थ भेजी गई	–
9.	रीड, अन्डरस्टेन्ड एण्ड आन्सर वाल्यूम 1 (केम्प्रीहेन्शन टेस्ट्स इन इंग्लिश)	मुद्रण हेतु तैयार	–
10.	इवेल्युएशन एट द द एलिमेंटरी स्टेज (ए बुक आफ रीडिंग्स)	जनवरी 1986 (मुद्रित)	1000 प्रतियाँ
11.	एजुकेशनल इवेल्युएशन	जनवरी 1986 (साइक्लोस्टाइल्ड)	200 प्रतियाँ
12.	डेवेलपिंग यूनिट टेस्ट (बायोलाजिकल साइंसेज)	अप्रैल 1986 (साइक्लोस्टाइल्ड)	100 प्रतियाँ
13.	द राजस्थान स्कीम आफ कम्प्रीहेंसिव इन्टरनल असेसमेंट (ई.आर.आई.सी प्रोजेक्ट रिपोर्ट)	अगस्त 1985 (साइक्लोस्टाइल्ड)	100 प्रतियाँ



11

नीति अनुसंधान नियोजन एवं प्रोग्रामन

एन.सी.ई.आर.टी. का नीति अनुसंधान नियोजन एवं प्रोग्रामन विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.) शिक्षा की सभी शाखाओं में हो रहे अनुसंधान कार्य और नवीन प्रक्रियाओं को अपने हाथ में लेता है, सहायता करता है, संवर्धन करता है और उनका समन्वय करता है और वह अनुसंधानकर्ता के विचारों और सूचनाओं के लिए एक निष्कासन गृह का काम करता है। 1985-86 के दौरान डी.पी.आर.पी.पी. द्वारा अपने हाथ में लिए गए कुछ मुख्य कार्यकलापों के संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं :

अनुसंधान और नवीन प्रक्रियाएं

1974 में स्थापित शैक्षिक अनुसंधान एवं नवीन प्रक्रिया समिति (एरिक) अनुसंधान में सहायता प्रदान करने वाला मुख्य तंत्र हैं। इस समिति के सदस्य शिक्षा के सुप्रसिद्ध अनुसंधानकर्ता, एस.आई.आर.एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि, एन.आई.ई.आर.आर.सी.ई. के सभी विभाग/एकक अध्यक्ष होते हैं। एन.आई.ई. के विभागों और आर.सी.ई. के प्रोफेसर इसके स्थायी आमंत्रित सदस्य होते हैं।

एरिक अनुसंधान की प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता करता है और यह एन.आई.ई. के विभागों, आर.सी.ई. क्षेत्र-एकक और सियेट द्वारा ली गई अनुसंधान परियोजनाओं तथा राज्य के अन्य अनुसंधान संस्थाओं और व्यक्तिगत शोध छात्रों को भी वित्तीय सहायता प्रदान करता है। एरिक परिषद में डॉक्टरेट संबंधी कार्य के लिए फैलोशिप देना है और साथ ही देश के अन्य क्षेत्रों में किए गए शोध पत्र के प्रकाशन की भी मंजूरी देता है।

राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधानों की नई नीति

अतीत में परिषद ने अपनी एरिक योजना में आवश्यक निधि समेकित आधार पर मुहैय्या कराकर व्यक्तिगत अनुसंधानकर्ताओं और शिक्षाविदों द्वारा केवल नियत अवधि वाली अनुसंधान परियोजनाओं में सहायता करता था। हालांकि इस प्रकार की सहायता अभी भी व्यक्तिगत परियोजनाओं में की जा रही है पर एरिक ने प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधानों का निष्पादन करने का निर्णय लिया है जिससे कि इन्हें पंचवर्षीय योजनाओं के संदर्भ में नीति-निर्णयों का आधार माना जा सके। अनुसंधान निष्पादित करने की नीति के अंतर्गत निम्नलिखित बातें आती हैं।

(i) राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियां करके दबाव वाले क्षेत्रों का पता लगाना और पता लगायी जाने वाली समस्याओं और मामलों की सूची तैयार करना।

(ii) ब्रहु-विषय वाले दलों द्वारा अनुसंधान अभिकल्पनाओं को तैयार करना।

(iii) विशेष अनुसंधान कार्य करने के लिए आवश्यक विशेषज्ञमत और सुविधाओं को प्रदान करके अनुसंधान केन्द्रों का पता लगाना।

आशा की जाती है कि समय-अतंराल में एरिक का पता कार्य-क्षेत्र इतना बढ़ जाएगा कि वह प्राथमिकता वाले तीन क्षेत्रों यानी प्रारंभिक शिक्षा का सर्वीकरण, शिक्षा का व्यावसायीकरण और पाठ्यचर्या विकास में राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधान कार्य करने लगेगा।

शैक्षिक अनुसंधान का निदर्श

एरिक ने एक निदर्श की स्वीकृति दी है जिसे अनुसंधान, विकास, विसारण और अनुकूलन निदर्श (आर.डी.डी.ए.) कहा जाता है और जो नवीन प्रक्रिया के "आरंभक" अथवा "विकासकर्ता" के परिप्रेक्ष्य पर बल देता है। इस निदर्श में शैक्षिक संस्थाएं अनुसंधान, विकास और मार्गदर्शी परीक्षण में भाग लेती है। आशा की जाती है कि इसे लागू करने पर यह नीति-निर्णयों के लिए शैक्षिक अनुसंधान का आधार प्रदान करेगा।

एन.आई.ई. व्याख्यान माला

एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अंतर्गत पांच सुप्रसिद्ध वक्ताओं को "वार्ता" देने के लिए आमंत्रित किया गया। ये वार्ताएं निम्नलिखित थीं:

वक्ता	विषय	तारीख
प्रो. जे.पी. स्टोलमा, भूगोल के प्रोफेसर, पश्चिमी मिकागन विश्वविद्यालय कलामाजू गिरमगान (संयुक्त राज्य अमरीका)	कम्प्यूटर की सहायता से भूगोल की पढ़ाई।	22-7-85
प्रो. वी.जे. केली, शिक्षा विभाग, साउथ एम्प्टन विश्वविद्यालय, (संयुक्त राज्य)	दसवें दशक में विज्ञान पाठ्यचर्या।	31-7-85

1985-86

वक्ता	विषय	तारीख
श्री सुशील दास गुप्ता, और उनकी पार्टी पश्चिम बंगाल।	"स्वतंत्रता और शांति" के गीतों पर व्याख्यान एवं प्रदर्शन।	14-8-85
प्रो. एन.सी.गुप्ता, शैक्षिक मनोविज्ञान के प्रोफेसर बाल स्टेट विश्वविद्यालय, मुंसी, इंडियन (संयुक्त राज्य अमरीका)	चिन्ता, स्वसंकल्पना और निष्पत्ति में भारत-अमरीकी अंतर	29-8-85
प्रो. डा. जान डब्लू डोब्रोलवस्की इंस्टीटयूट, जाल्तोनिया सोडोविस्का, ए.जी.एच, 30-059 ककाऊ, पोलैण्ड	वर्ग पर्यावरण शिक्षा अंतर विषयी पर्यावरण शिक्षा की नई संकल्पना और अनुभव	21-1-96

पूरी की गई परियोजनाएं

आलेच्य वर्ष में पूरी की गई अनुसंधान परियोजनाओं का विवरण नीचे सारणी में दिया गया है। इस सारणी के बाद परियोजनाओं से प्राप्त हुई मुख्य-मुख्य जानकारियों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
विभिन्न राज्यों (दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु) में 10+2 प्रणाली के अंतर्गत पाठ्यचर्या की अवस्थिति-एक अध्ययन	डा. जी.एल. अरोड़ा एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.)
जनजातीय और गैर-जनजातीय हाई स्कूल के छात्रों की संज्ञानात्मक शैली और संज्ञानात्मक योग्यता-एक तुलनात्मक अध्ययन	बी.डे. पटना विश्वविद्यालय, पटना
जनजातीय छात्रों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की विधियों, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन।	डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव और डा. वी.एस. गुप्ता एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.)
जनजातीय प्रतिवेश का पढ़ायी और प्राप्त पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने की दृष्टि से इस प्रतिवेश के स्कूल की कक्षाओं के वातावरण का विश्लेषण।	डा.एस.एन. उपाध्याय मनोविज्ञान में रीडर, रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर (मध्यप्रदेश)
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भौतिकी के प्रयोगों में अपनाए गए विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक दृष्टिकोण की प्रभाविता का एक तुलनात्मक अध्ययन।	डा. जी.एस. गांगोली क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर (एन.सी.ई.आर.टी.)
(महाराष्ट्र में) वाणिज्य में +2 और +2 के चरण पर शिक्षा के व्यावसायीकरण का अध्ययन	श्री एच.वी. गोखले जी.एस. कालेज ऑफ कामर्स एण्ड एकोनॉमिक्स, नागपुर महाराष्ट्र
प्राथमिक स्तर की समाज विज्ञान और भाषा की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की बोधगम्यता का अध्ययन।	डा. आई.एस. शर्मा, एन.सी.ई.आर.टी.
उत्तर प्रदेश में निराशित गृहों में रहने वाले बच्चों की मार्गदर्शन संबंधी आवश्यकताएं।	डा. साहिब सिंह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी
कोरियासी ब्लॉक के प्रथम ग्रेड पालेवालों में अनुपानहः एक मनोमितीय अन्वेषण।	डा. गुणवंत शाह और डा. शशिकांत शाह दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत

विभिन्न राज्यों (दिल्ली गुजरात, महाराष्ट्र, और तमिलनाडु में, 10+2 पद्धति के अंतर्गत पाठ्यचर्या की स्थिति-एक अध्ययन

मुख्य अन्वेषक : डा. जी.एल. अरोड़ा.

वर्तमान अध्ययन इस उद्देश्य से की गई थी कि 10+2 पद्धति में अपनायी पाठ्यचर्या विभिन्न राज्यों में किस प्रकार लागू की जा रही है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह बात मालूम करना था कि किस हद तक एन.सी.ई.आर.टी. प्रलेख (1975-76) में दिए गए मार्गदर्शन के साथ-साथ शिक्षा आयोग (1964-66) और "राष्ट्रीय पुनरीक्षण समिति (1977-78) की सिफारिश भारत के राज्यों और संघीय राज्यों में लागू हुई है और साथ ही वास्तविक स्कूल प्रतिवेश में निर्धारित पाठ्यचर्या किस प्रकार लागू की जा रही है – इस दृष्टि से विभिन्न राज्यों में निर्धारित पाठ्यचर्या का विश्लेषण करना था।

यह अध्ययन केवल चार राज्यों यानी दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में लागू करने के प्रथम स्तर तक अर्थात् राज्य शिक्षा विभाग और विद्यालय शिक्षा परिषद तक ही सीमित रहा। अध्ययन के लिए प्रत्येक राज्य से 15-20 स्कूलों को लिया गया। अध्ययन से यह पता चला कि विचाराधीन राज्यों और संघीय राज्यों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की स्कूली शिक्षा में पाठ्यचर्या के मुख्य-मुख्य अभिलषणों का अनुपालन किया जा रहा है।

माध्यमिक स्तर

(1) त्रिभाषा फार्मूला गुजरात, दिल्ली और महाराष्ट्र में तो लागू किया जा रहा है पर यह फार्मूला तमिलनाडु में लागू नहीं किया जा रहा

है।दिल्ली में भी इस फार्मूला को लागू करना बंद कर दिया गया है। इन राज्यों में 5 से 7 विषय पढ़ाए जाते हैं।

(2) दिल्ली और तमिलनाडु में केवल दो भाषाओं यानी मातृभाषा और अंग्रेजी में ही परीक्षाएं दी जा सकती हैं जबकि गुजरात और महाराष्ट्र में तीन भाषाएं लागू की जाती हैं।

(3) चारों राज्यों में विज्ञान और समाज विज्ञान को पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग माना गया है।

(4) चारों राज्यों की माध्यमिक विद्यालय पाठ्यचर्या में एस.यू.पी.डब्लू. को शामिल किया गया है और इस विषय पर कोई बाहरी परीक्षा नहीं ली जाती है। एस.यू.पी.डब्लू. के कार्यकलापों के लिए स्कूल में शायद ही कभी स्थानीय विशेषज्ञों का लाभ उठाया जाता है। अलग-अलग राज्यों में एस.यू.पी.डब्लू. की पढ़ाई के घंटे अलग-अलग हैं।

(5) सभी राज्य स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा पर अधिक जोर दे रहे हैं। स्कूलों के प्रिंसिपलों के विचार के अनुसार चारों राज्यों के छात्र शारीरिक शिक्षा और सह पाठ्यचर्या कार्यकलापों में काफी रुचि लेते हैं।

(6) अलग-अलग राज्यों में पढ़ाए जाने वाले विषयों की महत्ता अलग-अलग है।

(7) सभी राज्यों का यह कहना है कि छात्रों को पाठ्य पुस्तकें समय पर उपलब्ध हो जाती हैं और पाठ्य पुस्तकों के मामले में छात्रों को कठिनाई नहीं होती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर

(1) महाराष्ट्र में +2 स्तर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों और हिंदी कालेजों दोनों में ही लागू है जबकि शेष तीन राज्यों में यह +2 स्तर केवल उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में ही लागू हैं।

(2) कुछ राज्यों में पाठ्यक्रम को विभिन्न विषय-समूहों में बांट दिया गया है।

(3) चार राज्यों में काई पाठ्यचर्या अलग-अलग हैं। जहां दिल्ली, महाराष्ट्र और गुजरात में व्यावसायिक विषय पढ़ने वाले छात्रों को केवल एक भाषा पढ़नी होती है वहां तमिलनाडु में छात्रों को दो भाषाएं पढ़नी पड़ती हैं।

(4) अलग-अलग राज्यों में व्यावसायिक विषयों की संख्या अलग-अलग है। जहां दिल्ली और महाराष्ट्र में वाणिज्य ग्रुप से संबद्ध व्यावसायिक पाठ्यक्रम में सबसे अधिक विषय रखे गए हैं वहां तमिलनाडु में कृषि से संबद्ध व्यावसायिक पाठ्यक्रम में सबसे अधिक विषय रखे गए हैं।

(5) दिल्ली और महाराष्ट्र में एस.यू.पी.डब्लू. और कार्य अनुभव के अधीन एस.यू.पी.डब्लू. को उच्चतर माध्यमिक पाठ्यचर्या का एक विषय माना गया है।

(6) सी.बी.एस.ई. ने व्यावसायिक पाठ्यक्रम को पढ़ने वाले छात्रों के लिए सामान्य आधार पाठ्यक्रम निर्धारित किया है। इसे एक अनिवार्य विषय माना गया है जिस पर अध्यापन के कुल समय का 13.3% समय देना आवश्यक है। महाराष्ट्र और तमिलनाडु ने इस पाठ्यक्रम को अपनी पाठ्यचर्या में शामिल नहीं किया है। गुजरात में +2 स्तर के व्यावसायिक पाठ्यक्रम में "सामान्य ज्ञान" को अनिवार्य विषय माना गया है।

जनजातीय और गैर जनजातीय हाई स्कूल के छात्रों की संज्ञानात्मक शैली और संज्ञानात्मक योग्यता

मुख्य अन्वेषक : बी.डे

यह एक मार्गदर्शी अध्ययन है जिसे परस्पर विरोधी सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनजातीय और गैर जनजातीय हाई स्कूल के छात्रों की संज्ञानात्मक शैली, सामान्य बुद्धि और सृजनात्मक चिन्तन में सांस्कृतिक अंतर का पता लगाना था। इस कार्य के लिए प्रतिदर्श रांची के दो मुख्य समुदायों ओरांव और मुंडा से लिए गए और गैर जनजातीय प्रतिदर्श के रूप में शुरू से ही रांची में पढ़ने वाले हिंदू छात्रों को लिया गया। इस तरह प्रतिदर्श में जनजातीय समूह के 160 छात्र (पुरुष, महिला, ईसाई और सर्ना, ओरांव और मुंडा) और गैर जनजातीय समूह के 80 छात्र (पुरुष और महिला छात्रों के सवर्ण और अनुसूचित जाति) थे।

(1) गैर जनजातीय छात्रों की अपेक्षा जनजातीय छात्र क्षेत्र आश्रितता की ओर अधिक और क्षेत्र निराश्रितता की ओर कम अभिविन्यास है।

(2) अलग-अलग नृजाति, धर्म, लिंग और जाति के छात्रों का परीक्षण लेने पर उनके द्वारा प्राप्त किए गए अंकों में कोई संगतता नहीं थी।

(3) जनजातीय और गैर जनजातीय छात्रों और छात्राओं की क्षेत्र आश्रितता में अंतर थे। जहां तक क्षेत्र-निराश्रितता का संबंध है जनजातीय छात्रों और छात्राओं में कोई अंतर नहीं पाया गया है, गैर जनजातीय छात्रों और जनजातीय छात्राओं में भी यह अंतर नहीं पाया गया है।

(4) जहां तक सृजनात्मक चिन्तन का संबंध है जनजातीय और गैर जनजातीय छात्रों में कोई अंतर नहीं है।

(ग) जनजातीय छात्रों के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की विधियां, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अध्ययन

मुख्य अन्वेषक : डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव और डा. बी.एस. गुप्ता

विभिन्न राज्यों में चल रहे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की उनके उद्देश्यों के साथ-साथ सक्षमता मालूम करने की दृष्टि से और किसी भी कमी को मालूम तथा उसमें सुधार लाने के लिए उपाय सुझाने के लिए स्थिति अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए पांच जिलों यानी आंध्र प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और पश्चिम बंगाल के 11 जिलों से 54 केन्द्र चुने गए।

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए :

(1) नमूने के रूप में लिए सभी पांच राज्यों में 9-14 वर्ष की उम्र के उन बच्चों की सहायता करने के लिए, जिन्होंने या तो बीच में पढ़ायी छोड़ दी

है या अभी पढ़ायी ही शुरू नहीं की है, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम किया था।

(2) इन पांच राज्यों द्वारा चलाए जा रहे कुल 13,362 अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में से 3,323 केन्द्र जनजातीय उपयोजना क्षेत्रों में खोले गए। इन केन्द्रों में नामांकित छात्रों की कुल संख्या, 2,29,405 थी जिनमें आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल केअनौपचारिक केन्द्रों में नामांकित 52,275 जनजातीय बच्चे भी शामिल थे।

(3) पश्चिम बंगाल के प्राथमिक विद्यालय शिक्षा निदेशालय द्वारा चलाए जा रहे केन्द्रों को छोड़कर, जिनमें पढ़ायी दिन में होती है, अन्य सभी राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में अधिकांशतः शाम अथवा रात को पढ़ायी जाती है।

(4) केवल पश्चिम बंगाल को छोड़कर, जहां प्रत्येक केन्द्र में दो अनुदेशक हैं, अन्य सभी राज्यों के प्रत्येक केन्द्र में केवल एक अनुदेशक है। प्रत्येक केन्द्र में या तो प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक या वहां के शिक्षित युवक पढ़ाने का काम करते हैं। पश्चिम बंगाल के कुछ केन्द्रों में कुछ अनुदेशक स्नातक हैं।

(5) अलग-अलग राज्यों में अनुदेशकों के पारिश्रामक अलग-अलग है। पारिश्रमिक रु. 50/- प्रति मास से लेकर रु. 100/- प्रति मास तक है।

(6) पांचों राज्यों के प्रत्येक केन्द्र में नामांकित बच्चों की संख्या अधिक से अधिक 20 से 30 है। जिनमें 72% जनजातीय बच्चे हैं।

(7) सभी केन्द्रों में औसत हाजिरी 60% से अधिक थी।

(8) राज्य की किसी भी एजेंसी में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या से संबद्ध कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं था।

(9) बच्चों के लिए किसी भी पाठ्येतर कार्यकलाप/खेलकूद का आयोजन नहीं किया गया।

(10) इन केन्द्रों को ठीक ढंग से चलाने में समुदाय का कोई भी सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। विभिन्न राज्यों में प्रत्येक बच्चे पर किया गया औसत खर्च निम्नलिखित था :

> आंध्र प्रदेश में — 122/- रु, गुजरात में — 75 रु, मध्य प्रदेश में — 55/- रु, राजस्थान में 33/- रु, पश्चिम बंगाल (माध्यमिक) में 57 रु, पश्चिम बंगाल (प्राथमिक) में 46/- रु था।

(11) आंध्र प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और पश्चिम बंगाल ने अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र के लिए एक अलग पाठ्यचर्या तैयार की है जबकि मध्य प्रदेश ने केन्द्रों में प्रयोग में लाने के लिए वर्तमान प्राथमिक पाठ्यचर्या को 18 एककों में बॉट दिया है।

(12) क्योंकि राज्यों ने अपने केन्द्रों के लिए कोई विशेष अध्यापन सामग्री तैयार की थी अतः इन केन्द्रों को काफी पहले अध्यापन सामग्री उपलब्ध नहीं करायी गई।

(13) इन केन्द्रों में बोर्ड पर लिखकर और बोलकर बच्चों को पढ़ाया जाता है।

(14) पांचों राज्यों के केन्द्रों में यहां तक कि जनजातीय क्षेत्रों वाले केन्द्रों में भी पढ़ायी क्षेत्रीय भाषा में करायी जाती है। इन राज्यों को आकस्मिक खर्चे के मद में से अनियमित रूप से प्रतिवर्ष 100 रु से 1200 रु. तक की मंजूरी दी जाती है।

जनजातीय प्रतिवेश में कक्षा के वातावरण का अध्ययन और प्राप्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने की दृष्टि से कक्षा के वातावरण का विशलेषण:

— मुख्य अन्वेषक डा. एस.एन. उपाध्याय

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य कक्षा के वातावरण के तीन पहलुओं यानी व्यक्ति-व्यक्ति में आपसी संबंध, लक्ष्य अभिविन्यास और तंत्र अनुरक्षण के बारे में जानकारी प्राप्त करना है जहां यह देखने की कोशिश की गई है कि कहीं वातावरण के भिन्न-भिन्न विभागें और क्षेत्रों के साथ अध्ययन और प्राप्ति का सहसंबंध भिन्न तो नहीं है। मध्य प्रदेश के बस्तर जिले के दंतावड़, जगदलपुर, नेयानपुर, कोन्डागारोन और कंकर तहसील के जनजातीय विद्यालयों से चुने गए आठवीं कक्षा के छात्रों पर अध्ययन किया गया।

अध्ययन से निम्नलिखित बातों का पता चला: —

(1) व्यक्ति-व्यक्ति का आपसी संबंध जितना अच्छा होगा निष्पत्ति उतनी ही अधिक होगी। यही बात अंतर्भावितता और संबंधन पर भी लागू होती है पर यह शिक्षक के सहयोग पर लागू नहीं होती।

(2) लक्ष्य अभिविन्यास और इसकी दो विभाओं — कार्य अभिविन्यास और प्रतिस्पर्धा का विद्यालय की निष्पत्ति के साथ धनात्मक सहसंबंध होता है।

(3) जहां तक तंत्र अनुरक्षण और परिवर्तन पहलू का संबंध है— इसका भी छात्रों की निष्पत्ति के साथ धनात्मक सहसंबंध हैं। फिर भी इसकी विभिन्न विभाओं में एक समान सहसंबंध नहीं दिखलाई पड़ता। मिसाल के तौर पर व्यवस्था और संगठन की विभाओं और नवीन प्रक्रिया का निष्पत्ति के साथ कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, नियमं स्पष्टता के साथ ऋणात्मक सह संबंध है और शिक्षक नियंत्रण के साथ धनात्मक सहसंबंध है।

(4) कक्षा के वातावरण के विभिन्न पहलुओं/विभाओं और परीक्षा (विशेष रूप से आंतरिक परीक्षा) में प्राप्त अंकों के बीच कोई ऐसा सार्थक सह-संबंध प्राप्त नहीं हुआ जो आंतरिक परीक्षा की उच्च अविश्वसनीयता को प्रदर्शित करता हो।

(5) ऐसा प्रतीत होता है कि दक्षता प्राप्त करना कक्षा के वातावरण पर निर्भर नहीं करता।

भौतिकी का प्रयोग करने में विवृत दृष्टिकोण की प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन

— मुख्य अन्वेषकः डा. जी.एस. गांगुली

प्रयोगशाला में प्रयोग करते समय विवृत दृष्टिकोण अपनाने की सिफारिश प्रो. रईस अहमद और गांगोटी ने की है। वर्तमान अनुसंधान कार्य

करने का उद्देश्य पारंपरिक विधि के साथ-साथ निर्देशित विवृत दृष्टिकोण से किए गए कुछ प्रयोगों की प्रभाविता के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। यह अध्ययन दिल्ली के कुछ चुने हुए विद्यालयों के +2 स्तर के बच्चों पर किया गया। यह अध्ययन 92 छात्रों (66 लडकं और 26 लडकियों) पर किया गया।

इस अध्ययन से प्राप्त जानकारी निम्नलिखित है:

(1) निष्पत्ति परीक्षण और कौशल परीक्षण में प्रयोगशाला पारंपरिक समूह की अपेक्षा निर्देशित विवृत समूह का निष्पादन बेहतर रहा।

(2) हालांकि आमतौर पर सर्जनात्मक योग्यता दृष्टिकोण पर निर्भर नहीं करती फिर भी सृजनता के पठनप्रवाह पहलू के विकास में विवृत ढंग से किए गए प्रयोग से वृद्धि आ जाती है।

(3) निष्पत्ति परीक्षण और कौशल परीक्षण में प्राप्त औसत अंक के संदर्भ में निर्देशित विवृतसमूह के उच्च बौद्धिक स्तर वाले छात्र पारंपरिक प्रयोगशाला समूह के उच्च बौद्धिकस्तर वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्तम पाए गए और निर्देशित विवृत्त समूह के निम्न बौद्धिक स्तर वाले छात्र पारंपरिक प्रयोगशाला समूह के निम्न बौद्धिक स्तर वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्तम पाए गए। यह भी देखा गया कि स्वयं निर्देशित विवृत समूह के और पारंपरिक प्रयोगशाला समूह के उच्च बौद्धिक स्तर के छात्रों और निम्न बौद्धिक स्तर के छात्रों में काफी अंतर है। इस तथ्य से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दो दृष्टिकोणों अर्थात् निर्देशित विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक प्रयोगशाला दृष्टिकोण पर छात्रों के बौद्धिक स्तर का कोई प्रभाव नहीं पडता।

(4) क्रमांक 3 के परिणामों से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि निर्देशित विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक प्रयोगशाला दृष्टिकोण पर छात्रों के सामाजिक आर्थिक हैसियत का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(5) क्रमांक 3 और 4 के परिणामों से यह पता चलता है कि इस परियोजना के दो दृष्टिकोणों पर छात्रों की सर्जनात्मक योग्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(6) निष्पत्ति परीक्षण और कौशल परीक्षण में प्राप्त औसत अंक के संदर्भ में निर्देशित विवृत समूह के लड़कों की अपेक्षा निर्देशित विवृत समूह की लडकियों का निष्पादन अधिक उत्तम पाया गया और पारंपरिक प्रयोगशाला समूह की लड़कियाँअधिक उत्तम पायी गईं। इससे यह भी पता चलता है कि निर्देशित विवृत दृष्टिकोण और पारंपरिक प्रयोगशाला दृष्टिकोण पर छात्रों के लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

+2 और +3 स्तर के वाणिज्य की शिक्षा के व्यावसायीकरण का अध्ययन (महाराष्ट्र)

मुख्य अन्वेषकः एच.वी. गोखले

इस अध्ययन के माध्यम से +2 और +3 स्तर के वाणिज्य की व्यावसायी शिक्षा की वर्तमान पद्धति का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। इसके आंकड़े महाराष्ट्र के नागपुर, औरंगाबाद, पुणे और थाना जिले के छात्रों शिक्षकों और नियोक्ताओं से लिए गए हैं। अध्ययन से निम्नलिखित बातों का पता चला है:—

छात्र, शिक्षक, नियोक्ता और निशेषज्ञों ने आमतौर पर इस व्यावसायी पाठ्यक्रम को सामान्य शिक्षा के मुकाबले अधिक उपयोगी माना है। क्योंकि +2 स्तर के वर्तमान व्यावसायी पाठ्यक्रम छात्रों को नौकरी के लिए अथवा स्वयं कोई काम करने के लिए तैयार नहीं करता, अतः +3 स्तर के प्रस्तावित विशिष्ट व्यावसायी पाठ्यक्रम को, जिसमें व्यवसाय के व्यावहारिक पहलू पर अधिक ध्यान दिया गया है, अधिक उपयोगी माना गया है। संकाय के अनुसार भूमिकाओं का वर्गीकरण और संकाय के अनुसार भरती बोर्ड शिक्षा के साथ नौकरी को जोड़ने में अधिक उपयोगी सिद्ध होंगे।

प्राथमिक स्तर की विज्ञान, समाज-विज्ञान और भाषा की पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता का अध्ययन

— मुख्य अन्वेषकः डा. आई.एस. शर्मा

वर्तमान अध्ययन में राजस्थान में ग्रेड तीन स्तर की विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इन तीन विषयों के पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में बच्चों की बोलचाल तथा पढ़ने लिखने की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता मालूम करने के लिए 500 (250 ग्रामीण और 250 शहरी) छात्रों पर परीक्षण किए गए।

भाषायी विश्लेषण से निम्नलिखित बातों का पता चला :—

(1) तीन पाठ्यपुस्तकों में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है वह ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बच्चों की भाषा से बिल्कुल मेल नहीं खाती।

(2) पाठ्य पुस्तकों, विशेष रूप से समाज विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों में बच्चों की भाषा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिक क्रियाओं का प्रयोग होना चाहिए था।

(3) जहां तक क्रिया विशेषण का प्रश्न है: विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में काफी समानता नजर आती है।

(4) तीन पाठ्य पुस्तकों में काफी विशेषण का प्रयोग किया गया है और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के बच्चों की भाषा में भी काफी विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

(5) विज्ञान और समाज विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में संमिश्र वाक्यों का प्रयोग बहुत कम हुआ है जो कि एक अच्छी बात है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बच्चे अपनी बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा में जिस प्रकार की सरल वाक्यों का बहुतायत में प्रयोग करते हैं वहां हिंदी की पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त सरल वाक्य से मेल नहीं खाती। लगभग यही बात विज्ञान और समाज विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त वाक्यों पर भी लागू होती है।

(6) पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त संयुक्त एवं संमिश्र वाक्यों में जितनी संख्या में शब्दों का प्रयोग किया गया है वह बच्चों की बोलचाल और पढ़ने लिखने की भाषा में प्रयुक्त शब्दों की संख्या से काफी मेल खाती है।

(7) हिंदी की पाठ्यपुस्तक और अन्य दो पाठ्य पुस्तकों में काफी असंगतता है।

(8) यह देखा गया है कि पाठ्यपुस्तकों में और शहरी तथा ग्रामीण बच्चों की बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा में प्रयुक्त की गई अनेक संज्ञा, विशेषण, क्रिया और क्रिया-विशेषण अद्वितीय हैं अर्थात् इनका प्रयोग तो केवल पाठ्यपुस्तकों में किया जाता है या शहरी अथवा ग्रामीण बच्चे इनका प्रयोग करते हैं।

(9) ग्रामीण और शहरी बच्चों की बोलचाल और पढ़ने-लिखने की भाषा में प्रयुक्त वाक्यों की संख्या में तथा पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त वाक्यों की संख्या में काफी अंतर होता है।

(10) शहरी बच्चों और ग्रामीण बच्चों की भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों में काफी अंतर होता है।

(11) ग्रामीण और शहरी विद्यालय की विज्ञान, समाज विज्ञान और हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त भाषा की व्यापकता में काफी अंतर होता है जबकि शहरी बच्चों और ग्रामीण बच्चों की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक की भाषा-स्कोर की व्यापकता में कोई खास अंतर नहीं होता।

उत्तर प्रदेश की निराश्रित गृहों में रहने वाले बच्चों की मार्गदर्शन संबंधी आवश्यकताएं

मुख्य अन्वेषकः डॉ. साहिब सिंह

वर्तमान अध्ययन में निराश्रित गृहों में रहने वाले बच्चों की आवश्यकताओं को मालूम करने और इन बच्चों के लिए एक मार्गदर्शन कार्यक्रम तैयार करने का प्रयास किया गया है। इस संबंध में निम्नलिखित शोध प्रश्न उठाए गएः –

(1) निराश्रित गृहों में रहने वाले बच्चों की बुद्धि निष्पत्ति, अभिरुचि और समायोजन के संबंध में उनकी क्या-क्या आवश्यकताएं हैं ?

(2) ये बच्चे अपनी क्षमता का अधिक से अधिक विकास कर सकें इसके लिए उन्हें किस प्रकार का मार्गदर्शन देना चाहिए ? वर्तमान अन्वेषण के प्रतिदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के 25 निराश्रित गृहों में रहने वाले 209 लड़कों और 201 लड़कियों को लिया गया है। इस अध्ययन में कक्षा 6,7 और 8 में पढ़ने वाले निराश्रित गृहों के लगभग सभी बच्चों को लिया गया है।

वर्तमान अध्ययन से निम्नलिखित बातों का पता चला हैः

(1) निराश्रित गृहों में लगभग 20 से 30 प्रतिशत बच्चे बीमारी, सिरदर्द, थकावट, अनिद्रा और दैहिक अपंगता से पीड़ित रहते हैं। निराश्रित गृहों के लगभग एक-तिहाई बच्चों को रोग की रोक-थाम, देखभाल और उपचार की चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध नहीं होतीं।

(2) निराश्रित गृहों के लगभग आधे बच्चों को खाना, कपड़ा और आवास जैसी जींवन की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति पूरी तरह से नहीं हो पाती।

(3) निराश्रित गृह के अधिकांश बच्चों के अन्दर असुरक्षा की भावना, चिन्ता, कुंठा, बोरियत और छद्म श्रेष्ठता की भावना के कारण व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक संबंध ठीक नहीं रहते। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों पर इन तनावों का अधिक असर पड़ता है।

(4) निराश्रित गृहों का वातावरण सद्भावपूर्ण सामाजिक संबंध बनाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

(5) निश्चय ही पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या कार्यक्रम निराश्रित गृहों के अधिकांश बच्चों के अनुकूल नहीं होते।

(6) आमतौर पर कक्षाओं में पढ़ायी इस ढंग से नहीं होती कि वह निराश्रित गृहों के 20 प्रतिशत की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हो। शिक्षकों को उनकी समस्याओं को हल न करने का रवैया, कक्षा में चर्चाओं की कमी, घर के लिए दिए काम को ठीक से न जांचना, कमियों को दूर करने के उपायों की कमी, और मूल्यांकन में पक्षपात करना 'जैसी कुछ ऐसी शिकायतें हैं जिन्हें ये बच्चे बारबार करते हैं।

(7) जहां तक पढ़ने और पढ़ाने वालों के बीच के संबंध का प्रश्न है वहां सामाजिक अंतर का प्रभुत्व हो जाता है।

(8) अधिकांश बच्चों की यही राय है कि कक्षा में पढ़ायी का वातावरण काफी भ्रांतिजनक रहता है

(9) निराश्रित गृहों से आने वाले लगभग 20% बच्चों के पढ़ने के ढंग में व्यवस्था और तालमेल की काफी कमी रहती है। उनकी पढ़ायी काफी अनियमित ढंग से होती है।

(10) निराश्रित गृहों से आने वाले अधिकांश बच्चे व्यावसायिक मार्गदर्शन की आवश्यकता का अनुभव करते हैं।

(11) बुद्धि परीक्षण में 12 और 15 वर्ष की उम्र की लड़कियों की अपेक्षा इस उम्र के लड़कों का निष्पादन बेहतर होता है।

(12) ग्रेड स्तर (6) और (7) पर लड़कों का औसत बुद्धि प्राप्तांक लड़कियों के प्राप्तांक की अपेक्षा काफी अधिक होता है।

(13) पाठ्यचर्या के सभी विषयों के विभिन्न स्तरों पर लड़के और लड़कियों के निष्पत्ति अंक में काफी अंतर होता है।

(14) सभी ग्रेड स्तरों में लड़कियों की अपेक्षा लड़के अपना तालमेल अच्छी तरह से बैठा लेते हैं। इन बच्चों द्वारा महत्ता के क्रम में पढ़े जाने वाले विषय : हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, सामान्य विज्ञान और समाज विज्ञान।

(15) 90% से भी अधिक बच्चे सरकारी सेवा में जाना चाहते हैं। लड़कियों की रुचि नर्सिंग में जाने की होती है।

चोर्यासी ब्लॉक के प्रथम ग्रेड के बच्चों में– डिस्केलकुलिया एक मनोमितीय अन्वेषणः

मुख्य अन्वेषकः डा. गुणवंत शाह और डा. शशिकांत शाह

वर्तमान अध्ययन में (सूरत जिले के) चोर्यासी ब्लॉक के प्रथम ग्रेड के बच्चों में डिस्केलकुलिया मालूम करने और इससे संबद्ध संभाव्य मनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने की दृष्टि से कार्य का पूरा लेखा-जोखा रखा गया है। अध्ययन का उद्देश्य डिस्केलकुलिया से ग्रस्त बच्चों का पता लगाना, अंकगणित में निष्पत्ति और तीन मनोविज्ञान कारकों के बीच के संबंधों का अध्ययन करना, से अधिकतर पीड़ित रहने वाले बच्चों की व्रत्ति के बारे में

अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना और प्रथम ग्रेड के बच्चों में डिस्केलकुलिया को कम करने के लिए उपाय सुझाना है।

897 बच्चों से प्राप्त हुए आंकड़ों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए: –

(1) बच्चे पारिवारिक वातावरण, हीन भावना, अलगाव, आत्म-विश्वास की कमी आदि से संबद्ध समस्याओं से ग्रस्त पाए गए। मां-बाप और बच्चों के बीच भी ऐसे स्वस्थ संबंध नहीं थे कि वह बच्चों को अच्छी पढ़ायी के लिए प्रेरित करता।

(2) यह देखा गया है कि अंकगणित में बच्चों की औसत निष्पत्ति काफी कम रही है। मूल्यांकन परीक्षण लेने पर यह पाया गया कि जहां प्राइवेट स्कूलों के बच्चों द्वारा प्राप्तांक सबसे अधिक थे वहीं जिला पंचायत स्कूलों के बच्चों द्वारा प्राप्तांक सबसे कम थे।

(3) जहां तक अंकगणित में प्राप्तांक का प्रश्न है, लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की निष्पत्ति काफी अच्छी रही है। निष्पत्ति प्राप्तांक और बुद्धिलब्धि का सहसंबंध हालांकि धनात्मक था पर था काफी कम। कुछ बच्चों के बुद्धिलब्धि तो औसत से भी अधिक थे जबकि उनके निष्पत्ति प्राप्तांक काफी कम थे।

(4) मूल्यांकन का उत्तर देते समय डिस्केलकुलिया के बच्चों ने दो प्रकार के व्यवहार प्रदर्शित किए पहला यह कि उत्तर पत्र पर कुछ न लिखना। (खाली छोड़ देना) और दूसरा यह कि प्रश्नों के उत्तर लिखने के बजाय प्रश्न पत्र को पूरा का पूरा उतार लेना। गलतियों का विश्लेषण करते समय यह पाया गया कि बिना सोचे समझे और पहले से बिना सोचे-विचारे ही उत्तर दिए गए हैं।

(5) व्यक्ति की वृत्ति से यह पता चलता है कि बच्चों की पढायी में पिछड़ापन आने का कारण बुद्धिलब्धि विद्यालय का वातावरण, शिक्षक की प्रवृत्ति और पारिवारिक वातावरण के अलावा और भी कुछ हैं जो बच्चों की निष्पत्ति पर काफी प्रभाव डालता है। इन सभी कारकों पर सावधानी से विचार करना है।

परियोजनाएं

आलोच्य वर्ष में इकतीस विभागीय और बारह विभागेतर की अनुसंधान परियोजनाएं चलायी गईं। परियोजनाओं की सूची नीचे दी गई है:

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
विभागीय परियोजना	
उत्तर प्रदेश की दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति के छात्रों और गैर अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।	डा. बी.एस. गुप्ता
प्राथमिक स्तर के जनजातीय छात्र किस विषय में कमजोर हैं और किस विषय में मजबूत यह मालूम करने के लिए उनके विषयवार निष्पत्ति का अध्ययन।	डा. बी.एस. गुप्ता
बच्चों की शिक्षा और उनकी सामाजिक आर्थिक गतिशीलता के संबंध का अध्ययन।	डा. बी.पी. अवस्थी
शिक्षा के अनुदेशात्मक विकास एवं सामाजिक उद्देश्यों की दृष्टि से 10+2 स्तर की पाठ्यचर्या का मूल्यांकन एक प्राथमिक अध्ययन।	डा. बी. मेहदी
खानाबदोश जनजाति समुदाय के लिए आवश्यकता पर आधारित, पारिस्थितिकत निर्धारित और परिवर्तन अभिविन्यास शिक्षा प्रणाली	डा. (कु.) सरोजिनी. बिसारिया
शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए लड़कियां और महिलाओं के स्थानीय क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित व्यवसायों की पहचान।	डा. सुरजा कुमारी
जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों और गैर-जनजातीय प्राथमिक विद्यालयों की भौतिक सुविधाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन।	डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव
शिक्षा के व्यावसायीकरण के लिए लड़कियों और महिलाओं के स्थानीय क्षेत्रीय आवश्यक्ताओं पर आधारित व्यवसायों की पहचान।	डा. (कु.) एस. बिसारिया
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय विद्यालय शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन।	डा. जी.एस.अद्या
माध्यमिक विद्यालयों गुरुकुलों तथा पारस्परिक संस्कृत पाठशालाओं के छात्रों की संस्कृत विद्या की संप्राप्ति का मूल्यांकन।	डा. के.के. मिश्रा
शिक्षक गुटका "नो द प्लांट एराउण्ड यू" का मुद्रण।	डा. (श्रीमती) जी.आर. घोष
(सामाजिकता विकलांग लड़कियों सहित) लड़कियों की गणित में अवनिष्पात्ति के डिटर्मिनेंट।	डा. सुरजा कुमारी
उपचारी उपाय के रूप में स्तर की गणित के शिक्षण में सरल विधियों और तकनीकों के संकल्पनात्मक साधारण त्रुटियों का विशलेषण।	डा. एस.सी. दास
संघीय राज्य दिल्ली के, विभिन्न प्रबंध के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में होने वाली निजी लागत का एक तुलनात्मक अध्ययन-शिक्षा की अर्थव्यवस्था का एक अध्ययन।	डा. एस.एल. गुप्ता

1985-86

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में अध्यापन सामग्री का मूल्यांकन।	डा. (श्रीमती) एन. शुक्ला
अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न दृष्टिकोणों/ व्यवहारों की पहचान।	डा. एच.एल. शर्मा
शिलांग (मेघालय) के आस-पास के हाई स्कूल के जनजातीय बच्चों का शैक्षिक व्यावसायिक नियोजन, शैक्षणिक निष्पत्ति और चुने हुए मनोवैज्ञानिक प्राचलों एवं घर की पृष्ठभूमि से संबद्ध प्राचलों का अध्ययन।	डा. (श्रीमती) पी.एच. मेहता
शैक्षिणिक एवं व्यावसायिक विषयों में छात्रों के व्यावसायिक व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करने के लिए अनुसंधान का एक कार्यक्रम।	डा. स्वदेश मोहन और डा. निर्मला गुप्ता
(तीसरी कक्षा से पांचवी कक्षा तक) प्राथमिक स्तर के पर्यावरण अध्ययन में निकष संबंधी परीक्षणों का विकास।	डा. प्रीतम सिंह
राजस्थान के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शैक्षिक सुविधाओं का प्रतिदर्श- सर्वेक्षण।	डा. एस.एम. भार्गव
शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े नौ राज्यों में प्राथमिक स्तर पर बीच में पढ़ायी छोड़ देने और आगे पढ़ायी न करने का प्रतिदर्श अध्ययन।	डा. आर.आर. सक्सेना
एन.एफ.ई. के केन्द्रों से संबंधित अध्ययन सामग्री के अध्यापन कौशल और विकास की पहचान।	श्री एस.एन.एल. भार्गव और श्री जे.एस. ग्रेवाल
प्राथमिक स्तर पर प्रतिवेश दृष्टिकोण लागू करने के लिए शिक्षण कौशल और प्रशिक्षण नीति की पहचान का एक शोध अध्ययन।	डा. जे.एस. राजपूत
मध्यप्रदेश के जैविकी शिक्षकों के लिए साधन सामग्री तैयार करने के लिए भोपाल के फ्लोरा का अध्ययन।	डा. पी.के. खन्ना
स्वच्छ जल में रहने वाले जीवों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए (स्वच्छ जल जैविकी की एक शिक्षक-पुस्तिका)	डा. (श्रीमती) चन्द्रलेखा रघुवंशी
विज्ञान में परिकल्पना निर्माण और परिकल्पना परीक्षण संबंधी योग्यताओं के विकास के लिए स्व-अधिगम प्रक्रिया पर आधारित सामग्री की सक्षमता का विकास मान्यीकरण और परीक्षण।	डा. ए. ग्रेवाल
किशोरावस्था में विज्ञान का विवेचन करने की योजनाओं का निर्धारण और विकास।	प्रो. एन. वैद्य
उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कार्य-अनुभव/व्यावसायिक कार्यक्रम के रूप में खाद्य मशरूमों का सर्वेक्षण और संवर्धन। उड़ीसा में जलीय पारिस्थिति तंत्र का संरक्षण।	डा. जी.वी. कानूनगो

विभागेतर परियोजनाएं

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
ग्रामीण समुदाय की महिला शिक्षा कार्यक्रम में महिला स्वास्थ्य कार्मिक के रूप में भाग लेने की संभाव्यता।	प्रो. पूर्णिमा माथुर, नई दिल्ली
मेढ़क जिले की लड़कियों और महिलाओं के लिए स्थानीय एवं क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित व्यावसायों की पहचान और मेढ़क जिले में इन विद्यालयों का स्थान-निर्धारण।	डा. डोली शिनॉय, हैदराबाद
पठन सुधार कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए पांचवी, छठी और सातवीं कक्षा के छात्रों का गुजराती में लिए जाने वाले मूक पठन बोध परीक्षणों का निर्माण और मानकीकरण।	डा. बी.वी. पटेल, वल्लभ विद्यानगर
+2 स्तर और पूर्व स्नातक स्तर पर हिंदी की लघु कहानियों की मूल्यांकन युक्ति और शिक्षण विधि।	डा. आर.एस. शर्मा और डा. (कु.) शशिकान्ता बोहरा, नई दिल्ली।
आंध्र प्रदेश के मंदितमना बच्चों के लिए विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रम स्कूलों और सेवाओं का मूल्यांकन संबंधी सर्वेक्षण।	डा. (श्रीमती) डोलीशेनॉय, हैदराबाद
प्रतिस्पर्धा के अभिप्रेरण पर और पहल के अभिप्रेरण पर आधारित शिक्षण विधियों की सापेक्ष प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन।	प्रो. एस.बी. मल्हर, जलगॉव
गांव के युवाओं के जीवन से संबद्ध विषयों पर आत्म अधिगम की नीतियों और विकल्प निदर्श के विकास से संबद्ध ग्रामीण समृद्धि शिक्षा परियोजना।	डा. एन.के. उपसानी, पुणे।
सर्जनात्मक प्रशिक्षण के साथ अध्यापन सामग्री में संरचना की अनोन्य क्रिया।	डा. (श्रीमती) सुदेश गाखर चंडीगढ़
सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक वंचन वाले पूर्व विद्यालय बच्चों के पूरक भाषा कार्यक्रम के विकास संबंधी नीतियां।	डा. जी. पंकजम मदुरई
कालेज के प्रतिभाशाली छात्रों का अनुवर्ती अध्ययन।	डा. गिरजेश कुमार, मुरादाबाद
गांव के कामकाजी बच्चों की शिक्षा जारी रखने पर प्रयोग।	डा. एम.जी. माली, गरगोटा

1985-86

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
उड़ीसा के जनजातीय स्कूल छात्रों के सामाजिक मनोविज्ञान पर शिक्षा का प्रभाव।	डा. गिरीश पटेल फुलबानी

नई परियोजनाएं

इस योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता देने के लिए बारह शोध परियोजनाएं स्वीकृत की गईं परियोजना की सूची निम्नलिखित हैं:

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
विभागीय परियोजना	
हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश और उड़ीसा के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के भवन का गहन अध्ययन।	श्री पुष्पेन्द्र कुमार डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पाठ्यचर्या से संबद्ध प्रयोगशाला सुविधाओं का गहन अध्ययन।	डा. के.एन. राव, डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में चार विषयों की पुस्तकालय सुविधाओं और उनकी उपयोगिता का प्रतिदर्श अध्ययन।	डा. सी.एल. कौल डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
समाज के कमजोर वर्गों की शैक्षिक सुविधाओं का सर्वेक्षण।	डा. एस.एम. भार्गव डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
विद्यालयों के मिडिल और माध्यमिक स्तर की शिक्षण सामग्री का गहन अध्ययन।	डा. सतवीर सिंह डी.एम.ई.एस.डी.पी.यू.
एन.एफ.ई. की प्रशासनिक ढांचे का अध्ययन और मॉनिटरन तथा पर्यवेक्षण की योजना।	डा. बी. अरोड़ा डी.पी.एस.डी.डी.
विभागेतर परियोजना	
भारत के विकलांग बच्चों का अभिज्ञान और एक प्रभावी हस्तक्षेप का विकास।	डा. एल.वी. त्रिपाठी गोरख विश्वविद्यालय
"बैंक ऑफ गुजराती" प्रश्न का निर्माण।	डा. एस.एल. मोदी भावनगर
पूर्व-विद्यालय बच्चों की शिक्षा और व्यक्तित्व के लिए उनकी सर्जनात्मक चिन्तन योग्यताओं की युक्तियों का विकास।	श्री भून्दर सिंह सुल्तानपुर
मणिपुर के विद्यालयों में प्राथमिक स्तर की पढ़ायी बीच में छोड़ देने और आगे न पढ़ने के कारणों का अध्ययन।	श्री जी.जे. गणेश्वर

परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का विद्यालय में निष्पादन और पारिवारिक पृष्ठभूमि संबंधी संज्ञानात्मक अभिलक्षणों का अध्ययन।	डा. एम.वी. बुच, बड़ौदा
जनजाति के लोग और शिक्षा। क्षेत्रीय मुख्य स्ट्रीम में समेकन की प्राप्ति	हेमलता तेलसरा, विद्याभवन, जी.एस कालेज, उदयपुर

पी.एचडी. थीसिस/मोनोग्राफ का प्रकाशन अनुदान

एरिक की सहायता से निम्नलिखित पी.एचडी. थीसिस/मोनोग्राफ़ प्रकाशित हुए:

शीर्षक	लेखक का नाम
प्रोग्रामिन अनुदेश की नीति	डा. एस.पी. मलिक केन्द्रीय शैक्षिक टैक्नोलॉजी संस्थान। एन.सी.ई.आर.टी.
प्रभावी माध्यम के जरिए बेहतर शिक्षण	डा. शशिकान्त शाह, सूरत (गुजरात)
निष्पत्तियों के संबंध में पठन-योग्यताओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।	डा. प्रभजोत, दिल्ली।
भारत में शिक्षा के सुअवसर की समता : एक कल्पना अथवा वास्तविकता।	डा. सुरभी पी. पटेल, एन.सी.ई.आर.टी.
चिन्ता के सहसंबंध	डा. आर.एस. सिंह, देवरिया, उत्तर प्रदेश
भारतीय प्रशिक्षक के कुछ अभिलक्षण	डा. जे.सी. गोयल, भूटान
उद्दीपन प्रस्तुतिकरण और व्यक्ति प्रत्यक्षण	डा. एम.एल. गुप्ता, गोरखपुर
अद्वेता को वाचस्पति का योगदान	डा. वी.एन. शेषागिरि राव, मैसूर
हाई स्कूल के छात्रों में वंचन की भावना	ऊषा उपाध्याय, वाराणसी
अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए शिक्षक और शैक्षिक योजनाएं	डा. एस.के. यादव, एन.सी.ई.आर.टी.
व्यक्तित्व और शैक्षणिक प्रायुक्ति अनुमोदन	डा. जी.एन. प्रकाश, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल डा. एन.के.एम. त्रिपाठी, गोरखपुर
कालेजर उपलब्धक	डा. एस.वी. अदावल, इलाहाबाद
बीजगणित में निष्पत्ति और सरंचना	डा. सी.पी.एस. चौहान वाराणसी
शिक्षकों में आत्म वास्तविकीकरण	डा. अमूल्य खुराना, दिल्ली
बच्चों की जाति और धर्म की जागरूकता	डा. रामकल्प तिवारी
बच्चों की बोली में गड़बड़ी	डा. अश्विनी कुमार श्रीवास्तव, आगरा
ब्रिटेन और भारत में विशेष शिक्षा	डा. एन.के. जंगीरा
दृश्यलेख समस्याएं, व्यवहार परिप्रेक्ष्य	एन.सी.ई.आर.टी.

1985-86

पी.एचडी थीसिस/मोनोग्राफ के प्रकाशन में परिषद की सहायता देने का अनुमोदन

शीर्षक	लेखक का नाम
प्रारंभिक विद्यालय के बच्चों में वैज्ञानिक संकल्पना की वृद्धि का अध्ययन	डा. एस.सी.आर्य, भोपाल
भाषा, समाज विज्ञान और विज्ञान के शिक्षकों का गैर शाब्दिक कक्षा अन्योन्यक्रिया प्रतिमान	डा. राकेश जैन, सागर (म.प्र.)
बच्चों की वैज्ञानिक सर्जनकता पर उनके घर और विद्यालय के वातावरण का प्रभाव।	डा. करुण शंकर मिश्र, इलाहाबाद
मुरादाबाद के विद्यालय में अनुशासन, संगठनात्मक वातावरण, लड़के-लड़कियों के अनुपात और विद्यालय की स्थिति जैसे व्यक्तिगत कारकों के संबंध में प्रभावशाली और प्रभावहीन हाई स्कूल शिक्षकों का एक तुलनात्मक अध्ययन।	डा. योगेश कुमार गुप्ता मुरादाबाद
अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए शिक्षक और शैक्षिक योजनाएं	डा. एस.के. यादव एन.सी.ई.आर.टी.
हिंदू और मुसलमान महिलाओं के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधुनिकीकरण पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।	डा. (श्रीमती) ममता अग्रवाल डी.एम.ई.एस.डी.पी. एन.सी.ई.आर.टी.
कक्षा के इथोस के संदर्भ में माध्यम की प्रभाविता।	डा. उमेद सिंह, सूरत
श्री अरविन्दो अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र द्वारा विकसित "मुक्त प्रगति तंत्र" के मनोवैज्ञानिक आधार का अध्ययन।	डा. चन्दकान्त पटेल, गुजरात
ब्रिटेन और भारत में विशिष्ट शिक्षाः समस्या व्यवहार और परिप्रेक्ष्य का एक तुलनात्मक अध्ययन।	डा. एन.के. जंगीरा, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस एन.सी.ई.आर.टी.
ग्यारहवीं कक्षा में जैविकी के शिक्षण के लिए मॉडुलक दृष्टिकोण अपनाने का एक प्रायोगिक अध्ययन।	प्रो. डब्लू.ए.हायर, मद्रास
आधुनिक हिंदी में बाल साहित्य का विकास।	डा. विजय लक्ष्मी सिन्हा जबलपुर (म.प्र.)
माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के बुनियादी गणितीय कौशल में सुधार लाने में प्रयुक्त कुछ देशज तकनीक।	डा. कृपानाथ सिन्हा पश्चिम बंगाल
पढ़ायी संबंधी निष्पत्ति, निष्पत्ति अभिप्रेरण, सर्जनात्मक कार्य और चिन्ता का जैव रसायन सहसंबंध।	डा. अरुणिमा वत्स एन.सी.ई.आर.टी.
नवीन प्रक्रिया के रूप में सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षा। भारत के गाँवों में अपवर्जित पदार्थ का अध्ययन।	डा. इन्दु ग्रोवर, हरियाणा
बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले सामाजिक सांस्कृतिक कारक	डा. एस.सी. गुप्ता, लुधियाना
कम लागत वाली श्रव्य दृश्य शिक्षण सामग्री और अधिक लागत वाली श्रव्य दृश्य शिक्षण सामग्री की प्रभाविता का एक तुलनात्मक अध्ययन।	विक्रमजीत सिंह ए.सी.ई.आर.टी.
1947 से गढ़वाल डिवीजन के शैक्षिक विकास का एक मूल्यांकन अध्ययन।	डा. के.वी. बुधोरी, श्रीनगर
गुजरात में नगरीकरण। एक भौगोलिक विश्लेषण	डा. यू.पी. शाही, देवरिया (उ.प्र.)

अनुसंधान-प्रशिक्षण

29 अक्तूबर से 5 नवम्बर, 1985 तक इस विभाग में अनुसंधान कार्यप्रणाली पाठ्यक्रम स्तर का आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम का अभिप्राय उन छात्रों की सहायता करना था जो आँकड़ा-संग्रह, उपकरण चयन, उपकरण, निर्माण, प्रतिदर्श चयन और आंकड़ा संग्रह को तैयार करने में लगे हुए थे। विज्ञापन के जरिए प्राप्त हुए 154 आवेदन पत्रों में से केवल उन बाइस छात्रों को चुना गया जो पात्रता निकष को संतुष्ट करते थे।

28 फरवरी से 7 मार्च, 1986 तक एन.आई.ई. के परिसर में अनुसंधान कार्यप्रणाली पाठ्यक्रम स्तर- III आयोजित किया गया। यह पाठ्यक्रम मुख्यतः उन शोध छात्रों के लिए था जो पी.एचडी. की डिग्री प्राप्त करने से संबद्ध शोध कार्य करने के लिए विश्वविद्यालयों में अथवा संबद्ध शिक्षा संस्थाओं में पंजीकृत थे और यह पाठ्यक्रम राज्य की शिक्षा/एस.सी.ई.आर.टी. संस्थाओं और प्रशिक्षण कालेजों में शोध अध्ययन के उन मुख्य अन्वेषकों अथवा सरकारी अन्वेषकों के लिए भी था जो आंकड़ों का विश्लेषण करने के चरण पर थे। विज्ञापन के जरिए प्राप्त हुए 49 में से केवल 20 छात्रों को उपयुक्त पाया गया, अतः उन्हें चुन लिया गया। दस छात्रों ने इस पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। संकाय में तीन विभागेतर अतिथि लेक्चरार और चार एन.आई.ई. के स्टाफ मेम्बर थे।

एरिक बुलेटिन

अनुसंधान से प्राप्त हुए तथ्यों के प्रचार-प्रसार की महत्ता को ध्यान में रखकर एरिक में 1984 से एक त्रैमासिक शोध बुलेटिन प्रकाशित करना शुरू

कर दिया। डा. ए. शर्मा और श्री सोन्ती सुब्बाराव द्वारा संकलित थे तथा एम.वी. बुच द्वारा संपादित बुलेटिन में शिक्षा में तीन अनुसंधान सर्वेक्षण से प्राप्त संक्षिप्त विवरण से प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के क्षेत्र में अनुसंधान संबंधी संक्षिप्त विवरण दिए हुए होते हैं और इस तरह इस बुलेटिन में 1983 तक भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा किए गए सभी शोध अध्ययनों का विवरण दिया होता है।

मार्च, 1985 में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण से संबद्ध समस्याओं और मामलों पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में किए गए सुझाव के अनुसार संक्षिप्त विवरणों को निम्नलिखित तीन शीर्षकों के अंतर्गत रखा गया है :

(क) परिमाणात्मक लक्ष्य प्राप्त करना।
(ख) नियोजन, वित्तीयन, मॉनिटरन और मूल्यांकन
(ग) औपचारिक और अनौपचारिक शिशा में संबंध और समुदाय का भाग लेना।

इस संगोष्ठी में जिस चौथे क्षेत्र का सुझाव दिया गया था वह था प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण का गुणात्मक सुधार।

1985-86 के दौरान प्रकाशित किए गए दो एरिक बुलेटिनों के ब्यौरे निम्नलिखित हैं:

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक	प्रकाशन माह	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	शोध बुलेटिन एरिक विशेषांक – (1) खंड- II, सं. 122, प्रारंभिक शिक्षा का सर्वीकरण।	डा. ए. शर्मा, श्री सोन्ती सुब्बाराव	(अप्रैल-सितंबर 1985)	300
2.	शोध बुलेटिन एरिक विशेषांक – (2) खंड- II, सं. 384 प्रारंभिक शिक्षा का सर्वीकरण।	डा. ए. शर्मा श्री सोन्ती सुब्बाराव	(अक्तूबर 1985 मार्च 1986)	300

इन बुलेटिनों को प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधान कार्य करने के लिए उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रकाशित किया गया।

विकासी कार्यकलाप

19 से 26 नवंबर, 1985 तक 8 दिनों के लिए बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण से संबद्ध अभिज्ञात मामलों/दबाव क्षेत्रों पर अनुसंधान-अभिकल्पना विकसित करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। शिक्षा, मनोविज्ञान, समाज-विज्ञान, सामाजिक नृ-विज्ञान, अर्थमिति विज्ञान के विभिन्न संकायों/विभागों के डीन, प्रोफेसर और अध्यक्ष, शैक्षिक योजना और शैक्षिक वित्त से संबंधित व्यक्ति, शैक्षिक अनुसंधान और विकास के प्रशासक तथा आयुक्त और प्रसिद्ध अनुसंधानों जैसे 40 व्यक्तियों को शुरू में इस कार्यशाला में भाग लेने और कुछ चुने हुए विषयों पर अनुसंधान अभिकल्पना विकसित करने के लिए आमंत्रित किया गया। अतं में 16 व्यक्तियों जिनमें 14 बाहर के व्यक्ति थे और 2 एन.सी.ई.आर.टी. संकाय के सदस्य थे – ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया और लगातार छः से आठ दिन तक एक साथ मिलकर के काम करके इन्होंने 14 अनुसंधान अभिकल्पना विकसित किए।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा विकसित इन शोध अभिकल्पनाओं का पुनरीक्षण ग्यारहवीं एरिक उपसमिति ने जनवरी 1986 में किया और उसने अभिकल्पनाओं का पुनः समूहन करने और उनमें सुधार लाने से संबद्ध कुछ सुझाव दिए। तदनुसार समूह की दो अभिकल्पनाओं "परिमाणात्मक लक्ष्य प्राप्त करना" और "हिमाचल प्रदेश के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के गैर नामांकित छात्रों का निर्धारण" विकसित की गई और इसे मार्च, 1986 में हुई सोलहवीं एरिक बैठक में प्रस्तुत किया गया।

समूह-II "गुणात्मक सुधार" के संबंध में ग्यारहवीं पुनरीक्षण उपसमिति ने अनुसंधान प्रस्तावों का पुनः समूहन करने का सुझाव दिया है और व्यापक अनुसंधान प्रस्ताव को तैयार करने के लिए एक उपसमिति की स्थापना की है। एरिक की सोलहवीं बैठक में इस उपसमिति की सिफारिशों का अनुमोदन कर दिया गया।

समूह- III, *नियोजन, वित्तीयन, मॉनिटरन और मूल्यांकन* के अंतर्गत चार अनुसधान अभिकल्पनाएं तैयार की गई। फिर भी ग्यारहवीं पुनरीक्षण समिति ने इन अभिकल्पनाओं को एक व्यापक अभिकल्पना में विलय करने और एरिक की सोलहवीं बैठक में प्रस्तुत करने का सुझाव दिया था। अच्छी तरह जांच पड़ताल कर लेने के बाद एरिक की सोलहवीं बैठक में भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान के सीनियर फेलो डा. जे.एल. आनंद के नेतृत्व में "सरकारी सहायता अनुदान की नीतियों, क्रियाविधियों और प्रतिमानों के विशेष संदर्भ में भारत की प्रारंभिक शिक्षा की वित्तीयन का क्रांतिक अध्ययन"नामक अनुसंधान अभिकल्पना को अनुमोदि कर दिया है।

समूह- IV "औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के संबंध और समुदाय का भाग लेना" के अधीन चार अनुसंधान अभिकल्पनाएं तैयार की गई। ग्यारहवीं पुनरीक्षण उपसमिति ने इन चार अभिकल्पनाओं को एक व्यापक अनुसंधान प्रस्ताव में करके एरिक बैठक के सामने रखने का सुझाव दिया है। सोलहवीं एरिक ने उप समिति की सिफारिश मान ली है।

इसके अतिरिक्त अनेक अनुसंधान संस्थाओं/संगठनों क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों और एन.आई.ई. के विभागों के साथ उनके पास उपलब्ध अनुसंधान

1985-86

संकायों को मालूम करने और राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसंधानों के लिए एरिक में कुछ पोस्ट बनाने के लिए अंनुसंधान अभिरुचि के क्षेत्रों के साथ संपर्क स्थापित किए गए। अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ के चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेज और एरिक डी.पी.आर. पी.पी. ने राष्ट्रीय स्वरूप के अनुसधान करने के लिए आउट-पोस्ट की तरह काम करने और आवश्यक सुविधाएं मुहैय्या करने के लिए सहमत हो गए हैं। एरिक की सोलहवीं बैठक में आउटपोस्ट को अनुमोदित कर दिया गया है।

राष्ट्रीय परीक्षण विकास पुस्तकालय (एन.टी.डी.एल.)

एन.टी.डी.एल. (i) संदर्भ परीक्षण पुस्तकालय (ii) मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का सूचना केन्द्र (iii) सभी प्रकाशित भारतीय परीक्षणों के क्रांतिक पुनरीक्षण मुहैया कराने की एजेंसी और (IV) परीक्षण विकास की रिक्तियों का पता लगाने वाला सस्थान।

एन.टी.डी.एल. एक सलाहकार समिति (एन.टी.डी.एल. की एक केन्द्रीय सलाहकार समिति) के सदस्य देश के शीर्षस्थ मनौमितिज्ञ होते हैं। इस समिति की बैठक साल में एक बार मार्च के महीने में होती है जो वर्ष भर में एन.टी.डी.एल. द्वारा किए गए कार्य का पुनरीक्षण करती है और अगले वर्ष की कार्य योजना से संबद्ध सुझाव देती है। एन.टी.डी.एल. की केन्द्रीय सलाहकार समिति की सातवीं बैठक 24 मार्च, 1986 को हुई थी।

एन.टी.एल. बुलेटिन

एन.टी.एल. (राष्ट्रीय परीक्षण पुस्तकालय) बुलेटिन एन.टी.डी.एल. परियोजना का निरंतर चलने वाला एक कार्यकलाप है। इसने बुलेटिन नं. 20 प्रकाशित किया है: प्रिंट (III) में व्यक्तित्व परीक्षण का पुनरीक्षण।

खरीदे गए नए परीक्षण

निम्नलिखित नए परीक्षण पुस्तकालय में बढ़ाए गए हैं:

1. जीवनवृत्त विकास तालिका विद्यालय फार्म, कालेज फार्म और विश्वविद्यालय फार्म।
2. जेनसन तालिका
3. कॉपरस्मिथ कार्य तालिका
4. स्टेट ट्रेट चिन्ता तालिका फार्म वाई
5. स्टेट ट्रेट चिंता तालिका (एक व्यापक ग्रंथ सूची)
6. बेल : समायोजन तालिका (छात्र फार्म और वयस्क फार्म)

12

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन

1 भूमिका

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन के जरिए शिक्षा, विशेष रूप से प्रारंभिक, माध्यमिक और प्रवर माध्यमिक स्तर की शिक्षा का गुणात्मक विकास करना शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग का एक मुख्य कार्य है। यह विभाग परामर्श और मार्गदर्शन, प्रतिभाशाली छात्र की पहचान और विकास, व्यवहार टेक्नोलाजी तथा पाठ्यचर्या एवं अध्यापन सामग्री से संबद्ध अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण संबंधी कार्यकलापों को करता है। कार्यक्रमों का मुख्य केंद्र सीखने वाले की क्षमताओं और कार्य करने के सभी पहलुओं में उसके अनुकूलतम विकास और आत्म प्रत्यक्षीकरण पर होता है।

अनुसंधान

निम्नलिखित विषयों पर व्यापक अनुसंधान अध्ययन किए गए :

1. अनुसूचित जाति के हाई स्कूल के लड़कों का मनोवैज्ञानिक अभिलक्षण और शैक्षिक एवं व्यावसायिक नियोजन।
2. जनजातीय छात्रों का शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन, शैक्षणिक निष्पत्ति और मनोवैज्ञानिक अभिलक्षण।
3. शैक्षणिक और व्यावसायिक विषयों में छात्रों का व्यावसायिक व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन।

कुछ अनुसंधान अध्ययन व्यवहार अपरिवर्तन, सर्जनकता और प्रतिभा और निकष संदर्भ परीक्षण जैसे विषयों पर भी किए गए। अनुसंधान परियोजनाओं में से तीन परियोजनाएं आलोच्य वर्ष में ही पूरी कर ली गईं। नीचे दी गई सारणी में पूरी हो गई अनुसंधान परियोजनाओं का संक्षिप्त विवरण और चल रही परियोजनाओं की प्रगति का विवरण दिया गया है :

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग ने निम्नलिखित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रमों का आयोजन किया :

क्रम सं.	परियोजना का नाम	परियोजना की अवधि	मुख्य अन्वेषक	कैफियत
1.	अनुसूचित जाति के हाई स्कूल के बच्चों का शैक्षिक एवं व्यावसायिक नियोजन के साथ-साथ मोवैज्ञानिक अभिलक्षण का अध्ययन।	2 वर्ष	प्रो. जे.एस. गौड़	रिपोर्ट लिखी जा रही है।
2.	शिलांग (मेघालय) और इसके आस-पास के हाई स्कूल के जनजातीय छात्रों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक नियोजन, शैक्षिक निष्पत्ति और चुने हुए मनोवैज्ञानिक एवं गृह पृष्ठभूमि प्राचलों का अध्ययन।	3 वर्ष	प्रो. पी.एच. मेहता	तदर्थ रिपोर्ट तैयार की जा रही है।
3.	+2 स्तर के शैक्षिक एवं व्यावसायिक विषयों में छात्रों का व्यावसायिक व्यवहार और व्यावसायिक समायोजन पर अनुसंधान।	3 वर्ष	डा.(श्रीमती) स्वदेश मोहन डा.(श्रीमती) निर्मला गुप्ता	आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं
4.	आकस्मिक प्रबंध द्वारा प्रारंभिक छात्रों के संज्ञानात्मक कार्यों और कक्षा में व्यवहार में सुधार लाना	27 मास	श्री आर.के. शर्मा	रिपोर्ट लिखी जा रही है।
5.	निकस संदर्भ परीक्षण में वेयसीय दृष्टिकोण	2 वर्ष	प्रो. आर.के. माथुर	कार्य प्रगति पर है। वास्तविक स्कोर वितरण का एक सूत्र प्राप्त कर लिया गया है और व्यक्तियों को क्रमित संवर्गों में वर्गीकृत करने के सही अथवा गलत निर्णय की प्राथमिकता मालूम करने का सूत्र प्राप्त कर लिया गया है
6.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रों का पृष्ठभूमि अध्ययन (1978-80)		डी. इ.पी.सी. और जी	मिमियोग्राफित रिपोर्ट प्रकाशित कर दी गई है।

1985-86

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ब्यूरो, माध्यमिक तथा प्रवर माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के निर्देशन के लिए उन परामर्शदों को प्रशिक्षित करता हैं जो कालेजों और विश्वविद्यालयों में कार्य करेंगे। यह नौ महीनों का एक पूर्णकालिक पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने की निम्नतम अर्हता द्वितीय श्रेणी में मनोविज्ञानः अथवा शिक्षा में मास्टर डिग्री का होना है। इस पाठ्यक्रम में छात्रों का प्रवेश अखिल-भारतीय चयन-परीक्षण के आधार पर होता है। 1985-86 के दौरान अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के चार प्रशिक्षणार्थियों सहित 29 व्यक्तियों को यह प्रशिक्षण दिया गया। पचहत्तर प्रशिक्षणार्थियों को 325 रु. प्रतिमास का वजीफा दिया गया। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के प्रशिक्षणार्थियों के लिए अंग्रेजी और सभी सैद्धांतिक पर्चों में विशेष कोचिंग कक्षाओं की व्यवस्था की गई। विभिन्न विशेषज्ञों ने अनेक अतिथि लेक्चरारों की व्यवस्था की। प्रशिक्षण कार्यक्रम के एक अंग के रूप में बम्बई और पुणे की एक शैक्षिक ट्रिप भी आयोजित की गई।

संगोष्ठी/कार्यशाला/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम/अभिविन्यास पाठ्यक्रम/सम्मेलन

इस विभाग ने अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के लिए एक संगोष्ठी का और इन विद्यालयों के 31 शिक्षकों के लिए व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का भी आयोजन किया। विभिन्न राज्यों के विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की वर्तमान स्थिति का जायजा लेने और सातवीं योजना के दौरान इसके विकास पर चर्चा करने के लिए इस विभाग ने शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के राज्य ब्यूरों के एक अखिल-भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया। राज्य स्तर के अधिकारियों में विद्यालय निर्देशन कार्यक्रमों के प्रति अभिरुचि विकसित करने के लिए आलेच्य वर्ष में एक संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 14 राज्यों/संघीय राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विद्यालयों के निर्देशन और परामर्श में शैक्षिक टेक्नोलोजी के अनुप्रयोग पर निर्देशन का एक पाठ्यक्रम भी आयोजित किया गया। विभाग ने सर्जनकता का पता लगाने और प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न राज्यों के प्रशिक्षकों के दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का, प्राथमिक/माध्यमिक प्रशिक्षकों और एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. व्यक्तियों के अधिगम और विकास पर 3 समृद्धि पाठ्यक्रमों का, और विद्यालय प्रतिवेश में शिक्षा में सुधार लाने की व्यवहार अपरिवर्तन तकनीक के अनुप्रयोग पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। 1985-86 के दौरान डी.ई.जी.सी.एण्ड.जी. द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/विस्तार कार्यक्रमों के संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं –

क्रमांक	कार्यक्रम
1.	अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के प्रबंधकों और प्रिंसिपलों की निर्देशन सेवाओं पर एन.आई.ई. में 3 दिन की तीन संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें 69 व्यक्तियों ने भाग लिया।
2.	अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के व्यवसाय शिक्षकों के लिए एन.आई.ई. में 28 दिन के एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 31 व्यक्तियों ने भाग लिया।
3.	भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे में राज्य निर्देशन-ब्यूरो के अध्यक्षों का एक तीन दिन का अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ. जिसमें 18 व्यक्तियों ने भाग लिया।
4.	एन.आई.ई. में निर्देशन के अभिविन्यास व्यावसायिक शिक्षकों के ज्ञानसाधन व्यक्तियों की एक तीन दिन की संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 13 व्यक्तियों ने भाग लिया।
5.	एन.आई.ई. में विद्यालयों के निर्देशन और परामर्श में शैक्षिक टेक्नोलाजी के अनुप्रयोग पर निर्देशन में एक पांच दिन के पुनश्चर्या-पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 20 व्यक्तियों ने भाग लिया।
6.	मद्रास और उदयपुर में प्रशिक्षकों और एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों के लिए प्राथमिक और प्रारंभिक शिक्षा के अधिगम और विकास पर 10-10 दिन के दो समृद्धि पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें 57 व्यक्तियों ने भाग लिया।
7.	ऐजावल में माध्यमिक प्रशिक्षकों और एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों के अधिगम और विकास पर एक दस दिन का संवर्धन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया।
8.	मद्रास और कलकत्ता में व्यवहार आपरिवर्तन तकनीक के अनुप्रयोग पर 10-10 दिन की दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इसमें 37 व्यक्तियों ने भाग लिया।
9.	बंगलोर में प्राथमिक ग्रेड में सर्जनात्मक क्षमता को पहचानने और प्रोत्साहित करने पर प्रशिक्षकों के लिए एक दस दिन के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 32 व्यक्तियों ने भाग लिया।
10.	एन.आई.ई. में माध्यमिक स्तर की सर्जनात्मक प्रतिमा को पहचानने और विकसित करने पर एक दिन के क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 20 व्यक्तियों ने भाग लिया।

विकास परक कार्यक्रम

विभाग ने प्रतिभा को पहचानने और विकसित करने का एक निदर्श तैयार करने के लिए राष्ट्रीय स्तर की एक संगोष्ठी आयोजित की। विभिन्न समिश्र पहलुओं में प्रतिभा, सर्जनकता और गुणवत्ता को समझने के उद्देश्य से प्रतिभा के पहचान और विकास के निदर्श पर एक मोनोग्राफ तैयार किया गया है। अंतिम रूप से जब यह मोनोग्राफ प्रकाशित होगा तब प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा से संबंद्ध सभी व्यक्ति इस मोनोग्राफ में रुचि लेने लगेंगे। जन माध्यम के जरिए शिक्षकों के संचार के लिए प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के निर्देशन पर तैयार की गई सामग्री का पुनरीक्षण करने और शिक्षक की प्रतिपुष्टि के लिए निर्देशन पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों की हिन्दी और उर्दू में पांडुलिपियां प्रकाशन के लिए भेज दी गई।

इस कार्यक्रम का अंग्रेजी संस्करण एन.सी.ई.आर.टी. की पत्रिका 'द प्राइमरी टीचर' के अक्तूबर, 1985 के अंक में प्रकाशित किया गया।

इनके अतिरिक्त विद्यालय प्रतिवेश में व्यवहार आपरिवर्तन तकनीक पर एक गुटका तैयार करने का कार्य हाथ में लिया गया और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों ने आठ शीर्षकों पर लेख लिखे हैं। व्यावसायिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए बहु-माध्यम प्रचय के विकास पर एक योजना समूह की बैठक की गई। आलोच्य वर्ष में 'रीडिंग्स फार कैरियर टीचर्स' नामक प्रकाशन प्रकाशित हुआ। मनोविज्ञान के मद-बैंक विकास कार्यक्रम के अंतर्गत +2 स्तर के लड़कों के लिए अनेक वस्तुनिष्ठ (बडल) प्रकार के प्रश्न/मद बनाए गए।

डी.ई.पी.सी.एण्ड.जी द्वारा हाथ में लिए गए विकासपरक कार्यक्रमों की सूची निम्नलिखित है –

क्रमांक	कार्यक्रम का शीर्षक
1.	3 फरवरी से 6 फरवरी, 1986 तक एन.आई.ई. में प्रतिभा के पहचान और विकास का एक निदर्श विकसित करने के लिए विशेषज्ञ समूह की एक तीन दिन की एक बैठक की गई।
2.	जन माध्यम के ज़रिए शिक्षक के सचार के लिए प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के निर्देशन पर आवश्यकता पर आधारित सामग्री का निर्माण। 13 अप्रैल से 20 अप्रैल 1985 तक एन.आई.ई. में तैयार की गई सामग्री के पुनरीक्षण के लिए एक तीन दिन की कार्यशाला की गई जिसमें 18 व्यक्तियों ने भाग लिया। 28 अगस्त से 29 अगस्त 1985 तक शिक्षकों की प्रतिपुष्टि प्राप्त करने के लिए उदयपुर में एक दो दिन की कार्यशाला की गई जिसमें अठाइस व्यक्तियों ने भाग लिया
3.	व्यावसायिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए बहु-माध्यम प्रचय का विकास-अहमदाबाद में 18 दिसम्बर से 19 दिसम्बर, 1985 तक योजना समूह की बैठक हुई जिसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया।
4.	विद्यालय प्रतिवेश में व्यवहार आपरिवर्तन तकनीक की गुटका का विकास-एन.आई.ई. (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली में 31 मार्च से 2 अप्रैल 1986 तक द्वितीय संपादक मंडल की बैठक हुई जिसमें छः व्यक्तियों ने भाग लिया।
5.	भुवनेश्वर में 28 नवंबर से 5 दिसम्बर, 1985 तक +2 स्तर के मनोविज्ञान में मद बैंक के विकास का काम लिया गया। इसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया।

सांख्यिकी के कुछ विषयों के शिक्षण में कम्प्यूटर प्रक्रिया सामग्री का विकास

शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों के शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले प्रतिचयन और सांख्यिकीय अनुमिति के कुछ विषयों पर सी.बी. एल. प्रचयों के विकास के लिए माइक्रो कम्प्यूटर एप्सन एच एक्स- 20 का प्रयोग किया गया है। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों ने इन प्रचयों को प्रतिचयन, प्रतिचयन बंटन और सांख्यिकीय अनुमिति की उत्तम संकाचना प्राप्त करने में उपयोगी पाया है। इन सी.बी.एल. प्रचयों के विकास के अलावा आंकड़ा विश्लेषण में उपयोगी महत्त्वपूर्ण सांख्यिकीय उपनेमकाओं के लिए कम्प्यूटर प्रोग्राम भी विकसित किए गए। इन प्रोग्रामों का प्रयोग विभागीय तथा विभागेतर अनेक अनुसंधान परियोजनाओं के आंकड़ों का विश्वलेषण करने में किया गया।

व्यावसायिक सूचना कक्ष और परीक्षण पुस्तकालय

विभाग में एक परिपूर्ण निर्देशन प्रयोगशाला है जिसके दो मुख्य अनुभाग हैं (1) व्यावसायिक सूचना कक्ष और (2) परीक्षण पुस्तकालय रोजगार एवं प्रशिक्षण निर्देशालय, श्रम मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय व्यवसाय-वर्गीकरण पर आधारित स्थूल समूहों में वर्गीकृत अनेक व्यवसायों से संबद्ध डाटा बेस का रख-रखाव, व्यावसायिक सूचना कक्ष करता है। यह कक्ष शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों को कार्य-जगत के बारे में सूचना प्राप्त करने। उसका अधिग्रहण, संवर्गीकरण, संरचना, कार्य-अवस्था, प्रतिपूरक, क्षतिपूर्ति प्रत्याशा आदि के कार्य में विशेष रूप से सहायता करता है।

निर्देशन-प्रयोगशाला के परीक्षण पुस्तकालय अनुभाव में विद्यालयी योग्यता, बुद्धि और संज्ञानात्मक विकास, सर्जनकता और निपुणता, अभिरुचि और प्रवृति, व्यावसायिक परिपक्वता और आकांक्षाएं, व्यक्तित्व और समायोजन, आत्म-संकायन और संदर्भ आदि जैसे विभिन्न विषयों पर मनोवैज्ञानिक तथा शैक्षिक परीक्षणों/प्रश्नावलियों का संग्रह रखा जाता है। परीक्षण प्रयोगशाला का प्रयोग शिक्षा तथा मनोविज्ञान के शोधकर्ता और ई.वी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी करते हैं।

परामर्श

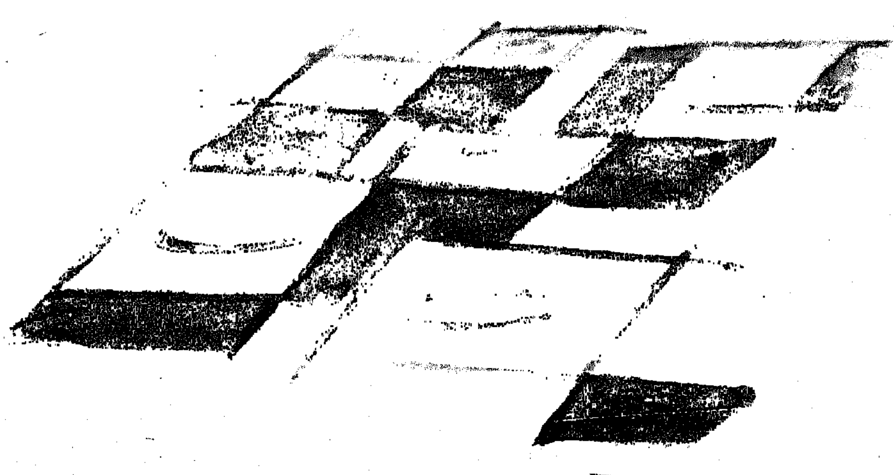
डी.ई.जी.सी. एण्ड जी. द्वारा दिए गए परामर्श के व्यौरे नीचे दिए गए हैं:

क्रमांक	परामर्श लेने वाले संगठन	प्रयोजन	संबद्ध व्यक्ति
1.	एस.सी.ई.आर.टी.-हरियाणा	निर्देशन में 4 कार्यक्रमों	प्रो. पी.एच.मेहता
2.	सामाजिक कार्य-बाल निर्देशन क्लिनिक विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय	सलाहकार समिति की बैठक	प्रो. पी.एच. मेहता
3.	आई.सी.एस.एस.आर., दिल्ली	अनुसंधान प्रस्तावों का मूल्यांकन	प्रो. पी.एच. मेहता

1985-86

क्रमांक	परामर्श लेने वाले संगठन	प्रयोजन	संबद्ध व्यक्ति
4.	राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, दिल्ली	पोषण अध्ययन में प्रतिचयन तकनीक और सर्वेक्षण विधि	प्रो. आर.के. माथुर
5.	सी.एम.सी. हैदराबाद	क्लास परियोजना के अंतर्गत कम्प्यूटर की प्रक्रिया सामग्री का मूल्यांकन	प्रो. आर.के. माथुर
6.	क्लास परियोजना	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रो. आर. के माथुर
7.	मनोविज्ञान विभाग मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास	समुदाय प्रतिवेश के व्यवहार अपरिवर्तन पर व्याख्यान	प्रो. बी.के. सिंह
8.	अपराध विज्ञान और न्यायालयिक विज्ञान नई दिल्ली	व्यवहार आपरिवर्तन पर अतिथि व्याख्यान	प्रो. बी.के. सिंह
9.	मनोविज्ञान विभाग, दयालबाग विश्वविद्यालय आगरा	व्यवहार-आपरिवर्तन और मानसिक स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रो. बी.के. सिंह
10.	अपराध विज्ञान और न्यायालयिक विज्ञान, नई दिल्ली	पुलिस समुदाय संबंध पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	डा.(श्रीमती) के. भूटानी
11.	राष्ट्रीय जन-सहयोग और बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली	व्यावसायिक निर्देशन और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम पर व्याख्यान	प्रो.(श्रीमती) सी. धर
12.	राज्य शैक्षिक एवं निर्देशन व्यूरो, चण्डीगढ़	जिला निर्देशन परामर्शक के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	डा. आर. के. सारस्वत

क्रमांक	लेखक और शीर्षक	प्रकाशन मास	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
1.	मेहता, पी.एच. और माथुर, आर.के. प्रथम पीढ़ी के पढ़ने वालों और गैर प्रथम पीढ़ी के पढ़ने वालों की कुछ संज्ञानात्मक योग्याताएं और शैक्षिक निष्पति का बहुचर, अध्ययन	भारतीय मनोमिति और शिक्षा पत्रिका, 17 (1 और 2) जनवरी 1 जुलाई 1986 1-16	
2.	मेहता, पी.एच., पुस्तक समीक्षाः कालेजों और विश्वविद्यालयों में निर्देशन और परामर्श-लेखक एस.के. कोचर	भारतीय शिक्षा पत्रिका (5) जनवरी, 85, 52-55	—
3.	मेहता, पी.एच., भटनागर (ए) और सुरिन्दर कुमारः मेघालय के जनजातीय छात्रों का व्यावसायिक नियोजन	सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी	—
4.	मेहता, पी.एच., गोड़, जे. एस. और मोहन, एसः प्रवर विद्यालयी योग्यता वाले लड़कों की समस्याएं: भाग-1 समस्या क्षेत्र	भारतीय शिक्षा पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी।	—
5.	मेहता, पी.एच. और गोड़ जी.एस., राज्य निर्देशन व्यूरो के अखिल भारतीय सम्मेलन की रिपोर्ट, 1985, एन.सी. ई.आर.टी., नई दिल्ली 1985 (मेमोग्राफित)	(माइक्लोस्टाइल प्रतियां)	300
6.	मेहता, पी.एच., माथुर, आर. के. आर पंथ, डीः किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षाओं के स्तर पर प्रभाव	भारतीय शैक्षिक समीक्षा में प्रकाशित की जाएगी।	—
7.	मीहन, स्वदेशः व्यावसायिक शिक्षकों के लिए पाठमाला	अक्तूबर, 1985	3000
8.	सारस्वत, आर.के. दिल्ली के हाई स्कूल के छात्रों के समायोजन, मूल्यों, शैक्षिक निष्पति, सामाजिक आर्थिक स्थिति और सेक्स के संबंध में एक आत्म-संकल्पना। (थीसिस के उद्भूत)	भारतीय शैक्षिक समीक्षा, जुलाई 1985	—
9.	विकलांगों के शिक्षक	प्राथमिक शिक्षक अक्तूबर, 1985	
10.	धर, सी विद्यालय प्रतिवेश में महिला मनोवैज्ञानिक की भूमिका	72 वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस के तत्वावधान में महिलाओं पर की गई संगोष्ठी की कार्रवाई में प्रकाशित की जाएगी।	



13

क्षेत्र सेवा और समन्वय

क्षेत्र सेवा और समन्वय विभाग (डी.एफ.एस.सी.) विभिन्न राज्यों/संघीय राज्यों में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा-कालेजों और परिषद के क्षेत्र-कार्यालयों के कार्य कलापों का समन्वय करता है यह परिषद के क्षेत्र कार्यालयों के जरिए राज्यों और संघीय राज्यों के शिक्षा विभागों और अन्य संस्थाओं के साथ सपर्क बनाए रखता है और विद्यालय-शिक्षा तथा शिक्षक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध करने में सहायता करता है।

1985-86 वर्ष के दौरान विभाग ने विद्यालय शिक्षा के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में चलाए गए कुछ कार्यक्रमों की प्रगति का लेखा-जोखा रखने और आवश्यकताओं तथा समस्याओं का पता लगाने के साथ-साथ इन समस्याओं को दूर करने के लिए राज्यों/संघीय राज्यों द्वारा अपनायी गई नीतियों। दृष्टिकोणों के बारे में सूचना एकत्र करने से संबद्ध राज्यों/संघीय राज्यों की अन्योन्यक्रिया कार्यक्रम के अंतर्गत जिला शिक्षा अधिकारियों की छ: बैठकें कराईं। परिषद के क्षेत्र कार्यालयों की राज्यों के साथ की अन्योन्यक्रिया के लिए इन कार्यालयों की भूमिका और जिम्मेवारी का भी पता लगाया गया। 21 मई से 25 मई, 1985 तक शिमला में हुई पहली बैठक में हिमाचल प्रदेश के दस ज़िला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। 8 से 11 जनवरी, 1986 तक भुवनेश्वर में हुई दूसरी बैठक में उड़ीसा के 14 ज़िला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। 21 से 24 जनवरी, 1986 तक हिसार में हुई तीसरी बैठक में हरियाणा के ग्यारह ज़िला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। 29 जनवरी से 2 फरवरी, 1986 तक पुणे में हुई चौथी बैठक में महाराष्ट्र के ग्यारह ज़िला शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय

राज्यों और संघीय राज्यों के शिक्षा विभागों निदेशालयों तथा अन्य संस्थाओं के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए परिषद ने 17 क्षेत्र कार्यालय स्थापित किए हैं। ये कार्यालय एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटक एककों के कार्यकलापों और कार्यक्रमों से संबद्ध आवश्यक सूचनाएं राज्य के शिक्षा विभागों को देते रहते हैं। ये कार्यालय अपने कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघीय राज्यों की विशिष्ट आवश्यकताओं से संबद्ध सूचनाओं को एकत्रित करके एन.सी.ई.आर.टी तथा इसके संघटक एकक को देते हैं और साथ ही ये कार्यालय प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों को आयोजित करने में एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटक एककों की आवश्यक सहायता करते हैं। ये कार्यालय विद्यालय के अध्यापकों द्वारा हाथ में ली गई लघु क्रिया अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने और राज्य शिक्षा विभाग के अनुरोध पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

1985-86 के दौरान क्षेत्र कार्यालयों ने एन.आई.ई. के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा-कालेजों और केंद्रीय शैक्षिक टेक्नोलाजी संस्थान को राज्यों और संघीय राज्यों में उनके कार्यक्रमों को आयोजित करने में सहायता करते हैं। ये कार्यालय राज्य/संघीय राज्य स्तर पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा कराने में राज्य के शिक्षा विभागों/परिषदों को आवश्यक निर्देशन और सहायता करते हैं। एक कार्य जो कि सभी क्षेत्र कार्यालयों को करना पड़ा था। वह था कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन करना जिसमें 1985-86 वर्ष के कार्यक्रमों के प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया गया।

1985-86 के दौरान अलग-अलग क्षेत्र कार्यालयों द्वारा निष्पादित किए गए अन्य कार्यकलापों के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं।

क्षेत्र कार्यालय, अहमदाबाद

अहमदाबाद में स्थित क्षेत्र कार्यालय में 1984-85 के दौरान निम्नलिखित कार्यकलाप किए गए –

- गुजरात और संघीय राज्य दादर और नगर हवेली के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए शैक्षिक खिलौना बनाने की प्रतियोगिता और प्रदर्शनी की गई। इसमें लगभग 50 खिलौने तैयार किए गए। शिक्षा की गुणता सुधार के एक अंग के रूप में इस कार्यक्रम को टेलीविजन पर प्रसारित किया गया।
- 28 दिसम्बर, 1985 से 1 जनवरी, 1986 तक शिक्षण-सामग्री के निर्माण पर एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 30 शिक्षक और प्रशिक्षकों ने भाग लिया। इसमें 30 शिक्षण-सामग्री/निदर्श बताए गए और प्रदर्शित किए गए।
- 11 से 15 मार्च, 1986 तक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तकनीकी क्षेत्र के 10 शिक्षक और गृह-विज्ञान के 10 शिक्षकों ने भाग लिया।
- 25 अक्तूबर, 1985 को नई शिक्षा नीति-व्यावसायिक निर्देशन की भूमिका पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शिक्षण-सामग्री और शैक्षिक खिलौने पर भी अनेक बैठकों और प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया।
- क्षेत्र-कार्यालय ने उमरगांव तालुक की दसवीं कक्षा के अनुसूचित

जाति अनुसूचित जनजाति के छात्रों को व्यावसायिक निर्देशन उपलब्ध कराने की शोध परियोजना को अपने हाथ में लिया। इस परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यकलाप किए गए:

- नारगोल में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम जिसमें उमरगांव तालुका और दादर तथा नगर हवेली के संघीय राज्य के 10 शिक्षकों ने भाग लिया।
- 5 से 6 अगस्त, 1985 तक बल्सर जिले के चार तालुकाओं के शिक्षकों के लिए व्यावसायिक निर्देशन संगोष्ठी का आयोजिन किया गया। व्यावसायिक निर्देशन में 50 शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया।
- 25 अक्तूबर, 1985 को इलाहाबाद में व्यावसायिक निर्देशन 'समाज के कमज़ोर वर्गों के लिए हमारी वचनबद्धता' पर संगोष्ठी। इसमें केंद्रीय विद्यालय और गुजरात विद्यालय के लगभग 100 शिक्षकों ने भाग लिया।
- प्रश्नावली के रूप में दो निर्देशन उपकरण विकसित किए गए और 13 विद्यालयों के 199 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों से उनके द्वारा दिए गए उत्तर प्राप्त हुए। प्रिंसिपलों और शिक्षकों की प्रतिपुष्टि की गई।
- 1984-85 में छिलकी तालुक की दसवीं कक्षा के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों के व्यावसायिक निर्देशन देने की अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति की परियोजना पूरी की रिपोर्ट प्रकाशित की गयी।

इन कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्रकार्यालय प्रायोगिक परियोजना भी लागू करता रहा। 1985-86 के दौरान सोलह परियोजनाओं को वित्तीय सहायता दी गई जिससे विद्यालयों ने मानव मूल्यों को विकसित करने और भाषा तथा विज्ञान आदि के शिक्षण की उन्नत विधियों के संबंध में नवीन प्रक्रियात्मक कार्य किया है।

क्षेत्र कार्यालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित है : –

- 20 से 24 जुलाई, 1985 तक प्रारंभिक स्तर के विज्ञान और गणित की पाठ्यचर्या के संशोधन से सबद्ध कार्यशाला, इस कार्यशाला में 40 लोगों ने भाग लिया।
- 20 से 23 जनवरी, 1986 तक एस.आई.ई. इलाहाबाद में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के समुदायों की शैक्षिक समस्याओं का पता लगाने पर की गई कार्यशाला में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों ने भाग लिया। इसके बाद 5 से 6 मार्च, 1986 तक एक पूरक कार्यशाला की गई। इस कार्यशाला में बुनियादी शिक्षा अधिकारी तथा अन्य संबद्ध अधिकारियों ने भाग लिया।
- 18 से 21 मार्च, 1986 तक सी.पी.आई. इलाहाबाद में माध्यमिक प्रशिक्षकों की पाठ्यचर्या पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में शिक्षक, प्रशिक्षक और शोधकर्ताओं ने भाग लिया।
- 31 मार्च से 3 अप्रैल, 1986 तक सी.पी.आई. इलाहाबाद में संगोष्ठी पाठमाला कार्यक्रम पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रशिक्षकों ने भाग लिया।
- 10 से 12 दिसम्बर, 1985 तक एस.आई.ई. इलाहाबाद में शैक्षिक-प्रतिदर्श आयोजित परियोजना पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षक आमंत्रित किए गए। सबद्ध संस्थाओं में चलाए जाने के लिए 32 प्रतिदर्श प्रायोगिक परियोजनाएं बनायी गई।
- 11 से 14 मार्च, 1986 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में उर्दू के पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- एन.सी.ई.आर.टी. के मुख्यालय के निर्देशों के अनुसार 'होप फार बैटर वर्ल्ड' नामक राज्य स्तर की निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- क्षेत्र कार्यालय ने शैक्षिक खिलौना बनाने की प्रतियोगिता करायी।
- उत्तर प्रदेश की एक शैक्षिक प्रोफाइल 'शिक्षा-एक दृष्टि में' को जिसमें उत्तर प्रदेश की शिक्षा की स्थिति की जानकारी है, निष्पत्ति और नए प्रजोद को क्षेत्र कार्यालय ने प्रकाशित किया।

क्षेत्र कार्यालय ने प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा की प्रायोगिक परियोजनाओं की रिपोर्ट, विज्ञान एवं गणित की पाठ्यचर्या का संशोधन और बी.टी.सी. पाठ्यचर्या का संशोधित रूप प्रकाशित किया। रायल नेपाली सरकार और पश्चिम जर्मनी से आए दो-दो सदस्यों के दो शिष्ट-मंडलों ने क्रमशः 10-11 मार्च और 26-27 मार्च को इलाहाबाद के क्षेत्र कार्यालय को देखा।

क्षेत्र कार्यालय, बंगलौर

बंगलौर के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए–

- बंगलौर और मैसूर डिविजन के विद्यालयों के 49 निरीक्षकों के लिए डी.एस.ई.आर.टी. बंगलौर में 10 से 12 दिसबंर, 1985 तक शिक्षा के सर्वीकरण और अक्षरसेन की सामग्री के निर्माण पर एक तीन दिन की कार्यशाला एवं अभिविन्यास कार्यक्रम किया गया।

– पूरे कर्नाटक के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यालय निरीक्षकों के लिए कर्नाटक के शिक्षा-विभाग के सहयोग से 25से 27 फरवरी, 1986तक विद्यालय निरीक्षकों के लिए अभिविन्यास एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।
– 30 जनवरी, 1986 को कर्नाटक में खिलौना बनाने की प्रतियोगिता की गई। 200-00 रुपये का एक प्रथम पुरस्कार, 100-00 रुपयेका एक द्वितीय पुरस्कार और 50-50 रुपये के चार सांत्वना पुरस्कार दिए गए।
– कर्नाटक का शैक्षिक प्रोफाइल, कर्नाटक में शिक्षा की समस्याओं और मामलों को समझने की दृष्टि से विद्यालय शिक्षा की प्रवृत्ति, भाग- 1 तैयार किया गया। इस पुस्तक में राज्य की भूमि और उसकी सीमाओं, संगठन के पहले और बाद का राज्य, और जनसंख्या, साक्षरता की वृद्धि दर, ज़िला के अनुसार साक्षरता का ग्रामीण-शहरी तथा पुरुष और महिला बंटन के कुछ महत्वपूर्ण आंकड़ों के साथ-साथ शैक्षिक प्रशासन के विकास के ब्यौरे दिए गए है।
– विदेशी शिष्ट मंडल/ विशेषज्ञों ने क्षेत्र-कार्यालय देखा। चीनी शिष्ट मंडल ने 30अप्रैल से 2मई, 1985 तक, पाठ्यचर्या विकास केन्द्र, मारिशस के निदेशक डा. डी.वी. वेंकटस्वामी ने 24 से 27दिसंबर 1985तक, क्लास के ब्रिटिश विशेषज्ञों ने 21 जनवरी, 1986 तक।
क्षेत्र सलाहकार ने नई शिक्षा नीति के संबंध में दूरदर्शन/ आकाशवाणी/प्रेस में की गई विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और चर्चाओं में भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय, भोपाल

भोपाल के क्षेत्र कार्यालय में जनजातीय शिक्षा और शिशु शिक्षा के विकास से संबद्धकार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया गया। 1985-86 वर्ष के दौरान इस कार्यालय ने निम्नलिखित मुख्य-मुख्य कार्यकलाप किए –

– कक्षा के वातावरण में सुधार लाने के लिए प्रायोगिक परियोजनाओं को तैयार करने में जनजातीय विद्यालय शिक्षकों के लिए एक पांच दिन के अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बीस व्यक्तियों ने भाग लिया।
– शिशु शिक्षा के विभिन्न निदर्शों में ज्ञान साधन व्यक्तियों काएक दस दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य ध्यान पियाजेशियन निदर्श पर दिया गया जिसमें निदानी दृष्टिकोण के अलावा बच्चों पर केन्द्रित अनेक कार्यकलाप किए जाते है जो बच्चे के संज्ञानात्मक विकास में सहायक होते है।

इनके अतिरिक्त 1985-86के दौरान जनजातीय विद्यालयों के लिए क्षेत्र सलाहकार मध्य प्रदेश सरकार के जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा अंतिम रूप दिए गए 15 कार्यक्रमों का निर्देशन किया। इसके अलावा जनजातीय विद्यालयों की विभिन्न प्रायोगिक परियोजनाओं को वित्तीय सहायता दी गई।

क्षेत्र कार्यालय, भुवनेश्वर

भुवनेश्वर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं–

– राज्य स्तर पर खिलौने बनाने की प्रतियोगिता। इस प्रतियोगिता में प्राथमिकता और पूर्व प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों ने 21 माडल रखे। प्रथम और द्वितीय पुरस्कार के अतिरिक्त चार सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए।
– 14से 17 जनवरी, 1986 तक और 3से 7मार्च, 1986 तक जनजातीय सेवाश्रमों में सार्वत्रिक नामांकन और धारण पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें क्रमशः 26 और 15 प्रारंभिक शिक्षकों ने भाग लिया।
– 18 से 22 फरवरी, 1986 तक सार्वत्रिक नामांकन और धारण पर प्राथमिकता विद्यालय के शिक्षकों के लिए प्रायोगिक परियोजना की एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रारंभिक विद्यालयों के तीस शिक्षकों ने भाग लिया।
– 4 से 7फरवरी, 1986 तक फूलबनी में माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान शिक्षकों के लिए प्रायोगिक परियोजना पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तीस शिक्षकों ने भाग लिया।
– 18 से 22 मार्च, 1986 तक कोनार्क में शैक्षिक टी.वी. और रेडियो कार्यक्रमों के उपयोग में ज्ञान साधन व्यक्तियों और मुख्य कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें उन्नीस शिक्षकों ने भाग लिया।
– प्रायोगिक परियोजना के अंतर्गत क्षेत्र कार्यालय को 138 प्रस्ताव प्राप्त हुए जिसमें से 30को वित्तीय सहायता देने के लिए चुना गया।

क्षेत्र कार्यालय, कलकत्ता

कलकत्ता के क्षेत्र कार्यालय द्वारा आलोच्य वर्ष में किए गए कार्यकलाप निम्नलिखित हैं :

– प्राथमिक विद्यालय के परीक्षकों के लिए खिलौने बनाने की एक वार्षिक प्रतियोगिता जिसमें 10शिक्षकों ने भाग लिया।
– 17 से 21 फरवरी, 1986 तक विकलांग बच्चों के व्यावसायीकरण के लिए उनके पहचान और शिक्षण पर एक

अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पंद्रह व्यक्तियों ने भाग लिया।

- 3 से 7 मार्च, 1986 तक बच्चों के पर्यावरण मनोविज्ञान और समेकित मनोवैज्ञानिक विकास पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 20 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 17 से 20 मार्च, 1986 तक बच्चों के समेकित शैक्षिक विकास पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 18 व्यक्तियों ने भाग लिया।

प्रायोगिक परियोजना के अन्तर्गत सात परियोजनाओं को वित्तीय सहायता दी गई। इसके अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय ने 'सिक्किम, पश्चिम बंगाल, अण्डमान और निकोबार द्वीप में शिक्षा व्यवस्था' नामक एक प्रकाशन प्रकाशित किया।

क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

1985-86 के दौरान चण्डीगढ़ के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित कार्यकलाप किए:

- 9 से 11 सितम्बर, 1985 तक प्रायोगिक परियोजना को बनाने के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के उनतीस शिक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में सत्ताइस परियोजनाएं विकसित की गईं तथा उनमें सुधार किया गया।
- 26 से 27 फरवरी, 1986 तक पंजाब और हरियाणा के अनुसूचित जाति के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं पर चर्चा करने के लिए कार्यकारी समूह की दो दिन की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विश्वविद्यालय के विभागों और अनुसंधान संस्थाओं के इस शिक्षा क्षेत्र के बारह सुप्रसिद्ध व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 18 से 21 मार्च, 1986 तक विज्ञान शिक्षण की नवीन प्रक्रियात्मक प्रवृति पर एक संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें माध्यमिक विद्यालय के पैंतालिस शिक्षकों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रकाशित कर दी गई है।

प्रायोगिक परियोजना के अंतर्गत क्षेत्र कार्यालय को 20 परियोजनाओं के प्रस्ताव प्राप्त हुए जिनमें से 15 परियोजनाए अनुमोदित की गईं और उन्हें वित्तीय सहायता दी गई।

क्षेत्र कार्यालय, गुवाहाटी

गुवाहाटी के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं :

- 16 से 20 सितम्बर 1985 तक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर अभिविन्यास संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें बीस व्यक्तियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में की गई कार्यवाही और सिफारिशों से उपयुक्त निर्देशन प्राप्त हुए। असम में इस रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया गया है।
- 28 जनवरी से 2 फरवरी, 1986 तक प्रायोगिक परियोजनाओं पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों के बी.टी.सी. और प्राथमिक विद्यालयों के अठाइस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 28 फरवरी, 1986 को क्षेत्र कार्यालय में 1986 की खिलौना बनाने की प्रतियोगिता में असम के जीतने वाले शिक्षकों के लिए पुरस्कार वितरण समारोह किया गया। इस समारोह का आकाशवाणी से प्रसारण किया गया और दूरदर्शन ने इस समारोह पर पांच मिनट तक प्रसारण किया।
- योजना प्रलेखों, एन.ई.सी. प्रकाशनों और अन्य स्रोत सामग्री की सहायता से क्षेत्र कार्यलय ने असम शिक्षा प्रोफाइल तैयार किया। क्षेत्र कार्यालय के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले राज्यों के ज्ञानसाधन व्यक्तियों की एक निर्देशिका भी तैयार की गई।

क्षेत्र कार्यालय, हैदराबाद

आलोच्य वर्ष में क्षेत्र कार्यालय ने परिषद के विभिन्न विभागों द्वारा आंध्र प्रदेश में आयोजित कार्यक्रमों के सफल संचालन में सहायता की। फिर भी मार्च में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों और कालेज के लेक्चररों की हड़ताल होने के कारण दो अनुसूचित कार्यक्रम नहीं चलाए जा सके।

क्षेत्र कार्यालय, जयपुर

जयपुर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं :

- 18 से 22 फरवरी, 1986 तक एक शिक्षक विद्यालयों के किटों के विकास पर एक पांच दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 18 शिक्षकों ने भाग लिया। आत्म-अधिगम, मानिटरी शिक्षक और शिक्षक-कार्यकलापों के प्रतिमान पर पहली से पांचवी कक्षा की 1/2 यूनिट शिक्षण के लिए एक नमूना किट तैयार किया गया।
- 3 से 6 मार्च, 1986 तक प्रायोगिक परियोजना की अभिकल्पना करने के लिए प्रिंसिपलों और हैडमास्टरों के एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पंद्रह प्रिंसिपल/हैडमास्टरों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में 30 परियोजना-प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया गया।

– 18 से 22 मार्च, 1986 तक उदयपुर और सिरोही जिले के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की छात्राओं का नामांकन न करने और बीच में पढ़ायी छोड़ देने के कारणों पर चर्चा करने के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें 16 व्यक्तियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी में कारणों का उन्मूलन करने की योजना तैयार की गई।

क्षेत्र कार्यालय, मद्रास

मद्रास के क्षेत्र कार्यालय के अंतर्गत तमिलनाडु और संघीय क्षेत्र पाण्डिचेरी आते हैं। 1985-86 के दौरान इस कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित है –

– 8 से 12 अप्रैल, 1985 तक इरोड करैकल (पाण्डिचेरी) में प्रारंभिक शिक्षा के सर्वीकरण के संबंध में प्रारंभिक विद्यालयों के अधिकार बढ़ाने से संबद्ध एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें चालीस शिक्षकों ने भाग लिया।

– 4 से 8 फरवरी, 1986 तक इरोड (तमिलनाडु) में प्रारंभिक विद्यालय के शिक्षकों के लाभ के लिए पर्यावरण अध्ययन दृष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 40 शिक्षकों ने भाग लिया।

– 11 से 15 फरवरी, 1986 तक कलंगनी (सालम जिला) में पर्यावरण किया गया। इस कार्यशाला में तमिलनाडु के आदि द्रविड़ संस्थाओं के चालीस शिक्षकों ने भाग लिया।

– 18 से 22 फरवरी, 1986 तक करैकल (पाण्डिचेरी) में पर्यावरण अध्ययन दृष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें गैर-पी.सी.सी.आर. के चालीस शिक्षकों ने भाग लिया।

– 3 से 7 मार्च, 1986 तक तिरुनलवेली में तमिलनाडु के शिक्षको के लिए पर्यावरण अध्ययन दृष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 40 शिक्षकों ने भाग लिया।

इन कार्यशालाओं के अतिरिक्त मद्रास के क्षेत्र कार्यालय ने तमिलनाडु और संघीय राज्य पाण्डिचेरी के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए खिलौने बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रथम और द्वितीय पुरस्कार पाण्डिचेरी के शिक्षकों ने जीता। चार-चार सांत्वना पुरस्कार भी तमिलनाडु और पाण्डिचेरी के शिक्षकों को दिया गया।

क्षेत्र कार्यालय, पटना

1985-86 के दौरान पटना के क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्यकलाप किए:

– 17 से 19 दिसंबर, 1985 तक पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौना के निर्माण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भाग लेने वाले तेईस व्यक्ति और चार ज्ञानसाधन व्यक्तियों ने अनेक अच्छे-अच्छे शैक्षिक खिलौने बनाए।

– 14 से 18 फरवरी, 1986 तक पर्यावरण के जरिये विज्ञान के शिक्षण में पलामू जिले के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सताइस व्यक्तियों और चार ज्ञानसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया।

– 17 जनवरी, 1986 को राज्य स्तर पर खिलौने बनाने की प्रतियोगिता की गई। 4 फरवरी, 1986 को आयोजित समारोह में प्रतियोगिता जीतने वालों को नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र दिए गए।

इन कार्यों के अतिरिक्त क्षेत्र कार्यालय प्रायोगिक परियोजना लागू करने का काम भी करता रहा। कार्यालय में प्राप्त हुए 13 परियोजना प्रस्तावों में से पांच परियोजनाओं को चुना गया और उन्हें वित्तीय सहायता दी गई।

क्षेत्र कार्यालय, पुणे

पुणे के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

– 19 से 24 मार्च, 1986 तक पणजी में गोवा के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए माध्यमिक स्तर के विज्ञान के शिक्षण और मूल्यांकन का एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में तैंतालिस शिक्षकों ने भाग लिया।

– 27 से 30 मार्च, 1986 तक नागपुर में महाराष्ट्र के जनजातीय क्षेत्र के आश्रम विद्यालयों में विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए पर्यावरण दृष्टिकोण से विज्ञान का शिक्षण करने पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पच्चीस शिक्षकों ने भाग लिया।

– 29 मार्च से 2 अप्रैल, 1986 तक बंबई में महाराष्ट्र के मान्यता प्राप्त प्रारंभिक विद्यालयों के कुछ चुने हुए संवर्धन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें पच्चीस शिक्षकों ने भाग लिया।

– पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए राज्य स्तर पर खिलौना बनाने की प्रतियोगिता करायी गई जिसमें 74 लोगों ने भाग लिया।

– 2 अप्रैल, 1986 को जीतने वालों को प्रथम और द्वितीय पुरस्कार के अलावा चार सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए।

क्षेत्र कार्यालय, शिलांग

शिलांग के क्षेत्र कार्यालय के अन्तर्गत मेघालय, त्रिपुरा और संघीय राज्य मिज़ोरम आते है। आलोच्य वर्ष में इस कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

- एस.सी.ई.आर.टी. एजाल और एस.आई.ई. अगरतला में राज्य स्तर की खिलौने बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- 10 से 16 जनवरी, 1986 तक मेघालय के शिक्षकों के लिए सामान्य विज्ञान की अंतर्वस्तु और उसके शिक्षण में की गई प्रवृत्ति पर अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजित किया गया जिसमें बीस शिक्षकों ने भाग लिया।
- 4 से 10 फरवरी, 1986 तक एम.बी.एस.ई. एजाल में विद्यालय में पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों के प्रश्न-पत्र बनाने की तकनीक पर प्रश्न-पत्र बनाने वालों के सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मिजोरम एस.एस.एल.सी. परीक्षा के प्रश्न-पत्र बनाने वाले चौंतीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

ऊपर उल्लेख किए गए कार्यक्रमों के अलावा शिलांग के क्षेत्र कार्यालय ने 'मेघालय के +2 स्तर के जनजातीय छात्रों के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की सूक्ष्म-योजना' नाम की अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति पर एक शोध परियोजना पूरी की गई। 'मिज़ोरम के +2 स्तर के जनजातीय छात्रों के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के साधन और योजना का सर्वेक्षण' नामक एक अन्य अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति संबंधित शोध परियोजना का कार्य प्रगति पर है। इस परियोजना के जुलाई, 1986 तक पूरा हो जाने की आशा है।

क्षेत्र कार्यालय, शिमला

1985-86 में शिमला के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं –

- 12 से 14 अगस्त, 1986 तक हिमाचल प्रदेश के विद्यालय प्रसारणों की प्रभाविता का अध्ययन करने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उन्नीस व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 24 से 27 फरवरी, 1986 तक नवीं-दसवीं कक्षा की जैविकी की अंतर्वस्तु तथा उसे पढाने की कार्यप्रणाली के द्रष्टिकोण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- 3 से 7 मार्च, 1986 तक माध्यमिक कक्षाओं में भूगोल के शिक्षण में मानचित्र के उपयोग पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सात व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 26 से 28 दिसम्बर, 1985 तक हिमाचल प्रदेश के प्रवासी अनुसूचित जनजाति के प्रारंभिक विद्यालय के बच्चों को पढ़ाने की विधि पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पांच शिक्षकों ने भाग लिया।
- 4 से 6 अप्रैल, 1986 तक हिमाचल प्रदेश में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विकास से संबद्धमामलों को जानने के लिए सम्मेलन किया गया जिसमें उनतीस व्यक्तियों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय, जम्मू और कश्मीर

1985-86 के दौरान जम्मू और कश्मीर के क्षेत्र कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं –

- 24 से 29 अक्तूबर, 1985 तक एस.आई.ई. श्रीनगर में हेड मास्टरों के लिए एक दिन का अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 25 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- 5 से 9 जुलाई, 1985 तक एस.आई.ई. श्रीनगर में प्रिंसिपलों के लिए एक चार दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित क्रिया गया जिसमें 25 प्रिंसिपलों ने भाग लिया।
- 10 से 12 मार्च, 1985 तक जम्मू में जम्मू और कश्मीर के विद्यालय शिक्षा परिषद के निम्नतम राष्ट्रीय कोड पाठ्यचर्या पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें पूरे राज्य के लगभग 40 शिक्षकों ने भाग लिया।
- 17 से 20 मार्च, 1986 तक एस.आई.ई. जम्मू में जम्मू और कश्मीर के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों की शिक्षा संबंधी समस्याओं पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न वर्ग के चालीस अधिकारियों और शिक्षकों ने भाग लिया।
- 29 से 31 मार्च, 1986 तक एस.आई.ई., श्रीनगर में शिक्षक शिक्षा पाठ्यचर्या पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पैतालिस शिक्षक और प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

क्षेत्र कार्यालय, त्रिवेन्द्रम

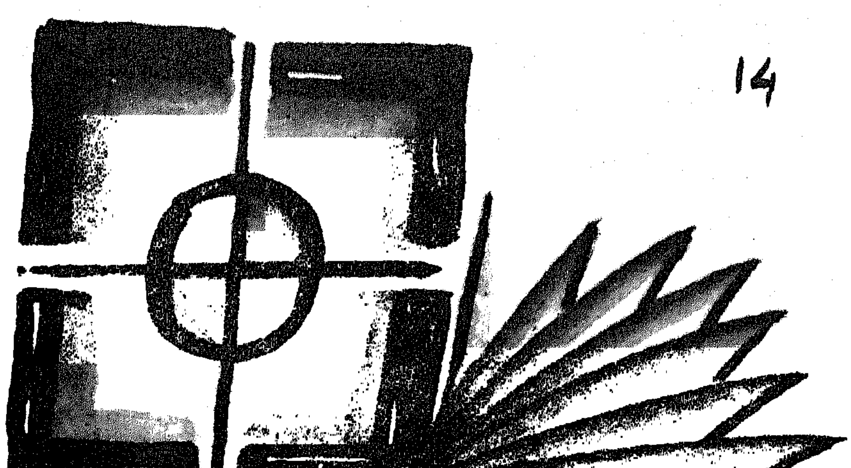
त्रिवेन्द्रम का क्षेत्र कार्यालय केरल और संघीय राज्य लक्षद्वीप की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इस कार्यालय द्वारा किए गए मुख्य कार्यकलाप निम्नलिखित हैं –

- 13 से 16 जनवरी, 1986 तक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों की कार्यप्रणाली और मूल्यांकन पर

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बाइस शिक्षकों ने भाग लिया।

3 से 7 फरवरी, 1986 तक एस.यू.पी.डब्ल्यू., के मुख्य व्यक्तियों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें 34 व्यक्तियों ने भाग लिया।

17 से 21 फरवरी, 1986 तक विज्ञान के निदानी परीक्षण और उपचारी शिक्षण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें अठाइस शिक्षकों ने भाग लिया।



14

परिषद् का एक अतिमहत्वपूर्ण कार्यकलाप विद्यालय स्तर के लिए पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, शिक्षक दर्शिका तथा शिक्षकों के लिए अन्य अध्यापन सामग्री, अनुसंधान मोनोग्राफ, पत्रिका आदि प्रकाशित करना है। एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन संबंधी कार्यों को प्रकाशन विभाग देखता है। परिषद के प्रकाशनों को मोटे तौर पर निम्नलिखित संवर्गों में रखा जाता है :

1. विद्यालय पाठ्यपुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, निर्धारित पूरक रीडर,
2. 14-17 वर्ष के आयु-वर्ग के लड़कों लिए पूरक पठन-सामग्री।
3. शिक्षक गाइड, शिक्षक-गुटका तथा अन्य अध्यापन सामग्री।
4. अनुसंधान अध्ययन और मोनोग्राफ
5. शैक्षिक सम्मेलनों की रिपोर्ट, संगोष्ठियों की कार्रवाई, पैमफ्लेट, बुकलेट, ब्रोशर, फोल्डर, आदि
6. शैक्षिक पत्रिकाएं।

पुस्तकालय प्रलेखन और सूचना विभाग अपनी सामान्य पुस्तकालय सेवाओं के अलावा प्रलेखन सेवा का भी काम करता है।

आलोच्य वर्ष में कुल 272 प्रकाशन प्रकाशित हुए जिसका विवरण नीचे दिया गया है :

प्रकाशन-वर्ग	शीर्षकों की संख्या
पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/निर्धारित पूरक रीडरों का प्रथम संस्करण	16
पाठ्य पुस्तक/अभ्यास पुस्तिका/निर्धारित पूरक रीडरों का पुनर्मुद्रण	161
अन्य सरकारी एजेन्सियों के लिए पाठ्य-पुस्तक/अभ्यास पुस्तिका	8
अनुसंधान मोनोग्राफ/रिपोर्ट तथा अन्य प्रकाशन	45
पत्रिका (अंक)	41
कुल	271

पत्रिकाओं को छोड़कर अन्य सभी प्रकाशनों की सूची इस अध्याय के अन्त में दी गई है ।

विद्यालय सत्र 1986-87 की नई पाठ्य पुस्तक

नई पाठ्य पुस्तक से सम्बद्ध निर्णय के अनुसार एन.सी.ई.आर.टी. ने नवीं और दसवीं कक्षाओं के लिए विज्ञान और गणित की नई पाठ्य पुस्तक तैयार करने के लिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (सी.बी.एस.ई.) का सहयोग लिया । एन.सी.ई.आर.टी. ने ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिये भाषा और समाज विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तकें भी तैयार की हैं। हालांकि पिछले वर्ष नवीं और दसवीं कक्षाओं की अनेक पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं । जैसाकि पिछले वर्ष की रिपोर्ट में उल्लेखित किया जा चुका है, फिर भी आलोच्य वर्ष में दसवीं और बारहवीं कक्षाओं की कुछ नई पाठ्य पुस्तकों के साथ-साथ नवीं और दसवीं कक्षाओं की शेष नई पाठ्य पुस्तकें भी प्रकाशित की गईं जिनका विवरण नीचे दिया गया है :

नवीं कक्षा

1. भौतिकी भाग– I
2. रसायन विज्ञान भाग– I
3. बेसिक बायोलॉजी पार्ट– I वाल्यूम– II
4. आधारिक जीव विज्ञान भाग– I , खंड– I
5. आधारिक जीव विज्ञान भाग– I , खंड– II
6. गणित भाग– I खंड– I
7. गणित भाग– I खंड– II

दसवीं कक्षा

8. मैथेमैटिक्स पार्ट– II

ग्यारहवीं कक्षा

9. साहित्य का स्वरूप
10. फ़िजीकल जियोग्राफी
11. भौतिक भूगोल

बारहवीं कक्षा

12. अभिनव काव्य भारती भाग– II
13. अभिनव गद्य भारती भाग– II
14. काव्य संचयन भाग– II
15. गद्य संचयन भाग– II

लेटअस एनरिच अवर इंग्लिश माला

लेटअस एनरिच अवर इंग्लिश माला माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और सेवापूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षकों की भाषायी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दृष्टि से ही 20 पुस्तिकाओं की एक माला है । इन छोटी-छोटी पुस्तिकाओं में स्वयं अपने से पढ़ने की सामग्री होती है और इन पुस्तिकाओं का निर्माण सीखने वाले की, पढ़ने और लिखने में बुनियादी कौशल हासिल

1985-86

करने, अपने शब्द संग्रह को समृद्ध बनाने और अंग्रेजी के प्रयोग सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ज्ञान अर्जित की दृष्टि से किया गया है । अभी तक इस माला की आठ पुस्तिकायें प्रकाशित हुई हैं ।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम—दृश्य और प्रलेख

सम्भवतः यह अपने प्रकार का प्रथम प्रकाशन है जिसमें एक ही खंड में भारत के स्वतंत्रता संग्राम से सम्बद्ध कुछ अतिमहत्वपूर्ण एवं प्रमाणिक दृश्य एवं स्रोत सामग्री पाठक को उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है । इसमें लगभग पेंटिंग, स्केच, फोटो, समाचार-कतरनऔर 2,00,000 शब्दों के प्रलेख सहित 2,000 दृश्य सामग्री है ।

प्रकाशन को दो रूपों में प्रकाशित किया गया है । एक पुस्तकालय और व्यक्तिगत पाठक के लिए जिल्दबन्द खंड और दूसरा शिक्षण सामग्री के रूप में कक्षाओं में इस्तेमाल में आने वाला खंड । यह अलग-अलग पत्रों का एक पोर्टफोलियो होता है जिसमें से कक्षा में पढ़ाए जाने वाले विषय से सम्बद्ध पत्रों को पोर्टफोलियो में से बाहर निकालकर इस्तेमाल में लाया जा सकता है और इस्तेमाल के बाद उन पत्रों को पुनः पोर्टफोलियो में रख दिया जाता है ।

हालांकि इस प्रकाशन का बुनियादी उद्देश्य एक शिक्षण सामग्री तैयार करना था पर इस प्रकाशन में कुछ ऐसी सामग्री भी दी गई है जो एक सामान्य पाठक को अन्य कहीं सामान्यतः उपलब्ध नहीं होती । मानव संसाधन विकास मंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने 25 दिसम्बर, 1985 को दिल्ली में इस प्रकाशन का विमोचन किया ।

वितरण

गत वर्षों की तरह अभी भी परिषद् के प्रकाशनों का वितरण और बिक्री सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग के जरिए की जाती है जोकि परिषद् का राष्ट्रीय वितरक है और जिसके बिक्री केन्द्र नई दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, मद्रास, पटना, लखनऊ और हैदराबाद में हैं जो पूरे देश की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं ।

हां यह बात अवश्य है कि गत वर्षों की तरह परिषद की पत्रिकाओं के वितरण और बिक्री का काम स्वयं परिषद करता है ।

ऊपर उल्लेख किए गए बिक्री और वितरण व्यवस्था के अतिरिक्त भारत के बड़े-बड़े समाचार पत्रों में परिषद द्वारा निकाले गये विज्ञापन के आधार पर विद्यालयों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं से परिषद् की पाठ्यपुस्तक उन्हें भेजने का आर्डर सीधे परिषद लेता है । आलोच्य वर्ष में कुल 612 आर्डर प्राप्त हुए जिनमें से— 158 केन्द्रीय विद्यालयों से, सैनिक स्कूलों से 25, तिब्बतियों के केन्द्रीय विद्यालय से 30 , अन्य विद्यालयों से 37 और अरुणाचल प्रदेश के विद्यालयों तथा जिला शिक्षा अधिकारियों से 29 आर्डर सीधे प्राप्त हुये और उन पर कार्रवाई की गई । परिषद ने 1986-87 सत्र के लिये शिक्षा निदेशालय, सिक्किम को भी पाठ्यपुस्तकें भेजी । इसके अतिरिक्त विद्यालय शिक्षा परिषद, हरियाणा की ग्यारहवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकें और विद्यालय शिक्षा परिषद, जम्मू और कश्मीर की ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें मुद्रित की गईं और परिषद ने अपने राष्ट्रीय वितरकों के जरिए मुहय्या कराया ।

उच्चतर माध्यामिक शिक्षा परिषद, उड़ीसा को +2 स्तर की गणित की पाठ्य पुस्तकें भेजी गई हैं ।

राजस्थान विश्वविद्यालय के अनुरोध पर परिषद ने राजस्थान विश्वविद्यालय के बी.ए. के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक इंग्लिश रीडर— II (कोर) को मुद्रित किया और उसकी बिक्री राज्यस्थान के कुछ चुने हुए पुस्तक विक्रेताओं से करवाई।

पुस्तक मेला/प्रदर्शनी में भाग लेना

एन.सी.ई.आर.टी. ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशन प्रदर्शित किए :

12 वां राष्ट्रीय पुस्तक मेला	:	सितंबर—अक्तूबर, 1985 में राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
तीसरा राष्ट्रीय बाल पुस्तक मेला आनंद भवन, इलाहाबाद	:	नवंबर 1985 में राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
विज्ञान प्रदर्शनी, उदयपुर	:	नवंबर 1985 में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित
7वां विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली		फरवरी, 1986 में राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित
शिक्षक की बैठक—प्रदर्शनी, नई दिल्ली	:	सितंबर, 1985 में डीटीईएसईएस. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित
एन.आई.ई. परिसर में शिक्षा के व्यावसायीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, नई दिल्ली	:	नवंबर, 1985 में शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग द्वारा आयोजित
उच्च शिक्षा में नई टैक्नालॉजी के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पुस्तक प्रदर्शनी, भारतीय टैक्नोलॉजी संस्थान, नई दिल्ली ।	:	नवंबर 1985 में भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित ।

परिषद ने राष्ट्रीय बुक ट्रस्ट, भारत के जरिए एन.सी.ई.आर.टी. के कुछ चुने हुए प्रकाशनों को भेजकर निम्नलिखित पुस्तक मेले/प्रदर्शनियों में भी भाग लिया :

लंदन पुस्तक मेला	—	अप्रैल, 1985
कैनाडी पुस्तक मेला, टोरंटो	—	जून, 1985
अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक समारोह और विद्यालय मेला, मनिला— 1985	—	जून, 1985

मलेशिया पुस्तक मेला, 1985 — जुलाई, 1985
16वां सिंगापुर पुस्तक समारोह — और पुस्तक मेला । सितंबर, 1985
पांचवां मास्को अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला । — सितंबर, 1985
भारत समारोह-पेरिस — अक्तूबर, 1985
सातवां काहिरा अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला । — जनवरी—फरवरी, 1986

बिक्री

आलोच्य वर्ष में एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों की रु. 3,51,67,215.25 की बिक्री हुई । विभिन्न विदेशी पार्टियों को भी 533.86 के प्रकाशन बेचे गये ।

राज्य सरकार एवं अन्य एजेन्सियों को कापीराइट की अनुमति

राज्य स्तर की अनेक एजेन्सियों ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अपनी अभिरुचि दिखलायी है । नीचे दी गई सारणी में उन एजेन्सियों के नाम दिये गये हैं जिन्हें आलोच्य वर्ष में परिषद ने अपनी पाठ्य पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों को प्रकाशित करने के लिए स्वीकरण/अनुकूलन करने की अनुमति दी है ।

हरियाणा, सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा परिषद, भिवानी (हरियाणा)	नवीं-दसवीं कक्षाओं की एन.सी.ई.आर.टी. की 18 पाठ्यपुस्तकों को स्वीकरण और प्रकाशन करने की अनुमति दी गई ।
हिमाचल प्रदेश, सचिव हिमाचल प्रदेश विद्यालय, शिक्षा परिषद, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)	ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षाओं की एन.सी.ई.आर.टी. की निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों का स्वीकरण और पुनर्मुद्रण करने की अनुमति दी गई । 1. मैथेमेटिक्स बुक I 2. मैथेमेटिक्स बुक II 3. ग्यारहवीं कक्षा के लिए रंगिणी 4. ग्यारहवीं बारहवीं कक्षाओं के लिए व्याकरण सौरभ
मध्य प्रदेश सचिव माध्यमिक शिक्षा परिषद, मध्य प्रदेश, भोपाल	ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं की एन.सी.ई.आर.टी. की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों का स्वीकरण करने की अनुमति दी गई 1. इंग्लिश रीडर (कोर) पार्ट—1 2. इंग्लिश रीडर (कोर) पार्ट—2 3. इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (कोर) पार्ट—1 4. इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (कोर) पार्ट—2 5. फाइव वन ऐक्ट प्लेज 6. डियर टू ऑल द म्यूसेज 7. मॉन टॉप ऑफ द वर्ल्ड 8. I —द पीपुल (ग्यारहवीं कक्षा के लिए)
महाराष्ट्र सचिव, महाराष्ट्र राज्य माध्यामिक और उच्चतर माध्यामिक शिक्षा परिषद, पुणे ।	एन.सी.ई.आर.टी. की सप्लीमेंटरी रीडर फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डिया से एक वाक्य "ए फोर्स इज़ माइटर दैन वायलेन्स" को शामिल करने की अनुमति दी गई ।

पत्रिकाओं का प्रकाशन

पत्रिका कक्ष का मुख्य कार्य परिषद की लक्ष्य — अभिविन्यस्त पत्रिकाएं निकालने की है । पत्रिका कक्ष कुछ शैक्षिक कार्यक्रम और शोध कार्यकलाप भी अपने हाथ में लेता है । पत्रिका कक्ष द्वारा प्रकाशित की गई पत्रिकाओं का विवरण नीचे दिया गया है

इण्डियन एजुकेशन रिव्यू (त्रैमासिक)

एक शोध पत्रिका है जो शैक्षिक अनुसन्धानकर्त्ताओं और छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है । यह भारत और विदेशों में शोध लेख, शिक्षा और संबद्ध विषय में डॉक्टरी तथा डाक्टरोत्तर अनुसंधान के संक्षिप्त विवरण, अनुसंधान टिप्पणी और शैक्षिक अनुसंधान की पुस्तकों की समीक्षा के रूप में किए गये शैक्षिक अनुसंधान से संबद्ध सूचना का प्रचार प्रसार करता है । शैक्षिक/अनुसंधान संस्थाओं द्वारा किए गए संस्थागत अनुसंधान कार्य को भी इस पत्रिका के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाता है ।

जनरल ऑफ इण्डियन एजुकेशन (पाक्षिक)

पत्रिका माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है जिससे उन्हें विशेष रूप से कक्षा की पढ़ाई में और सामान्य रूप से विद्यालय के वातावरण में सुधार लाने में सहायता मिलती है । इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यालय शिक्षा की नवीन प्रक्रियाओं का प्रचार-प्रसार करना तथा बेहतर पढ़ायी के लिये शिक्षा की नवीन प्रक्रियाओं को अपनाने के लिये प्रोत्साहित करना है । किसी विशेष तथ्य की ओर विशेष ध्यान दिलाने के लिये समय-समय पर इस पत्रिका का विशेषांक भी निकाला जाता है ।

भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक हिन्दी में)

पत्रिका शोधकर्त्ताओं और माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है । इस पत्रिका में कक्षा सम्बन्धी समस्याओं को हल करने, शिक्षा में नवीन प्रक्रियाओं का प्रचार-प्रसार करने और विद्यालय शिक्षा से सम्बद्ध शोध कार्य करने पर बल दिया जाता है ।

1985-86

स्कूल साइन्स (त्रैमासिक)

पत्रिका का उद्देश्य माध्यमिक/प्रवर माध्यमिक विद्यालयों छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है । यह भारत और विदेशों में शोध लेख, शिक्षा और सम्बद्ध विषय में डाक्टरी तथा डाक्टरोत्तर अनुसंधान टिप्पणी और शैक्षिक अनुसंधान की पुस्तकों की समीक्षा के रूप में किए गए शैक्षिक अनुसंधान से संबद्ध सूचना का प्रचार-प्रसार करता है । शैक्षिक/अनुसंधान संस्थाओं द्वारा किए गए संस्थागत अनुसंधान कार्य को भी इस पत्रिका के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाता है ।

द प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)

पत्रिका प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है जो उन्हें कक्षा संबंधी समस्याओं को हल करने और कक्षा की पढ़ाई में सुधार लाने में सहायक होती है । प्राथमिक स्तर की शिक्षा से सम्बद्ध नवीन प्रक्रियाओं के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से स्वयं विद्यालय के शिक्षकों द्वारा लिखे गए लेखों और शिक्षा सम्बन्धी समाचार और विचारों को इस पत्रिका में नियमित रूप से प्रकाशित किया जाता है ।

प्राइमरी शिक्षक (हिन्दी में त्रैमासिक)

पत्रिका मुख्यतः प्राइमरी टीचर का हिन्दी संस्करण है । यह पत्रिका प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए है और इनमें प्राथमिक स्तर पर विद्यालय के वातावरण में सुधार लाने से संबद्ध तथ्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है । इससे यह स्पष्ट है कि इन लक्ष्य–अभिविन्यस्त पत्रिकाओं का बुनियादी उद्देश्य शिक्षा के संगत क्षेत्रों/स्तरों में अद्यतन जानकारी का प्रचार-प्रसार करने के अतिरिक्त विभिन्न स्तरों पर विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना हैं । आलोच्य वर्ष में इन पत्रिकाओं के निम्नलिखित अंक प्रकाशित हुए :

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू	:	जनवरी, 1985 अप्रैल, 1985 जुलाई, 1985 और अक्तूबर 1985
जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन	:	नवंबर 1984, जनवरी 1985 , मार्च 1985 , मई 1985 , जुलाई 1985 , सितम्बर 1985 , और नवंबर 1985 इनमें से सितंबर 1985 का अंक शैक्षिक पत्रकारिता पर विशेषांक था ।
भारतीय आधुनिक शिक्षा	:	जुलाई 1984 , अक्तूबर 1984, जनवरी 1985 , अप्रैल 1985 , जुलाई 1985 , और अक्तूबर 1985 , जुलाई 1985 , का अंक शैक्षिक पत्रकारिता पर एक विशेषांक था ।
स्कूल विज्ञान	:	सितंबर 1984 , दिसम्बर 1984 , मार्च 1985 , जून 1985 , सितंबर 1985 और दिसम्बर 1985
द प्राइमरी टीचर	:	जनवरी 1985 , जुलाई 1985 , अक्तूबर 1985 , और जनवरी 1986
प्राइमरी शिक्षक	:	जनवरी 1984 , अप्रैल 1984 , जुलाई 1984 , अक्तूबर 1984 , जनवरी 1985 , अप्रैल 1985, जुलाई 1985 , अक्तूबर 1985 , और जनवरी 1986 .

1985-86 , के दौरान इस पत्रिका के निम्नलिखित अंक निकाले गये

जनवरी 1984 , अप्रैल 1984 ,
जुलाई 1984 , अक्तूबर 1984,
जनवरी 1985 , अप्रैल 1985,
जुलाई 1985 , अक्तूबर 1985,
और जनवरी, 1986 ;

शैक्षिक कार्यक्रम (विकासात्मक)

पत्रिका कक्ष ने दो मुख्य परियोजनाएं न केवल शैक्षिक पत्रकारिता में (क) हैण्ड बुक और (ख) इयर बुक नामक दो बुनियादी सन्दर्भ पुस्तक विकसित करना है बल्कि विद्यालय कालेज पत्रिका तथा शैक्षिक पत्रिका के निर्माण एवं लेखन कला में शिक्षक प्रशिक्षक और पत्रकारों को अभिविन्यास के जरिए पत्रिका कक्ष का प्रस्ताव कुछ समर्थ कार्मिक को तैयार करना है जो शैक्षिक पत्रिकाओं और इस तरह विद्यालय शिक्षा के स्तर में सुधार लाने से संबद्ध क्रैश आभविन्यास को समझने में पत्रिका कक्ष के साथ सहयोग कर सकें । आलोच्य वर्ष में पत्रिका कक्ष ने निम्नलिखित शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया :

शैक्षिक पत्रकारिता पर पुस्तिका का निर्माण

(I) 28 से 30 मई, 1985 तक शिक्षा संकाय, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में शैक्षिक पत्रकारिता पर पुस्तिका की रूपरेखा तैयार करने के लिये एक प्राथमिक बैठक हुई जिसमें 8 व्यक्तियों ने भाग लिया। तदर्थ रूपरेखा पर चर्चा करने के अलावा समाचार-पत्रों में शिक्षा पर समाचार लिखना, शैक्षिक पत्रिकाएं प्रकाशित करना, शैक्षिक पत्रकारिता के लिए आवश्यक कौशल और क्षमता आदि जैसी शैक्षिक पत्रकारिता के विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा की गई ।

(II) 6 से 8 नवम्बर 1985 तक निर्मला शिक्षा-संस्थान पणजी, गोवा में शैक्षिक पत्रकारिता की पुस्तिका की सामग्री तैयार करने पर एक कार्यशाला की गई । इस कार्यशाला में 21 व्यक्तियों ने भाग लिया । पुस्तिका के विभिन्न पहलुओं/शीर्षकों के अनेक पेपरों पर चर्चा करने के अतिरिक्त निम्नलिखित तीन प्रकार के अभिविन्यास कार्यक्रम विकसित करने के लिए समूह-कार्य किया गया :

(क) भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं और लक्ष्यों से संबद्ध विभिन्न प्रकार के लेखों के लेखन-कार्य में शिक्षकों के लिए कौशल अभिविन्यस्त कार्यक्रम ।

(ख) अच्छे किस्म की विद्यालय/कालेज पत्रिका निकालने की कला में शिक्षकों के लिये कौशल अभिविन्यस्त कार्यक्रम । और

(ग) विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं के लिये पुस्तक समीक्षा लिखने की कला में कौशल अभिविन्यस्त कार्यक्रम ।

(III) 21 से 23 जनवरी 1986 तक एन.सी.ई.आर.टी. में बंगलौर शैक्षिक पत्रकारिता की पुस्तिका के लिये विकसित की जानेवाली सामग्री पर एक कार्यशाला की गई जिसमें 27 व्यक्तियों ने भाग लिया । इस कार्यशाला में शैक्षिक पत्रकारिता से संबद्ध लेख और शोध पत्र प्रस्तुत करने के अतिरिक्त टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप के मिडिया विशेषज्ञ श्री पांत जलि सेठी द्वारा दिए गए आलोचनात्मक एवं रचनात्मक सुझावों की दृष्टि से पुस्तिका की तदर्थ रूपरेखा पर और चर्चा की गई।

(IV) 30 मार्च से 2 अप्रैल 1986 तक शिक्षा विभाग, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर में शैक्षिक पत्रकारिता की पुस्तिका के लिए विकसित की जाने वाली सामग्री पर एक कार्यशाला की गई जिसमें 27 व्यक्तियों ने भाग लिया । पुस्तिका के विभिन्न विषयों/पहलुओं पर प्रस्तुत किये गये लेखों पर चर्चा करने के अतिरिक्त न्यू मिडिया एकेडमी के प्रो. पी.एन. गल्हन द्वारा किए गए प्रेक्षणों की दृष्टि से पुस्तिका के ब्यौरे मालूम करने के लिए समूह-कार्य किया गया ।

शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी का निर्माण

(I) 27 से 29 सितंबर 1985 तक केन्द्रीय अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान, शिलांग में शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी की तदर्थ रूपरेखा तैयार करने पर एक कार्यशाला में शैक्षिक पत्रकारिता में एक नई दिशा देने के लिए इसके विभिन्न पहलुओं पर प्रस्तुत किए गए अनेक लेखों पर चर्चा की गई ।

(II) 25 से 27 फरवरी, 1986 तक राज्य शिक्षा संस्थान, पोर्ट ब्लेयर में शैक्षिक पत्रकारिता की वार्षिकी की सामग्री तैयार करने के लिए एक कार्यशाला की गई जिसमें 22 व्यक्तियों ने भाग लिया । शिक्षा के बारे में समाचार-पत्र में रिपोर्टिंग सहित शैक्षिक पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं से संबद्ध अध्ययन और लेखों पर चर्चा करने के अतिरिक्त नैशनल मिडिया सेंटर के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री उपेन्द वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत किये गये तथ्यों के आधार पर वार्षिकी की तदर्थ रूपरेखा पर आगे चर्चा की गई तथा उसमें सुधार लाया गया ।

अनुसंधान संबंधी कार्यकलाप

शैक्षिक पत्रिकाओं का राष्ट्रीय सर्वेक्षण

अगस्त, 1985 से पत्रिका कक्ष ने शैक्षिक पत्रिकाओं का व्यापक राष्ट्रीय सर्वेक्षण करने का काम अपने हाथ में लिया है । यह दो वर्ष की परियोजना है । देश की शैक्षिक पत्रिकाएं निकालने वाली संस्थाओं से संबद्ध मूल आंकड़े एकत्रित करने और तैयारी का काम करने के अतिरिक्त विद्यालयों और कालेजों की पत्रिकाओं सहित विभिन्न शैक्षिक पत्रिकाओं के बारे में ब्यौरे तैयार करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई । यह कार्य प्रगति पर है ।

पत्रिका कक्ष द्वारा हाथ में लिए शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रभाव

पुस्तिका और वार्षिकी के प्रकाशन से जहां एक ओर अच्छे स्तर की पत्रिका निकालने में सहायता मिलती है, वहां दूसरी ओर शिक्षकों, प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्त्ताओं, कार्यरत पत्रकारों के संचार कौशल और भाषा सुधारने में सहायता मिलती है । सर्वेक्षण परिणामों का भी अच्छे स्तर की पत्रिका निकालने और इस तरह शिक्षण के स्तर में सुधार लाने पर प्रभाव पड़ता है ।

इन कार्यक्रमों की महत्ता अब इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि अनेक संस्थाएं/विश्वविद्यालय पत्रकारिता और जन-संचार में शिक्षक प्रशिक्षण/प्रशिक्षण के एक भाग के रूप में शैक्षिक पत्रकारिता में एक पाठ्यक्रम की व्यवस्था करने लगे हैं । क्योंकि शैक्षिक प्रायोजना में इसका काफी प्रभाव होता है अतः शैक्षिक पत्रकारिता का कार्यक्रम सभी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय हो गया है । मिडिया के लोग शैक्षिक पत्रकारिता के संवर्धन और विकास में रुचि रखते हैं क्योंकि ऐसा करने से शिक्षा पर समाचार बनाने में एक अनुकूल वातावरण बनता है । पत्रकारिता विद्यालयों में लोग उतनी ही रुचि लेते हैं जितनी कि शिक्षक कालेजों में क्योंकि इन दोनों संस्थाओं का उद्देश्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के जरिए प्रशिक्षणार्थियों के मन में भाषा और संचार कौशल की जानकारी प्राप्त करने की इच्छा जागृत करना है । विद्यालय शिक्षा से संबद्ध राज्य स्तर की एजेन्सियों और शिक्षण संघ बेहतर विद्यालय शिक्षा के एक साधन के रूप में अच्छे स्तर की विद्यालय पत्रिका प्रकाशित करने की कला और कौशल में किसी न किसी प्रकार का क्रैश अभिविन्यास कार्यक्रम चलाना चाहते हैं ।

प्रलेखन

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग (डी.एल.डी.आई.) परिषद का एक शैक्षिक अंग के रूप में काम करता है । इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों की दृष्टि से पठन-सामग्री एकत्रित और आयोजित करने के साथ-साथ उसका प्रचार-प्रसार भी करना है :

1985-86

(I) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के संकाय के सदस्यों की और देश भर के शिक्षा क्षेत्र से संबद्ध छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है :

(II) शिक्षा संबंधी सूचनाओं के लिए एक वितरण केन्द्र का काम करना ।

(III) अनुसंधान और अध्ययन का संवर्धन ।

(IV) विद्यालय एंव शिक्षक प्रशिक्षण कालेज के व्यावसायिक अमला को सेवाकालीन अभिविन्यास कार्यक्रम उपलब्ध कराकर इन संस्थाओं के पुस्तकालयों में उन्नत स्तर की पुस्तकालय सेवा के जरिए शिक्षा के स्तर में सुधार लाना ।

संग्रह

31 मार्च, 1985 को पुस्तकों की संख्या	116106
1985-86 में बढ़ायी गई पुस्तकों की संख्या	
(क) खरीदकर	2323
(ख) तोहफा के रूप में प्राप्त	378
(ग). दोनों को जोड (क + ख)	2701
(घ) हटाई गई पुस्तक	455
(ड) 31-3-86 को कुल पुस्तकों की संख्या	118352
निःशुल्क अथवा आदान-प्रदान से प्राप्त पत्रिकाओं की संख्या	402
मंगाये जाने वाले समाचार-पत्रों की संख्या	16

समाचार कतरन

आलोच्य वर्ष में शिक्षा सम्बन्धी समाचारों और सम्पादकीय के लिए नियमित रूप से 16 समाचार पत्र पढ़े गए और आगे के सन्दर्भ के लिए 1358 को सम्भाल कर रख दिया गया।

प्रकाशन

1985-86 के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाशित किए गए :

1- परिग्रहण सूची (मासिक)
2- वर्तमान विषयवस्तु (मासिक)
3- नैतिक शिक्षा पर कुछ चुने हुए सार लेखक-के.एल. लुथरा और एच.एस. शर्मा
4- शिक्षा नीति पर कुछ चुनी हुई ग्रंथ सूची— लेखक—एच.एस. शर्मा
5- एस.ए.आर.सी. सदस्य की शिक्षा पद्धति का डाइजेस्ट

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक के पेम्फ्लेट

शिक्षा और संबद्ध विषयों के पेम्फ्लेटों को एकत्रित किया जा रहा है। विभाग 5000 पेम्फ्लेटों को एकत्रित कर चुका है।

प्रकाशन

1985-86 में सदस्यता	2384
1985-86 के दौरान आने वाले छात्रों को दी गई परामर्श सुविधाएं	436

कार्य के घंटे

उपभोक्ताओं की मांग की पूर्ति करने के लिए सभी काम के दिन पुस्तकालय 9 बजे सुबह से 8 बजे रात तक खुला रखा जाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :—

1- 22-23 जुलाई, 1985 तक लखनऊ में शिक्षक प्रशिक्षण कालेज में पुस्तकालयों के विकास पर कार्यशाला ।
2- 8-12 जनवरी 1986 तक शांतिनिकेतन में प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण कालेज पुस्तकालयों के विकास पर कार्यशाला ।
3- 21-1-1986 से 25-1-1986 तक जोधपुर में राजस्थान के विद्यालय पुस्तकालय अध्यक्षों का सेवाकालीन प्रशिक्षण।
4- 17-22 फरवरी, 1986 के दौरान चोंगलोंग में अरुणाचल प्रदेश के विद्यालय पुस्तकालय अध्यक्षों का सेवाकालीन प्रशिक्षण।

विस्तार

श्री के.एल. लुथरा, अध्यक्ष, डी.एल.डी.आई. ने पुरालेखी अध्ययन विद्यालय, भारत का राष्ट्रीय पुरालेखागार, नई दिल्ली में 10-3-1986 को 'सूचना प्रलेखन केन्द्र और पुरालेखाकार एक तुलनात्मक अध्ययन'' पर व्याख्यान दिया ।

विकास

14 फरवरी से 15 फरवरी 1986 तक एन.सी.ई.आर.टी. और राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन, कलकत्ता ने नई शिक्षा नीति पुस्तकालय और सूचना तंत्र पर एक-एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संयुक्त रूप से किया ।

1985-86 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशन :

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियां की संख्या
1	2	3	4
	पाठ्यक्रम और निर्धारित सप्लीमेंटरी रीडर		
	पहली कक्षा		
	पाठ्य पुस्तक		
1.	बाल भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,90,000
2.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक (विशेष माला पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	2,20,000
3.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स बुक (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,75,000
	अभ्यास पुस्तिका		
4.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,45,000
5.	वर्क बुक फॉर लेट अस लर्न इंग्लिश बुक- I (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	1,60,000
	दूसरी कक्षा		
	पाठ्य पुस्तक		
6.	बाल भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,86,000
7.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक- II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	2,05,000
8.	मैथेमेटिक्स फार प्राइमरी स्कूल्स	फरवरी, 1986	1,38,000
	अभ्यास पुस्तिका		
9.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- II) (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,30,000
10.	वर्क बुक फॉर लेट अस लर्न इंग्लिश बुक- II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,80,000
	तीसरी कक्षा		
11.	बाल-भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	1,30,000
12.	लेट अस लर्न इंग्लिश बुक II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,56,000
13.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,16,000
14.	एनवायरनमेण्टल स्टडीज फॉर क्लास III, पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	52,000
15.	एनवायरनमेण्टल स्टडीज फॉर क्लास III, पार्ट- 2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
16.	पर्यावरण अध्ययन कक्षा- III के लिए भाग- 2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
	अभ्यास पुस्तिका		
17.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- III (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	85,000
18.	वर्कबुक फॉर लेट अस लर्न इंग्लिश बुक III (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,60,000
	चौथी कक्षा		
19.	बाल भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,10,000
20.	इंग्लिश रीडर बुक- I (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,30,000
21.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल बुक- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,25,000
22.	एनवायरनमेंटल स्टडीज फार क्लास II, पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1986	20,000
23.	एनवायरनमेण्टल स्टडीज फार क्लास- 4, पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	50,000
24.	चौथी कक्षा के लिए पर्यावरण अध्ययन भाग- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	30,000
25.	एनवायरनमेंटल स्टडीज फॉर क्लास II, पार्ट- II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	80,000
26.	चौथी कक्षा के लिए पर्यावरण अध्ययन भाग- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
	अभ्यास पुस्तिका		
27.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग- 4, (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	1,05,000

1	2	3	4
28.	इंग्लिश रीडर बुक- I की अभ्यास पुस्तिका (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,85,000
पूरक पाठमाला			
29.	रीड फॉर प्लेजर बुल्क- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	65,000
पांचवी कक्षा			
पाठ्य पुस्तक			
30.	बाल भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	1,20,000
31	स्वस्ति भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	45,000
32.	इंग्लिश रीडर बुक- II (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,30,000
33.	मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स बुक (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	1,00,000
34.	इंडिया एण्ड द वर्ल्ड (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	50,000
35.	भारत और संसार (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	20,000
36.	लर्निंग साइन्स थ्रू एनवायरनमेंट पार्ट- III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	68,000
37.	पर्यावरण से विज्ञान सीखना भाग– III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	8,000
अभ्यास पुस्तिका			
38.	अभ्यास पुस्तिका बाल-भारती भाग- 5 (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	1,00,000
39.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	34,000
40.	वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर बुक- I (विशेष माला, पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	60,000
पूरक पाठमाला			
41.	रीड फॉर प्लेजर–II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	85,000
छठी कक्षा			
पाठ्य पुस्तक			
42.	भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	85,000

1	2	3	4
43.	स्वस्ति भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	35,000
44.	इंगलिश रीडर बुक- III (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	90,000
45.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक- I	दिसंबर, 1985	1,05,000
46.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
47.	लैण्ड्स एण्ड पिपुल पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	50,000
48.	देश और उनके निवासी भाग– I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	20,000
49.	हिस्ट्री एण्ड सिविक्स पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	54,000
50.	इतिहास और नागरिक शास्त्र, भाग- I (पुनर्मुद्रित)	जनरवीर, 1986	55,000
51.	लर्निंग साइन्स पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	65,000
52.	आओ विज्ञान सीखें, भाग- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	10,000
अभ्यास पुस्तिका			
53.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग- II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	30,000
54.	वर्कबुक ऑफ इंगलिश रीडर बुक- 3 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	95,000
पूरक पाठमाला			
55.	संक्षिप्त रामायण (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	40,000
56.	रीडर फॉर प्लेजर बुक- III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	45,000
57.	भारती भाग- II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	55,000
58.	स्वस्ति भाग-3 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	10,000
59.	इंगलिश रीडर बुक- 4 (विशेष माला) (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	75,000
60.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स, बुक- II पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	74,000

1	2	3	4
61.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक-II भाग-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	10,000
62.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स बुक-II पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर 1985	69,000
63.	हिस्ट्री एण्ड सिविक्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर 1985	40,000
64.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	38,000
65.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	46,000
66.	देश और उनके निवासी भाग-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	40,000
67.	लर्निंग साइन्स पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	70,000
68.	आओ विज्ञान सीखें भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	12,000
	अभ्यास पुस्तिका		
69.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-III (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	20,000
	पूरक पाठमाला		
70.	नया जीवन (पुनर्मुद्रित)	जनवरी 1986	25,000
71.	संक्षिप्त महाभारत (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	40,000
72.	रीड फॉर प्लेजर बुक 4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी 1985	27,000
	आठवीं कक्षा		
	पाठ्य पुस्तक		
73	भारती भाग III (पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर 1985	62,000
74.	स्वस्ति भाग-4 (पुनर्मुद्रित)	जनवरी 1986	11,000
75.	इंग्लिश रीडर बुक-5 (विशेष माला)(पुनर्मुद्रित)	दिसम्बर 1985	50,000
76.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल बुक-III पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी 1986	87,000
77.	मैथेमेटिक्स फॉर मिडिल स्कूल्स बुक-III पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर 1985	75,000
78.	गणित माध्यमिक स्कूलों के लिए पुस्तक-III भाग-II (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	12,000
79.	हिस्ट्री एण्ड सिविक्स पार्ट-III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	35,000
80.	इतिहास और नागरिक शास्त्र भाग-III (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	17,000
81.	लैण्ड्स एण्ड पीपुल पार्ट-III	दिसंबर, 1985	35,000
82.	देश और उनके निवासी भाग-III (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	15,000
83.	लर्निंग साइंस पार्ट-II (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	55,000
	अभ्यास पुस्तिका		
84.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-4, (पुनर्मुद्रित)		25,000
	पूरक पाठमाला		
85.	त्रिविधा (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	32,000
86.	रीड फॉर प्लेजर बुक-5, (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	25,000
87.	जीवन और विज्ञान (पुनर्मुद्रित)	दिसंबर, 1985	20,000
	नवीं कक्षा		
	पाठ्य पुस्तक		
88.	फोर्थ स्टेप द इंग्लिश रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	46,000
89.	फीजिक्स पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1985	40,000
90.	फीजिक्स पार्ट-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,38,000
91.	भौतिक भाग-I (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1985	1,60,000
92.	रसायन विज्ञान भाग-I (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1985	1,60,000
93.	बेसिक बॉयोलॉजी पार्ट-I वाल्यूम-I	अगस्त, 1985	40,000
94.	बेसिक बॉयोलॉजी पार्ट-I वाल्यूम-I	जनवरी, 1986	1,40,000
95.	बेसिक बॉयोलॉजी पार्ट-I वाल्यूम-2 (प्रथम संस्करण)	अक्तूबर, 1985	1,40,000
96.	आधारिक जीव विज्ञान भाग-I खंड-I (प्रथम संस्करण)	मई, 1985	1,60,000

1985-86

1	2	3	4
97.	आधारिक जीव विज्ञान भाग- I खंड- I (प्रथम संस्करण)	दिसंबर, 1985	1,40,000
98.	मैथेमेटिक्स पार्ट- I, (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1985	40,000
99.	गणित भाग- I खंड- I (प्रथम संस्करण)	अप्रैल, 1985	1,40,000
100 .	गणित भाग- I खंड- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	71,000
101.	गणित भाग- I खंड- I (प्रथम संस्करण)	अगस्त, 1985	1,60,000
102.	द स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन वाल्यूम- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	45,000
103.	सभ्यता की कहानी भाग- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	49,000
104.	मैन एण्ड एनवायरनमेंट (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	49,000
105.	मनुष्य और वातावरण	फरवरी 1986	52,000
106.	इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	37,000
	नवीं और दसवीं कक्षा		
107.	सिटिजन एण्ड द गवर्नमेंट (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1985	20,000
108.	नागरिक और शासन (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	95,000
	ग्यारहवीं कक्षा		
109.	फिफ्थ स्टेप टू इंग्लिश रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	20,000
110.	फिफ्थ स्टेप टू इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (बी कोर्स) (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	34,000
111.	गणित भाग II (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1985	4,000
112.	विज्ञान भाग II (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1985	6,000
113	मैथेमेटिक्स पार्ट II (प्रथम संस्करण)	जनवरी, 1986	2,00,000
114.	द स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन वाल्यूम II (पुनर्मुद्रित)	मई, 1985	16,000
115.	इंडिया ऑन द मूव (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1985	8,000
116.	भारत विकास की ओर (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1985	15,10,000

1	2	3	4
117.	भारत विकास की ओर (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	50,000
	ग्यारहवीं कक्षा		
118.	अभिनव गद्य भारती भाग- I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	55,000
119.	अभिनव कथा भारती भाग-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	55,000
120.	साहित्य का स्वरूप (प्रथम संस्करण)	सितंबर 1985	50,000
121.	साहित्य का स्वरूप (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	30,000
122.	काव्य संचयन भाग- I	अक्तूबर, 1985	56,000
123.	गद्य संचयन भाग- I (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1985	56,000
124	कहानी संचयन भाग- I (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1985	62,000
125.	I- द पीपुल (इंग्लिश रीडर) (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	1,50,000
126.	फाइव वन ऐक्ट प्लेज	अप्रैल, 1985	1,300
127.	संस्कृत साहित्य परिचय (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	17,000
128.	रंगिणी (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	17,000
129	भौतिक विज्ञान भाग- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	2,500
130	बायोलॉजी पार्ट I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	23,000
131.	मैथेमेटिक्स बुक I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	30,000
132.	गणित भाग I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1985	20,000
133.	मैथेमेटिक्स बुक II	फरवरी, 1986	25,000
134.	एन्सिएण्ट इंडिया (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1985	9,000
135.	एन्सिएण्ट इंडिया (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	19,000
136.	मेडिवल इंडिया पार्ट I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	22,000
137.	मध्यकालीन भारत भाग- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	19,000
138.	पोलिटिकल सिस्टम (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	10,000
139.	एलीमेंटरी स्टेटिस्टिक्स	जून, 1985	25,000
140.	प्रारंभिक सांख्यिकी	जुलाई, 1985	20,000
141.	एवोलुशन ऑफ इंडियन इकोनॉमी	मई, 1985	30,000
142	एवोलुशन ऑफ इंडियन इकोनॉमी	मार्च, 1986	20,000

1	2	3		4
	143.	भारतीय अर्थशास्त्र विकास	जून, 1985	21,000
	144.	फीजिकल जियोग्राफी (प्रथम संस्करण)	मई, 1985	22,000
	145	भौतिक भूगोल (प्रथम संस्करण)	अगस्त, 1985	16,000
	146	भौतिक भूगोल (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	8,000
	147	जनरल जियोग्राफी ऑफ इंडिया पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	15,000
	148.	जनरल जियोग्राफी ऑफ इंडिया पार्ट- I (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	11,000
	149	साइकोलॉजी ऐन इंट्रोडक्शन टू ह्यूमन बीहेवियर (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	1,500
	150	इंग्लिश रीडर II (पुनर्मुद्रित)	अगस्त, 1985	70,000
	151.	फीजिक्स (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	18,000
बारहवीं कक्षा				
	152.	अभिनव काव्य भारती भाग-2 (प्रथम संस्करण)	फरवरी, 1986	80,000
	153.	अभिनव गद्य भारती भाग-2 (प्रथम संस्करण)	मार्च, 1986	80,000
	154.	काव्य संचयन भाग-2 (प्रथम संस्करण)	मार्च, 1986	60,000
	155.	गद्य संचयन भाग-II	मार्च, 1986	60,000
	156	डीयर टू ऑल द म्यूसेस (पुनर्मुद्रित)	मई, 1985	4,500
	158.	ऑन टॉप ऑफ द वर्ल्ड (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	5,000
	159.	संस्कृत काव्य तरंगिनी (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	15,000
	160.	मैथेमेटिक्स बुक III (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	20,000
	161.	मैथेमेटिक्स बुक 4 (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	18,000
	161.	मैथेमेटिक्स बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	22,000
	162.	मध्यकालीन भारत भाग-2	अप्रैल, 1985	5,000
	163.	आधुनिक भारत भाग 2 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	8,000
	164.	भारतीय संविधान और शासन	अप्रैल, 1985	3,000
	165	इंडियन डेमोक्रेसी एड वर्क	अप्रैल, 1985	4,000
	166.	भारत में लोकतंत्र (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	3,000
	167	ऐन इन्ट्रोडक्शन टू एकोनॉमिक थ्योरी (पुनर्मुद्रित)	जून 1985	5,000

1	2	3		4
	168.	ह्यूमन एण्ड एकोनॉमिक जियोग्राफी (पुनर्मुदित)	मई, 1985	8,000
	169.	मानव एवं आर्थिक भूगोल (पुनर्मुद्रित)	फरवरी, 1986	3,000
	170	भारत का भूगोल भाग-I (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	5,000

उर्दू पाठ्य पुस्तक

1	2	3		4
छठी कक्षा				
	171.	रियाजी (मैथेमेटिक्स) बुक-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	6,000
	172.	उर्दू की नई किताब (न्यू बुक)	मार्च, 1986	5,000
सातवीं कक्षा				
	173.	तारीख और इल्म-ए-शरियत (हिस्टरी एण्ड सिविक्स) पार्ट II (पुनर्मुद्रित)	जुलाई, 1985	2,000
आठवीं कक्षा				
	174.	हिसाब (गणित) बुक III, पार्ट-2 (पुनर्मुद्रित)	जून, 1985	2,000
नवीं कक्षा				
	175	इन्सान और माहौल (मैन एण्ड एनवायरनमेंट) (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल 1986	2,000
	176.	तहजीब की कहानी (द स्टोरी आफ सिविलिजेशन) वाल्यूम-I (पुनर्मुद्रित)	अप्रैल, 1985	2,000
बारहवीं कक्षा				
	177.	रियाजी (गणित) बुक-5 (पुनर्मुद्रित)	नवंबर, 1985	2,000

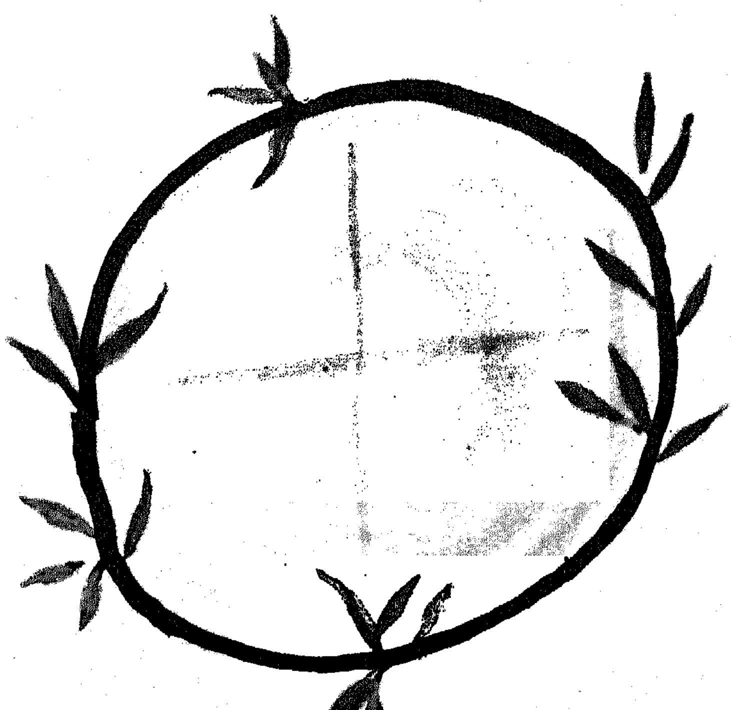
अन्य राज्यों/संगठनों की पाठ्यपुस्तक/अभ्यास पुस्तिका

1	2	3		4
	178.	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-1 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	28,000
	179.	अरुण भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	10,000
	180	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-2 (पुनर्मुद्रित)	मार्च, 1986	12,000

1985-86

1	2	3	4
181.	अरुण भारती भाग- 3 (नई दिल्ली)	जुलाई, 1985	30,000
182.	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग- 3	नवंबर, 1985	30,000
183.	गद्य भारती (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	8,000
184.	काव्य भारती (पुनर्मुद्रित)	जनवरी, 1986	8,000
185	साओराभाषा की प्रवेशिका	नवंबर, 1985	5,000
	पूरक पाठमाला		
	(लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश सीरीज)		
186.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 1	मई, 1985	10,000
187.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 2	मई, 1985	10,000
188.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 3	मई, 1985	10,000
189.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 4	मई, 1985	10,000
190	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 5	मई, 1985	10,000
191.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 6	मई, 1985	10,000
192.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 7	फरवरी, 1986	10,000
193.	लेट अस एनरिच आवर इंग्लिश बुक- 8	मई, 1986	10,000
	शोध मोनोग्राफ और अन्य प्रकाशन		
194.	करिकुलम लोड ऐट द स्कूल लेवल-ए क्विक एप्रोच	मई, 1985	1,000
195	सर्कुलर मोशन टीचिंग यूनिट इन फिजिक्स	अप्रैल, 1985	2,000
196.	इलेक्ट्रिसिटी- I टीचिंग यूनिट इन फिजिक्स	मई, 1985	2,000
197.	इलेक्ट्रोमैग्नेटिज्म टीचिंग यूनिट इन फिजिक्स	मई, 1985	2,000
198.	पढ़ो औ बढ़ो–उर्दू प्राइमर गाइड	जुलाई, 1985	1,000
199.	हिंदी व्याकरण और रचना	जुलाई, 1985	5,000
200.	साइकोलॉजी फॉर एलिमेंटरी स्कूल टीचर	अप्रैल, 1985	2,000
201.	थर्मोडाइनेमिक्स- I- टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	अप्रैल, 1985	2,000
202.	काइनेटिक श्योरी ऑफ गैसेज टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	मई, 1985	2,000
203.	रीजिड बॉडी रोटेशन टीचिंग इन फीजिक्स	मई, 1985	2,000
204.	अप्लाइड इलेक्ट्रोमैग्नेटिज्म टीचिंग यूनिट इन फीजिक्स	अगस्त, 1985	2,000
205.	काइनेटिक थ्योरी ऑफ गैसेज- II टीचिंग	मई, 1985	2,000
206.	टुआईस ए मॉडल ऑफ टेक्स्ट बुक कम्प्रीहेन्सिबिलिटी	अगस्त, 1985	2,000
207.	नेशनल साइन्स एक्जीविशन	नवंबर, 1986	2,000
208.	स्ट्रक्चर एण्ड वर्किंग ऑफ साइंस मॉडल्स 1985	नवंबर, 1985	2,000
209.	रीडिंग फॉर कैरियर टीचर्स	अक्तूबर, 1985	3,000
210.	टास्क फोर्स ऑन एन.सी.ई.आर.टी.	अक्तूबर, 1985	1,000
211.	सोशली यूजफुल प्रोडक्टिव वर्क सोर्स बुक वाल्यूम- II	नवम्बर, 1985	2,000
212.	एनुअल रिपोर्ट 1984-85	दिसंबर, 1985	6,000
213.	एनुअल रिपोर्ट 1984-85	दिसंबर, 1985	1,000
214.	टास्क फोर्स रिपोर्ट ऑन एन सी ई आर टी (हिंदी)	दिसंबर, 1985	1,000
215.	सैम्पल यूनिट टेस्ट इन हिस्टरी	नवंबर, 1985	5,000
216.	स्टडी गाइड फॉर क्लास (कम्प्यूटर लिटरेसी एण्ड स्टडीज इन सांइस)	मई, 1985	30,000
217.	हिंदी वर्तनी संबंधी सुधार मूलक	नवंबर, 1985	5,000
218	संहिता (डाटाबेस) वर्किंग मैनुअल	जनवरी, 1986	3,000
219.	मैथलेण्ड (टर्टल ग्राफिक्स) वर्किंग मैनुअल	जनवरी, 1986	3,000
220.	नेशनल करिकुलम फॉर प्राइमरी एण्ड सेकण्डरी एजुकेशन-ए-फ्रेमवर्क	जनवरी, 1986	5,000

1	2	3	4
221.	नॉन फार्मल एजुकेशन प्रोग्राम इन इंडिया	जनवरी, 1986	1,000
222.	ऑडिट रिपोर्ट 1984-85	फरवरी, 1986	500
223.	रिपोर्ट ऑफ द कमेटी ऑन एक्जामिनेशन्स	फरवरी, 1986	5,000
224.	बॉयोकैमिकल्स एण्ड बिहैवियर्स	जनवरी, 1986	1,000
225.	इनोवेटिव प्रैक्टिसेज इन सेकण्ड्री टीचर एजुकेशन इन इंडियन (1975-78) वाल्यूम -II	फरवरी, 1986	1,000
226.	टैलेण्ट एण्ड क्रिएटिविटी	जनवरी, 1986	1,000
227.	नेशनल प्राइज कम्पीटिशन फॉर चिल्ड्रेन्स लिटरेचर	अप्रैल 1986	10,000
228.	इन्फ्लुएन्स ऑफ कान्टिनुअल इवैलुएशन ऑन लर्निंग	फरवरी, 1986	2,000
229.	इवैलुएशन ऐट द सेकण्डरी	जनवरी, 1986	1,000
230.	कम्पेरिजन ऑफ द डेवलपमेंटल नार्मस	जनवरी, 1986	1,000



15

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और सहायता

राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली शिक्षा में अनुसंधान प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियों के क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विभिन्न देशों और यूनेस्को, यू.एन.डी.पी. यूनिसेफ जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सम्पर्क बनाए रखती है । अन्य मित्र देशों के साथ दुतरफे सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों (सी.ई.पी.) के उपबन्धों के कार्यान्वयन के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् एक मुख्य एजैंसी के रूप में काम करती है । सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत, शिक्षा सामग्रियों का तथा शिक्षा पद्धति का अध्ययन करने के लिए शिक्षाविदों के दोरों का विनिमय मुख्य कार्य हैं । रा.शै.अनु.प्र. परिषद अपने संकाय सदस्यों को अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों/बैठकों/प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रायोजित भी करती है । स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और शिक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संबद्ध कार्यक्रमों के अन्तर्गत, विदेशी राष्ट्रिकों के लिए परिषद, प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाती रही है । रा. शै.अनु.प्र. परिषद् की ऊपर बताई गई सामग्री गतिविधियों/कार्यक्रमों के समन्वय के लिए परिषद का अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एकक जिम्मेदार है । यह एकक, शिक्षा नवाचारों में राष्ट्रीय विकास दल के सचिवालय के रूप में और विभिन्न देशों वे अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों को, भारत में स्कूली शिक्षा के बारे में सूचना देने के लिए क्लियरिंग हाऊस के रूप में भी काम करता है ।

दुतरफे सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

1985-86 के दौरान परिषद ने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत सोवियत रूस, मारीशस, वियतनाम, फिनलैण्ड, ए.आर.ई., मैक्सिको, साइप्रस और जनवादी गणतांत्रिक कोरिया जैसे देशों के साथ शिक्षा सामग्री का विनिमय किया । इसके अतिरिक्त परिषद ने स्पेन, नेपाल, यूनाइटेड किंगडम, पाकिस्तान, जोर्डन, भूटान, बोटस्वाना, सऊदी अरब और डोमिनिका राष्ट्र मण्डल जैसे देशों को उनके अनुरोध पर शिक्षा सामग्री भेजी । वर्ष 1985-86 में निम्नलिखित सांस्कृतिक विनिमय हुए :

वर्ष 1984-85 के लिए भारत-मारीशस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के उपबन्धों के अन्तर्गत, 25 अक्तूबर, 1986 को, महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट, पोर्टलुई, मारीशस के निदेशक श्री उत्तम विसुनदयाल, अध्यापक शिक्षण, पाठ्यक्रम बनाने, दूसरी भाषा सीखने, उचित संशिक्षा से संबंधित समस्याओं पर चर्चा करने और भारतीय भाषा, संस्कृति तथा सभ्यता के विषय के कार्यक्रम बनाने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद् पधारे ।

भारत में स्कूली शिक्षा की आधुनिक दशा और विकास की प्रवृत्तियों का अध्ययन करने और संशिक्षा स्टाफ के लिए, 1985-86 के लिए भारत-रूस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के मद 35 के अन्तर्गत, श्री म्यूरत पैंफिएव, भाषाविज्ञान के डाक्टर, रूस में तुर्कमेन के चार्ईसन क्षेत्र के जनशिक्षा विभाग के प्रमुख के नेतृत्व में तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल रा.शै.अनु.प्र.परिषद में 14-23 नवंबर 1985 तक के लिए पधारा ।

1983-85 (बढ़ाए गए अनुसार) के लिए भारत-ग्रीस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के मद 3 के अन्तर्गत, व्यावसायिक शिक्षा के अध्ययन के लिये मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा भेजे गये दो सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में, रा.शै.अनु.प्र. परिषद के शिक्षा के व्यासायीकरण विभाग को प्रोफैसर डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, 3-12 मार्च 1986 तक के लिये ग्रीस गई ।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् में विदेशी आगन्तुक

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत के अतिरिक्त रा.शै.अनु.प्र. परिषद् ने अध्ययन दौरों व अन्य कार्यक्रमों के अन्तर्गत विभिन्न देशों के शिक्षाविदों को अपने यहां बुलाया और अपने संकाय सदस्यों को अन्य देशों में भेजा । फलस्वरूप आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित दौरे हुए :

1. बैंकाक स्थित, एशिया और पौसिफिक के लिए शिक्षा के, यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय के श्री टी.एन. साक्या और डा. नामटिप 11 अप्रैल 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए और संकाय सदस्यों के साथ, यूनेस्को की विभिन्न शिक्षा परियोजनाओं के बारे में विचार-विमर्श किया ।
2. अध्ययन सहायताओं के उत्पादन, वितरण, अनुप्रयोग, अनुसंधान और विकास पहलुओं के संबंध में, यूनिसेफ द्वारा प्रायोजित, बीजिंग टीचिंग एण्ड सेंटर का तीन सदस्यीय चीनी प्रतिनिधिमंडल भारत में रा.शै.अनु.प्र. परिषद सहित अनेक संस्थाओं में 23 अप्रैल से 4 मई 1985 तक के लिए आया ।

1985-86

3. यूनेस्को द्वारा प्रायोजित, लड़कियों की शिक्षा पर एक सात सदस्यीय क्षेत्रीय पैनल भारत में अपने अध्ययन दौरे के दौरान और 6 जून 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् में आया। प्राथमिक शिक्षा में लड़कियों के कम संख्या में दाखिला लेने की समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से निपटाने के लिए सम्भावित नीतियों और तरीकों के नीति निर्धारकों, योजनाओं और समुदाय कार्यकर्त्ताओं के साथ अपने अनुभवों को बांटना और विनिमय करना तथा लड़कियों की शिक्षा की स्थिति के अध्ययनों की प्रगति का अध्ययन करना व पुनरावलोकन करना इस दौरे का उद्देश्य था।

4. सर्वश्री रोडजी व मेनुटन कंस्टेंट परेड नामक दो इंडानेशियाई फैलो, साक्षरता के तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में स्कूल पूर्व और प्रारम्भिक शिक्षा के विभाग में 5 जुलाई 1985 से 7 अगस्त 1985 तक चार सप्ताह के लिये रखे गए।

5. भूटान से श्री गोरी शंकर शर्मा, कार्यालय प्रबंधन के विशेष संदर्भ में रा.शै.अनु. प्र. परिषद के कार्य संचालन के विविध पहलुओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए 15-19 जुलाई 1985 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।

6. जिम्बाववे गणराज्य के पाठ्यक्रम विकास एकक के लेक्चरर श्री एस.टी. मेंडिजा और विज्ञान आध्यापक श्री डब्लू.एफ. मायो 20 अगस्त 1985 को रा.शै.अ.प्र. परिषद के संकाय सदस्यों के साथ पाठ्यक्रम की चर्चा करने के लिए रा.शै.अनु.प्रा. परिषद आए।

7. मारीशस के शिक्षा, कला एवं संस्कृति मंत्री महामहिम श्री अर्मुर्गम परशुराम अपने सहायकों सहित 20 सितम्बर 1985 को, अनुसंधान, पाठ्यक्रम विकास, प्रशिक्षण और विस्तार सेवाओं के क्षेत्र में रा.शै.अनु. प्र. परिषद की गतिविधियों के बारे में चर्चा करने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।

8. बीजिंग के केन्दीय शिक्षा अनुसंधान संस्थान के निदेशक, श्री फांग फुकान और शिक्षा शोधकर्ता श्री फ्यूली 4-5 नवंबर 1985 को, शिक्षा गतिविधियों पर चर्चा और सलाह करने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।

9. काबुल में भारतीय स्कूल के प्रयोगशाला सहायक श्री नसीरुल्ला ने विदेश मंत्रालय के आई.टी.ई.सी कार्यक्रम के अंतर्गत 1 नवंबर 1985 से 3 महीने की अवधि के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

10. अफगानिस्तान के 8 यूनेस्को फैलो के एक दल को 23 नवंबर से 22 दिसम्बर 1985 तक के लिए विज्ञान शिक्षा में प्रशिक्षण के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग में रखा गया।

11. नेपाल के यूनेस्को फैलो श्री एच.आर. बज्राचार्य को, शिक्षाविधियों में सुधार के क्षेत्र में उन्नत प्रशिक्षण के लिए भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 17 नवंबर से 25 फरवरी 1986 तक रखा गया।

12. हनोई अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सैद्धांतिक भौतिकी विभाग के लेक्चरर और अध्यक्ष श्री दो दिन्ह थान्ह ने 17 नवम्बर 1985 से तीन सप्ताह की अवधि के लिए भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में, विज्ञान शिक्षा के एपीड विशेष तकनीकी सहयोग कार्यक्रम में भाग लिया।

13. कोरिया का जनसंख्या शिक्षा का अन्तरादेशीय चल प्रशिक्षण दल 11 से 16 नवंबर 1985 तक के लिए, राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल में और स्कूल के बाहर, जनसंख्या शिक्षा कार्मिकों के प्रशिक्षण की योजना बना सकने और उन्हें कारगर कर सकने वाले प्रतिभागी देशों के साधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आया।

14. बंग्लादेश एक्विपमेंट बोर्ड के चार वरिष्ठ अधिकारी, शिक्षण संस्थाओं के लिए शिक्षण उपस्कर (एक्विपमेंट) के विकास, उत्पादन, गुणवत्ता नियंत्रण और वितरण की जानकारी प्राप्त करने के लिए 1-7 दिसंबर 1985 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।

15. महामहिम डा. (श्रीमती) मार्टा व्लाकिहोवा, शिक्षा और संस्कृति की प्रथम प्रभारी उपमंत्री के नेतृत्व में एक 3 सदस्यीय चेक प्रतिनिधि मण्डल, भारत के बेसिक स्कूलों में स्कूल-पूर्व शिक्षा, बच्चों की देखभाल और शिक्षा प्रणाली की समस्याओं के अध्ययन के लिए 5 दिसम्बर 1985 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आया।

16. विकलांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन के लिए एक पाकिस्तानी प्रतिनिधि मण्डल 3 जनवरी 1986 को रा.शै.अनु. प्र. परिषद आया।

17. दो हथियोपियाई अधिकारी, श्री आटो खेबेडे फ्रेसेन्वेट, अध्यक्ष ई.एम.पी.डी.ए. और श्री आटो तेस्फा अलेमयेहू, ई.एम.पी.डी.ए. के मुद्रण विभाग के प्रमुख, पाठ्यक्रमों के सामान्य प्रबंधन, प्रकाशन, मुद्रण और उत्पादन के तरीकों के अध्ययन के लिए 22 दिसम्बर 1985 को, पन्द्रह दिन के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।

18. भूटान से, बी.एड. विद्यार्थियों का एक दल परिषद के

कार्यक्रमों/गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए 22 जनवरी 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आया।

19. नेपाल के महाराजाधिराज की सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा समिति ने अनुसंधान अधिकारी श्री आर.डी. खाती और श्री जे.आर. अधिकारी, शिक्षण संस्थाओं के प्रशासनिक और वित्तीय ढांचों तथा पाठ्यपुस्तकों के चयन के ढांचे के अध्ययन के लिए 25 जनवरी से 2 फरवरी 1986 तक के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए।

20. डा. मारीन वुडहाल नामक एक प्रख्यात बर्तानवी शिक्षा-अर्थशास्त्री व योजनाकारक 3 फरवरी 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए और माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर एक व्याख्यान दिया।

21. बहरीन के शिक्षा मंत्री डा. अलीफखरू रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए और संकाय सदस्यों के साथ, परिषद की शिक्षण गतिविधियों पर चर्चा की।

22. जापान के शिक्षा मंत्रालय के शिक्षा और सांस्कृतिक विनियम प्रभाग के एक अधिकारी श्री तकाओ लिजावा, एपीड के विशेष संदर्भ में, एशिया और शान्त महासागर के देशों में शिक्षा की वर्तमान स्थिति के अध्ययन के लिए 4-10 मार्च 1986 तक के लिए रा.शै.अन.प्र. परिषद आए।

23. भूटान का ग्यारह सदस्यीय जोंधका अध्यापकों का एक प्रतिनिधि मण्डल, परिषद के कार्यक्रमों/गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए 14 मार्च, 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आया।

24. नीपा के, शिक्षण योजना और प्रशासन के द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय डिप्लोमा कार्यक्रम में आए, बंग्लादेश, जाम्बिया, तंजानिया, फीजी, घना और नामीबिया के प्रतिभागी 20 मार्च 1986 को रा.शै.अनु.प्र. परिषद आए और संकाय सदस्यों से, परिषद के कार्यक्रमों और गतिविधियों के बारे में चर्चा की।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के संकाय सदस्यों की

विदेशों में प्रतिनियुक्ति

1. प्रो. बाकर मेंहदी, डीन (समन्वयन), रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने कुआलालम्पूर में 8-13 जुलाई 1985 तक हुई, पाठ्यक्रम विकास की यूनेस्को उपक्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

2. डा. (कुमारी) एल.जी. सुमित्रा, रीडर, सी.आई.ई.टी. ने कुआलालम्पूर में 22 जुलाई से 2 अगस्त 1985 तक, असुविधाग्रस्त दलों व स्कूल से बाहर की जनता के साथ काम करने वाले समुदाय कार्यकर्ताओं व अध्यापकों के लिए जन संचार माध्यमों पर हुई यूनेस्को उप क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

3. डी.ई.एस.एम. के प्रोफेसर डा. बी.डी. अत्रे और डी.पी.एस.ई.ई. की रीडर श्रीमती एस. भट्टाचार्य ने बैंकाक में 20-31 अगस्त 1985 तक, प्राथमिक स्तर विज्ञान शिक्षा के लिए शिक्षण/सीखने की सामग्री के विकास पर हुई, एपीड क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

4. मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रो.सी. शेषादि ने पाकिस्तान में 8-19 सितम्बर 1985 तक, असुविधाग्रस्त दल के लिए शिक्षा तक पहुंच में सुधार पर हुई क्रियात्मक संगोष्ठी में भाग लिया।

5. डी.टी.ई.एस.ई. के रीडर डा. बी.आर. गोयल ने सियोल (कोरिया गणराज्य) में 16-27 सितम्बर 1985 तक, अध्यापकों द्वारा शिक्षा प्रौद्योगिकी के उपयोग पर हुई एपीड क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

6. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक के प्रभारी प्रोफेसर, प्रो.आर.एम. कालरा, एपीड/एम.डी.जी. सचिवालय के एक मुख्य व्यक्ति के रूप में 25 सितम्बर से 2 अक्तूबर 1985 तक के लिए, अध्ययन दौरे पर, थाइलैंड और फिलीपीन्स गए।

7. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के सं. विदेशक प्रो.ए.के. जलालुद्दीन ने तोकयो में 10-19 अक्तूबर 1985 तक, एपीड के तीसरे कार्यक्रम चक्र को, शिक्षा प्रौद्योगिकी पर हुई चौथी एशियाई संगोष्ठी में भाग लिया।

8. भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल प्रो.जे.एस. राजपूत ने इस्लामाबाद में 19 अक्तूबर से 1 नवंबर 1985 तक, विज्ञान पाठ्यक्रम बनाने वालों तथा अध्यापक शिक्षकों के लिए हुई क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

9. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक के रीडर श्री ओ.पी. गुप्ता ने, बैंकाक में 22 अक्तूबर से 8 नवंबर 1985 तक, ग्रामीण इलाकों में शिक्षा के अल्पविकास के कारणों की पहचान (चरण 1) पर हुई, एपीड क्षेत्रीय अध्ययन दल की बैठक में भाग लिया।

10. चीन के प्रारंभिक और गैर औपचारिक शिक्षा के अध्ययन के लिए, यूनिसेफ से सहायता प्राप्त कार्यक्रम के अन्तर्गत, डी.पी.एस.ई.ई. के लेक्चरर श्री के. रामचन्द्रन पांच सदस्यीय

भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के साथ 25 अक्तूबर से दो सप्ताह के लिए चीन गए।

11. डी.टी.ई.एस.ई. की अध्यक्ष डा. (श्रीमती) एस. शुक्ला ने, चियांगमाई, थाइलैंड में 29 अक्तूबर से 16 नवंबर 1985 तक, शिक्षा कार्मिकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण पर हुई एपीड क्षेत्रीय तकनीकी कार्यकारी दल तथा प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

12. डी.ई.एस.एम. के प्रो. के.जे. खुराना और भोपाल क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रो. एम.एस. खापरडे ने तोक्यो में 1-21 नवंबर 1985 तक, एशिया व प्रशान्त महासागर क्षेत्र में प्राथमिक विज्ञान शिक्षा की क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

13. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् की रीडर श्रीमती आर. सैनी ने तोक्यो में 6-10 नवंबर 1985 तक, एशिया/प्रशान्त महासागर संगीत सह-निर्माण कार्यक्रम-उपयोग व भविष्यत मिचोतान के विशेषज्ञों की ग्यारहवीं बैठक में भाग लिया।

14. डी.ई.पी.सी. तथा जी.की. डा. (श्रीमती) स्वदेश मोहन ने आस्ट्रेलिया में 5-14 नवंबर 1985 तक, महिलाओं व बालिकाओं के लिए राष्ट्रीय शिक्षण तथा व्यावसायिक मार्ग दर्शन में सुधार पर हुए क्षेत्रीय प्रशिक्षण में भाग लिया।

15. मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल प्रो. ए.के. शर्मा ने पेनांग, मलेशिया में 18 से 22 नवंबर 1985 तक, विज्ञान व गणित अध्यापन में माइक्रो कम्प्यूटर पर हुई यूनेस्को उपक्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

16. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के निदेशक डा. पी.एल. मल्होत्रा, पाकिस्तान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुरोध पर 13-18 जनवरी 1986 तक के लिए, विभिन्न विद्याशाखाओं में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने से संबंधित गतिविधियां बढ़ाने के अनुभवों के पारस्परिक विनिमय के लिए पाकिस्तान गए।

17. भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में भौतिकी के रीडर डा. ए.बी. सक्सेना ने, विज्ञान शिक्षण में चल दल के अन्तर्गत कोलम्बो के पाठ्यक्रम विकास केन्द्र के साधन व्यक्ति के रूप में 17 फरवरी से 8 मार्च 1986 तक कार्य किया।

18. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के डीन (शैक्षिक) प्रो. पी.एन. दवे ने तोक्यो, जापान में 20 जनवरी से 1 फरवरी 1986 तक, प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर शिक्षा उपलब्धियों के मूल्यांकन की प्रणाली की सूचना व अनुभवों के विनिमय के लिए, यूनेस्को आर.ओ.ई.पी., बैंकाक के सहयोग से जापान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान के अंतर्गत, एशिया व प्रशान्त क्षेत्र में शिक्षा उपलब्धियों पर हुई संगोष्ठी में भाग लिया।

19. डी.पी. एस.ई.ई. के लेक्चरर श्री के. रामचन्द्रन ने बांग्ला देश में 15-19 मार्च 1986 तक, प्राथमिक शिक्षा की समकालीन समस्याओं पर हुई कार्यशाला में भाग लिया।

20. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के निदेशक डा. पी.एल. मल्होत्रा ने पेरिस में 17-21 फरवरी 1986 तक, सामान्य शिक्षा के दायरे में पर्यावरणीय था विशेष विज्ञान अध्यापन पर हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

21. रा.शै.अनु. प्र. परिषद के निदेशक डा.पी.एल. मल्होत्रा के नेतृत्व में एक तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल, बांग्लादेश की तीसरी पंचवर्षीय योजना 1985-90 के दौरान उनकी शिक्षा विकास योजना तैयार करने के संदर्भ में, 11-16 सितम्बर 1985 तक के लिए बांग्ला देश गया।

यूनेस्को चल दल

1. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के निदेशक डा. पी.एल. मल्होत्रा, एशिया में व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा के यूनेस्को चल दल के अन्तर्गत 8-22 मई 1985 तक के लिए थाईलैण्ड, जापान और फिलीपीन्स गए।
2. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग के रीडर डा.पी. रायजादा, एशिया में व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा के यूनेस्को चल दल में अन्तर्गत 20-29 मई 1985 तक के लिए बैंकाक गए।

यूनेस्को एपीड संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

रा.शै.अनु.प्र. परिषद की डी.टी.ई.एल की लेक्चरर डा. (श्रीमती) सुदेश मुखोपाध्याय, भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के लेक्चरर डा. आई.डी. गुप्ता, रा.शै.अनु.प्र. परिषद के डी.टी.ई.ए.ई. की डा. प्रेमलता शर्मा, अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के लेक्चरर डा. एम.एस. समर और भुवनेश्वर डी.एम.एस. के श्री के.बी. रथ ने, कोयम्बूतर के रामकृष्ण शिक्षा महाविद्यालय में 12-24 अगस्त 1985 तक, विशेष शिक्षा पर हुई क्षेत्रीय संगोष्ठी तथा कार्यशाला में प्रतिभागियों/पर्यवेक्षकों के रूप में भाग लिया। इस कार्यशाला में रा.शै.अनु.प्र. परिषद के डी.टी.ई.एस.के. रीडर डा. एन.के. जंगीरा, यूनेस्को परामर्शदाता थे।

यूनेस्को/एपीड परियोजनाएं

एशिया और प्रशान्त क्षेत्र के विभिन्न देशों में बहुमुखी सहयोग की एक महत्वपूर्ण क्रियाविधि एपीड है (विकास के लिए शिक्षा नवाचार का एशिया तथा प्रशान्त क्षेत्रीय कार्यक्रम)।

राष्ट्रीय विकास की समस्याओं से जुड़े हुए शिक्षा नवाचारों को करने के लिए राष्ट्रीय सामर्थ्य बनाने की दिशा में योगदान देना एपीड का प्रथम ध्येय है, जिससे कि सदस्य देशों में जनता के जीवन की कोटि में सुधार होता है। यूनेस्को/एपीड कार्यक्रमों के संदर्भ में रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने निम्नलिखित परियोजनाएं/अध्ययन हाथ में लेने के लिए 1985-86 के दौरान यूनेस्को के साथ अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए :

1. वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय ज्ञान का प्रसार, प्रायोजिक आंकड़ों का विनिमय तथा विस्तार कार्यक्रमों का विकास।
2. शिक्षा में उत्पादन कार्य शामिल किए जाने से सम्बद्ध सामाजिक-आर्थिक तथा शैक्षिक घटकों की पहचान के लिए अध्ययन।
3. असुविधाग्रस्त दलों तथा स्कूलेतर जनता के साथ काम करने वाले अध्यापकों और समुदाय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए जनसंचार माध्यमों पर अनुवर्ती कार्यशाला।
4. प्राथमिक शिक्षा में नए विकासों पर धारणात्मक प्रलेख तैयार करना।
5. अध्यापन-सीखने की सामग्री तैयार करने के लिए राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं के प्राथमिक विज्ञान (अगस्त 1985 संगठन पर एपीड क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला की अनुवर्ती कार्रवाई।
6. पर्यावरण शिक्षा में आदि रूप बहु-माध्यमी प्रशिक्षण पैकेज तैयार करना।

यूनेस्को/एपीड कार्यक्रमों का संपर्क कार्य मुख्य रूप से दो प्राधिकरण करते हैं :–

1. यूनेस्को से सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
2. शिक्षा नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल, भारत

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

यूनेस्को, राष्ट्रमण्डल आदि द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के लिए प्रस्ताव तैयार करने के बाद में रा.शै.अनु.प्र. परिषद, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की सहायता करती है। इस संबंध में संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :–

1. अक्तूबर-नवंबर 1985 में सोफिया (बलोरिया) में हुए यूनेस्को के आम सम्मेलन के तेइसवें सत्र में यूनेस्को के ड्राफ्ट कार्यक्रम और 1986-87 के बजट (दस्तावेज 23 सी/5) पर विचार किया गया। रा.शै.अनु.प्र. परिषद द्वारा यूनेस्को के ड्राफ्ट कार्यक्रम और बजट पर दी गई टिप्पणियों/सुझावों पर, 21 सितंबर 1985 को, यूनेस्को से सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग के अठारहवें सत्र में विचार किया गया।
2. विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उचित शुरुआत के परिप्रेक्ष्य में प्राथमिक शिक्षा के सार्वीकरण ओर पुनर्नवीकरण से संबंधित, जेनेवा में 16 से 25 अक्तूबर, 1984 तक हुए अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन की सिफारिश संख्या 74 पर अनुवर्ती कार्रवाई करने का सुझाव रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने दिया।
3. रा.शै.अनु.प्र. परिषद ने, निकोसिया (साइप्रस) में 23 से 26 जुलाई 1984 को हुए, राष्ट्रमंडल शिक्षा मंत्रियों के नवें सम्मेलन की रिपोर्ट का अध्ययन किया और सिफारिशों पर अनुवर्ती कार्रवाई करने का सुझाव देते हुए, शिक्षा मंत्रालय को अपनी रिपोर्ट दी।

एन डी जी के अन्तर्गत गतिविधियां

एपीड के संदर्भ में भारत सरकार ने शिक्षा नवाचारों के लिए एक राष्ट्रीय विकास दल (एन.डी.जी.) बनाया। एशिया और प्रशांत क्षेत्र के 25 देश एपीड में आ चुके हैं। भारत में एपीड के सम्बद्ध केन्द्रों के रूप में राष्ट्रीय स्तर के 6 संगठनों, क्षेत्रीय स्तर की दो संस्थाओं और राज्य स्तर की 6 संस्थाओं को मान्यता प्राप्त है।

एन.डी.जी. का सचिवालय रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक में स्थित है। शिक्षा नवाचारों को तेज करने तथा समन्वय एवं क्लियरिंग हाउस के रूप में काम करने के लिए एन.डी.जी. का सचिवालय मुख्य रूप से जिम्मेदार है। एन.डी.जी और एपीड के बारे में पृष्ठभूमि की सूचना देते हुए एक पैम्फलेट छापा गया है जिसे विस्तृत रूप से प्रचार के इरादे से राज्यों तथा संघशासित प्रदेशों की विभिन्न संस्थाओं और संगठनों में भेजा गया। एन.डी.जी. पर एक पारदर्शियों का सैट भी तैयार किया गया है। 1985-86 के दौरान एन.डी.जी. सचिवालय ने 'एजुकेशनल इन्नोवेशन' (शिक्षा नवाचार)शीर्षक के त्रैमासिक समाचार पत्रक का जनवरी-मार्च 1985 का अंक प्रकाशित किया। इस समाचार पत्र के अप्रेल-जून 1985 के अंक की पाण्डुलिपि मुद्रण के लिए भेजी जा चुकी है। एन.डी.जी., विभिन्न शिक्षा विकास खण्डों (सामान्य शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, कृषि शिक्षा, ग्रामीण विकास आदि) में शिक्षा नवाचारियों के लिए एक मंच उपलब्ध कराता है जहां वे मिल सकते हैं और विकास के लिए शिक्षा नवाचारों पर क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित करके नवाचारी विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। आलोच्य वर्ष में एन.डी.जी. सचिवालय ने चण्डीगढ के तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान में 17 से 20 दिसंबर 1985 तक, विकास के लिए शिक्षा नवाचारों पर एक क्षेत्रीय संगोष्ठी (उत्तरी क्षेत्र) आयोजित की। इस संगोष्ठी में जम्मू व कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ, दिल्ली और उत्तर प्रदेश

राज्यों/संघशासित प्रदेशों के व्यक्तियों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। विभिन्न शिक्षा विकास खण्डों के 35 शिक्षा नवाचारियों ने संगोष्ठी में भाग लिया। गोष्ठी में सामान्य शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कृषि शिक्षा और ग्रामीण विकास में शिक्षा नवाचारों पर 25 प्रलेख प्रस्तुत किए गए और उन पर चर्चा हुई।

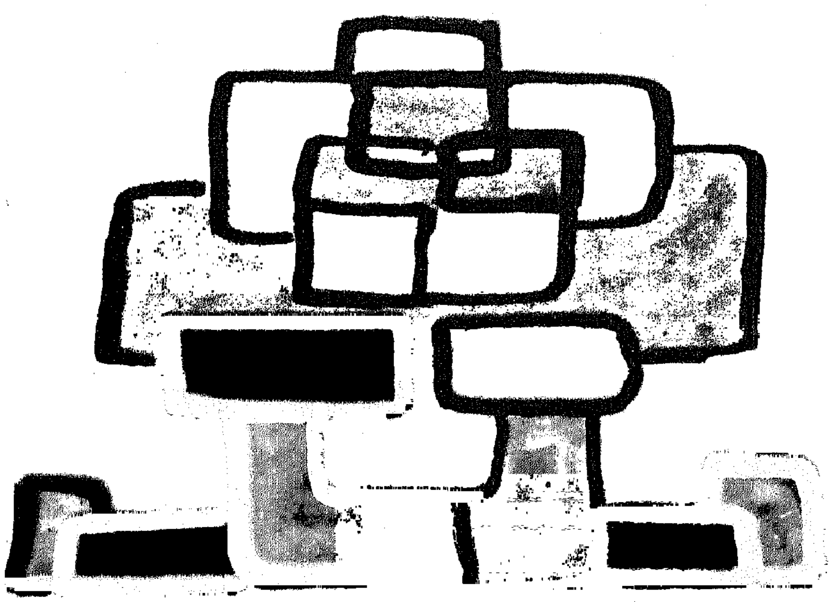
एन.डी.जी. बैठक

एन.डी.जी. की सामान्य सभा की, 31 जनवरी 1986 को हुई बैठक में, उत्तर प्रदेश के निम्नलिखित संगठनों की एपीड का सम्बद्ध केंद्र बनाने पर सहमति हुई :

1. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
2. साक्षरता सदन, लखनऊ

इन संगठनों के एपीड से सम्बद्ध केन्द्र के रूप में यूनेस्को से मान्यता का अनुमोदन प्राप्त करवाने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

बैठक में प्रभावी अन्तरा खण्ड, अन्तरा राज्य और अन्तः राज्य सहयोग और समन्वय के लिए एन.डी.जी. के पूरक विकास दल के रूप में, प्रत्येक राज्य तथा संघशासित प्रदेश में शिक्षा नवाचारों के लिए एक राज्य विकास दल (एस.डी.जी.) बनाए जाने की जरूरत महसूस की गई और आशा व्यक्त की गई कि इस संबंध में प्रत्येक राज्य इसकी शुरूआत करेगा। प्रत्येक एस.डी.जी. में, सामान्य शिक्षा, गैर औपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण शिक्षा, कृषि शिक्षा, ग्रामीण विकास, समाज कल्याण आदि जैसे विभिन्न शिक्षा विकास खण्डों में, प्रत्येक राज्य/संघशासित प्रदेश की कुछ अग्रणी संस्थाएं और संगठन शामिल होंगे। यह प्रस्ताव है कि सभी एस.डी.जी. के अध्यक्षों का, एन.डी.जी. की सामान्य सभा में प्रतिनिधित्व हो। इस प्रकार एस.डी.जी. के बनाने में एन.डी.जी. काफी विस्तृत आधार वाला बनेगा जिसमें सभी राज्यों तथा संघशासित प्रदेशों के प्रतिनिधि होंगे। आशा की जाती है कि यह व्यवस्था देश में नवाचारी प्रक्रियाओं के उचित उड्डीयन में सहायक होगी और विकास के लिए शिक्षा नवाचारों के क्षेत्र में अन्तरा खण्डीय और बहुखण्डीय समन्वयन तथा सहयोग के लिए उपयुक्त जरिया उपलब्ध कराएगी।



परिषद के नियमों, विनियमों और प्रक्रमों के अनुसार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सचिवालय ने अपनी गृह व्यवस्था का कार्य करना जारी रखा।

प्रशासनिक और कल्याण गतिविधियाँ

वांछित सूचना नीचे दी जा रही है :—

स्टाफ कल्याण के उपाय के तौर पर परिषद ने अपने कर्मचारियों के लिए खेल-कूद की सुविधाएं उपलब्ध कराना जारी रखा।

पांचवां अन्तरा-क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) टूर्नामेंट मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में 9.12.1985 से 12.12.1986 तक आयोजित कराया गया। इसमें क्रिकेट, वालीबाल, बास्केट बाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, टेनिस और फुटबाल की प्रतियोगिताएं हुई। खेलों में 175 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। उन्होंने इसमें गहरी रुचि दिखाई और वे बन्धुत्व की भावना से खेले। टूर्नामेंट काफी सफल रहा।

दिल्ली में परिषद के कर्मचारियों की जोरदार मांग को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न वर्गों के 104 और स्टाफ क्वार्टर बनाने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग को रु. 1.05 करोड़ की राशि दी जा चुकी है। इन क्वार्टरों के लिए, के.लो.नि.वि. के वरिष्ठ वास्तुकार से नक्शे बना कर डी.यू.ए.सी. व दिल्ली विकास प्राधिकरण के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किए। कार्य शीघ्र शुरू होने की संभावना है। आवासियों और स्टाफ के हित के लिए राष्ट्रीय शिक्षक संस्थान के प्रांगण में 24 दुकानों और एक समुदाय भवन वाला विपणन संकुल (शापिंग कम्प्लेक्स) बनाया जाएगा। के.लो.नि.वि. को रु. 16,40,300.00 की राशि दी जा चुकी है। काम जल्दी शुरू करवाने के इरादे से, इस मामले में के.लो.नि.वि. के पीछे पड़े हुए हैं। एन.आई.ई अतिथि गृह में एक लिफ्ट तथा दस और कमरे उपलब्ध कराने के लिए के.लो.नि.वि. द्वारा किया जा रहा निर्माण कार्य शीघ्र ही पूरा होने की संभावना है।

एन.आई.ई. प्रांगण में बागों और हरे मैदानों आदि के विकास के लिए, के.लो.नि.वि. से कुछ और पम्प लगवा कर बिना छने पानी की आपूर्ति में राहत दिलवाई गई है।

1985-86 के दौरान आंतरिक कार्य अध्ययन एकक ने निम्नलिखित अध्ययन किए :

1. पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरण शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम पुनर्नवीकरण, समुदाय शिक्षा और भाग लेना, प्रारंभिक शैशव शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा के लिए विस्तृत पहुंच पर यूनिसेफ की पांच परियोजनाओं के लिए लिपिकवर्गीय पदों को जारी रखने के लिए अध्ययन।
2. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के मुख्यालय में चपरासियों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं पर अध्ययन रिपोर्ट, जिसका पहला मसौदा, परिषद के अधिकारियों द्वारा अन्तिम प्रगति रिपोर्ट प्राप्त होने पर अन्तिम रूप दिए जाने और स्वीकार किए जाने के समय तैयार था।
3. रा.शै.अनु.प्र. परिषद के मुख्यालय में दफ्तरियों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं के मूल्यांकन के लिए अध्ययन।
4. ऊपर मद सं (1) में बताई गई यूनिसेफ परियोजनाओं में से कुछ के लिए पैकिंग करने वालों के पद बनाने के लिए एक अलग अध्ययन किया गया और रिपोर्ट दी गई।
5. अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में चौकीदारों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं के लिए अध्ययन।
6. रा.शै.अनु.प्र. परिषद मुख्यालय में, सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंधन संस्थान द्वारा आयोजित प्रबंधन के उन्नत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षुओं के एक दल द्वारा, लेखा शाखा के स्टाफ मूल्यांकन के अध्ययन से यह एकक सम्बद्ध रहा। इस रिपोर्ट के आधार पर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी और लेखा अधिकारी (प्रत्येक 1) के अतिरिक्त पद बनाने के लिए एक रिपोर्ट अलग से बना कर दी गई।
7. संयुक्त निदेशक (परिषद सचिवालय), संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. तथा सचिव, रा.शै.अनु.प्र. परिषद के कार्यालयों में निजी सचिवों के पदों की आवश्यकताओं के मूल्यांकन के लिए अध्ययन।
8. भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के लिए चौकीदारों के अतिरिक्त पदों की आवश्यकताओं के लिए अध्ययन किया गया। इसकी रिपोर्ट हालांकि, अभी तैयार हो रही है।

एकक द्वारा पिछले वर्षों में किए गए विभिन्न अध्ययनों, विशेषकर प्रकाशन विभाग के और परिषद सचिवालय में हिंदी के पदों की आवश्यकताओं के अध्ययनों पर अनुवर्ती कार्रवाई की गई।

ऊपर बताए गए अध्ययन करने के अलावा, आई.डब्लू.एस.यू. ने रिकार्ड प्रबंधन तथा कार्य निपटाने में देरी रोकने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किए। रिकार्ड प्रबंधन के लिए एकक ने, एन.आई.ई. के विभागों तथा परिषद-सचिवालय के विभागों के कार्यक्रमों/गतिविधियों से संबंधित

रिकार्डों के लिए रिकार्ड प्रतिरक्षण कार्यक्रम बनाया। सचिवालय रिकार्डों के लिए प्रतिरक्षण कार्यक्रम मुख्य रूप से भारत सरकार के सचिवालय के लिए बनाए गए कार्यक्रमों से अपनाए गए। पुराने रिकार्डों पर पुनर्विचार करने और जिन रिकार्डों की अब आवश्यकता की संभावना नहीं है उन्हें नष्ट करने के तरीकों को सरल बनाने के लिए कुछ अन्य कदम उठाए गए।

हिंदी सेल की गतिविधियाँ

रा.शै.अनु.प्र. परिषद के हिंदी सेल ने, कार्यालयीन कार्यों के लिए हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए, नीचे लिए कार्य किए :—

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हिंदी सेल ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन त्रैमासिक बैठकें क्रमशः 8 मार्च 1985, 3 सितंबर 1985 और 13 मार्च 1986 को आयोजित कीं।

रा.शै.अनु.प्र. परिषद की राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने, परिषद के विभिन्न विभागों/अनुभागों में हिंदी की प्रगति पर पुनर्विचार करने और उनके रास्ते में आने वाली कठिनाइयों की पहचान करने के लिए एक उपसमिति बनाई। इस प्रकार इस उप समिति ने अब तक निम्नलिखित विभागों/अनुभागों में अपना काम पूरा कर लिया है :

(1) स्थापना I अनुभाग
(2) स्थापना III अनुभाग
(3) स्थापना I अनुभाग
(4) सी.आई.ई.टी.
(5) मैसूर और भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
(6) बंगलौर तथा भुवनेश्वर के क्षेत्र कार्यालय

इसके अतिरिक्त, अजमेर, भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय महाविद्यालयों में राजभाषा उप समितियां गठित की गई हैं।

सामग्री का वितरण

सेल ने परिषद के विभिन्न विभागों और एककों में निम्नलिखित का वितरण किया :

1. हिंदी के प्रयोग से संबंधित आदेशों का संकलन– 75 प्रतियां
2. देवनागरी टाइपराइटिंग प्रशिक्षक– 20 प्रतियां

अनुवाद

परिषद की वार्षिक डायरी की हिंदी सामग्री के अलावा सी.आई.ई.टी. की दो रिपोर्टों का अनुवाद किया गया। प्रशासनिक कार्य में इस्तेमाल किए जाने वाले 108 अनुदित फार्मों की एक सूची भी.परिषद में संचारित की गई।

प्रशिक्षण

1985-86 के दौरान परिषद के 14 कर्मचारियों को हिंदी टंकण में प्रशिक्षित किया गया। 6 कर्मचारी, गृह मंत्रालय द्वारा जनवरी 1986 में आयोजित हिंदी टंकण परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

हिंदी के पद बनाना

परिषद मुख्यालय में सहायक जन सम्पर्क अधिकारी का एक पद बनाया गया, जिसके लिए चुनाव हो चुका है। नियुक्ति की जानी है। हिंदी सेल में हिंदी अधिकारी और हिंदी सहायकों के पद बनाए गए हैं। नियुक्ति की जानी है।

कार्यक्रमानुसार हिंदी सेल, हिंदी की प्रगति की त्रैमासिक रिपोर्ट, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) को भेजी जा रही है।

वित्त

वर्ष 1985-86 के लिए रा.शै.अनु.प्र. परिषद की प्राप्तियों व भुगतानों के समेकित लेखे नीचे दिए जा रहे हैं.

I

प्राप्ति			भुगतान		
आरंभ में बकाया			*अधिकारियों का वेतन*		
रोकड़ और बैंक	4,15,02,804,00		योजना बाह्य	1,25,76,124.00	
सामान्य भविष्य निधि			योजना	40,880.00	1,26,17,004.00
अंशदायी भविष्य निधि,			*स्थापना का वेतन*		
बचत खातें में निधि,					
ट्रांजिट रोकड़ में	2,42,000.00		योजना बाह्य	1,02,95,640.00	
टी 39	27,39,927.00		योजना	42,666.00	1,03,38,306.00
		4,44,84,731.00	भत्ते और मानदेय		

1985-86

प्राप्ति			
बजट खर्चों के लिए, मानव संसाधन विकास मंत्रालय से प्राप्त अनुदान			
योजना बाह्य	10,67,77,994.00		
योजना		1,81,61,408.00	12,49,39,402.00
विशिष्ट योजनाओं से संबंधित अनुदान और वापसी (सूची संलग्न)			9,47,49,750.00
परिषद की प्राप्तियां			
परिषद भवन का किराया			12,09,496.00
कर्ज पर ब्याज		87,826.00	
एस.टी.आई. पर ब्याज		335,068.00	4,22,894.00
अधिभुगतान की वसूली			13,70,509.00
सांइस किटों की बिक्री			23,84,245.00
शुल्क और प्रभार			5,48,301.00
प्रकाशनों की बिक्री			3,52,41,482.00
छुट्टी वेतन और पेंशन योगदान			72,318.00
के.स.स्वा.से.			42,750.00
विविध प्राप्तियां परिषद से			15,04,880.00
टी 39 खाते में		210.00	15,05,090.00
सा.भ.नि. अं.भ.नि. पर ब्याज पूंजी निवेश		33,32,981.00	
बचत खाते पर ब्याज		1,68,498.00	35,01,479.00
टी 39 में रायल्टी			6,526.00

भुगतान		
भत्ते और मानदेय		
योजना बाह्य	3,88,24,950.00	
योजना	1,59,452.00	3,89,84,402.00
यात्रा भत्ता		
योजना बाह्य		9,29,399.00
अन्य प्रभार		
योजना बाह्य	1,61,54,496.00	
योजना	1,15,927.00	1,62,70,423.00
छात्रवृत्तियां/फैलोशिप		
योजना बाह्य	7,95,501.00	
योजना	4,96,080.00	12,91,581.00
कार्यक्रम		
योजना बाह्य	4,19,93,430.00	
योजना	1,16,95,309.00	5,36,88,739.00
उपस्कर और फर्नीचर		
योजना बाह्य	20,47,089.00	
योजना	39,46,359.00	59,93,448.00
भूमि और भवन		
योजना बाह्य	51,09,581.00	
योजना	78,08,682.00	1,29,18,262.00
विविध भुगतान		
पेंशन व ग्रेज्युटी		28,87,838.00
(मुख्यालय, क्षे.शि.म. तथा एफ.ए.)		1,48,850.00
लेखा परीक्षा शुल्क		
एल.एस.पी.सी.		69,400.00
जमा (निक्षेप) से जुड़ी बीमा योजना		12,564.00
विज्ञापन		5,25,208.00
के.स.स्वा.से.		5,04,336.00
सा.भ.नि. (अं.भ.नि. और नियोक्ता शेयर पर ब्याज		30,00,000.00
मकान किराया		15,880.00
सा.भ.नि. (अं.भ.नि. निवेश पर दलाली		61,553.00
सी.आई.ई.टी. द्वारा अन्य भुगतान		
योजना बाह्य	4,289.00	
योजना	500.00	4,789.00
विशिष्ट परियोजनाओं पर खर्च (सूची संलग्न)		2,70,06,524.00

1985-86

रा.शै.अनु.प्र. परिषद के स्टाफ के कर्ज और अग्रिम राशि (पेशगी) का भुगतान और वसूली

स्कूटर, कार पेशगी		1,70,176.00	स्कूटर, कार पेशगी		6,81,195.00
साइकिल पेशगी		44,318.00	साइकिल पेशगी		75,942.00
पंखा पेशगी		5,640.00	पंखा पेशगी		26,400.00
भवन निर्माण पेशगी		19,80,645.00	भवन निर्माण पेशगी		27,59,088.00
उत्सव पेशगी		3,12,961.00	उत्सव पेशगी		5,38,095.00
बाढ़ पेशगी		50,940.00	बाढ़ पेशगी		2,300.00
स्थानांतरण पर वेतन और यात्रा भत्ता पेशगी		29,609.00	स्थानांतरण पर वेतन और यात्रा भत्ता पेशगी		30,264.00
स्थायी पेशगी		6,700.00	स्थायी पेशगी		6,700.00
निधियां और संचयी जमा योजना					
सा.भ.नि.		1,09,80,844.00	सा.भ.नि. चालू खाता	23,61,373.00	
अं.भ.नि.		7,81,648.00	टी- 39	40,37,143.00	63,98,516.00
सं.ज.यो.		---			
			अं.भ.नि. चालू खाता	9,32,362.00	
				6,73,839.00	16,06,201.00
			सं.ज.यो.		2,129.00
जमा					
बयाना धन और सुरक्षा जमा		5,63,402.00	बयाना धन और सुरक्षा जमा		1,15,191.00
साइंस किटों के लिए प्राप्त पेशगी		15,75,000.00	साइंस किटों के लिए प्राप्त पेशगी		19,04,175.00
जमानत का धन		1,58,986.00	जमानत का धन		95,000.00
अन्य जमा		25,85,841.00	अन्य जमा		4,73,614.00
सामूहिक बीमा योजना		4,21,408.00	सामूहिक बीमा योजना		2,90,175.00
सा.भ.नि., अं.भ.नि. निवेश (टी 39 खाते से)		24,61,400.00	सा.भ.नि., अं.भ.नि. निवेश (टी 39 खाते से)		72,62,580.00
अल्पकालिक निवेश (टी 39 खाते से)		11,49,00,000.00	अल्पकालिक निवेश		11,49,00,000.00
सा.भ.नि., अं.भ.नि. बचत खाते			टी 39 को निधि का अंतरण		80,53,179.00
टी 39 को निधि का अंतरण (टी 39 खाते से)		80,53,179.00			8,30,974.00
उचन्त		49,397.00	उचंत		8,30,974.00
विप्रेषित धन राशि					
सा.भ.नि., अं.भ.नि. विप्रेषण		1,23,394.00	सा.भ.नि., अं.भ.नि. विप्रेषण		1,22,954.00
डी.जी.बी., जी.बी.नि. विप्रेषण		82,342.00	डी.जी.बी., जी.बी.नि. विप्रेषण		79,735.00
विविध विप्रेषण		62,045.00	विविध विप्रेषण		56,892.00
उपकार्यालय विप्रेषण		47,49,299.00	उप कार्यालय विप्रेषण		38,75,863.00
आयकर विप्रेषण		5,80,438.00	आयकर विप्रेषण		5,74,158.00
मृत्यु सहायता योजना		36,708.00	मृत्यु सहायता योजना		30,978.00
टी.सी.एस. विप्रेषण		2,78,759.00	टी.सी.एस. विप्रेषण		2,77,331.00
आवधिक विप्रेषण		5,94,96,000.00	आवधिक विप्रेषण	6,17,94,000.00	
पारवहन गत निधि	2,42,000.00	592,54,000.00	घटा-पारावहनगत निधि	25,40,000.00	592,54,000.00
			अंतिम शेष		
			हाथ रोकड़ व बैंक राशि	11,94,26,290.00	
			पारवहनगत निधि	25,40,000.00	
			टी 39 बचत खाते में रोकड़	12,19,601.00	12,31,85,891.00
कुल जोड़ :		52,07,78,027.00	कुल जोड़ :		52,07,78,027.00

1985-86

परिशिष्ट– 'क'

व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को सहायता की योजना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने शिक्षा और शिक्षा नवाचारों के क्षेत्र में स्वैच्छिक प्रयासों के महत्व को हमेशा से मान्यता दी है। देश में शिक्षा के रूपान्तरण के लिए, व्यावसायिक शिक्षा संगठनों का, संस्थाओं और अध्यापकों/शिक्षकों के साथ गहरा सम्पर्क एक अच्छा उत्प्रेरक है। इसे ध्यान में रखते हुए रा.शै.अनु.प्र. परिषद, शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय में प्रचलित योजना के अनुसार पिछले कुछ वर्षों से व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को वित्तीय सहायता देने की योजना चलाती आ रही है।

योजना के मुख्य विवरण, वर्तमान स्थिति में, इस प्रकार है :

उद्देश्य

योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नांकित हैं :

1. शिक्षा, विशेष रूप से स्कूली शिक्षा में सुधार के लिए स्वैच्छिक प्रयासों को बनाए रखना और बढ़ावा देना।
2. व्यावसायिक प्रकृति की, उत्तम कोटि की पत्रिकाओं को प्रोत्साहन देना, जो शिक्षा नवाचारों के प्रचार में सहायक हों।
3. शिक्षा में, स्वैच्छिक संगठनों के माध्यमिक से विस्तार कार्य का बढ़ावा देना।

पात्रता की शर्तें

संगठन

1. कोई भी व्यावसायिक शिक्षा संगठन (पी.ई.सी.) रा.शै.अनु.प्र. परिषद से योजना के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने का पात्र तब ही होगा जबकि यह ऐसा हो :–

(क) सोसायटी पंजीकरण अधिनियम (1860) का अधिनियम XXI) के तहत पंजीकृत सोसायटी ; या जिन मसलों से रा.शै.अनु.प्र. परिषद का वास्ता हो और/या जो रा.शै.अनु.प्र. परिषद के कार्यों में सहायक हो.और रा.शै.अनु.प्र. परिषद के उद्देश्यों के प्रवर्धन में लाभकर हो।

(ख) शिक्षा साहित्य का उत्पादन, जिसमें व्यावसायिक पत्रिकाएं तो शामिल हों लेकिन पाठ्यपुस्तक सामग्री नहीं।

(ग) शिक्षा प्रदर्शनियां, यदि उनका संबंध शिक्षा नवाचारो से या स्थानीय प्रकृति के अन्य शिक्षा विकासों में हो।

2. सामान्यतः निम्नलिखित के लिए कोई अनुदान नहीं दिया जाएगा :–

(क) संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, विशेषकर जिस प्रकार की रा.शै.अनु.प्र. परिषद आयोजित कर सकता है या कर रहा है।

(ख) अनुसंधान परियोजनाएं

अनुदान का परिमाण

संगठनों को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् पर बहुत अधिक निर्भर होने से बचाने के लिए इस योजना के अन्तर्गत अनुदान केवल निम्नलिखित के अनुसार साझे के आधार पर ही दी जाएगी :–

1. रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा दिया जाने वाला, सहायता अनुदान सामान्यतः वर्ष के दौरान की गतिविधि पर होने वाले खर्च 60 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा।
2. खर्च के शेष 40 प्रतिशत की व्यवस्था संगठन के स्वयं ही अन्य स्रोतों, जैसे अन्य संगठनों से प्राप्त अनुदान या बिक्री से आय, पत्रिकाओं के चंदों या विज्ञापनों से करनी होगी। इन स्रोतों से होने वाली आमदनी यदि 40 प्रतिशत से अधिक हो जाती है तो परिषद का हिस्सा तदनुसार कम हो जाएगा।
3. यदि किसी कारण से वर्ष के दौरान परिषद का अनुदान खर्च को स्वीकार्य 60 प्रतिशत राशि से अधिक हो जाता है या अन्य स्रोतों से यह कम हो जाता है तो अधिक दी गई राशि या तो अगले वर्ष के अनुदान से वसूल कर ली जा सकती है या समायोजित की जा सकती है।

उदाहरण

यदि किसी गतिविधि पर वास्तविक खर्च रु. 1700.00 हुआ है, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद का अनुदान रु. 1500 है और अन्य स्रोतों से आय रु. 900.00 है।

(क) खर्च का 60 प्रतिशत	=रु. 1020.00
(ख) अन्य स्रोतों से आय के मुकाबले खर्च अधिक (रु. 1700- रु. 900)	= 800.00

वसूली की राशिः अनुदान में (क) या (ख) में से जो कम हो वह घटाकर रु. 1500-800= रु. 700

आवेदन का तरीका

1. सभी पी.ई.ओ. को चाहिए कि परिशिष्ट में दिए गए आवेदन पत्र को हर तरह से पूरा भर के, दो प्रतियों में अपना आवेदन दें।
2. प्रत्येक कार्यक्रम या गतिविधि के लिए अलग-अलग आवेदन दिये जाने चाहिएं।

3. प्रत्येक आवेदन के साथ निम्नलिखित दस्तावेज होने चाहिएं :—

(क) संस्था/संगठन को विवरण-पत्रिका (प्रास्पैक्ट्स) या इसके उद्देश्यों और गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण

(ख) संगठन का संविधान

(ग) उपलब्ध अघतन वार्षिक रिपोर्ट की प्रति

(घ) पत्रिकाओं/अन्य सामग्री के प्रकाशन के लिए अनुदान के लिए अनुरोध के मामलों में पत्रिकाओं के पूर्ववर्ती अंको/पूर्ववर्ती प्रकाशनों की प्रतियाँ।

(ङ) संगठन के पिछले वर्ष के लेखा परीक्षित लेखा विवरण के साथ निम्नलिखित प्रपत्र में उपयोग प्रमाणपत्र, जिस पर संस्था के अध्यक्ष/सचिव तथा लेखापरीक्षकों (सनदी लेखापालों आदि) के हस्ताक्षर हों।

"रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा.................के लिए संस्वीकृत अनुदान के बारे में .... के लेखे का सत्यापन वाउचरों की सहायता से कर लिया है और प्रमाणित करता हूं कि वे सही है और जिस कार्य के लिए अनुदान दिया गया था उसके लिए उसका इस्तेमाल किया गया।"

इसी प्रकार फार्म में एक अलग उपयोग प्रमाण पत्र और/या जिस कार्य के लिए अनुदान दिया गया था, शुद्ध रूप से उस पर हुए खर्च का विवरण।

ऊपर बताए गए दस्तावेजों के अभाव में कोई भी अनुदान संस्वीकृत नहीं किया जा सकता।

सामान्य

1. पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए अनुदान के मामले में पी.ई.सी. को रा.शै.अनु. और प्र. परिषद का एक विज्ञापन बिना शुल्क के, पत्रिका में देना होगा।
2. वार्षिक सम्मेलनों के मामले में, संगठन को रा.शै.अनु. और प्र. परिषद के कुछ प्रतिनिधियों को सम्मेलन के साथ सम्बद्ध करना चाहिए।
3. अनुदान में से पूर्ण रूप से या काफी हद तक अर्जित परिसम्पत्तियों का रिकॉर्ड, संस्था/संगठन को रखना चाहिए। ऐसी परिसम्पत्तियों को, अनुदान दिए गए कार्य के अलावा किसी और कार्य के लिए, रा.शै. अनु. और प्र. परिषद् की पूर्व संस्वीकृति के बिना न तो बेचना चाहिए, न ऋणग्रस्त करना चाहिए और न प्रयोग करना चाहिए। यदि किसी भी समय संस्था/संगठन का वजूद ही खत्म हो जाए तो ऐसी सम्पत्तियां वापस रा.शै.अनु. और प्र. परिषद की लौट जाएंगी।
4. लेखे और समर्थक दस्तावेज, भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक द्वारा उनकी इच्छानुसार परीक्षण जांच के लिए उपलब्ध होने चाहिएं।
5. यदि कुछ कारणों से रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् को यकीनं हो जाए कि जिस कार्य के लिए अनुदान दिया गया था उसके लिए प्रयोग नहीं किया गया तो अनुदान वापस लिया जा सकता है और आगे के लिए अनुदान बंद किया जा सकता है।
6. रा.शै.अनु. और प्र. परिषद द्वारा अनुमोदित और सहायता प्राप्त कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में संगठन को बेहद मितव्ययता बरतनी चाहिए।
7. अनुदान के लिए आवेदन, रा.शै.अनु.प्र. परिषद् के सचिव को दिए जाने चाहिएं।

आवेदन पत्र

(तीन प्रतियां दी जानी हैं)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को
सहायता की योजना

नोट : *जो आवेदन अधूरे प्राप्त होंगे उनपर गौर नहीं किया जाएगा।*

(आवेदक द्वारा भरे जाने के लिए)

1. संस्था/संगठन का नाम
2. संस्था/संगठन का संक्षिप्त इतिहास और इसके उद्देश्य तथा गतिविधियां
3. क्या भारतीय सोसाइटीज़ पंजीकरण अधिनियम, 1860 (1860) का अधिनियम (XXI) या फिलहाल लागू किसी अन्य नियम के अन्तर्गत पंजीकृत?
4. क्या संस्था के कम से कम 50 सदस्य दर्ज हैं?
5. केन्द्र/राज्य सरकारों के विभागों और/या केन्द्र/राज्य सरकारो द्वारा स्थापित संस्थाओं से चाहे गए अनुदान का विवरण और आवेदन में जिस कार्य के लिए वित्तीय सहायता मांगी गई है उसके लिए संस्वीकृत/संभावित संस्वीकृति की राशि।
6. कार्यक्रम गतिविधि का विस्तृत वर्णन, जिसके लिए सहायता का अनुरोध किया गया है– अनुमानित खर्च, खर्च की अवस्थाएं– पुनरावर्ती और गैरपुनरावर्ती खर्चे अलग-अलग बताते हुए।
7. अतिरिक्त सूचना, यदि कोई हो तो,

प्रमाणित किया जाता है कि आवेदन में दी गई सूचना, मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।

प्रमाणित किया जाता है कि जिन गतिविधियों के लिए इस आवेदन में वित्तीय सहायता का अनुरोध किया गया है, केन्द्र/राज्य सरकार या उनके द्वारा स्थापित किसी संस्था को किसी भी अन्य योजना के अन्तर्गत नहीं आती।

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने, पी.ई.ओ को वित्तीय सहायता की

रा.शै.अनु.प्र. परिषद की योजना को ध्यानपूर्वक पढ़ लिया है और उसके उपबंधों का पालन करने का वचन देता हूं।

हस्ताक्षर ....

(पूरा नाम बड़े अक्षरों में)

पद ....

पूरा पता ....

....

....

संगठन की सील ....

नोट : आवेदन हर प्रकार से पूर्ण होना चाहिए और योजना के पैरा 4 में बताए सभी दस्तावेजों से समर्थित होना चाहिए।

पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए 1985-86 में व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को रा.शै.अनु.प्र. परिषद् द्वारा दिया गया अनुदान

क्र.सं	संगठन का नाम	पत्रिका का नाम	संस्वीकृत राशि
1	2	3	4
1.	भारतीय मनोमापी और शिक्षा अनुसंधान संस्था, पटना विश्वविद्यालय, पटना	*"इंडियन जरनल आफ साइकोमेट्री एण्ड एजुकेशन"*	रु. 5000.00
2.	विज्ञान शिक्षा उन्नति संस्था, 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मादवेलियकम, मद्रास- 28	*"जूनियर साइंटिस्ट"*	रु. 4500.00
3.	एस.आइ.टी.यू. शैक्षिक अनुसंधान परिषद, 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंक रोड मादवेलिपकम, मद्रास- 28	*"एक्सपेरिमेंट्स इन एजुकेशन"*	रु. 3000.00
4.	विकलांगों के लिए समेकित शिक्षा, पुनर्वास और अनुसंधान केंद्र, एस- 601, स्कूल ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली- 110092	*"इंडियन जरनल आफ इंटेग्रेटेड एजुकेशन*	रु. 4000.00
5.	अखिल भारतीय विज्ञान अध्यापक संस्था, द्वारा स्कूल पूर्व शिक्षा विभाग रा.शै.अनु.प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16	*"विज्ञान शिक्षक"*	रु. 4000.00
6.	गणित अध्यापन सुधार संस्थान, 25 फर्म रोड, कलकत्ता	*"इंडियन जरनल आफ मैथेमेटिकस टीचिंग"*	रु. 4000.00
7.	भारतीय अंग्रेजी भाषा अध्यापक संस्था 3, फर्स्ट ट्रस्ट लिंग स्ट्रीट, मांदवेलिपकम, मद्रास- 28	*"जनरल आफ इंग्लिश लैंगुएज टीचिंग"*	रु. 4000.00
8.	भारतीय स्कूल-पूर्व शिक्षा संस्था,	*"बालक"*	रु. 2500.00
9.	भारतीय भौतिकी संस्था द्वारा--टाटा आधारभूत अनुसंधान संस्थान होमी भाभा मार्ग, बंबई- 400005	*"फिजिक्स न्यूज"*	रु. 5000.00

1985-86 में संगोष्ठियां/सम्मेलन आयोजित करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा संगठनों को रा.शै.अनु.प्र. परिषद द्वारा दिए गए अनुदान

क्र.सं	संगठन का नाम	आशय	संस्वीकृत राशि
1	2	3	4
1.	भारतीय शिक्षा नियोजन एवं प्रशासन संस्था, 17-बी, श्री अरबिंद मार्ग, नई दिल्ली- 16.	"नई शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्यों पर संगोष्ठी"	रु. 5000.00
2.	भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी, ईश्वर सरन डिग्री कालेज, इलाहाबाद	"राष्ट्रीय उद्देश्यों और जन संचार माध्यमों की राष्ट्रीय संगोष्ठी	रु. 5000.00
3.	केन्द्रीय भवन निर्माण अनुसंधान संस्थान, रुड़की 247667	"अफ्रीकी-एशियाई देशों लिए स्कूल भवन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	रु. 40000.00
4.	भारतीय अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान अकादमी, बनारस हिंदू विश्व-विद्यालय, वाराणसी- 221005	प्रतिभा खोज और इसके पालन पर 23 वां वार्षिक सम्मेलन और कार्यक्रमबद्ध सीखने तथा शिक्षा के विकास पर स्तर के विशेष संदर्भ में शिक्षा मनोविज्ञान में वर्तमान अनुसंधान की स्थिति एवं समस्याओं पर चर्चा	रु. 5000.00
5.	भारतीय पर्यावरण समिति (योजना एवं वास्तुकला स्कूल) पो.आ.बाक्स सं. 7033 इन्द्रप्रस्थ मुख्य डाकघर, नई दिल्ली- 2	पर्यावरण शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	रु. 5000.00
6.	द फैन्ड्स एट आर्काइव्स ग्रुप भारतीय राष्ट्रीय पुरात्तव	उत्तर-पूर्व भारत में 16वीं से 19 वीं शताब्दी के मध्य	रु. 6000.00

1	2	3	4
	1, जनपथ, नई दिल्ली	तक की भाषाओं तथा साहित्य में भारतीय इतिहास के स्रोत पर संगोष्ठी	
7.	विकलांगों के लिए समेकित	समेकित शिक्षा में विकलांग	रु. 4000.00

1	2	3	4
	शिक्षा, पुनर्वास और अनुसंधान केन्द्र, एस- 601, स्कूल ब्लाक शकरपुर, दिल्ली- 92	बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री के बारे में चर्चा करने के लिए चौथा वार्षिक सम्मेलन	

परिशिष्ट ख

राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों के पते

			दूरभाष	
			कार्यालय	निवास
1.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 3.6.69/ बी/7 हैदराबाद	आंध्र प्रदेश	35873	227207
2.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) जू नारंगी रोड साहेब तिल्ला, गुवाहाटी-781024	असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर तथा नागालैण्ड	87003	
3.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) कंकरबाग, पत्रकारनगर, पटना	बिहार	53243	53243
4.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) कोठी नं. 23 सैक्टर- 8ए, चण्डीगढ़	चण्डीगढ़ और पंजाब	26923	26923
5.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 1-बी, चंद्र कालोनी, ला कालेज के पीछे, अहमदाबाद	गुजरात, दादरा और नागर हवेली	445992	445992
6.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) हिमरस, सर्कुलर रोड, शिमला-171001 (हि.प्र.)	हिमाचल प्रदेश	4548	4548
7.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 57, रावलपोरा, श्रीनगर- 190005	जम्मू व कश्मीर	77170	
8.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 621, एट्टी फुट रोड 11, ब्लाक, राजाजी नगर, बंगलौर	कर्नाटक	350006	350006
9.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) एस.आई.ई. भवन, पूजापुरा, त्रिवेन्द्रम	केरल तथा लक्षद्वीप	64389	64948
10.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) एम.आई.जी-161 सरस्वती नगर, जवाहर चौक, भोपाल	मध्यप्रदेश	64465	76014
11.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 138/2, दिऊ कोठरुड़ कर्वे मार्ग पुणे	महाराष्ट्र तथा गोआ, दमन व	447314	447314
12.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु.प्र. परिषद) मेघालय, मिजोरम, और त्रिपुरा बायस रोड, लैटुम्सरा शिलांग		26317	
13.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) होमी भाभा छात्रावास, आर.सी.ई. प्रांगण, भुवनेश्वर	उड़ीसा	50516	52224
14.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 55-बी, यशपथ, तिलक नगर, जयपुर	राजस्थान	40265	40265
15.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 32, हिंदी प्रचार सभा स्ट्रीट टी नगर, मद्रास	तमिलनाडु एवं पांडिचेरी	443414	72939
16.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) 555-ई, ममफोर्ड गंज इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश	52212	2131
17.	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अनु. प्र. परिषद) पी- 23, सी. आई.टी. रोड स्कीम- 55, कलकत्ता	पश्चिम बंगाल, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह तथा सिक्किम	245310	361510

परिशिष्ट ग

1985-86 के लिए रा.शै.अनु. और प्र. परिषद् की समितियां

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सदस्य (सामान्य सभा)
(परिषद के नियमों के नियम 3 के अन्तर्गत)

1.	शिक्षा मंत्री अध्यक्ष-पदेन	1. श्री पी.वी. नरसिंह राव केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
2.	अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-पदेन	2. डा. (श्रीमती) आर. माधुरी शाह अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली।
3.	सचिव, शिक्षा मंत्रालय-पदेन	3. श्री आनंद स्वरूप, सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
4.	भारत सरकार द्वारा, प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक के आधार पर मनोनीत, विश्वविद्यालयों के चार कुलपति	4. श्री कान्ति चौधरी, कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर।
		5. प्रो. एम.एन. दास, कुलपति, उत्कल विश्वविद्यालय, वाणी विहार, भुवनेश्वर।
		6. डा. आर.एस. मिश्रा, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
		7. प्रो. वी.सी. कुलंदनीस्वामी, कुलपति, अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास।
5.	प्रत्येक राज्य सरकार/संघशासित प्रदेश का एक-एक प्रतिनिधि विधायक जो राज्य/संघशासित प्रदेश का शिक्षा मंत्री (या उसका प्रतिनिधि) होना चाहिए और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्यकारी पार्षद (या उनका प्रतिनिधि)	8. शिक्षा मंत्री, आंध्र प्रदेश, हैदराबाद।
		9. शिक्षा मंत्री, असम, दिसपुर।
		10. शिक्षा मंत्री, बिहार, पटना।
		11. शिक्षा मंत्री, गुजरात, अहमदाबाद।
		12. शिक्षा मंत्री, हरियाणा, चण्डीगढ़।
		13. शिक्षा मंत्री, हिमाचल प्रदेश, शिमला।
		14. शिक्षा मंत्री, जम्मू व कश्मीर, श्रीनगर।
		15. शिक्षा मंत्री, केरल, त्रिवेन्द्रम।
		16. शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश, भोपाल।
		17. शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र, बम्बई।
		18. शिक्षा मंत्री, मणिपुर, इम्फाल।
		19. शिक्षा मंत्री, मेघालय, शिलांग।
		20. शिक्षा मंत्री, कर्नाटक, बंगलौर।
		21. शिक्षा मंत्री, उड़ीसा , भुवनेश्वर।
		22. शिक्षा मंत्री, नागालैण्ड, कोहिमा।
		23. शिक्षा मंत्री, पंजाब, चण्डीगढ़।
		24. शिक्षा मंत्री, राजस्थान, जयपुर।
		25. शिक्षा मंत्री, तमिलनाडु, मद्रास।
		26. शिक्षा मंत्री, त्रिपुरा सरकार, अगरतला।
		27. शिक्षा मंत्री, सिक्किम, गंगटोक।
		28. शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
		29. शिक्षा मंत्री, पश्चिम बंगाल, कलकत्ता।
		30. मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली।
		31. शिक्षा मंत्री, गोआ, दमन व दिऊ सरकार, पणजी (गोआ)।
		32. शिक्षा मंत्री, मिजोरम, ऐजाल।
		33. शिक्षा मंत्री, पांडिचेरी सरकार, पांडिचेरी।
6.	कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य, जो ऊपर शामिल नहीं हुए है	34. श्रीमती सुशीला रोहतगी राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
		35. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
		36. प्रो. डी.एस. कोठारी, कुलाधिपति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
		37. डा. सी.एल. आनंद, सम कुलपति, उत्तर पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लच्छूमीरो, शिलांग- 793001 (मेघालय)

			38. श्री एच.एल. बब्बर, प्रिंसीपल, एन. डी.एम.सी. नवयुग स्कूल, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली।
			39. श्री डी.पी. सिंह, प्रिंसीपल, नेतारहाट स्कूल, नेतारहाट, वाया रांची- 835218
			40. डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।
			41. प्रो. (श्रीमती) एस. शुक्ला, अध्यक्ष, अध्यापक, शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं, रा.शै.अनु. प्र. परिषद
			42. डा. ए.के. शर्मा, प्रिंसीपल, क्षेत्रीयशिक्षा महाविद्यालय, मैसूर।
			43. डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. प्र./ परिषद
			44. ├──┤
			45. श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
7.	(क)	अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली।	46. अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली।
	(ख)	आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली- पदेन	47. आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नेहरू हाउस, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली।
	(ग)	निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक) नई दिल्ली- पदेन	48. निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक) निर्माण भवन, नई दिल्ली।
	(घ)	उप महानिदेशक कृषि शिक्षा प्रभारी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कृषि मंत्रालय नई दिल्ली- पदेन	49. उप महानिदेशक, कृषि शिक्षा प्रभारी, भा.कृ.अनु. परिषद, कृषि मंत्रालय, डा. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली।
	(ङ)	प्रशिक्षण निदेशक प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय, नई दिल्ली- पदेन	50. प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली।
	(च)	योजना आयोग शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि नई दिल्ली- पदेन	51 शिक्षा सलाहकार, योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली- 110001
8.		ऐसे अन्य व्यक्ति जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर मनोनीत करना चाहे, छः से अधिक नहीं। इनमें से कम से कम चार, स्कूल अध्यापक होने चाहिए।	52 प्रो. टी. सुब्बाराव, प्रिंसीपल, तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान , मद्रास।
			53 प्रो. पी.बी. कुलकर्णी, प्रिंसीपल, तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, चण्डीगढ़।
			54. श्री तुषार कांजीलाल, मुख्याध्यापक, रंगबेलिया हाई स्कूल डाक. रंगबेलिया, 24 परगना पश्चिम बंगाल
			55. श्री मुहम्मद हुसैन आब्दी, राजकीय शिक्षा शास्त्रीय संस्थान, इलाहाबाद
			56. श्री डेनिस डिसूज़ा, मुख्याध्यापक, संत फिलोमेना बालक हाई स्कूल, पुत्तूर, सीला डी.के., कर्नाटक
			57. श्रीमती विनोदनी शाह, प्रिंसीपल, श्री आर.पी. पटोदिया कन्या हाई स्कूल, सुरेन्द नगर, जिला सुरेन्द नगर, गुजरात।
		विशेष आमंत्रित	58. सचिव, भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा परिषद प्रगति हाउस, तीसरा तल, 47-नेहरू प्लेस, नई दिल्ली।
			59 श्री सी. रामचन्दन, सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

कार्यकारिणी समिति

1.	परिषद के अध्यक्ष, जो कार्यकारिणी समिति के पदेन अध्यक्ष होंगे।	1. श्री पी.वी. नरसिंह राव, मा.सं.वि. मंत्री, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।

1985-86

2.	(क)	शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री, जो कार्यकारिणी समिति के पदेन उपाध्यक्ष होंगे।	2. श्रीमती कृष्णा साही, मा.सं.वि. राज्य मंत्री, मा.सं.वि. मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
	(ख)	शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री, रा.शै.अनु.प्र. परिषद के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत	3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
	(ग)	परिषद के निदेशक	4. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा. शै.अनु. प्र. परिषद, नई दिल्ली।
	(घ)	शिक्षा मंत्रालय के सचिव-पदेन	5. श्री आनंद स्वरूप सचिव, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
3.		अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग- पदेन	6. प्रो. यशपाल, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली- 110001
4.		स्कूल शिक्षा में अनुभूत रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद (जिनमें से दो, स्कूल अध्यापक होने चाहिए), अध्यक्ष द्वारा मनोनीत	7. प्रो. डी.एल. कोठारी, कुलाधिपति, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
			8. डा. सी.एल. आनंद, सम-कुलपति, उत्तर पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय, लोअर लच्छूमीयर, शिलांग- 793001 (मेघालय)।
			9. श्री एम.एल. बब्बर, प्रिंसीपल, एन.डी.एम.सी. नवयुग स्कूल, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली।
			10. श्री डी.पी. सिंह, प्रिंसीपल, नेतारहाट स्कूल, नेतारहाट- वाया- रांची- 835218
5.		परिषद के संयुक्त निदेशक	11. डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली।
6.		अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, परिषद की संकाय के तीन सदस्य, जिनमें से कम से कम दो, प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षों के स्तर के होने चाहिएं	12. प्रो. (श्रीमती) एस. शुक्ला, अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली।
			13. डा. ए.के. शर्मा, प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर- 590066
			14. डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर, डी.ई.एस.एस. एण्ड एच, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली।
7.		शिक्षा मंत्रालय के एक प्रतिनिधि	15. श्री बाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
8.		वित्त मंत्रालय से एक प्रतिनिधि, जो परिषद का वित्तीय सलाहकार होगा	16. श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
			17 सचिव, रा.शै.अनु.प्र. प. परिषद, नई दिल्ली

स्थापना समिति

(परिषद के विनियम 10 के अधीन)

1.	निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद, अध्यक्ष	1. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा. शै.अनु. और प्र. परिषद अध्यक्ष
2.	संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु.प्र. परिषद	2. डा. ए.के. जलालुद्दीन संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद
3.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, शिक्षा मंत्रालय से नामित व्यक्ति	3. श्री बाई.एन. चतुर्वेदी संयुक्त सचिव (स्कू.शि.), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
4.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद, जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4. प्रो. एच.सी. खरे, गणित तथा सांख्यिकी विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद- 211002
		5. प्रो. एम.एम. पुरी, राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर, जी- 16, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
		6. डा. एस. आनंदलक्ष्मी, निदेशक, लेडी इरविन कालेज, सिकन्दरा रोड, नई दिल्ली।
		7. प्रो. एम.आई. सावादत्ती वरिष्ठ प्रोफेसर भौतिकी तथा अभिषद के सदस्य, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
5.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय से एक प्रतिनिधि	8. डा. एस.एन. दत्ता प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर
6.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि	9. प्रो. एस.एच. खान, प्रोफेसर, डी.पी. एस.ई.ई., रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली।
7.	परिषद के शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक स्टाफ में से, विनियम के परिशिष्ट में बताए अनुसार अपने-अपने वर्ग में से एक-एक चुनकर दो प्रतिनिधि	10. श्री जे.एस. सक्सेना रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर

		11. श्री एम. एस.बिष्ट, भंडारपाल वर्ग I रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली
8.	वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र. परि नई दिल्ली	12. श्री एल.एस. नारायणन वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र परिषद मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
9.	सचिव, रा.शै.अनु.प्र. परि.	13. सचिव-सदस्य सदस्य संयोजक रा.शै.अनु. और प्र. परिषद

वित्त समिति

(परिषद के नियम 62 के अधीन)

1.	रा.शै.अनु.प्र.परिषद के निदेशक (पदेन)	1. डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै अनु.प्र. परिषद, नई दिल्ली।
2.	वित्तीय सलाहकार (पदेन)	2. श्री एल.एस. नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र. परिषद, मा.सं.वि. मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
3.	संयुक्त सचिव (स्कूली-शिक्षा) मा.सं. वि. मंत्रालय	3. श्री बाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कू.शि.), मा.सं.वि. मंत्रायल (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
		4. श्री जे. वीरा राघवन, सलाहकार (शिक्षा), योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली।
		5. डा. वी.पी. दत्त, चीनी तथा जापानी अध्ययन विभागाध्यक्ष, कला संकाय भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
4.	सचिव, रा.शै.अनु. और प्र.परि. सदस्य आयोजक	6. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली।

भवन एवं निर्माण समिति

1.	निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि. पदेन	अध्यक्ष	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै अनु. प्र. परि.
2.	संयुक्त निदेशक, रा.शै. अनु. और प्र. परि. पदेन	उपाध्यक्ष	डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त सचिव रा.शै.अनु.प्र. परि.
3.	के.लो.नि.वि. के मुख्य इंजीनियर या उनका प्रतिनिधि	सदस्य	डा. एम.सी. जोसेफ, मुख्य इंजीनियर (निर्माण), के.लो.नि. विभाग, रा.कृ. पुरम, नई दिल्ली
4.	वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि	सदस्य	श्री एम.आर. राव, सहा,वित्त सला. (निर्माण), वित्त मंत्रालय (निर्माण), निर्माण भवन, नई दिल्ली।
5.	रा.शै.अनु. और प्र. परि. के परामर्शदाता वास्तुकार	सदस्य	श्री आई.डी. रस्तोगी, वरिष्ठ वास्तुकार, के.लो.नि. विभाग, (एन. डी. जेड़-iv) (कमरा नं. 426), ए विंग, निर्माण भवन, नई दिल्ली।
6.	परिषद के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि	सदस्य	श्री मनमोहन सिंह, वित्तीय सलाहकार रा.शै.अनु. और प्र. परि., शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
7.	शिक्षा मंत्रालय द्वारा नामित	सदस्य	श्री बाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल), शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली।
8.	प्रख्यात सिविल इंजीनियर	सदस्य	श्री आर.ए. खमानी, मुख्य इंजीनियर, दिल्ली विकास परिषद, नई दिल्ली।
9.	प्रख्यात विद्युत इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	सदस्य	श्री आर.डी. जान, मुख्य इंजीनियर, कावेरी भवन, एफ ब्लाक, नवां तल, केम्पेगीज रोड, बंगलौर।
10.	कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (समिति द्वारा मनोनीत)	सदस्य	प्रो. जे.एस. राजपूत प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल
11.	सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परि.	सदस्य-सचिव	श्री सी. रामचन्द्रन, आई.ए.एस. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परि.

कार्यक्रम सलाहकार समिति

1.	निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि.	अध्यक्ष
2.	संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि.	उपाध्यक्ष
3.	प्रो. एस. शुक्ल, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 33 छात्र मार्ग, दिल्ली- 110007	सदस्य
4.	प्रो. सी.एल. कुंद्रु, शिक्षा संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।	--वही--
5.	प्रो. एन. मल्ला रेड्डी शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।	--वही--
6.	प्रो. एस. नारायण राव, मनोविज्ञान विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति।	--वही--

1985-86

7. प्रो. (श्रीमती) एस. जैदी; शिक्षा संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़। —वही—
8. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, महेन्द्रू, पटना- 6 सदस्य
9. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, सोलन (हिमा.प्र.)। —वही—
10. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एस.सी.ई.आर.टी.) मेघालय, मवखार मुख्य मार्ग, शिलांग- 2 —वही—
11. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर (राजस्थान) —वही—
12. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, 6, डी.पी.आई. प्रांगण, कालेजरोड, मद्रास —वही—
13. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)। —वही—
14. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)। —वही—
15. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)। सदस्य
16. प्रिंसीपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक)। —वही—
17. प्रो. ए.एन.महेश्वरी, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर- 570006. —वही—
18. प्रो. के.सी. पण्डा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)। —वही—
19. प्रो. एन. वैद्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)- 305001. —वही—
20. प्रो. एस.टी.वी. गोविंदाचार्युलु, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामला हिल्स, भोपाल (म.प्र.)। —वही—
21. डा. डब्लू.ए.एफ. हापर, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नं. 32, हिंदी प्रभार सभा मार्ग, टी नगर, मद्रास- 600017 (तमिलनाडु)। —वही—
22. डा. आर.पी. कथूरिया, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद एम.ई.जी.- 161, ब्लाक सं. 6सरस्वती नगर, जवाहर चौक, भोपाल- 402017 (म.प्र.)। सदस्य
23. डा. के.एल. जोशी, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र. परिषद लक्ष्मी भवन बिल्डिंग, कोठी नं. 209/1 व 210/1 आरा मिल के पास, संजावली शिमला- 171001 (हिमा.प्र.)। —वही—
24. डा. डी.के. भट्टाचार्य, क्षेत्र सलाहकार, रा.शै.अनु.प्र.परि., बायस रोड, लैतमुखड़ा, शिलांग- 793003 (मेघालय) —वही—
25. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16 —वही—
26. अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16
27. अध्यक्ष, स्कूल पूर्व तथा प्रारंभिक शिक्षा विभाग रा.शै.अनु और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16 सदस्य
28. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16 —वही—
29. अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परि. नई दिल्ली- 16. —वही—
30. अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16. —वही—
31. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान नियोजन एवं कार्यक्रमण विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
32. अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16.
33. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवाएं एवं समन्वय विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16. —वही—
34. अध्यक्ष, मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
35. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
36. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
37. संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शिक्षा प्रोद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) रा.शै.अनु और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16.
38. डा. के.वी. राव, प्रोफेसर, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र परिषद नई दिल्ली- 16. सदस्य
39. डा. (कु.) एस.के. राम, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
40. डा. (श्रीमती) आर. मुरली धरन, प्रोफेसर, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
41. डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, प्रोफेसर, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
42. डा. वी.के. सिंह, प्रोफेसर, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
43. श्री के.एन. हिरियन्निया, प्रोफेसर, मापन मूल्यांकन, सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. सदस्य
44. डा. ओ.एस. देवल, प्रोफेसर, केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
45. डा. पी.एम. पटेल, प्रोफेसर, कार्यक्रम विभाग, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
46. प्रो. डी.एस. रावत, अध्यक्ष, एस.ई.पी एकक रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
47. डा. आर.एम. कालरा, अध्यक्ष, आई.आर.एकक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—

48. प्रो. आई.एस. चौधरी, प्रभारी प्रोफेसर, पी.सी.ई. एकक, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
49. डा. आर.पी. सिंह, अध्यक्ष, पत्रिका सैल रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. सदस्य
50. सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
51. मुख्य लेखापाल, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
52. श्री एच.के.एल. चुग, उप सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
53. श्री जी.आर. दास, उपसचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
54. श्री टी.एस. शर्मा, जन सम्पर्क अधिकारी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद, नई दिल्ली- 16. —वही—
55. श्री एन. गणेशन, उप सचिव, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
56. श्री पी.एस. महलवाल, विशेष अधिकारी, सी.आई.ई.टी. रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. सदस्य
57. श्री एस.के. आनंद, विशेष अधिकारी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
58. श्री आर.पी. सेठ, विशेष अधिकारी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
59. ले. कर्नल एम.एल. भंडारी, बी.एस.ओ., रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
60. श्री के.एन. सक्सेना, प्रभारी/अध्यक्ष, माडल स्कूल यूनिट, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—
61. डा. कुलदीप कुमार, प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी. एण्ड जी, रा.शै.अनु. और प्र. परिषद नई दिल्ली- 16. —वही—

शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति

1. डा. वाई. रवि,
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आलिया प्राथमिक स्कूल प्रांगण, आंध्र प्रदेश खेलकूद परिषद के सामने, हैदराबाद ।
2. डा. (श्रीमती) टी. ठाकुर,
प्रिंसीपल, राज्य शिक्षा संस्थान, जोरहाट (असम)
3. डा. मार्थ एन. मुखर्जी,
प्रोफैसर, भारतीय संख्यिकीय संस्थान, सनसनबाल मार्ग, नई दिल्ली ।
4. डा. टी.बी. नायक,
निदेशक, जनजातीय अनुसंधान एंव प्रशिक्षण संस्थान, गुजराती विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात)
5 प्रो. ए.एल. नागर,
दिल्ली स्कूल इकानामिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
6. प्रो. आगा अशरफ अली,
डीन एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर शिक्षा विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, हजरतबाल, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर) ।
7. प्रो. (श्रीमती) वी. अग्रवाल,
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (म.प्र.) ।
8. डा. आर. श्रीनिवासन,
प्रोफैसर, शिक्षा लक्ष्मी महाविद्यालय, गांधीग्राम, जिला मदुरै, तमिलनाडु ।
9. डा. बी.के. राम बर्मन
वरिष्ठ प्रोफेसर, समाज विकास परिषद, 53, लोदी एस्टेट, नई दिल्ली ।
10. प्रो. बी.आर. काम्बले,
अध्यक्ष, इतिहास विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, महाराष्ट्र ।
11. डा. के.सी. पण्डा,
प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर ।
12. डा. एस.टी.वी.जी. आचार्युलु
प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल ।
13. डा. (श्रीमती) अमृत कौर,
प्रोफैसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर ।

विद्या समिति

1. निदेशक, रा. शै. अनु. और प्र. परिषद् — अध्यक्ष
2. संयुक्त निदेशक, रा. शै. अनु. और प्र. परिषद् — उपाध्यक्ष
3. डीन (विद्या) — संयोजक
4. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. — सदस्य
5. डीन (अनुसंधान) — —वही—
6. डीन (समन्वय) — —वही—
7. अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
8. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
9. अध्यक्ष, शिक्षाव्यावसायीकरण विभाग
10. अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग
11. अध्यक्ष, स्कूल पूर्व तथा प्रारम्भिक शिक्षा विभाग
12. अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग
13. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग
14. अध्यक्ष, नीति अनुसंधान नियोजन एवं कार्यक्रमण विभाग
15. अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग
16. अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
17. अध्यक्ष, क्षेत्र सेवाएं एवं समन्वय विभाग
18. अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग
19. श्री आर.सी. सेक्सेना, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
20. डा. अनिल विद्यालंकार, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच.
21. डा. (श्रीमती) एस.पी. पटेल, प्रोफेसर, डी.वी.ई.
22. डा. प्रीतम सिंह, प्रोफेसर, डी.एम.ई.एस. एण्ड डी.पी.
23. कुमारी आई. मलानी, प्रोफेसर, डी.पी.एस. एण्ड ई.ई.
24. डा. आर.के. माथुर, प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी. एण्ड जी.
25. डा. के.एन. सक्सेना, प्रभारी प्रोफेसर, माडल स्कूल सैल
26. डा. एन.मल्लरेड्डी, प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आं.प्र.)
27. डा. सुरेश शुक्ल, प्रोफेसर, शिक्षा, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

1985-86

विभागीय सलाहकार बोर्ड

1. शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श तथा मार्गदर्शन विभाग (डी.ई.पी.सी. एण्ड जी.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1) डा. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता प्रोफेसर एवं अध्यक्ष — संयोजक
(2) डा. (श्रीमती) सी. धर, प्रोफेसर
(3) डा. आर.के. माथुर, प्रोफेसर
(4) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग
(5) अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग
(6) अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग
(7) डा. (कुमारी) एम.डी. बंगाली, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग बम्बई विश्वविद्यालय, कालिना प्रांगण, बम्बई
(8) डा. एस. नारायण राव प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, एस.डी. विश्वविद्यालय, तिरुपति (आं.प्र.) ।

2. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं (डी.टी.ई.एस. ई.ई.एस.) विभाग के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1) डा. आर.सी. दास प्रोफेसर एवं अध्यक्ष — संयोजक
(2) डा. (कुमारी) एस. बिसारिया, प्रोफेसर
(3) डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव, प्रोफेसर
(4) डा. एन.के. जंगीरा, रीडर
(5) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग
(6) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
(7) अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग
(8) प्रो. दुर्गानन्द सिन्हा निदेशक, ए.एन. सिन्हा समाजिक विज्ञान संस्थान, पटना
(9) डा. (कुमारी) यशु वेग नेग्ता, अध्यक्ष, विशेष शिक्षा विभाग, एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय बम्बई

3. शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.) के लिए विभागीय सलाहाकार बोर्ड

(1) डा. ए.के. मिश्रा प्रोफेसर एवं अध्यक्ष — संयोजक
(2) डा. पी. रायज़दा, रीडर
(3) डा. जी. गुरु, रीडर
(4) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग
(5) संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.
(6) अध्यक्ष, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग
(7) अध्यक्ष, मापन मूल्यांकन सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग
(8) डा. यू.सी. उपाध्याय सहायक महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, डा. राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली– 110001
(9) प्रो. ब्रज किशोर प्रबन्धन विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद (आं. प्र.) ।
(10) डा. एल. फड़निस, डीन, गृह विज्ञान महाविद्यालय, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय धारवाड़
(11) प्रो. ए.एल. जैन, तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान, चण्डीगढ़ ।
(12) प्रो. वी. रामलिंगस्वामी, उप महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्थान, अंसारी नगर, नई दिल्ली ।

4. विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1) डा. बी. गांगुली, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष — संयोजक
(2) डा. बी.पी. आत्रेय, प्रोफेसर
(3) छोटन सिंह, प्रोफेसर
(4) श्री आर.सी. सक्सेना, प्रोफेसर
(5) डा. जे. मित्रा, रीडर
(6) अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
(7) संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.
(8) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग
(9) अध्यक्ष, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग
(10) प्रो. एल.एन. व्यास, वनस्पति विज्ञान विभाग, एम.एल.एस. विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
(11) प्रो. आर.सी. मेहरोत्रा, रसायन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
(12) प्रो. एस.पी. पुरी, भौतिकी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।
(13) प्रो. एन.पी. सिंह, गणित विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली– 110016.

5. स्कूल एवं प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1) डा. पी.एन. दुबे प्रोफेसर एवं अध्यक्ष — संयोजक
(2) डा. के.जी. रस्तोगी, प्रोफेसर
(3) श्रीमती ए. खन्ना, प्रोफेसर
(4) कुमारी आई.मलानी, प्रोफेसर
(5) डा. एस.डी. रोका, प्रोफेसर
(6) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग
(7) अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी शिक्षा विभाग
(8) अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग
(9) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग
(10) संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
(11) प्रो. सत्यभूषण, राष्ट्रीय शिक्षा नियोजन एवं प्रशासन संस्थान, एन.आई.ई. प्रांगण, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली– 110016
(12) डा. सच्चिदानन्द, अध्यक्ष, नृविज्ञान एवं समाज विज्ञान विभाग, ए.एन. सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, गोलघर के पास, पटना– 800001 (बिहार) ।

(13) श्री आई.एस. गौड़, अतिरिक्त निदेशक (बेसिक), शिक्षा निदेशालय, इलाहाबाद (उ.प्र.)।

6. सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस. एण्ड एच.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1)	श्री बी.एस. पारख, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष	संयोजक
(2)	डा. अनिल विद्यालंकार, प्रोफेसर	
(3)	डा. जी.एल. अरोड़ा, रीडर	
(4)	डा. एच.एल. बछोतिया, लेक्चरर	
(5)	अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग	
(6)	अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवाएं विभाग	
(7)	अध्यक्ष, मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण एवं आंकड़ा संसाधन विभाग	
(8)	प्रो. के.एस. गिल, प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)।	
(9)	प्रो. आर.एन. घोष, केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषाएं संस्थान, हैदराबाद (आं. प्र.)।	
(10)	प्रो. नामवर सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली मार्ग, नई दिल्ली।	

7. क्षेत्र सेवाएं तथा समन्वय विभाग के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1)	डा. जी.एस. श्रीकांतिया, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष	संयोजक
(2)	डा. विक्रमजीत सिंह, प्रोफेसर	
(3)	डा. बुल्फ लैंग, निदेशक, रा.शै. अनु. प्र. परि., मेघालय	
(4)	डा. एस.सी. दास, निदेशक, राज्य.शै.अनु.प्र.परि. भुवनेश्वर (उड़ीसा)	

8. कार्यशाला विभाग के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1)	डा. पी.के. भट्टाचार्य, रीडर एवं अध्यक्ष	संयोजक
(2)	श्री अबु बशर, तकनीकी अधिकारी	
(3)	श्री आर.आर. शर्मा, तकनीकी अधिकारी	
(4)	श्री वेद रत्न, प्रोफेसर, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग	
(5)	श्रीमती एस. भट्टाचार्य, रीडर, स्कूल-पूर्व एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग	
(6)	श्री एस.एन. रे, लेक्चरर, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग	
(7)	प्रो. एन.के. तिवारी, यांत्रिकी इंजीनियरी विभाग, भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली– 110016	
(8)	श्री एच.एन.पी.पोद्दार, प्रभारी वैज्ञानिक, कार्यशाला, राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला	

9. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण तथा आंकड़ा संसाधन विभाग (डी.एन.ई.एस.डी.पी.) के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

(1)	डा. एच.एस. श्रीवास्तव प्रोफेसर एवं अध्यक्ष	संयोजक
(2)	डा. ए.डी. बनर्जी, रीडर	
(3)	श्री जे.पी. अग्रवाल, रीडर	
(4)	डा. सी.एल. कौल, लेक्चरर	
(5)	अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी शिक्षा विभाग	
(6)	अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग	
(7)	अध्यक्ष, शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श एवं मार्गदर्शन विभाग	
(8)	डा. आर.एन. मेहरोत्रा, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 36 छात्र मार्ग, दिल्ली	
(9)	प्रो. पी.के. राय, एच– 1456, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली।	

पुस्तकालय सलाहकार समिति

(1)	डीन (शैक्षिक)	अध्यक्ष
(2)	प्रो. (श्रीमती) पेरिन एच. मेहता अध्यक्ष, डी.ई.पी.सी. एण्ड जी.	सदस्य
(3)	प्रो. एच.एस. श्रीवास्तव अध्यक्ष, डी.एम.ई.एस.डी.पी.	सदस्य
(4)	प्रो. पी.एन. दुबे, अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.	सदस्य
(5)	प्रो. ए.के. मिश्रा, अध्यक्ष, डी.वी.ई.	सदस्य
(6)	प्रो. बी. गांगुली, अध्यक्ष डी.ई.एस.एम.	सदस्य
(7)	श्री जयपाल नांगिया, अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	सदस्य
(8)	प्रो. (श्रीमती) आर्दश खन्ना, डी.टी.ई.एस.ई. एण्ड ई.एस. के अध्यक्ष का प्रतिनिधि	सदस्य
(9)	प्रो. पी.के. भट्टाचार्य, अध्यक्ष, कार्यशाला विभाग	सदस्य
(10)	वरिष्ठ व्यावसायिक (उप-पुस्तकालयाध्यक्ष) पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग	सदस्य
(11)	श्री एफ.सी. कटियाल, व्यावसायिक सहायक, पुस्तकालय संघ के प्रतिनिधि	सदस्य
(12)	अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना विभाग	संयोजक

पत्रिका सेल के लिए सलाहकार समिति/सम्पादन मंडल

(1)	डा. पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अनु.प्र.परिषद्	अध्यक्ष
(2)	श्री वी. राघवन सलाहकार (शिक्षा), योजना आयोग, योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली– 110001	सदस्य
(3)	प्रो. सत्य भूषण, कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय शिक्षा नियोजन, प्रशासन संस्थान, एन.आई.ई. प्रांगण, नई दिल्ली– 110016	सदस्य
(4)	डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन, संयुक्त शिक्षा सलाहाकार (संस्कृति), शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली– 110001.	सदस्य
(5)	प्रो. एम.आर. भिड़े, पूना विश्वविद्यालय, पुणे	सदस्य
(6)	प्रो. रशीदुद्दीन खान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय न्यू महरौली मार्ग, नई दिल्ली– 110054	सदस्य
(7)	प्रो. एल.एस. कोठारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली– 110007	सदस्य
(8)	प्रो. दुर्गानन्द सिंहा, निदेशक, ए.एन. सिन्हा समाजिक अध्ययन संस्थान, पटना– 800001	सदस्य
(9)	प्रो. आर.एन. घोष, सी.आई.ई.एफ.एल. हैदराबाद– 500007.	सदस्य
(10)	प्रो. नामवर सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली मार्ग, नई दिल्ली	सदस्य
(11)	डीन (शैक्षिक)	पदेन
(12)	डीन (अनुसंधान)	सदस्य
(13)	डीन (समन्वय)	सदस्य

(14) अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग — सदस्य
(15) अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षण, विशेष परीक्षा तथा विस्तार सेवाएं विभाग — सदस्य
(16) अध्यक्ष, विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग — सदस्य
(17) प्रो. (कु.) एस.के. राय, डी.ई.एस.एम.एस.एच. — सदस्य
(18) श्री ओ.एस. देवल, पत्रिका सेल — संयोजक

प्रसारण समिति

(1)	प्रो. आर.पी. सिंह, रा.शै.अनु.प्र.परि.	अध्यक्ष
(2)	संयुक्त निदेशक सी.आई.ई.टी.	सदस्य
(3)	डीन (शैक्षिक)	—वही—
(4)	डीन (अनुसंधान)	—वही—
(5)	डीन (समन्वय)	—वही—
(6)	अध्यक्ष, [illegible] विभाग	—वही—
(7)	अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	सदस्य
(8)	अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम.	—वही—
(9)	अध्यक्ष, डी.टी.ई.	—वही—
(10)	डा. सी.एल. कुण्डु, प्रोफेसर शिक्षा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र	—वही—
(11)	डा. बी.के. [illegible], प्रोफेसर मनोविज्ञान, आई.आई.टी., पवाई, बम्बई—400076	—वही—
(12)	श्री सी.एम. चावला, प्रबन्ध निदेशक, प.बी.एस. प्रकाशक वितरक समिति 5 अंसारी मार्ग, नई दिल्ली—110002	—वही—
(13)	श्रीमती मधु चौधरी मैसर्स दिलीप चौधरी एसोसिएशन पो. ब. न. 517, एन—79, कनाट सर्कस, नई दिल्ली—110001	—वही—
(14)	श्री मेसुअल इसराइल, नरीमा पब्लिशिंग हाउस, 2135, अंसारी मार्ग, दरिया गंज, नई दिल्ली—110006	—वही—
(15)	श्री सी.एन. राव, सी.पी.ओ., प्रकाशन विभाग, रा.शै.अनु.प्र.परि.	संयोजक

शिक्षा विस्तार एवं समन्वय समिति

(1)	डीन (समन्वय)	अध्यक्ष एवं संयोजक
(2)	डीन (अनुसंधान)	सदस्य
(3)	डीन (शैक्षिक)	—वही—
(4)	अध्यक्ष [illegible]	—वही—
(5)	अध्यक्ष, [illegible]	—वही—
(6)	[illegible]	—वही—
(7)	संयुक्त निदेशक [illegible]	—वही—
(8)	[illegible]	—वही—
(9)	[illegible]	—वही—
(10)	[illegible]	—वही—
(11)	[illegible]	—वही—
(12)	[illegible] जयपुर	सदस्य
(13)	[illegible]	—वही—
(14)	[illegible]	—वही—

(15) डा. आर.पी. कथूरिया, वि.स. (रा.शै.अनु.प्र.परि.), भोपाल — —वही—
(16) शिक्षा निदेशक, उत्तर प्रदेश सरकार 10 पार्क रोड, लखनऊ—1 — —वही—
(17) जन शिक्षण निदेशक, केरल सरकार, डी.पी.आई कार्यालय, वझुथाकाउद, त्रिवेंद्रम—695014 — —वही—
(18) निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), नया सचिवालय, बिहार सरकार, पटना—800015 — —वही—
(19) शिक्षा निदेशक (प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा), महाराष्ट्र सरकार, सेन्ट्रल बिल्डिंग, पुणे — सदस्य
(20) डा. एन. मल्ला रेड्डी, प्रोफेसर शिक्षा, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आ.प्र.) — —वही—
(21) डा. सुरेश शुक्ला प्रोफेसर शिक्षा, दिल्ली विश्वविद्यालय — —वही—

कला शिक्षा समिति

(1) श्री मुल्कराज आनन्द, 25 कफ परेड, बम्बई—400005 — अध्यक्ष
(2) श्री राजेन्द्र नाथ, सी—5, प्रेस एन्क्लेव, साकेत, नई दिल्ली—110017 — सदस्य
(3) श्री जे. स्वामिनाथन, निदेशक, रूपांकर, ललित कला संग्रहालय, भारत भवन, श्यामला रोड, भोपाल—462002 (म.प्र.) — सदस्य
(4) प्रो. बेनू चौधरी, जे. 1852, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली—110019 सदस्य
(5) श्री केशव मलिक, डी—5190, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली—110001 — सदस्य
(6) श्री एस.ए. गडे, 70—टी, सेन्ट्रल एवेन्यू, चैम्बूर, बम्बई—400071 — सदस्य
(7) श्रीमती मृणालिनी साराभाई, निदेशक, दर्पण अकादमी आफ परफार्मिंग आर्ट्स, अहमदाबाद—380013 — सदस्य
(8) श्री पी. मान्याल, [illegible] निजामुद्दीन (पूर्वी), नई दिल्ली—110013 — सदस्य
(9) श्रीमती सुमति मुटाटकर, [illegible] मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली—110007 — सदस्य
(10) [illegible] शर्मा, 55 कम्युनिटी सेन्टर [illegible] कैलाश, नई दिल्ली—110065 — सदस्य
(11) [illegible] सुमित्रा, रीडर एवं अध्यक्ष आकाशवाणी [illegible], सी.आई.ई.टी., रा.शै.अनु. और प्र. परि., नई दिल्ली—110016 — सदस्य-सचिव
(12) [illegible] अख्तरुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. और प्र. परि., नई दिल्ली
(13) [illegible], संयुक्त निदेशक सी.आई.ई.टी., रा.शै.अनु.प्र.परि., नई दिल्ली
(14) [illegible], अध्यक्ष, डी.ई.एस.[illegible], [illegible], रा.शै.अनु.प्र.परि., नई दिल्ली
(15) [illegible] शुक्ला, अध्यक्ष, [illegible], रा.शै.अनु.प्र.परि., नई दिल्ली
(16) [illegible] मिश्रा, अध्यक्ष, शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग, रा.शै.अनु.प्र.परि., नई दिल्ली

परिशिष्ट घ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

1.4.1986 को, रा.शै.अनु.प्र. परिषद का संस्वीकृत स्टाफ बल

क्र.सं.	स्टाफ की तैनाती	शैक्षिक			गैर शैक्षिक (लिपिक वर्गीय)			गैर शैक्षिक (तक)				कुल
		वर्ग 'ए'	वर्ग 'बी'	वर्ग 'सी'	वर्ग 'ए'	वर्ग 'बी'	वर्ग 'सी'	वर्ग 'ए'	वर्ग 'बी'	वर्ग 'सी'	वर्ग 'डी'	पद
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1.	परिषद मुख्यालय	286	2	3	26	106	585	77	104	258	378	1825
2.	क्षे.शि.म., अजमेर	66	27	46	1	6	43	4	4	40	83	320
3.	क्षे.शि.म., भोपाल	62	25	46	1	6	43	4	5	38	82	312
4.	क्षे.शि.म., भुवनेश्वर	75	29	62	1	6	40	4	4	42	90	353
5.	क्षे.शि.म., मैसूर	85	25	49	1	6	47	4	5	39	78	339
6.	क्षेत्र सलाहकार कार्यालय	32	—	—	—	—	54	—	—	18	36	140
	कुल योग	606	108	206	30	130	812	93	122	435	747	3289

वर्ग वार सार	
वर्ग 'ए'	729
वर्ग 'बी'	360
वर्ग 'सी'	1453
वर्ग 'डी'	747
कुल योग	3289

किस्मवार स्टाफ का सार	
शैक्षिक	920
गैर-शैक्षिक (लिपिक वर्गीय)	972
गैर-शैक्षिक (तकनीक)	650*
वर्ग 'डी'	747
कुल योग	3289